श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपगच्छाधिराज गुणधारकाचार्य जंगमतीर्थरत्नाकर [illegible]

श्रीयुत् परमपूज्य सद्गुरु भट्टारक श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वर महाराज !

आप श्रीमान् सेवक जनमनवांछितपूरक [illegible] [illegible] छो, [illegible]-
पदेश दोषाग्री भविजीवोद्धारक (भविजननिस्तारक [illegible] छो. प्राचीन जैनशैली [illegible]
जय विधिपरंपरा पद धारक शुद्धक्रियानुष्ठान [illegible] छो, [illegible] [illegible] [illegible]
वचनातिशयवंत, चारित्रपात्रचूडामणि, कुमतांधकारनाशनमणि छो, वळी [illegible]
मानसहंस होइ उग्रविहार युक्त शासनभक्तिमां निरंतर [illegible] [illegible] [illegible]
कर्या करोछो. इत्यादि प्रातःस्मरणीय सद्गुणोंथी [illegible] [illegible] [illegible]
आप परमोपकारी गुरुराजना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
रूप नय विचाराधिकारसंग्रह नामक परम ज्ञानदायि पुस्तक [illegible] [illegible]
अत्यानंद पामुंछुं ते आप सेवकजन [illegible] स्वीकारी [illegible] [illegible] [illegible] !



वीर संवत २४३९ श्री विजय राज्य





श्री आ श्री

श्री आ र्य आ श्री

श्री आ र्य चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र सू द्र चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र सू री सू द्र चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र सू री श्व री सू द्र चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं र्य आ श्री

श्री आ र्य चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं र्य आ श्री

तु

ह

भ्यो

नमोनमः







शिवगंज नगरे आचार्य पद समये संवत, १९६७ ना वैशाख सुदी १२.

"व्रजराज आज साँवरो वंसी बजा गयो" इत्यनेन रागेण गीयते ।

श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिराजमर्थदायकं । भजस्व हे सखे गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेर ॥
संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा । मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ १ ॥
प्रवेशमीहसे यदा धियो निवेशने । तदा मनःप्रसारणे ममोपदेशने ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ २ ॥
करालकाल एव संनिधौ समागतः । किमीहसे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ३ ॥
विधापकर्मशास्त्रमर्मधर्मकर्मणो । प्रवीनुमीहसे यदा तदा सुधर्मणो ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ४ ॥
श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजवंशदीपकं । मुमुक्षिराजपानिकाननः समीपकम् ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ५ ॥
तपः प्रकर्षनिर्जितोरुपञ्चसायकं । महानिदेशनासुधारसप्रदायकम् ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ६ ॥
नित्यानन्देन रचिता लाडीलालेन गापिता । आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य पट्टस्थापनमुत्सवे ॥ ७ ॥

भाषाटीका । मित्र ! वाञ्छित अर्थको देनेवाले, गुरु मुनिराज आचार्य श्री भ्रातृचन्द्र सूरि-

...सेवन कर ॥टेर॥ जो कि तु इस संसारको छोडना चाहता है, और जो मुक्तिको जाना चाहता है तो हर्षसे दे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले० ॥१॥ तूं बुद्धिके घरमें जो प्रवेशको चाहता है तो मेरे उपदेशमें मन फेला । हे मित्र० ॥२॥ यह जयंकर काल पासमेंही आया हुवा है, रागसे क्या अनित्यसुखको देख रहा है । हे मित्र० ॥३॥ जो कि तूं (सांसारिक) कर्मको छोडकर धर्म करनेके लिये शास्त्रके मर्मको लेना चाहता है तो मुक्तिके लिये हे मित्र० ॥४॥ (श्री बृहत्तपागच्छीय) श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजीके वंशके दीपक, मुक्तिरूप राजधानीके मार्गको समीप करनेवाले । हे मित्र० ॥५॥ तपके प्रकर्षसे कामको जीतने वाले, व्याख्यानरूप अमृतरसके पानेवाले हे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रजी सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥६॥ नित्यानन्दशर्मासे बनाइ गई, और भाइलालजीसे गाइ गइ, यह आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वरजीकी षट्पदी मुखरूप कमलपर रहो ॥ १ ॥

श्री.मापश्रीजीश्री जन्म पामेली. श्रीपार्श्वचंद्रगच्छनी जैन हरिसिंघ सरस्वती सभा अने सेवक मंगलदास.

१ समीपयतीति समीपकस्तं मुक्तिराजधान्याः सामीप्यदर्शकमिति भावः ।

आ पंचम कालनी अंदर विषय कषायनी लोलुपताने लीधे के धन धान्यादिनो लाभ प्राप्त करवानी धामधूमने लीधे महान् पुस्तको (आगमो-सिद्धांतो) छे ते सांभली विचारी मनन जेटलो अवकाश अने समजशक्ति हाथ न होवाथी जैनागमनी अंदरनुं रहस्य आपणने प्राप्त थइ शकतुं नथी. केमके सागर समान अगाध भावभर्यां सूत्रोने ध्यानपूर्वक अवलोकवां ए कंइ न्हानीशूनी वात नथी. महान् भूमंडलमांनी दूर रहेली के आगमनी अगम सूक्ष्म वस्तुओनुं निरीक्षण करवा माटे तो खास उमदा दुर्बीननीज जरूर पडे छे. परंतु तेवी दुर्बीनरूप ज्ञानचक्षुओ आपणां सतेज न होवाथी आपण तेवा सुक्ष्म विचारोने अंश मात्र पण जाणवा भाग्यशाली थता नथी.

आपणी आ अडचणने ध्यानमां लइ अगाउथी ते श्रुतसमुद्रनुं मंथन करी आपणे समजी शकीए तेवी भाषामां आपणा परोपकारी पूर्वाचार्योए पृथक् पृथक् सत्य वार्त्ताओनुं रहस्य जाहेरमां आणी सागरने गागरमां समावी दीधेल छे. जेथी गागरमां समायला सागर सम रहस्यनुं अवकाश

पूर्ण अवगाहन करी शास्त्र वचने शक्तिमान् थइ शकिये. एज हेतुने अवलंबी आ विविध विषयवि-भूषित प्रथम प्रकरणगुच्छने प्रसिद्धमां लाववा यत्न आदरेलो छे.

महान् खुलासानी प्रमाणिक चर्चाओ आपणा अल्पमतिवंत अल्पसमयमां समजी शकीए एवी प्रकरणो रचवाना संबंधमां पूर्वाचार्योए उठावेलो अपार परिश्रम सफल थवा आपणे ए प्रकरणो भणवां–गणवां–सांभलवां के मनन करवां ए अवश्य आपणुं कर्त्तव्य कर्म समजवुं योग्य छे, आवी मान्यताने लीधे आपणी एज फर्ज अदा करवाने माटे आ अमारो प्रथम प्रयास छे, ते तरफ सुलभ दाखवी आ ग्रंथरत्ननी वानगी चाखवा तत्पर रहेवुं अवश्यनुं छे.

आपणा पूर्वाचार्यो निःस्पृही, निरभिमानी, निर्लोभी, अप्रमत्त, परोपकारी, अममत्ववादी, तत्त्वगवेषी, हितचिंतक, स्वपरोन्नतिकारक, शास्त्राज्ञानुगामी, निष्पक्षपाति, सत्यवक्ता, प्रमाणिक अने भवभीरु हता. जेथी शंकाने स्थान आपवानुं कारण नथी के तेमणे टाढा पहोरनां गप्पां जगतजीवोने वंचवा माटे ठोक्यां हशे. तेओनां तो टंकः वचनो अक्षरशः मान्य करवा योग्य छे.

करी, वनमां, उपाश्रय, के भयंकर स्थलोमां रही, आपणा उपकार माटे ग्रंथो निर्माण कर्या छे. तेओए पंथ वधारवा, किंवा शिष्य संततीनो झूंडो जमाववा के यशनी आकांक्षा आदि स्वार्थपरायणताने अवलंबी वाक्यजालमां बाल जीवोने फसाववा उद्यम आदरेल न हतो, तो पछी तेवा परोपकारी प्रमाणिक प्रभाविक पुरुषोनां वचनोने स्वार्थीवचनो मानवां ए आपणी भूल नहि तो बीजुं शुं गणाय ? एमनां विशुद्ध वचनोने हैयाना उमलकासाथ हीरा मोतीथी वधावी लेवांज जोइये छे.

आपणा मुख्य पूर्वाचार्यजी के जेमनां रचेलां प्रकरणो आ पुस्तकनी अंदर विशेष छे ते श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी महान् प्रभावशाली पुरुष हता अने जैनशासनना उत्तमोत्तम उद्योतकारी होवाथी अद्यापि लगण तेमना वचनानुसार चालनार हजारो सेवक विद्यमान छे. तेओ साहेबजी आबुराजनी तलेटीमां आवेला हमीरपुरमां संवत १५३७नी सालमां जन्म धरी पोरवाडवंशी, वेलगशाह पिता अने विमलादेवी माताने महत्तावंत कर्यां हतां, ते कुशाग्र बुद्धिवंत महत् पुरुषने विद्यातो सुप्रसन्नज हती,

संसार ने दुर्लभबोधी हता. जेथी गुरुराज श्री साधुरत्न पंडितराजना उपदेशथी बोध पामी संवत १५४६ नी सालमां फक्त नव वर्षनी किशोरवयमांज दीक्षा अंगीकार करी कुलनो उद्धार कर्यो हतो.

मरुधरना सुरतरु सदृश जनमनवांछितपूरक अने पुष्करावर्त्त मेघसमान हृदयक्षेत्रने रसाल करनार देशनावंत पंडितराज श्रीसाधुरत्नजीनी कृपाथी नवदीक्षित मुनि शास्त्रोना पारगामी थया अने तेथी हृदयक्षेत्रमांथी तत्त्वज्ञानांकुर स्फुरायमान थतां संवत १५५४ नी सालमां उपाध्याय पदना अधिकारी थया.

ए समयमां जैनसमुदायनी अंदर शिथिलाचार विशेष वधी पडतां क्रियानुष्ठान विधिविपरीत थवा लागतां हतां. एथी शिष्टाचारनी प्रवृत्ति करवा त्यागी वैरागी सौभागी महदात्माए गुरुराजनी आज्ञा संपादन करी संवत १५६५ नी सालमां क्रियाउद्धार करी शिथिलाचारने धीरे धीरे दूर करवा भगीरथ प्रयत्न आदर्यो.

करी, जेथी भक्तजनोनी भावश्रेणीने वृद्धि साथे भेदाडवा सर्वानुमतनी ऐक्यता थतां पोते सूरिपद अंगीकार करी आचार्यताना गांभीर्य अर्थने शोभाववा लाग्या. प्रमादी बनेला साधुसाध्वी श्रावक-श्राविकाओने सिद्धांतानुसार धर्मोपदेशना तत्त्ववडे जाग्रत करी शुद्ध क्रियानुष्ठान भणी बनाववा एक सरखो विचार राखी अमलमां आणता भारत भूमिना घणा भागोमां मिथ्यांधकारनो अभाव कर्यो. तेमज महान् सूत्र सिद्धांतोनुं दोहन करी साररुप बालावबोध अने भाषाना ग्रंथो तैयार करी भव्य जीवोने भवतारक मार्ग खुल्लो मुक्यो.

एओ सूरीश्वरजीमां उत्तमोत्तम काव्यशक्ति हती. तेथी संस्कृत, मागधी भाषामां अने प्राकृतमां विविधविषयमां काव्य रची चमत्कृती जाहेरमां लावी पोते आपणा उद्धारक थया. एटलुंज नहीं पण भारतवर्षनां दरेक शहेर अने बनतां लगे दरेक गामोमां विचरी असंख्य संकटो सहन करी भव्य जीवो हितार्थे जैन ज्ञानभंडारो तपासी जे जे तत्त्व प्राप्त थयुं ते ते परोपकार निमित्त जाहेरमां मूकी अनेक जीवोनुं श्रेय कर्युं.

मजकुर महदात्माश्रीए रचेलां प्रकरणो पैकी यत्किंचित् जे हाथ लाग्यां तेमानां थोडांक पानगीरुप प्रसिद्धिमां आणवा आ षट् द्रव्य स्वभाव नयविचारादि प्रकरण संग्रह नामक पुस्तक प्रगट करवामां आव्युं छे, अने एथी मानवाने कारण मले छे के तत्वग्राही पुरुषो तत्वसंग्रही पोतानी सद्भावना भर्या ज्ञानमां वृद्धि करी स्वर्गमां विराजेला तेओ महदात्माश्रीने आत्मानंद अर्पशेज.

आ पुस्तकमांनां प्रकरणोमां शुं शुं रहस्यो समायेल छे ते जाणवा माटे कहेवानी जरुर छे के नीचे बतावेलां प्रकरणो तथा स्तवनो, स्तोत्र चैत्य वंदनो, स्तुतिओ सज्झायादि अंदर सिद्धांतोनुं दोहन करी जैन सिद्धांतोनुं केवुं आराधन करवुं ते स्पष्ट बतावेल तेना विषयानुं क्रम निचे मुजब छे.

१ षट् द्रव्य स्वभाव नय विचार, २ श्री अरनाथजिन स्तवन, ३ आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय, ४ मोहवल्ली स्वाध्याय, ५ शीलनो रास, ६ षट द्रव्य स्वाध्याय, ७ नेमि राजुल प्रीति, ८ नेमि राजुल बारमासी, ९ स्थूलिभद्रनी सज्झाय, १० स्थूलिभद्रनी सज्झाय, ११ श्री सीमंधरस्वामीनुं स्तवन, १२ अथ श्री सीमंधरस्वामीनुं स्तवन १३ अथश्री वीरजिणंद आलोयण स्तवन, १४ अथ

श्री शांतिजिन स्तवन, १५ अथश्री नेमिजिन स्तवन, १६ अथश्री आदीश्वर स्तवन, १७ अथश्री रुषभजिन स्तुति, १८ अथश्री पार्श्वजिन स्तुति, १९ अथश्री महावीरजिन स्तुति, २० अथश्री नेमिजिन स्तुति, २१ अथ श्री शांतिजिन स्तुति, २२ अथश्री नेत्रकूट परिपाटि, २३ अथश्री सम्यक्त्व दीपक दोधका, २४ अथश्री श्रोता परीक्षानी सज्झाय, २५ अथश्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विंशाशिका, २६ अथश्री वीतरागाष्टक, २७ अथश्री पांसठा यंत्र उद्धारमय श्री चोविशजिन स्तोत्र. २८ अथश्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम्, २९ अथश्री अनंतनाथजिन स्तवन, ३० श्री चतुर्विंसतिजिन स्तुति, ३१ श्री जिनेंद्र स्तुति. ३२ श्रीपंचतीर्थ स्तुति, ३३ श्री वीशविहरमानजिन नमस्कार. ३४ श्री जिननाम रक्षास्तोत्रम्, ३५ श्रीरुषभादिजिन स्तुति, ३६ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम्, ३७ श्री आदिनाथजिन स्तवन, ३८ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन, ३९ श्रीउपदेश रहस्य सज्झाय, ४० श्री वीसस्थानक तपनी सज्झाय, ४१ श्री एवंति सुकुमालनां चोढालीआं, ४२ वाचनयमकगर्भित रहनेमिजीनी सज्झाय, ४३ श्रावक वारव्रतनीसज्झाय, ४४ सती सुभद्रा सज्झाय ४५ श्री सती अंजनासुंदरीनी

[illegible] नाहीं
[illegible] पुत्र
[illegible] पातानी
[illegible] अंकित.
[illegible] जरा छे के
[illegible] अंश [illegible]
[illegible] विद्युत छे.
[illegible]
[illegible]
[illegible] १२ श्री [illegible]
[illegible]

श्री शांतिजिन स्तवन, १५ अथश्री नेमिजिन स्तवन, १६ अथश्री आदीश्वर स्तवन, १७ अथश्री ऋषभजिन स्तुति, १८ अथश्री पार्श्वजिन स्तुति, १९ अथश्री महावीरजिन स्तुति, २० अथश्री नेमिजिन स्तुति, २१ अथ श्री शांतिजिन स्तुति, २२ अथश्री चैत्रकूट परिपाटि, २३ अथश्री सम्यक्त्व दीपक दोधक, २४ अथश्री श्रोता परीक्षानी सज्झाय, २५ अथश्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विंशाशिका, २६ अथश्री वीतरागाष्टक, २७ अथश्री पांसठ येत्र उद्धारमय श्री चोविशजिन स्तोत्र, २८ अथश्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम्, २९ अथश्री अनंतनाथजिन स्तवन, ३० श्री चतुर्विंशतिजिन स्तुति, ३१ श्री जिनेंद्र स्तुति, ३२ श्रीपंचतीर्थ स्तुति, ३३ श्री वीशविहरमानजिन नमस्कार, ३४ श्री जिननाम रक्षास्तोत्रम्, ३५ श्रीऋषभादिजिन स्तुति, ३६ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम्, ३७ श्री आदिनाथजिन स्तवन, ३८ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन, ३९ श्रीउपदेश रहस्य सज्झाय, ४० श्री वीसस्थानक तपनी सज्झाय, ४१ श्री एवंति सुकुमालनां चोढालीआं, ४२ यावनयमक गर्भित रहनेमिजीनी सज्झाय, ४३ श्रावक बारव्रतनीसज्झाय, ४४ सती सुभद्रा सज्झाय ४५ श्री सती अंजनासुंदरीनी

सज्झाय. ४६ श्री दशारणभद्रनी सज्झाय, ४७ श्री गुरुगुणनी सज्झाय, ४८ श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी सज्झाय, ४९ श्री शत्रुंजय मंडन आदिनाथ स्तोत्राष्टक. ५० श्री विषयविकार त्यागनी सज्झाय, ५१ श्री जिनेश्वरदंडक स्तुति, ५२ सासु वहुना झघडानी सज्झाय ५३ श्री वर्द्धमानजिन स्तुति, ५४ अध्यात्मनी सज्झाय, ५५ श्री वर्तमानचतुर्विंसतिजिनेश्वरस्तुति, ५६ श्री जिनपालित जिनरक्षित स्वाध्याय, ५७ श्री जीरावला पार्श्वजिन स्तोत्र ५८ श्रावकव्रत शिक्षानी सज्झाय, ५९ श्री युगादि देव स्तुति, ६० श्री आचारंगसूत्रना लोकविजयाध्यननी सज्झाय. ६१ अथ श्री शास्त्र पूजाष्टकम्, ६२ त्रेसठ शलाका पुरुषरत्न स्तवन, ६३ निंदा परिहारनी सज्झाय, ६४ श्रीजीरापल्लि पाटक आदीश्वर जिन स्तुति, ६५ अस्वाध्याय विचार सज्झाय, ६६ प्रीति छत्रीशीनी सज्झाय, ६७ अथ श्री राजर्षि सुकोसलजीनी सज्झाय, ६८ श्री जिन आज्ञानी सज्झाय, ६९ अथ श्री सनंतकुमारजीनो रासो, ७० श्री वीर प्रभुना अग्यार गणधरनी स्तुति, ७१ श्री गौतम स्वामीनी स्तुति, ७२ श्री फलवधि मंडण पार्श्वजिन स्तवन, ७३ श्री सुमतिनाथ जिन स्तवन, ७४ श्री सीमंधर जि-

नवर स्तवन, ७५ वर्तमान चोवीश जिन चैत्यवंदनम्, ७६ श्री समेतशिखरजीनुं स्तवन, ७७ श्री वासुपूज्य जिनराज स्तवन, ७८ श्री पार्श्वनाथ जिनवर स्तवन, ७९ आत्मशिक्षानी सज्झाय, ८० श्री ऋषभदत्त ने देवानंदजीनी सज्झाय, ८१ श्री मेघकुमार मुनिनी सज्झाय, ८२ रात्रिभोजन निवारक सज्झाय, ८३ श्री नंदिषेण मुनिनी सज्झाय.

८४ पाक्षिक प्रतिक्रमणनी स्वाध्याय. ८५ श्री धर्म जिनस्तवन. ८६ श्री पार्श्वजिन स्तवन. ८७ श्री महावीर स्वामी स्तवन. ८८ श्री पार्श्वजिन स्तवन. ८९ श्री विमलजिन वासुपूज्यजिन स्तवन. ९० श्री शत्रुंज्य मंडण आदिजिन स्तवन. ९१ श्री महावीर जिनवर स्तवन. ९२ श्री स्तुति प्रारम्भः ९३ श्री पार्श्वनाथचैत्यवंदनम्. ९४ श्री जिनेन्द्रस्तुतिः ९५ श्रीवासुपूज्यस्तुतिः ९६ अथ परमात्मस्तवः ९७ श्री पार्श्वनाथस्तुतिः ९८ श्रीधरणोरगेन्द्रस्तोत्रम्. ९९ श्री महावीर गुणस्थानसूचिका विज्ञप्तिः १०० सामान्यनीतिश्लोकमाला. १०१ श्री सिद्धाचलचैत्यवंदनम्. १०२. श्री युगादिदेवचैत्यवंदनम्, १०३ महावीरस्वामि चैत्यवंदनम् १०४ गिरनारमंडन श्री

नेमिनाथ चैत्य वंदनम्. १०५ श्री पार्श्वजिनचैत्यवंदन. १०६ सुभाषितव्याख्यानसंग्रह.

(१) प्रथम व्याख्यान, (२) व्याख्यान बीजुं (धर्मरुपी कामधेनुंनुं वर्णन.) (३) व्याख्यान त्रीजुं (मायामाये संसारचक्रमां बावन अक्षरनी संख्यामां शास्त्रो निर्माण करेल छे) (४) व्याख्यान चोथुं (शरीरनी अनित्यता दर्शावी छे) (५) व्याख्यान पांचमुं (संसारनी असारतानुं वर्णन) (६) व्याख्यान छठुं (दश दृष्टांते मनुष्य जन्मनी दुर्लभता बतावी छे) (७) व्याख्यान सातमुं (मनुष्य जन्मनी उत्तमता बतावी छे) (८) व्याख्यान आठमुं (शोक निवारणार्थे उठवणाना समय अगर शोकवंतनेशांति आपवानुं बताव्युं छे) (९) व्याख्यान नवमु (धर्मना चार पाया संबंधी) (१०) व्याख्यान दशमुं (मनुष्यजन्ममां गृहस्थनी करणी) (११) व्याख्यान अगीआरमुं (मनुष्य जन्ममां गृहस्थने जिनेश्वरे प्रणितधर्म पालन करवाथी सरलता) (१२) व्याख्यान बारमुं (श्राव-कनुं कृत्य समाप्त.)

१०७ श्री वैराग्यशतक, १०८ श्री जिनेश्वरप्रार्थना, १०९ अथश्री आदिजिनेंद्रचैत्यवंदन,

११० पंचपरमेष्ठिस्तोत्रम्, १११ श्री सिद्धगुणस्तवना, ११२ श्रीगोडी पार्श्वनाथजी-स्तोत्र, ११३ श्री गोडी पार्श्वनाथजी स्तोत्र, ११४ अथ तत्त्वविचारना दुहा सोळा, ११५ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन, ११६ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन, ११७ श्री महावीर स्वामी स्तवन, ११८ उपदेश बत्रीसी, ११९ पुष्पो माटे असत् आक्षेप दाताओ ने उत्तर, १२० श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन, १२१ श्री विमळजिन वासुपूज्यजिन स्तवन, १२२ श्री जिनेंद्रस्तुति, १२३ आत्महितोपदेश. (इत्यादि बीजा विषयो छे.)

आ प्राचीन पूर्वाचार्य निर्मितग्रन्थोनुं अवलोकन करवाथी वाचकवर्गने प्रमोद साथ प्रतीति मळशे के आपणा उपर पूर्वाचार्योनो केटलो बधो (अगाध) उपकार ? ! ! अने एनो बदलो कोइ पण वाळी शकीए तेम नथी; तथापि एमना गुंथेला पुष्पगुच्छरूप आ ग्रन्थगुच्छनी सुवासनाना भोगी भ्रमर जो के तत्त्वरूप मकरंद ग्रहण करी पोतानी आत्मोन्नति करवा प्रवृत्त थइ ए, तो आपणे कंइक सहसांसे पण बदलो वाळवावाला गणाइये अने ते पूज्यपादना अमर आत्माने पुण्यना मा-

श्री श्री शांति. अस्तु !

ए शिवापना अन्यमहान् पुरुषोनां करेलां पण प्रकरणो स्तोत्र स्तवनो स्तुतिओ सज्झायादि आ पुस्तकमां होवाथी तेओनो, अने जंगमयुगप्रवर आचार्य भगवान् श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीनी कृपाप्रसादीनो आस्वाद अनुभवी आनंदमान थइ धर्मध्यानमां तत्पर रहिये तो सर्वना श्रमनी सफलता थाय रहेज !

आ ग्रंथमां कोइ त्रुट सुधारवामां, लखवां समजमां अशुद्धि रही होय तो ते संबंधी हुं मिच्छामिदुक्कडं दइ निर्दोषतानो संगी थाउं, अने इच्छुं छुं के–सदा सर्व जैनवीरो आवां रहस्य गर्भित पुस्तको प्रगट करवामांज तल्लीन रहे एवीज शासनदेवनी प्रेरणा थाओ ! शांतिः शांतिः शांतिः

संवत १९६९ वीर संवत २४३९
सने. १९१२ पर्युषणापर्व.

महदात्माना चरणांबुजनो मधुप
मंगळदास.

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	विचार	विचारो	१७	७	अखन्ड	अखंन्ड
३	७	श्रोत्रं	श्रोत्रें	१ए	ए	छे	छ
५	४	जीवनो	जीवनुं	२३	५	ज्ञोव	जोवे
५	४	कह्यो	कह्युं	४७	५	वार	वारए
७	७	चारित्रवरण	चारित्र मोहनीय	४७	ए	संबंधि	संबंध
१७	१०	द्रव्यास्तिक	द्रव्यार्थिक	४७	११	चरित्र	चारित्र
१७	४	तनाथी	तेनाथी	५०	१	कीधी	कीधो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५०	१	सदेह	संदेह	६३	८	सरूप	स्वरूप
५०	२	वन्द्रः	वन्द्रः ॥	६४	८	जिनेद्रं	जिनेंद्रं
५०	४	संदेवः	संदेव	६५	८	जगन्नाथं	जगन्नाथ
५१	५	प्राव	प्राप	६५	८	अरनाथं	मरनाथं
५१	६	नापस्यः	नाथस्य	६६	१	तवांक्रिपद्मं	तवांघ्रिपद्मं
५१	६	मुमुक	मुमुक्षुः	७२	८	द्द	द्व
५२	१	म	मू	८९	९	लं	लें
५९	३	स्थिति	स्थित	९१	४	सद्गगतिं	सद्गतिं
६०	३	घरे	घरे	९३	८	मोन्हेर	मोन्हेरे
६१	१	सोवन	सोवन	९३	१०	मेर	मेरे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९५	१	गुम	गुण
९५	३	म	म्
९५	९	गाधं	गाधं
[illegible]	९	श्ररेर	श्ररेरे
[illegible]	१	वेग	वेगे
[illegible]	९	ज्ञावंम्	ज्ञावम्
९७	४	कस्याप्ये	कस्याप्य
९८	१	प्रतिचा	प्रतिमा
१०२	२	सातदात्रा	सातदात्र
१०२	३	पात्रमार	पत्रिमार

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१११	९	शीले राग रंगे—नवि रमे	सत्य शीले राग रंग नव नव रमे
१११	१०	मे	ले
११२	२	जागी	जग
११२	५	घावि	घाव
११३	८	चित्ते	चिंते
११३	१०	सकल	सुकल
११३	४	तणो	तणा
११३	५	आपणो	आपणा

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	३	च	चं
१५६	६	१	!
१५७	१	च	चू
१५८	४	तुनु	तनु
१६२	७	पाख	पालि
१६४	१	माट	माटे
१६४	८	पुरुषा	पुरुषो
१६५	४	लेशा	लेश्या
१६५	७	कार्यो	कायो
१६६	५	खेलजल्ल	खेलल्लसंघाण
१६८	५	कर	करे
१६९	६	शोगा	रोगा
१७०	३	नर्के	नर्के
१७१	८	अनु	उनू
१७३	१	सुग्रद्दः	सुगन्द
१७४		जणे पुत्रने अनाथाश्र-ममां सुंपी	मांत्री कुबेरसेना वेश्याए श्रावकोनां बार व्रत अंगीकार कर्यां अने कुबेरदत्ते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०४	११	जव	जप	२१९	१	जवी	जेवी
२०७	५	त	ते	२२२	५	मर्ख	मूर्ख
२०८	१०	मदोन्ममत	मदोन्मत्त	२२२	६	जश्रो	जेओ
२०९	११	पोकत	प्रोकत	२२५	२	यह	यद्द
२११	१	गणाग	गणाप	२२५	१०	न्नत	न्नूत
२११	१	ने	न	२२५	१०	प्रसन्न	प्रसन्नं
२१४	१	न्नत	न्नत्त	२२६	१	वोर	वीरं
२१५	२	राग	रोग	२३३	४	न्नावे	न्नावे
२१५	१०	द	दे				

अनुक्रमणिका.



॥ परम पुरुष प्रणीत—श्रीमज्जिनाय नमः ॥

॥ अथ श्री षड्द्रव्य-स्वभाव-नय विचार लिख्यते. ॥



श्री जिनागम बोहित्थं, संसारार्णव तारणम् ॥
ममेदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥ १ ॥

१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय, ३. आकाशास्तिकाय, ४. काल, ५. पुद्गलास्तिकाय, ६. जीवास्तिकाय,

ए षड्द्रव्य श्री जिनशासनने विषे कह्या, बीजे दर्शने न पामीयें. ए षड्द्रव्यनी द्रव्यजाति तथा पर्याय प्रवाहे आदि तथा अंत नथी, ए मध्ये कालद्रव्य वर्जीने पांच द्रव्यने अस्तिकाय

कहीए. (अस्तयः प्रदेशास्तेषांकायः समूहः) अस्तिकाय प्रदेशनो जे समूह एटले ढगलो ते अस्तिकाय कहीए. कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहीए, जे माटे कालना प्रदेशनो ढगलो नथी, एक समय बीजा समयने न मळे, ते माटे वर्त्तमान समयरूप तेज वस्तुगते कालद्रव्य छे. अतीत एटले के विणसी गयो, अनागत ते हजी उपन्यो नथी, ते माटे अतीत काल, अनागत काल ते परमार्थे अवस्तु छे. व्यवहारे अतीत, अनागत काल कहीए. एज माटे आगमने विषे असंख्याता समय मळे आवली कहीए. असंख्यात आवलीए अंतर्मुहुर्त्त कहीए. एवं उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, कालचक्र पुद्गलपरावर्त्तादिक वर्णव्या छे. पुनः अनंत पुद्गलपरावर्त्त गये छते अतीत काल थाय, अनागत काल अतीत काल करतां अनंतगुणो थाय. शा माटे जे समय आवली मुहूर्त्तादिक जाय छे ते अतीत कालमां भळता जाय छे, तो पण अनागत कालनो अंत नथी आवतो. खुटतो नथी ते माटे अतीत कालथी अनागत काल अनंतगुणो कह्यो. जेम अनागत कालनो अंत नथी, तेम अतीत कालनी आदि नथी. ए अभिप्राये बे अतीत तथा अनागत सरखा थाय. इत्यादिक सर्व

व्यवहारने अर्थे कल्पित छे, परमार्थे वर्तमान समय तेज कालद्रव्य छे, ते माटे कालने प्रदेशना समूहना अभावथी अस्तिकाय न कहीए. ए षट्द्रव्यनां नाम कह्यां. हवे तेनां लक्षण कहे छे.

॥ प्रथम धर्मास्तिकायनां लक्षण कहे छे. ॥

स्वभावे गति परिणामे परिणम्या जे पुद्गलद्रव्य, जीवद्रव्य तेनुं जे अपेक्षा कारण परिणमन व्यापार रहित आधाररूप उदासीन कारण ते धर्मास्तिकाय. जेम गमनागमनादि क्रिया परिणत, माछलाने जल आधाररूप अपेक्षा कारण छे, तेम धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने गमनक्रियाने विषे आधाररूप कह्यो. धर्मास्तिकाय विना जीव पुद्गल चाली शके नहीं, जे अन्यदर्शनी १. उत्क्षेपण, २. अपक्षेपण, ३. आकुंचन, ४. प्रसारण, ५ गमन, ए पांच कर्म माने छे.

१. उत्क्षेपण ते उंचो नांखवो. २. अपक्षेपण ते हेठल नांखवो. ३. आकुंचन ते संकोचवो. ४. प्रसारण ते विस्तारवो. ५. गमन ते चालवो. ए प्रकारे पांच कर्म माने छे. तेउ धर्मास्तिकाय मानता नथी, तेने कारणविना गमनादि कार्य न थाय. ते माटे धर्मास्तिकाय अवश्य मानवो. अने

वर्त्ते. (कालस्य प्रदेशास्तेषां प्रचयः समूहः) अस्तिकाय प्रदेशनो जे समूह एटले वगलो ते अ-
स्तिकाय कहीए. कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहीए, जे माटे कालना प्रदेशनो वगलो नथी, एक
समय बीजा समयने न मले, ते माटे वर्त्तमान समयरूप तेज वस्तुगते कालरूप छे. अतीत एटले
जे विणसी गयो, अनागत ते हजी उपन्यो नथी, ते माटे अतीत काल, अनागत काल ते परमार्थे
असत् छे व्यवहारे अतीत, अनागत काल कहीए. एज माटे आगमने विषे असंख्याता समय
मले आवली कहीए. असंख्यात आवलीए अंतर्मुहूर्त कहीए. एवं उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी, काल-
चक्र पुद्गलपरावर्त्तादिक बहुलता छे. पुनः अनंत पुद्गलपरावर्त्त गये छते अतीत काल थाय,
अनागत काल अतीत काल करतां अनंतगुणो थाय. शा माटे जे समय आवली मुहूर्त्तादिक जाय
छे ते अतीत कालमां मळता जाय छे, तो पण अनागत कालनो अंत नथी आवतो. खुटतो नथी
ते माटे अतीत कालथी अनागत काल अनंतगुणो कह्यो. जेम अनागत कालनो अंत नथी, तेम
अतीत कालनी आदि नथी. ए अभिप्राये बे अतीत तथा अनागत समया ... ... -दिक सर्व

व्यवहारने अर्थे कल्पित छे, परमार्थे वर्त्तमान समय तेज कालद्रव्य छे, ते माटे कालने प्रदेशना समूहना अन्नावथी अस्तिकाय न कहीए. ए षड्द्रव्यनां नाम कह्यां. हवे तेनां लक्षण कहे छे.

॥ प्रथम धर्मास्तिकायनां लक्षण कहे छे. ॥

स्वजाते गति परिणामे परिणम्या जे पुद्गलद्रव्य, जीवद्रव्य तेनुं जे अपेक्षा कारण परिणमन व्यापार रहित आधाररूप उदासीन कारण ते धर्मास्तिकाय. जेम गमनागमनादि क्रिया परिणत, माछलाने जल आधाररूप अपेक्षा कारण छे, तेम धर्मास्तिकाय जीव पुद्गलने गमनक्रियाने विषे आधाररूप कह्यो. धर्मास्तिकाय विना जीव पुद्गल चाली शके नहीं, जे अन्यदर्शनी १. उत्क्षेपण, २. अपक्षेपण, ३. आकुंचन, ४. प्रसारण, ५ गमन, ए पांच कर्म माने छे.

१. उत्क्षेपण ते उंचो नांखवो. २. अपक्षेपण ते हेठल नांखवो. ३. आकुंचन ते संकोचवो. ४. प्रसारण ते विस्तारवो. ५. गमन ते चालवो. ए प्रकारे पांच कर्म माने छे. तेह धर्मास्तिकाय मानता नथी, तेने कारणविना गमनादि कार्य न थाय. ते माटे धर्मास्तिकाय अवश्य मानवो. अने

[illegible] सर्वने पासी निवर्तमान एवा गमनमां
[illegible] करावि छे. ते माटे गतिने विषे नि-
[illegible] एक द्रव्य, लोकाकाशप्रमाण, कारण-
[illegible] नित्य, वर्णरहित, गंध रसरहित, स्पर्शरहित, गुणथी
[illegible] अनंत धर्मात्मक छे. जेथी वस्तु ते अनंत धर्मात्मक छे,
[illegible] ते वस्तु ज नथी. जेम आकाश-कुसुम, धर्मास्तिकायने विषे असंख्यात
[illegible] विस्तारपणुं, निश्चलपणुं, अरूपीपणुं, एकद्रव्यपणुं, ते
[illegible] इत्यादिक अनंत धर्मात्मक रह्या छे.

॥ हवे अधर्मास्तिकायनुं लक्षण कहे छे. ॥

स्वभावार्थ: स्थिति परिणामे परिणम्या जे पुद्गल जीवद्रव्य तेनो स्थितिनो हेतु अपेक्षा-
कारण सदा [illegible] अधर्मास्तिकायद्रव्य कहीए. जेम-पंथीजनने वाट (रस्ते) ॥ २ ॥

छाया सहाय कारण छे. तेम जीव पुद्गल चालताने अधर्मद्रव्य जोरावरी स्थिति करावे नहीं, स्थिति करतां सहाय थाय. अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी एक, क्षेत्रथी लोकप्रमाण, कालथी अनादि अनंत, भावथी पांचवर्णरहित, बे गंधरहित, पांच रसरहित, आठ स्पर्शरहित छे. गुणथी स्थितिगुण. ए पण असंख्यात प्रदेशमय अरूपी, अक्रिय, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञानादि विषयत्व इत्यादि अनंत धर्मात्मक छे.

॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षण कहे छे. ॥

सर्व द्रव्यने जे सर्वदा साधारण सरखो अवकाश मार्गस्थान आपे ते आकाशास्तिकाय कहीए. आकाशास्तिकायना बे प्रकार छे. एक लोकाकाश, बीजो अलोकाकाश. धर्म अधर्मादिके सहित ते लोकाकाश कहीए. धर्मास्तिकायादिकनो अभाव ते अलोकाकाश कहीए. ते अलोकाकाश अनंत छे, सीमा (मर्यादा) रहित छे, एतावता (एटले तेनो छेद) नथी कोइक एम कहेशे जे, जेम लोकनी पासे अलोकनो अवधि छे, अंत छे, तेम आगळ पण अंत हशे ? तेने कहीए जे लोक

तो ज्यां वस्तुरूप छे, ते लोक प्रलोकाकाशनो अवधि घटे, पण आगळ केवळ अन्नावन अलोका- वधिपणुं केम घटे, ससलानुं शींगडुं जेम कोइनो अवधि न थाय, अने जो न्नावरूप अंत मानीए तो ते अभाव द्रव्यरूप नथी, ते माटे अलोकाकाश अनंत जाणवुं. ए आकाश द्रव्य अवस्थित, अक्रियत्व, अरूपीत्व, मध्यादि, विपयश्यादिक अनंत धर्ममय छे. आकाश द्रव्यथी एक, क्षेत्रथी लोकालोक प्रमाण, कालथी अनादि अनंत; न्नावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरहित; गुणथी अवकाश गुण; पण अन्यदर्शनी नैयायिकादिक शब्दगुण आकाश कहे छे. आकाशनो गुण शब्दने माने छे ते खोटुं. शब्द ते पुद्गलीक छे. इंद्रियार्थपणा माटे रूप, रसादिक जेम इंद्रियग्राह्य छे, तेम शब्द पण श्रोत्रेंद्रियग्राह्य छे, ते सर्वने प्रत्यक्ष छे; ते माटे शब्दनो आश्रय आधार न्नाषावर्गणा छे पण आकाश नथी. आकाशनो गुण अवगाहदानपणुंज युक्तिए घटे छे. इति. ॥

॥ हवे काल द्रव्यनुं लक्षण कहे छे. ॥

सकल द्रव्यने पोतपोताना पर्यायने विषे परिणमावे ते काल कहीए. इहां कोइक आचार्य एम ॥ २ ॥

कहे ठे जे कालने परमार्थथी द्रव्य नहीं तो शुं सर्व द्रव्यनुं वर्तनालक्षण पर्यायज ठे. ते पर्यायने विषे अनादि कालिक द्रव्योपचार करे ते कालद्रव्य कहीए, एटले काल ते द्रव्यनो धर्म ठे, पर्याय ठे, द्रव्यना उपचारे द्रव्य कहीए. सूत्रे काल ते जीवाजीवरूपज कह्यो ठे. ते माटे जुदो द्रव्य केम कहीए ?

तेमज जीवाभिगमादि सूत्रने विषे कह्युं ठे जे,–(किमयं भंते कालोत्ति पवुचइ ? गोयमा ! जीवा चेव अजीवा चेव. इति)

जीव अजीव तेज सूत्रे काल कह्यो; पण जूदो काल द्रव्य न कह्यो, बीजा आचार्य एम कहे ठे जे, ज्योतिचक्रने चारे परत्व, अपरत्व, पूर्व पश्चात् नवो पुराणो इत्यादिक जे भासे तेनुं अपेक्षा कारण, उदासीन कारण मनुष्यलोकमां काल द्रव्य ठे. श्री भगवती सूत्रमां पण कह्युं ठे जे, (कइणं भंते ! दवा पन्नत्ता ? गोयमा ! ठ दवापणत्ता–धम्मत्थिकाए जाव अद्धा समए) ए वचनने अनुसारे कालद्रव्य निरूपचरित जाणवो. ए बे मत देखाड्या, तेमां प्रथम मत सूत्र संमत ठे. आ-

गाहनो काळ पर्यायज कह्यो छे. उपचारे द्रव्य पण कह्यो छे. इति तत्वं.

हवे पुद्गलास्तिकायनुं लक्षण कहे छे.

(पूरण गलन धर्माण) पुराय–न्नराय अने गळे–खाली थाय एवो जे धर्मस्वन्नाव ते पुद्गल कहीए, पुद्गलनो परिणमन विचित्र छे. शुन्नपणे परिणमे, अशुन्नपणे परिणमे. सूक्ष्म, बादर, संयोग, विछोह, नवपुराण इत्यादिक अनेक प्रकार छे. पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी अनंत, क्षेत्रथी चौदराज प्रमाण, कालथी अनादि अनंत, न्नावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शसहित, गुणथी परिणमन गुण, इति पुद्गल द्रव्य.

॥ हवे जीवद्रव्यनुं लक्षण कहे छे. ॥

जीवद्रव्य सहज चेतनागुण छे. ते लक्षणेज सर्व अचेतन द्रव्यथी न्निन्न छे, अमूर्त्त अरूपी छे, शुन्नाशुन्न कर्मनो कर्त्ता छे, सुख दुःखनो न्नोक्ता छे, जीवने अने पुद्गलने क्षीर नीरनी पेरे संबंध छे, ते माटे रूपी छे. पोतपोताना देह प्रमाणे छे. ए व्यवहारनयथी जीवनुं स्वरुप कह्युं. वळी

अशुद्ध नयथी ५६३ जेद, धीवगुणगणा प्रमुख जाणवा. निश्चयनयथी सिद्ध जे, सकल कर्म-मल रहित छे. वळी जीवद्रव्य केवो छे तो के,—साकारोपयोग, अनाकारोपयोगवान् छे. पांच ज्ञान, त्रण अज्ञान ते साकारोपयोग कहिए. तेमां मतिज्ञान, श्रुतज्ञान ए बे परोक्ष ज्ञान. अक्ष आत्मा ते थकी पर—अन्य इंद्रिय पांच अने अर्थ घटादिक पदार्थ मळवाथी वस्तुनुं ज्ञान थाय, ते माटे परोक्ष ज्ञान कहीए. अवधिज्ञान तथा मनःपर्यवज्ञान ए बे देशप्रत्यक्ष छे, केवळज्ञान सर्वप्रत्यक्ष छे, अक्ष—कहीए आत्मा तेने जे अतिंद्रियज्ञान—इंद्रियरहित—इंद्रियविनाज वस्तुने जाणे ते प्रत्यक्ष ज्ञान कहीए. ए आठ ज्ञान साकारोपयोग कहीए. जाति वस्तुनो नियत ग्रहणरूप विशेष तेणे करी सहित ते साकारोपयोग. चार दर्शन—तेमां १. चक्षु दर्शन, २. अचक्षु दर्शन, ३ अवधि दर्शन, ४ केवल दर्शन. ए अनाकारोपयोग—आकार विशेष रहित सामान्यरूप वस्तुनुं ग्रहवुं ते अनाकारोपयोग. सामान्य रूप, विशेष रूप सकल ज्ञेय वस्तु छे. ज्ञेय ते ज्ञानने जाणे ते माटे ज्ञान पण सामान्य विशेष रूप छे. जेम वेगळेथी साल, तमाल, ताल, चंपक, अशोक प्रमुख वृक्षनो समुदाय देखाय

छे तेथी सामान्य वृक्षमात्रनी प्रतीति थाय छे, पण विशेष आंबो छे अथवा तालज छे, एवो निश्चय न थाय ते सामान्य रूप अनाकारोपयोग दर्शन कहीए. तेज ताल, तमालादिक वृक्ष समुदायनी पासे आवीने जोइए छीए के ए तालज छे, आंबो छे, इत्यादिक निर्धार थाय ने विशेष रूप साकारोपयोग ज्ञान कहीए. ते बार उपयोगवान् जीवनो लक्षण व्यवहारनयथी कह्यो. शुद्ध निश्चयनयथी केवलज्ञान, केवलदर्शन, ए जीवनुं लक्षण जाणवुं. वळी ए जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी छे. १ अनंत ज्ञान, २. अनंत दर्शन, ३. अनंत चारित्र, ४. अनंत वीर्य, ५. अनंत सुख, ६. अक्षयस्थिति, ७. क्षायिक सम्यक्त्व, ८. अमूर्त्त अनवगाहन, ए आठ गुण सिद्ध जीवना छे. जीवास्तिकाय द्रव्यथी १. अनंत, २. क्षेत्रथी लोक प्रमाण, ३. कालथी अनादि अनंत, ४. भावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरहित, ५. गुणथी उपयोग गुण, इति जीवद्रव्य. एटले षद्रव्यनो विचार संक्षेपथी कह्यो. विस्तार श्रुत समुद्रथी जाणी लेवो.

॥ हवे द्रव्य, गुण, पर्यायनुं लक्षण कहे छे. ॥

गुण पर्यायनुं भाजन–आधार स्थानक, जेमां गुण पर्याय रहे, वळी जे अतीत, अनागत तथा वर्त्तमानकाळे एक स्वरूप होय, पर्यायनी परे फरे नहीं, पलटाय नहीं ते द्रव्य कहीए. सामान्य ते द्रव्यरूप जाणवुं. विशेष ते गुणपर्यायरूप जाणवुं. सहभावी ते गुण कहीए. क्रमभावी (अनुक्रमे) थाय ते पर्याय कहीए. इहां शिष्य प्रश्न करे छे जे सूत्रने विषे द्रव्य, पर्याय बे कह्या छे. पर्यायथी जुदो गुण देखाड्यो नथी. जे सूत्रे एक गुण कालो, द्विगुण कालो, त्रिगुण कालो, इत्यादिक स्थानके जे गुण शब्द कह्यो छे ते संख्यावाची छे. ते माटे द्रव्य गुण, पर्याय, ए नाम केम कहेवाय? गुरु कहे छे के ते भेदनयनी कल्पना करी जुदा देखाड्या. जेम के, तेलनी धारा–अहीं तेल अने धारा ए भिन्न देखाड्यां पण तेलथी धारा जुदी नथी, तेम सहभावी ए लक्षणे करीने गुण पर्याय जुदा कही देखाड्या, पण परमार्थथी भिन्न नथी. तेम संज्ञानामथी जुदा कह्या. १. द्रव्य नाम, २. गुणनाम, ३. पर्यायनाम, संख्यागणती तेथी भेद. द्रव्याणि षट् (द्रव्य ६,) गुण

अनेक, पर्याय अनेक, वळी लक्षणथी भेद द्रव्ये अनेक पर्यायने पामे, ते द्रव्य कहीए. एकथी अन्यने भिन्न करे ते गुण कहीए. परिगमन सर्वत्र व्यापी ते पर्याय कहीए. अभेद नयनी अपेक्षाए द्रव्यथी गुणपर्याय जुदो नथी. गुणपर्यायथी जुदो द्रव्य पदार्थ भासतो नथी, ते माटे भेदाभेद पक्ष स्याद्वाद तेज अंगीकार करवो. इति तत्त्वम्. एटले द्रव्य गुण पर्याय संक्षेपथी कह्या. विस्तारथी श्रुत समुद्रथी जाणी लेवा. जिनाज्ञा विरुद्ध जे कंइ दोष तेनो मिछामि डुक्कडम्.

॥ हवे भाव विचारनुं लक्षण कहे छे. ॥

जीव, अजीवने ते ते रूपे परिणमवुं ते भाव कहीए. ते भावना छ प्रकार छे. १. औपशमिक भाव, २. क्षायिक भाव, ३. क्षायोपशमिक भाव, ४. औदयिक भाव, ५. पारिणामिक भाव, ६. सान्निपातिक भाव, विपाकथी अने प्रदेशथी उदय नावे कर्मदल ते औपशमिक भाव कहीए. जे कर्मक्षयथी थयो ते क्षायिक भाव कहीए. उदय आवे तेनो क्षय, अनुदयनो–सत्तागतनो प्रदेशथी वेदनविपाकथी वेदन न हुवे ते क्षायोपशमिक कहीए. शुभाशुभ कर्मनुं विपाकथी भोगववुं ते

ओदयिक कहीए. परिणमवुं एटले पोतपोताना स्वरूपने अनुजवनवुं तथा पोतपोताना स्वरूपमां रहेवुं ते पारिणामिक जाव कहीए. ए पांच जावनो शब्दार्थ कह्यो. हवे जाव ए पांच जावने संयोगे थाय, ते माटे ठ्ठो जाव पठी निरूपण करशे. प्रथम ओपशमिकजाव कहे ठे—तेना बे जेद ठे. १ उपशम सम्यक्त्व, २ उपशम चारित्र. क्षायिकजावना नव जेद ठे. तेमां ज्ञानावरण, दर्शनावरणकर्मना क्षयथी उपन्या १ केवलज्ञान, २ केवलदर्शन, दर्शनमोह कर्मना क्षयथी ३ क्षायिक सम्यक्त्व, ४ दान, ५ लाज्ञ, ६ जोग, ७ उपजोग, ८ वीर्य, अंतराय कर्मक्षयथी ए पांच लब्धि ए क्षायिक चारित्र ते चारित्रावरणकर्मक्षयथी थाय. ए नव जेद क्षायिकजावना कह्या. हवे क्षायोपशमिक जावना अढार जेद कहे ठे. तेमां १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान, ५ मति अज्ञान, ६ श्रुत अज्ञान, ७ विजंगज्ञान, ८ चक्षुदर्शन, ए अचक्षु दर्शन, १० अवधि दर्शन, ११ दान, १२ लाज्ञ, १३ जोग, १४ उपजोग, १५ वीर्य, १६ क्षायोपशमिकसम्यक्त्व, १७ देशविरति, १८ सर्वविरति. ए अढार जेद क्षायोपशमिक जावना कह्या. त्यां ४ ज्ञान,

१ अज्ञान, ३ दर्शन. ए ज्ञानावरण तथा दर्शनावरण कर्मना क्षयोपशमथी. दानादिक पांच लब्धि अंतरायकर्मना क्षयोपशमथी. तथा दर्शनमोहनीना क्षयोपशमथी सम्यक्त्व. चारित्रमोहनीना क्षयोपशमथी देशविरति तथा सर्वविरति उपजे. औदयिकभावना २१ भेद १ अज्ञान, २ असिद्धपणुं (संसारीपणुं), ३ असंयम (अविरतिपणुं), लेश्या ७ ४–कृष्ण, ५ नील, ६ कापोत, ७ तेजु ८ पद्म, ए शुक्ल, कषाय चार १३. गति चार १७. वेद त्रण २०. मिथ्यात्व २१. ए औदयिकभावना भेद कह्या. हवे पारिणामिक भावना ३ भेद कहे छे. तेमां १ भव्यपणुं, २ अभव्यपणुं, ३ जीवपणुं. ए त्रण अनादि पारिणामिकभावथी वर्त्ते. ए भावना ५३ भेद कह्या.

हवे छठो सन्निपातिकभाव तेना औपशमादिक पांच भावने संयोगे २६ भांगा थाय छे. ते कहे छे. तेमां १० द्विक संयोगिया भांगा, १० त्रिक संयोगिया भांगा, ५ चार संयोगिया भांगा, १–पांच संयोगियो भांगो. ए प्रमाणे २६ भांगा थया, ते कहे छे–१ औपशमिक क्षायिक १-२, २-औपशमिक क्षायोपशमिक १-३, ३ औपशमिक औदयिक १-४, ४ औपशमिक पारिणामिक १-५

५ क्षायिक क्षायोपशमिक २·३, ६ क्षायिक औदयिक २·४, ७ क्षायिक पारिणामिक २·५, ८ क्षायोपशमिक औदयिक ३·४, ए क्षायोपशमिक पारिणामिक ३·५, १० औदयिक पारिणामिक ४·५, ए प्रमाणे दश द्विक संयोगिया जांगा कह्या.

हवे दश त्रिक संयोगिया जांगा कहे छे. १ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक १·२·३, २ औपशमिक, क्षायिक, औदयिक १·२·४, ३ औपशमिक, क्षायिक, पारिणामिक १·२·५, ४ औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक १·३·४, ५ औपशमिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक १·३·५, ६ औपशमिक, औदयिक, पारिणामिक १·४·५, ७ क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक २·३·४, ८ क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक २·३·५, ए क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक २·४·५, १० क्षायोपशमिक, औदयिक, पारिणामिक ३·४·५. ए दश त्रिक संयोगिया जांगा कह्या.—हवे पांच चतुष्क संयोगिया जांगा कहे छे. १ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक १·२·३·४, २ औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक १·२·३·५, ३ औपशमिक, क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वत्व, जव्यपणुं. ए बे त्रिक संयोगिया जांगा संजवी कह्या. चार संयोगिया जांगा ने मंजवेत्ते. १-३-४-५ अने २-३-४-५ ए बे जांगा चार गतिना जीवमां संजवे ठे. औपशमिकजावमां सम्यक्त्व; क्षायोपशमिकजावमां इंद्रियादिक, औदयिक जावथी नरकादिक गति; पारिणामिक जावथी जीवत्वादिक. ए प्रकारे चतुष्क संयोगिया जांगा बे संजवे ठे. अने एकसंयोगियो जांगो मनुष्यने उपशमश्रेणीमां पामीए. ते केवी रीते के कोइक क्षायिक सम्यक्दृष्टि मनुष्य उपशमश्रेणीए चढतो हुए तेने औपशमिकजावे चारित्र, क्षायिकजावे सम्यक्त्व, क्षायोपशमिकजावे इंद्रिय, औदयिकजावे मनुष्यगति, पारिणामिकजावे जीवत्व जव्यत्व. ए प्रकारे ठना सन्निपातिक जावना २६ जांगा प्ररूप्या, एटले ठ जावनी प्ररूपणा जीवने विषे करी.

॥ हवे अजीवने विषे कहे ठे. ॥

त्यां प्रथम आठ कर्मने विषे चिंतवे ठे. ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, ए त्रण कर्मने विषे १ क्षायिक, २ क्षायोपशमिक, ३ पारिणामिक, औदयिक. ए चार जाव होय. मोहनीय कर्मने

विषे पांच न्नाव पामीए. वेदनीय कर्म, आउखा कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म, ए चार कर्मने विषे क्षायिक, औदयिक, पारिणामिक; ए त्रण न्नाव होय. ए प्रकारे आठ कर्मने विषे न्नाव कह्या. १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ काल; ए पारिणामिकन्नावे वर्त्ते छे. १ धर्म, २ अधर्म, ३ आकाशने विषे गति स्थिति अवकाशदान परिणामे परिणम्याथी अनादि पारिणामिक न्नाव छे. कालने पण आवलीयादिक परिणामे परिणम्या माटे अनादि पारिणामिक न्नाव छे. पुद्गल स्कंध मेरु पर्वतादिकने विषे अनादि पारिणामिक न्नाव वर्त्ते छे. औदयिक न्नाव पण थाय एटले कर्मपुद्गल खंध जीव संबंधे पुद्गल विपाकनी कर्मप्रकृतिने उदये औदारिकादिक जे नोकर्म तेना पुद्गलने विषे वर्णादिक होय, माटे अनंत प्रदेशी स्कंध, कर्मवर्गणादिक पुद्गल, ते सर्व औदयिक न्नावे होय, एवी रीते पुद्गल स्कंधने विषे १ पारिणामिकन्नाव, २ औदयिकन्नाव पण थाय छे. एटले अजीवने विषे पण न्नाव कह्या.

॥ हवे सात नयविचार संक्षेपथी कहे छे. ॥

१ नैगमनय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहारनय, ४ ऋजुसूत्र, ५ शब्दनय, ६ समभिरूढ, ७ एवंभूत, ए सात नयनां नाम कह्यां.

॥ प्रथम नैगमनयनुं स्वरूप कहे छे ॥

ज्यां अनेक प्रकारे सामान्य विशेषरूप विचार करी एक पदार्थनो ज्ञान जाणीए, ते नैगमनय कहीए. जेम कोइक पुरुषने कोइ पुरुषे पूछ्युं के अहो पुरुष ! तुं क्यां वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के हुं लोकमां वसुं छुं, एम कहे छे तेने नैगमनयवादी सामान्य विशेषादिक करी पूछे छे के, लोकमां तुं किया लोकमां वसे छे; ऊर्द्धलोक अधोलोक के तिर्यग्लोकमां ? ते वारे तेणे कह्युं के, हुं तिर्यग्लोकमां वसुंछुं. तेवारे नैगमनयवादी बोल्यो के,–तिर्यग्लोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे, तेमां तुं किया द्वीपमां वसे छे ? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं जंबुद्वीपमां वसुंछुं. तेवारे वळी नैगमनयवादी पूछे छे के,–जंबुद्वीपमां भरतादिक अनेक क्षेत्र छे, तेमां तुं किया क्षेत्रमां वसे छे ? तेवारे ते

पुरुष कहे छे के, हुं जरतक्षेत्रमां वसुंछुं. तेवारे वळी नैगमनयवादी पूछे छे के,– हे पुरुष! जरतक्षेत्रमां अनेक गाम तथा नगरादिक छे, तेमां तुं क्यां वसे छे? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं पाटलीपुरमां वसुंछुं. तेवारे नैगमनयवादी बोल्यो के,–पाटलीपुरमां अनेक ब्राह्मण तथा क्षत्रियादिकनां घर छे, तेमां तुं क्यां वसे छे? तेवारे ते कहे छे के, हुं देवदत्तने घेर वसुंछुं. तेवारे वळी पूछे छे के,–देवदत्तने घेर अनेक उरडा, साल, चित्रशाळा, सज्जा तथा गवाक्षादिक छे, तेमां तुं कये ठेकाणे वसे छे? तेवारे तेणे कह्युं के, हुं उरडामां वसुंछुं. एम जे एक जाव सामान्य विशेषादिके बोलीए ते नैगमनय जाणवो. वळी जूतनैगम, जावीनैगम, वर्त्तमाननैगम इत्यादिक अनेक प्रकार नैगमनयना छे. इति नैगमनय विचार.

॥ हवे बीजा संग्रहनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

एक शब्दे करी घणी वस्तुने संग्रहे ते संग्रह कहीए. जेम मार्ग जतां आगळना जागमां वृक्षाळी देखी गहन स्वरूप जाणी कह्युं के, आगळ वन छे. ए प्रकारे जे सामान्य वचन कह्युं ते

संग्रहनय कहीए. जे कारणे वनमां नानाप्रकारनां जेमके,–धव, खदिर, पलाश, आंबो, लींमडो, जांबू, ताल, तमाल, नाग, पुन्नाग, अशोक वृक्षादिक; तथा ससलां, शीयाळवां, हरिण, रोझ, संबर, शुकर, सिंह, व्याघ्रादिक अनेक जीव; तथा जीलनीयाल, अनेक गोकुल, वाव, पुष्करिणी, सरोवरादिक घणा जाव संग्रहे. पण मुख्य वचन एक जे आगळ वन छे; ते कारणथी संग्रहनय जाणवो.

॥ हवे त्रीजा व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

जे सर्व रूपने विशे निश्चयरहित. (निश्चय ते कहीए जे तत्वदृष्टि पुरुष एक पदार्थने विषे अनेक अधिकाधिक जाणे) ते ज्यां नथी परंतु लोक प्रसिद्ध अर्थ जे घट श्याम छे, अथवा रक्त छे, ए रीते जे प्रगट देखाय ते ग्रहे, पण जगत्मां जे घटपटादिक वस्तु छे ते पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श छे एवुं न ग्रहे ते व्यवहारनय जाणवो. ए नय सामान्य अर्थ बोले नहीं, जेम घट कहे ते व्यवहारथी वर्ते, लोकप्रसिद्ध जल आणवाने काजे, वस्त्र पहेरवाने काजे, स्तंभ धरवा

आधार काजे, पुस्तक लखवाने काजे, इत्यादिक लोकप्रसिद्ध एकेक व्यवहार करेवाय. ए व्यवहारनय जाणवो.

॥ हवे चोथा ऋजुसूत्र नयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

अतीत काल ते गयो, अनागत काल ते हजी उपन्यो नथी, तेने अवेवुं ते कुटिलभाव. ते बे परिहरी ऋजु कहेतां सरल वर्तमान काल, जावित भाव तेने सूत्रे ग्रहे ते ऋजुसूत्र कहीए. एटले ए नय अतीत, अनागत न माने, अने वर्तमान माने. वर्तमान पण पोताना कालनो अर्थ माने, पण परकीय न माने. ए नय पांच ज्ञानमां एक श्रुत ज्ञाननेज वांछे. बीजां चार ज्ञानथी मुख्य वृत्तिए परोपकारनुं कारण नथी जणातुं. श्रुत ज्ञान सर्व जीवने हितनुं कारण छे, ते कारणथी ए नय श्रुतज्ञान बहु बहु करी ग्रहे, ए ऋजुसूत्र नय जाणवो.

॥ हवे पांचमा शब्दनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

ऋजुसूत्र नयनी माफक एपण वर्त्तमान कालने ग्रहे. तवारे मांहोमांहे जेर कयो ते कहे छे. ऋजु ॥२२॥

सूत्रनयवादी सामान्यगत अर्थ ग्रहे. पण लींग वचननो भेद कांइ न माने. जेम तट एम कहेतां पुल्लींग बोलाय, अने तटी एम कहेतां स्त्रीलींग शब्द थाय, तटं एम कहेतां नपुंसकलींग थाय पण ऋजुसूत्रनय तट ए शब्दनोज अर्थ ग्रहे. लींगनो विशेष न ग्रहे. अथवा गुरु एक वचन, गुरवः ए बहुवचन अहीं बेहु शब्दे गुरु एटलोज अर्थ ग्रहे. पण एक वचन, बहुवचननो विशेष न गणे. अने शब्दनयवादी शब्दना लिंग वचनादिक जे भेद छे, ते विशेष जुदा जुदा ग्रहे, ते माटे शब्दनय [illegible] प्रकारे कार्यसाधक शब्द बोलाय तेने ए माने. जेम इंद्र शब्दना चार निक्षेपा नाम १-इंद्र, २-स्थापनाइंद्र, ३-द्रव्यइंद्र, ४-भावइंद्र. ए मांहे शब्दनयवादी एम कहे के नाम इंद्र, स्थापना इंद्र, द्रव्य इंद्र, एमने इंद्र केम कहीए ? जे भणी इंद्रनुं जे कार्य ते करी शके नहीं ए कारणथी इंद्र कहेवाय नहीं. आकाश फूलनी पेरे, जेम फूलनुं कार्य ते आकाश कुसुमथी न थाय. तेम अहीं पण जाणवुं. एक भाव इंद्र ते इंद्र कहीए, शक्र कहीए, पुरंदर कहीए. इत्यादिक [illegible] इंद्रनां नाम ते भाव इंद्रने मळे ए शब्दनयविचार कह्यो.

॥ हवे छठा समभिरूढनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

समभिरूढनय एम कहे जे भिन्न शब्दे (शब्द जूदे) अर्थ भिन्नज होय, घट शब्दनो अर्थ भिन्न, कुंभ शब्दार्थ भिन्न, घट शब्दे करी कुंभ कहीए ते अवस्तु कहेवाय. जेम कोइ शिष्य पुछे के, हे भगवन् ! इंद्रने शुं कहीए ? तेवारे श्रीगुरु इंद्रना भाव, अन्य पर्याय शब्द कही देखाडे ते; यथा के, इंद्रने शक्र कहीए, पुरंदर कहीए; शचीपति कहीए. बीजां पण इंद्रनां नाम छे ते कही देखाडे. एटले नामांतरे करी शब्दनय मते एक इंद्र जाणे. समभिरूढवादी इंद्र, शक्र, पुरंदर, ए प्रकारे भिन्नार्थ माने. परम ऐश्वर्य करे ते इंद्रशब्दनो अर्थ. शक्तिप्रधान ते शक्र, पुरंदर शत्रु तेनो नाश करे ते पुरंदर. जे इंद्रशब्दनो अर्थ ते शक्र पुरंदरथी केम मळे, अने शक्र पुरंदर ए इंद्रशब्दना पर्यायी केम मळे, एटले इंद्र, शक्र पुरंदर ए एकार्थी केम कहेवाय. एम भिन्न अर्थे वर्तमान शब्द, जो भिन्न अर्थे पर्याय मेळवीए तो इंद्रनो पर्याय घट केम न कहीए. इत्यादि समभिरूढ नयना अनेक भाव छे. अहीं आगळ दोषाज देखाड्या छे.

॥ हवे सातमा एवंभूतनयनुं स्वरूप कहे छे. ॥

जेवो शब्दार्थ तेवो निश्चय करी स्थापे, जे वस्तु जे काले पोतानी अर्थक्रिया करे ते वस्तु कहीए. जेम "राजति शोभते इतिराजा."–छत्र चामरादिवडे शोभे ते राजा कहीए. ते पर्षदामां बेठां चामर ढलाय तेवारे, परंतु स्नानादिक वेलाए ते अर्थ विना राजा न कहेवाय. एमज कुलवर्द्धन जे कुलने वधारे ते कुलवर्द्धन कहीए. जो ते कुल वधारे नहीं तो ते कुलवर्द्धन केम कहेवाय. एज प्रमाणे रूडो वर्ण ते सुवर्ण, रत्ननो आगर ते रत्नाकर सुधानो आकर ते सुधाकर कहेवाय. एवा अनेक भाव जेवां नाम तेवा परिणाम जे थाय ते एवंभूत नयवादी प्रमाण करे. ते एवंभूत नय संक्षेपथी कह्यो.

हवे ए सात नय द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक नयमां अंतर्भूत थाय. प्रथमना चार नय जे १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ ऋजुसूत्र. ते द्रव्यार्थिक नय कहीए. आगलना त्रण नय शब्द, समभिरूढ, एवंभूत ते पर्यायार्थिक नय कहीए.

हवे ए सात नयमां जो निश्चय भावथी एक नय प्रमाण करी जे आगमनो अर्थ विचारे ते

[illegible] स्फटिकादिक यथा गणाय छे [illegible] प्रकार मानि छे. तेमज कर्मना [illegible] विवेचन छे. दृष्टांत तथा [illegible] परंतु ते श्याम—मलिन यथा कर्म- [illegible] पुद्गलादिकना योगी न थाने [illegible] वाणी छे मजा निर्मल रहे छे.॥४॥ [illegible]

[illegible] मुनि ध्यान०॥ [illegible] वाक मोक्षादिक [illegible] मुनि ध्यान०॥ तृष्णा- [illegible] ॥ ५ ॥ ॥ इति ॥

अर्थ:—[illegible] शुद्ध [illegible] अनंतज्ञान दर्शन चारित्र-आनंद स्वरूप-कर्ता स्वरूप- [illegible] अनंतज्ञान [illegible] तथा अनंतपर्यायी नित्यानित्यादि अनंत

स्वभावी स्वकीय कारकचक्र परिणामी छे, ते हमेशां मने याद आवे छे-ज्ञानदृष्टिगोचरमां विद्यमान भासे छे ते मात्र श्रीअरजिननी कृपानोज प्रताप छे. व्यक्त अने अव्यक्त ए बेउ मिथ्यात्व एकेंद्री-आदि समस्त जीवने होय छे ते पैकी व्यक्तमिथ्यात्व पंचेंद्रियनेज होय छे तेथी ते कुदेव कुगुरु अने कुधर्ममां लयलीन-मग्न थइ महा मोहरूप मदिरानी केफमां छाकी रहेल होय छे तेना प्रतापथी ते शुद्ध देव शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मने पिछानी शकतो नथी. पूर्ण मिथ्यात्वरूप मोहमां छकाथी बौद्ध-सांख्य-जैमिनीय-वैशेषिक-गौतमीय-भट्ट-प्रभाकर-मीमांसक आदि विविध मतनी कल्पनाने लीधे शुद्ध देव-गुरु-धर्म जाणी न शके; पण श्रीप्रभुना दर्शनरूप मिथ्यात्वनो मूल दूर थइ जतां निजधर्मनी प्राप्ति थइ, तेथी अमल-कर्ममलरहित अखंड-खंडित न थाय तेवुं स्वात्मस्वरूप स्वभाव आत्मिकभाव पवित्र ध्यानना आदरवाथी पर गुण निवर्त्तनाथी स्वीयगुणनी प्रवर्त्तनारूपे विभावनुं विरमण अने स्वभावनी रमणता थइ तेना भावें परिणमन प्रवृत्ति ए बेउ एक धर्म थवाथी हे प्रभु! आपना चरणकमलनी सेवना आ वाचमुनि निरंतर निजगुणरागी बनीने आचरे छे अर्थात्

आपनाथ ध्यानमां मन थइ रहेल छे. ॥५॥ इति श्रीअरजिन स्तवन.

॥ अथ आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय. ॥

सुण सुण जीवरे शीखामण श्री जिनतणी, जे ताखेरे हित कारण त्रिभुवन धणी, अनुयोगेरे आवश्यक करवो कह्यो, साहु साहुणीरे श्रावक श्राविका सदह्यो ॥त्रुटक॥ सदहिये निरतो करे त्रणिपण दिवस निसि अंतरालए, अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचारा यथाशक्ति टालए, जिनवयण वाणि विमल पाणि पापपंक पखालए, भवभ्रमण करतां उल्लट लाधी आण निरति पालए॥१॥चालती॥विधि विनार वार अनंति तें कर्यो, आवश्यकरे काज न कोइ तुज सर्यो, जिम भोजनरे विधिशुं कीधे जीरीये, ते अविधिरे कीधे इह न जीरीये॥त्रुटक॥इम जाणि विधिश्युं करो निरतो सूत्र साखे संभ-लि, संसार भ्रान्ति सर्व टाली जेम पुगे मन रली, एक खंध छह अध्ययन तेनां ग्रंथमान विचारीये, सतह्धिक पचवीस (१२५) श्लोकनी सूत्रथी मन धारिये ॥२॥चालती॥ तिह पहेलोरे सामायक समता करि, ते करियेरे सावद्य नकरु मनेधरि, तीन श्लोकारे अक्षर पणवीस गणो, बत्रीसेरे अक्षर श्लोक

व मनत्तणो ॥त्रुण॥मनत्तणो तसु फल कह्यो जिणवर मोक्खना सुख पामिये, मद मान मच्छर लोज टाली कर्मअरि शिर नामिये; तसु दोष त्रीस तु आगला तजिटालि सावद्य परिहरि, मन वचन दस दस च्यार काया दोष एम निराकरि ॥३॥चालती॥ हवे त्रीजोरे वांदणसज्झो जाणीए, तसु अक्षररे वर्गं पंचानन माणिये; शतश्लोकारे अक्षर एकत्रीस साठिया, फल वंदणरे करे निरोवित्ति साठिया ॥त्रुण॥ वंदनय त्रीजो ऋपण सातें श्लोक अक्षर तुइ सुणो, करे निर्जर जावे देतां राग बंध ते भुज्ज गणो; सौना-ग्यवंत सरूप जनने प्रीतिकारी सो हुवे, आदेयवयण जिणाण फल ते एह परजव जोगवे ॥ ४ ॥ ॥दुहा॥ आवश्यक पणवीस तसु, दोष बत्रीस विचार ॥ टालि दूषण वंदिये, गुरुगुणमणिजंडार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ पडिक्कमणारे तुरिय ऋपण तह सूत्र ए, न कचश्चवरे इरियावहीयति सूत्रए; सवि श्लोकारे ठिहुत्तरि अधिक अढार ए, ते अक्षररे सय चउवीसत्ति साठ ए॥त्रुण॥इम धारि अक्षर अरथ सूतो करे पडिक्कमणुं सदा, व्रत छिद्र ढांके रहित आश्रव सबल चारित्र नहु कदा; सावधान पंचय समिति गुप्ति गुपत चरण न वेगलो,इम कह्यो उत्तराध्ययन गणधर तेहनो फल सांजलो॥६॥चालती ॥ काउस्स-

[illegible]

[illegible] सर्वांग [illegible]

[illegible] तदवा, [illegible]

[illegible] मुनी, [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ३, [illegible]

[illegible] १०, [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

एम त्रावपण सद्दद; एम सव मला थया एकुनार पथापाग चितघरा, वदणय युग गुरुशय ३२ तासु साखे कचरो ॥१०॥ चालती ॥ ग्रंथ संख्यारे एकसो छप्पन साहिया,ते श्लोकारे अक्षर एकत्री साहिया;वारंवारंरे गणना करतां ते सही, श्लोक एकसोरे पंचवीसाधिकते नहीं ॥त्रु०॥ श्रुति जाणी इम एगतीस श्लोका अक्षरा इगतीस ए, ते काढी निरतो धरो करिये एकसो पचवीस ए; अध्ययनि चवथें आठ श्लोका तेर अक्षर पंचमें, अठ चवदे श्लोकात्रीस वीसे क्षण अक्षर छठमें ॥११॥चालती॥ फल एहनोरे अध्ययने गुणत्रीसमें, तेह जाणोरे विस्तरी जिण चवत्रीसमें; इम सांभलीरे उत्तम आवश्यके रमे,मानवजनरे लाधो आलि न निगमे॥त्रु०॥निगमे नहीं यति साहु साहुणि सावया वली साविया, जिनवचनरसे जसु चित्त लाग्यो नमे तसु सुरनाविया; निर्युक्ति लघुगुरुवृत्तिचुर्णी आवश्यकथी उद्धरी,सज्झाय कीधो श्री समरचंदे सुगुरुमुख धारी करी॥१२॥दुहो॥ चार सहस अक्षर सवे, गणना करो प्रमाण ॥ श्रीपार्श्वचंद्र विनयी कहे, धरज्यो हिये सुजाण ॥ १३ ॥ इतिश्री आवश्यक अक्षर प्रमाण स्वाध्याय. ॥

॥ अथ श्री मोहवल्ली भास. ॥

॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरजी सद्गुरु भ्योनमः ॥ ढाल वणजारानी ॥ मोह लाग्योरे चरम जिणेसर वीर, गर्भवास मांही छतां मोह लाग्योरे ॥ मो० ॥ व्रत लेवानो नीम, मातपिता मुज जीवतां मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ प्रसनचंद ऋषिराय ॥ काननमें काउसग रह्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ सांभली पुत्रनी वात, मोहराय वाणे ग्रह्यो ॥ मो० २ ॥ मो० ॥ श्री श्रेणीकनो पुत्र, नंदिखेण तरीलो यति ॥ मो० मो० ॥ ते वेश्या घरजाइ, वेष मूकी थयो घरमती ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ आद्रकुमर ऋषिराय, पंचसें मूकी सुंदरी ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते पण नारिवास, वरस चोवीस परण्यो फिरी ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ अरनक अणगार, कामरागते रोलव्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ तिण अवसर एक नारि, घरमांहे घाली भोलव्यो ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ आषाढभूत मुनिंद, गयो नाटिकघर विहरतो ॥ मो० मो० ॥ दीठो लाडुकाज, नाटकणी रूप फेरतो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ६ ॥ ते मुनिवर ततकाल, हावभावथी घर रह्यो, ॥ मो० मो० ॥ श्री ललितांगकुमार,

संचाराने जल वह्यो ॥ मो० मो० ॥७॥ संभूत अणसणमांहि, वेणी फरसथी चित चल्यो ॥ मो० मो० ॥ चित्र सरीखा मित्र, तेहने वचनें नवि जळ्यो ॥ मो० ॥८॥ मो० रहनेमि चरम शरीर, राजुल देखी मन पम्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ कोणिक राजने काज, कणपिंजर श्रेणिक जम्यो ॥ मो० ॥९॥ मो०॥ कनकरथे नकसांन, पुत्र विणाम्या लोन्दथी ॥ मो०॥मो० ॥ श्री सिद्धांजवसूरि, आंसु ढव्यां सुत मोहथी ॥ मो० ॥ १०॥मो०॥ मयणरेहाने रूपे, हण्यो सहोदर मणिरथे ॥मो० ॥ मो० ॥ पदम जिणेसरमाय, अंध टली देखे पथे ॥ मो० ॥ ११ मो० ॥ दीरघ रावण हेत, चुल-णीए सुत मारियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ मंत्रीसर परपंच, पुरुषरतन उगारीओ ॥ मो० ॥१२॥ मो०॥ हरिना त्रुटया माण, बलभद्र लेइ फिरतो जुओ ॥ मो० ॥ मो० ॥ ब्रह्मदत्त ठेल्ले काले, कुरुमती मुखे लवतो मुओ ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ सगरतणा सवि पुत्र, साथे गया यममंदिरे ॥ मो०॥ मो० ॥ तेने दीधी सीख, ते थादर चित्त दृढ करे ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ अइमत्तो ऋषिवाल, कावलीये जल मोहतो ॥मो०॥मो०॥ कुमर इलाची पुत्र, नाटकणी मन मोहतो ॥मो०॥१५॥मो०॥

हणो एहवे काज, धनकाइड रहवे कह्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ कीधो बहु संहार, कोणीक चेडाशुं
ओलगो ॥मो०॥१६॥मो०॥ रा.त्रिजइबो दार, देशे पूरे दिन ज्ञने ॥मो०॥मो०॥ कषयमाता पुत्र, पिता
दशपो बहु उठे ॥मो०॥१७॥ मो० ॥ जइबकुनो शिष्य, नृप थयो घरमांहि वसी ॥मो०॥मो०॥
पूछयो कोइया जोइ, मोहगुणठाणेचड्यो ॥मो०॥१८॥मो०॥ बाहुबल नरतेश, कीधा झगडा अति
घणा ॥ मो० मो० ॥ रामरावण रति देव, तीना कारे विमंबणा ॥ मो० ॥ १९ ॥ मो० ॥ दानव
रूप रस गंध, फरस विषय रस रंजिये ॥मो०॥ मो० मृगजो वलिय पतंग, मीन ज्ञमर गज गंजिये
॥ मो० ॥ २० ॥मो०॥ देखो मोहनरुप, विन दंर चीरज मदा, ॥ मो० मो० ॥ ते तो पुरुष प्रधान
हुआ न एमे महीहरा ॥मो०॥२१॥मो०॥ गौतम जंबु मेघ, वयरकुमर पुलिभद्र वली ॥मो०॥मो०॥ ए
मोटा मुनिराज,ननता वावे ननरजी॥मो०॥२२॥मो०॥थंजनयपरवरतन,थंजण पाम सेवा विवे॥मो०॥
मो०॥ ए रदनवंसमूह जोय, कहे मद्ध जोड रहो मुनि ॥ मोह ज्ञागवारे ॥ मो० ॥ २३ ॥
इति श्री मोहराजा नाम संपूर्ण ॥

॥ ॐ नमः ॥ अथ श्री शीलनो रास.॥

पहिलुं प्रणाम करुं जिनराय, लागुंजी गोयम गणधर पाय ॥ सुगुरुवाणी वली संभरु, भूलो अक्षर आणजो ठाय ॥ रास रचीशुं रलिआमणो ॥ जे सुणी शील हीये थिर थाय ॥ कोकिल जे कलरव करे, मास वसंते ते अंब पसाय ॥ १ ॥ के सील अखंडित सेवज्यो, धर्म अछेजी अनेक प्रकार ॥ सील समाणोजी को नहीं, सूत्र पुराण कुराण विचार ॥ सील सहु कोइ वर्णवे भाइ सीलसुं मंडजो प्रीति अपार ॥ पररमणी जणणी गिणो, आंख मींची मतकरो अंधार ॥ कालेश्री परभवे पहोचयो, दुख देखि तिहां कामविकार ॥ आकडी अंत न लागशे, तुमे संबल लेज्योजी समकित सार ॥ सील संघाती जो मिले, रतनजडित जाणुं सोवनहार ॥ तणु सिणगार सोहामणो, सील समो नहीं कोइ आधार ॥ के सील अखंडित सेवज्यो ॥ आंचली ॥ सीलना गुण किहां किह मुज नाण, सरसलिलां नहीं कुंभनो ठाण ॥ भुजे न अंबुधि कोइ तरे, जो पण मुज अछे अक्षर विनाण ॥ तो पण सील वखाणशुं, हास्य करो मत कोइ सुजाण ॥ बालक वांह

पसारीने, शुं न कहे कहो सायरमाण ॥ २ ॥ के० ॥ जेवो चंचल कुंजरकान, वेगे पके जिम पाको पान ॥ जेवी चंचल वीजुली, जेवो चंचल सांझनो वान ॥ कानअणी जल जेहवो, तेवो योवनशुं अभिमान ॥ क्षिण क्षिण जाये छे छीजतो, विषय म राचेजो विषसमान ॥ ३ ॥ के० ॥ पंडित बोलिजे तेहवो बोल, जेहवो जाणिजे एह अमोल ॥ जिम तिम बोल न बोलीजे, विषय कह्या किम विर समतोल ॥ अचल सिद्धारथ अंतरो, चिंतव्यो दुःख न देइ निटोल ॥ जो विष भोजन वारीजे, विषय चिंत्यां जीव जाये ढंढोल ॥ ४ ॥ के० ॥ चोथे संवरे दसमेजी अंग, अर्थ कह्यो ते सुणो मन रंग ॥ अंगथी आलस परिहरो, चतुर चतुरविध संघने संग ॥ वाणी जोजनगामिनी, श्री वीर वखाणिय सील सुचंग ॥ सगुण मानस मन मानीओ, ए कहेजो सदा सील अभंग ॥ ५ ॥ के० ॥ ग्रहगणमांहे वडो जिम चंद, फूलमांहे वडो जिम अरविंद ॥ भूखणे मोड भलो भणयो, मणिहिं वैडूर्य जेम अमंद ॥ मेरु महीधर मांहे वडो, गजिहिं ऐरावण जेम गइंद ॥ ध्यानह शुकल सराहि जे, धर्म मांहे तिम सील नरिंद ॥ ६ ॥के०॥ चंदनमांहे गोसीस वखाणि,

वनहमांहे वनो नंदन जाणि ॥ सरितह सीत वनी सही, साधुमांहे वनो जेम अरिहंत ॥ वृक्षह जंबू सुदंसणा, वस्त्रह खोम जिसो जसवंत ॥ लेसह शुक्ल सुलक्षणा, ज्ञानमांहे वनो केवलज्ञान ॥ दानमांहे वनो अजय जे दान, थागरे अंबुधि जाणिजे, धर्ममांहे तेम सील प्रधान ॥ ७ ॥ के० ॥ सगुण माणस तमे सांजलो रास, जो अहे जोवन वनह निवास, तां सुरखा रहजो सही, इण वने मुग्धने मंम्मिओ पास, वेसे विलासे म जूलज्यो, इण वने दलपति आवे हे वास, आखे अणी किमे उगरो, मोहे हे अंग करे मुखे हास, इण वने वसी राक्षसी, दृष्टि देखत करे सीलह ग्रास ॥ ८ ॥ इण वने चित्तनी चोरणहारि, कामकटक मोह नायका नारि ॥ लोयण बाणह वरसती लहकती वेण तीखी तरवार, लाख चतुर आगे लुटिया, अरहनकादिक आद्रकुमार, संजम धन लीधोरे धूतारि,वइर समा विरला हवे, जेणे उतारियस्त्री अहंकार, ते सरिखा तुमे नहीं झुझणहार, नारीनी संगति वारहीआरि ॥ ९ ॥ के० अथिर जिसी अहे आजनी वांप, अथिर जिसी होवे कायर वांह, अथिर कन्याधन जेहवो, अथिर जिसो अहे गारनो नेह, अथिर जिसो राजा डुवलो

अथिर जाणे तिसो नारीनो नेह, प्राणजो आपे जे एहने, छेहरू तोइ दिखाले छेह ॥ १० ॥
के० ॥ जो पण एहनो नीच आचार, जे कहिये परदोष लगार, तोपण सुयणह सीखवुं, इण मुग्धे
मूंह्यो अछे सर्व संसार, मधुर वचने मत वीससो, विरचत कांइ न लावे वार, स्वारथ देखी
असीझतो ॥ नारि विणासे निज ज्नरतार, सूरियकंत संज्नारजो, नारीना अवगुणको नहीं पार॥११॥
के० ॥ अवर सामु जोवे सविकार, अवरसुं ज्नोगवे ज्नोग सिंगार. रमणितो अवरने रींझवे, अवरने
चिंतवे चित्त मझार, दूपण अवरह शिर दिये, कुम तणी कोठि कपटज्नंमार, कलह काजल तणी
कुंपली, एहनो नेह तिसो जिसो लिंपणो छार ॥ १२ ॥ के० ॥ नारीने चरित न लाज्नेजी अंत,
अंदर देखीने हुए ज्नयभ्रंत, साप ओसीसे देइ सुवे, मेहेली लंघतां डुःख लहंत, गिरिशिखरे सुखे
संचरे, संकल घाए न क्रिंपियमंत, पुहपहणीधरणी ढुले, मुगध न छे अछे बहु बुद्धिमंत ॥ १३ ॥
के० ॥ खिणमांहे रंग विरंग करंत, मरण जीवण खिणमांहे दियंत, घारिनो नाथ धुजावियो,
नरकेसुं देवह नारी ढलंत, निरखज्यो नेज्नर पंमिता, पम्याद पछे सहुको पतीजंत, पहिलुंही

आप संवाहिज्यो, मतकरो रमणिशुं रामत खंत ॥ १४ ॥ के० ॥ काम करालित लोपेकार, कुल तणे केम्हे उमावे ठार, जिम मनमाने तिम करे, ऊंच ठंमी करे नीच आचार, निश्चे तो वाव पाथी वुरी, मुंज राजातणो कीधो संहार, ज्रतहरी जिम जाणज्यो, नेह न कीज्यो नारी डुख दातार ॥ १५ ॥ के० ॥ जे तरुणी तजे निजज्रतार, ते केम चाले अवरनी लार, अंतर आंख उघाम्हजो, प्रेम देखाम्हे दिन दोय चार, वित्त गये न रहे घरबार, लाज केहनी कुलटा करे, मरण लगे तव हुइ मनिसाल, स्त्री तणी संगति कोम्हि कुहाल ॥ १६ ॥ के० ॥ नाम कहे सुहरो सब लोप, विष समो कहुत तो अवर न कोप, फोम्हीय नाम जे सिपली, तृष्णा लागे पर अगनि ज्युं सोप, नाम ठे अबल त्युं नारीनो, पण इण सरिखो सबल न कोप, साहमा होइयें तो हारिजे, पूठ देतां इहां खोम्ह न होय ॥१७॥ के०॥ गवरीने रूपे जीत्यो इण ईश, जेप न नामतो केहने सीस, नट जेम तेह नचावियो, राधाना रूपे जीत्यो जडुराय, विहि चित चालव्यो सारद माय, ताप-सणी सुरपति उव्यो, त्रिज्रुवन जीती लगावीओ पाय, आप हुइ सहु सामिणी, जिन तणे नामे

नाठी जाय ॥ १८ ॥ के० ॥ साच कह्यो तमे ए न हुवे तात, सहुजेही नीच होय नारीनी जात, दोष घो ते शिर ऊपरे, पण एक सांजलजो अम वात, नर प्रत्ये कहे कामिनी, आपणो दोष न देखेजी कोय, स्त्रिया कुलंछन केम चढे, पुरुष जेह सर्व सुलक्षणा होय, वाजती ताली कीह दीधे, एकण हाथे वजावीने जोय ॥ १९ ॥ के० ॥ सघलीही नारी न चंचल होय, पुरुष सहु जला मत कहो कोय, सहु सरखी नहि अंगुली, चउ वरणे गुण अवगुण संति, पुरुषहि केइ पर स्त्रिय रमे, हसी हसी परघर पाय ठवंता, पगतले मरण न पेख हि, झाइ हाथे दीवो कीये कुवे पड़ंता ॥ २० ॥ के० ॥ नारीहि केइक होइ सुसील, जे लहे सर्गने शिव तणी लील, सत्यभामा शिवासुदरी, द्रौपदी लक्षणा ने दयमंती॥ चंदनबाल कलावती, मयनरेहा पउमावइ कुंति, जदुरायराणी रुकमिणी, नाम लीधे ज्यां पातक जंति ॥ २१ ॥ के० ॥ सुरतरु उग्यो अंगणे कलणी रोपे ते थाक धतूर, असुचि करे मुखवास ते, गंमीने सीतल सुरभि कपूर, हस्ती साटे खर संग्रहे, रतन चिंतामणी राखिने दूर, काच करे कुमति ग्रहे, विषय सेवे जे चोथो व्रत चूर;

॥ २२ ॥ के० कूकम मोरद जेम मंजार, सीलवंतां तिसि संगते नार, प्राण विनाशद चूकवे, अन्नयाराणी तणुं चरित चितारी, शेठ सुदंसण किम कियो, गामे गामे नहीं निर्मल नारी, सतिय सुन्नद्रा सारिखी, जिण तिणसुं लाइ स्नेह निवारी, वचन अमारम्हो अवधारि, तिम करो जिम कियो नेमिकुमारे ॥ २३ ॥ के० ॥ कवण ते नेमिजी कवि कहे वात, केम पाढ्यो तेणे ब्रह्म विख्यात; सीलवती ते कुण सुंदरी, जो तमे ज्ञाखशो एह दिठंत, तो अम सांभलवा तणी खंत, आलस अंगे न आणशो; सेवस्यां सील सदा फलवंत, ध्यावसुं एकज श्री अरिहंत ॥ २४ ॥ के० ॥ नयर सोरीपुरि राजीओ, समुद्रविजय राजा तसु घरनारि, सीलवती राणी शिवादेवी तसु घरे, यतर्या नेमिकुमार, लोकनो नाथ दमीसरसार, श्याम शरीरे शोन्नता, पेहेल संघयण ने पेहेल ९ ठाण, सहस अठोत्तर लक्षण विन्नाण, रूप गुणे अति आगला, जेनी वरती छे त्रिभुवने आण ॥२५॥ के० ॥ एक दिन कृष्ण करे मन खंति. बंधु विवाह करुं किसि ज्ञांति, कवण कन्या परणावीजे, असरिस संग न शोन्न लहंत, चिंतवतां चित्ते सांभरे, कुंवरी अछे एक बहु गुणवंत, उग्रसेन घर

रयण दीपंत, वीजलीना झमकार ज्युं, रूपे रंज्ञा अने सीले शोज्ञंत, नामे राजेमती राजती नेमिजी थीजशे तेहनो कंत ॥ २६ ॥ के० ॥ कृष्णजी लेख पठावणहार, उग्रसेन प्रत्ये कहे ले विचार, कुंवरि तुमारे राजीमति, परणशे बंधव नेमिकुमार, ए अछे कामतणो अवतार, वचन अमारो मानज्यो, ए समो अवर न कोइ ज्ञुपाल, वानर कंठे न शोज्ञे हार, सारिखे सारिखो जो मले, तो जुगतो हुवे जगत आचार ॥ २७ ॥ के० ॥ वात सुणत राजा अधिक उछाह, राजेमति तणो रच्यो विवाह, घर घर उछव अति घणा, घर घर बंधि जे वंदनमाल, घर घर होय ले वधामणा, घर घर तोरण मंगलचार, कुंवरिने कीजे ले सहु शणगार, उग्रसेन कृष्णने विनवे, वेगे लइ आवज्यो नेमिकुमार, कुंवरीना जीवनो जे आधार ॥ २८ ॥ के० ॥ स्नान करे जिन उत्तरोत्तर, कौतुक मंगल कीध शरीर, आज्ञरणे अति दीपता, हस्ती आरूढ थया वरवीर, शोज्ञे ले छत्र सोहामणो, विंहु पासे चामर ढाले ले धीर, वाजित्र वाजे ले सुदिर गंज्ञीर, चतुरंग सेनशुं परवर्या, स्वामी शोज्ञे जेम मुकुटे हीर ॥ २९ ॥ के० ॥ क्रमे क्रमे आविया

पोल डुवार, सहिय साहेलियां हरख अपार, कुअरिजी थोने वधामणी, नेमिजी आव्याहे तोरण वाहार, हार दियानोहे आपीने,कांइ कहो सखी एवम्हो वात, म्हारो फुरके ठ दाहिणो गात,नाहसुं संग नहीं मिले, एह विना गुण लाव न खात॥ ३०॥ के०॥ तिहां प्रभु पेखियां सारस मोर, तेतर पारेवा चीडह चकोर, सुअर संवर हरिणला, कुरलता देखी करंत ए सोर, सारहीसुं स्वामी इम जणे, एहसुं एवम्हो कांइ कियो जोर॥ ३१ ॥ के० ॥ सारही बोले ठे बे कर जोडी, इणि खिणे कोइ न लागे खोड, स्वामी न जाणो ठो शुं तमे, गोरवे जिमस्ये यादव कोड, उग्रसेन चित्ते आणंदियो, शीश तमारे शोजशे मोड ॥ ३२ ॥ के० ॥ स्वामी जणे धिग एह विवाह, जिहां होशे एटला जीवनो दाह, एणे अपराध न को कियो, कांइ विणासिजे एह अनाह, जीवित सहु किहीं वालहो, नेमि नयणे झरे नीरप्रवाह, परदुख दोये विरलो दुखी, जीवदया करे यादवनाह ॥ ३३ ॥ के० ॥ त्रोकम्हे कांइ न पाम्हिय वाट, मींढे न मार्या बांजण जाट, गामरां गाम न उजाडीउ; आपणी पुंठे जके वधे जार, महिष ते सा जणी मारीजे, गालिय ठल नवि करे लगार,

काइ विणासिजे ए निरधार ॥ ३४ ॥ के० ॥ तीतर केहने नवि दिये गाल, चिम्हीय कमेम्हीअ कांइ परी जाल, गुनह न कोइ कबूतरां, राते हुंतो चकवा चित दुःख, संप्रति कोइ न दीसे सुख, मार यो कां हत करो, परजीव पीडतां होय न सुख्ख ॥ ३५ ॥ के० ॥ मोर लवे मधुरो मुखे सार, शकुन रूमो सही सारस नाद, कोयल कोइ न दुहव्यो, एतो रूखें वासो वसे गयणे विहार, आथमे आदित्य न ले आहार, परघरे खान्न न पाम्हे, झूझ न मांम्हे लइ हथिआर, पंखियाने केम कीजे प्रहार, ॥ ३६ ॥ के० ॥ कहे हरिणी तव हरिणसुं, मारा वालकमां अछे वनह मझार, एहवे कुण करसि तेहनी सार, पाणीय कोण तिहां पावशे, द्रोवकवल कुण आपशे तास; सींह साहे तिके वीहतां, नासीने आवशे केहने पास, मात विना ढोरु होय निरास, सालनो हवे नहीं कोइ विसास, ॥ ३७ ॥ के० ॥ हरण कहे हरिणी सुणो, थांका वालकमा न विणाससे कोय, जो एक दैवज वंक न होय, दैव समे सहुको समो, दैव वांके सहु वंकज जोय, अमृत पीजे विषे विषज होय, सुख दुःख दैव दीधा हुवे, मरण जीवण सहु आपसी सोय, हिये न हारिजे

मुधा म रोष ॥ ३८ ॥ के० ॥ संवरसुं कहे संवरी, गरज्ज वे मारा उदर मझार, आज पूरादिन एहने, कंतजी किणी परे एह उवारी, आपणो दोष तो को नहीं, अम्हे भुरां ग्रं एह संजारि संजारि, संवर चाहे वे चिहु दीसे, मुख विलखे आंखे आंसुधार, मिपे कोइ न दीसेहे राखणहार, किणहीने मन करुणा नहीं, कंता नेमजी आगल करोने पुकार, बालक माय न मारही, अबलाने स्वामी उवेलणहार ॥ ३९ ॥ के० ॥ जीव इशी विधि विलवता देख, स्वामी हाहारव करे विशेष, कायर कांइ विणासिजे, ए वध परतख नरकनिवास, जाणीने किम कीजे विपप्रास, परजीव किमे न पीमीजे, पर दुःख देत किसी सुख आश, तिम करुं जिम न हुए एहनो नाश, सारहीने देइ सवि अलंकार, रथ थकी ऊतर्या नेमिकुमार, कर्म कह्यो न करे किस्युं, ठोमिया बंधन त्रोमिया जाल, अजय दीधो पशु पंखियां, धन धन जीवदयाप्रतिपाल ॥ ४० ॥ के० ॥ गगने कानने जात देइ आसीस, पशु अने पंखिया जय जगदीस, त्रिजुवन पीहर तुं सही, बली-हार तुज जणणी तणी आज, पुत्ररतन जिणे जनमियो, स्वामी साध्यां तुमे पारकां काज,

नवलते नीर झरे असराल, जाणेके उलस्यो पाउस दहे हिये करगतधार ॥ ५० ॥ के० ॥ दहे घात, चातक ज्युं प्रिय प्रिय चवे, हियफलो सींचे सा सलखणी बाल, कारण ए मने आवे, हवे नागमे मारे नेमिकुमार, विरह वैसंनर तनु दहे, तो जिन दाझे जीव आधार ॥ ५१ ॥ के० ॥ नाहने दीधे ओलंजना, स्वामी हुता तुमे दीनदयाल, अमतणी कांइ न कीध संभाल, नाह निःकारण शा तजी, हुं तुं स्वामीना चरणनी दास, अहनिश राखनी आपणे पास, अवगुण कोइ न मं कीधो, नारि न मेल्हिस्ये एम निरास, वेगे मिलो मुज लील विलास ॥ ५२ ॥ के० ॥ आठ जवंतर नेहलो, नामे जव वृथा का दीन दोस, तुमविण अवर न वालहो, सपथ करुं अने पीवुंजी कोस, साच विमे विसा मानज्यो, ए दुःख जाजस्ये केम असोस, माछली जल विणु किम जिये, विणु अपराध रुष्यो नहीं रोम ॥५३॥के०॥ एकमने रथ पाछो वालि, वदनकमल ताहरुं नयणे निहाली, हरख पुरुं हियमानणो, तमे मत जाणो ए जोबन काल, झाम्ली अंचले लागस्ये, जे तमे आपशो सीख संभालि, तेहजी अमे करीशुं सही, यरुचती कांइय न मंमस्युं आल ॥ ५४ ॥ के० ॥ वली वली

राजलि इम कहे, के सखी में किधो सामिशुं छोह, के कोइ वल करी वेलगों, के किन वालह
किधो विछोह, के धन चोर्यो परतणो, देखी शकी नहीं के परसोह, के किधो गरव सोजागनो, तो
जउराय तज्यो मज मोह ॥५५॥ के० ॥ के किधो अणगल नीर सनान, के सखी त्रोमिया तरुवर
पान, के रे विलूरिय वेलडी, दींचतां उखवी के तरुमाल, के जलमांहि में मंमिया जाल, मछ ने
कछ संतापिया, के दिया किणहीने कूमांज आल, के मृगपासे पाडिया, तो न मिल्यो मज त्रिजग
त्रुपाल ॥ ॥६ ॥ के०॥ के वने दीध दावानल लाय, के रे विछोहियां बालक माय, के निशिन्नोजन
में किधो, पाप कीधे सखी सुख म जोय, अगनीशी कमल न नीपजे, हवे पस्तावो कीधे किमुं
होय, वीज सारे फल पामीजे, जउराय दोष म लावशो कोइ ॥ ५७॥ के०॥ मात कहे हवे कुंवरि
म रोय, मणिमय जारीपे ले मुह घोय, जादवो गयो तो जाण दइ, तेह थकी चमतो चित्त जोय,
तुमे वरजो वर वालहो, नेमि विना जग शून्य न होय ॥५८॥ के०॥ वरांस्यां हे मात ए कां कहो
वात, लोह किहां किहां सोवन घात, खल केम सज्जन सारिखा, नक्षत्र किहां किहां आदित तेज,

मने सेवतां कृष्णोजी देव, सील रूपो सती निरवहे,स्वामी पेहेलो लहे केवलसार, तीरथनाथ थयो नेमिकुमार, आज लगी जस झगमगे, हवे ए सहु सील तणोरे प्रजाव, राजुल नेमि नमो निज जाव, सील सरोवरे ऊीलज्यो, जाइ दिने दिने ओछोरे थायछे आज, राज राखे सहु खेलज्यो, हवे सील रूप्त राखो धर्मनो राज ॥६४॥ के०॥ हवे नेमि राजुल परे पालज्यो सील, सीलथी पामज्यो सासती लील, विषय वैरी जिन वीमसो, हवे लखण महासती रूपी राय, काल घणो रूव्या विरय पराय, चित्त विषे जनि चिंतवो, हवे विषये विणासियो रावण राण, सील सीलें जल तरिया पाषाण, सील समो सगो को नहीं, हवे सीलथी सरप हुए कुसुमकी माल, विष थकी अमृत होय रसाल, सीलथी संकट सवि टले, हवे एक शिक्षा वली सुणहु सुजाण, अविचल राखज्यो अरिहंत आण, मैं कमिने कमि जोड्यो, हवे आण विनाजि कीजे पच्चरकाण, ते तुस खंरूण सरिखो, हवे आणनो मूल एहजी जाण, जे जिण जाख्यो ते सर्व प्रमाण, जिनवचनेः नहीं अन्यथा, हवे आप वंशे मन करहु प्रज्ञान, जिन प्रतिमा म उथापज्यो, हवे आपणा नाथनो एह आकार, देखतां

उपजे हर्ष अपार, एणि पूजे जिन पुजियो, न्राइ अंग उवंगे ठे एह विचार, परजने वोधिवीजह दातार, हवतजीने हिये धारज्यो, तमे मदसमे पूजिज्यो एहना पाउ, आले म हारज्यो मानव आउ, दसह दृष्टांतहिं दोहिलो, अने चित्तथी ठांमज्यो विषय कसाउ, शूलन्नइह जिम थोन्नज्यो न्नाउ, सार वचन हवे हुं कहुं, न्नाइ पररमणि सवि मानज्यो माउ ॥६५॥ के० ॥ हवे नर अमरह सुख पामशे सोय, क्रमे क्रमे सिद्धि वधूवर होय, कीरति दिसे दसे विस्तरे, हवे सुजस पामे सही ते इह लोय, त्रिविधिहि सीलजिको धरे, हवे ते समो त्रिभुवनमांहे न कोय ॥ ६६ ॥ के० ॥ श्री पूज्य पार्श्वचंद्रसूरि सुपसाय, सीस धरी निज निर्मल न्नाय, नयर जालोरे जागतो, हवे नेमि नमुं नित्य बे कर जोम्, विनति एहज विनवुं, स्वामी एक क्षण अम मनथी म विछोम्, सील संगात जी मीतमी, हवे उत्तराध्ययन वावीसमो जोय, वलीय अनेराही ग्रंथथी, अरथ आज्ञा विना जे कह्यो होय, विफल होजो मुज पातक सोय, जिम जिन न्नांखे तिम सही, स्वामि डुरितने डुख सहु हरो दूर, वेगे मनोरथ माहारो पूर, आणसु संजम आपज्यो, हवे विनवे एम श्री विजयदेव

सूरि ॥ ४७ ॥ के० ॥ सूरज ससिहर जिहां थिर थाय, चूलिका मंमण जिहां गिरिराय, सतीयतणो सत्य ज्यां लगे, श्री जिनशासन जिहां जगमांहे दीप समुद्र मांहे मेदिनि, तिहां रास जणतां होय उछाह, सील चिंतामणि सारिखो, सुणे सुणावे जे मन शुद्ध जाव सहित सील जे धरे, अजर अमर पद पामे सोय, के सील अखंमित सेवज्यो ॥ ४८ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागछाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर–अन्तेवासीसुविहित–
सन्नागृहार–सितपटाचार्यश्रीविजयदेवसूरिविरचित श्रीशीलरक्षा–
प्रकाशक श्रीनेमिरासः संपूर्णः ॥



॥ अथश्रीपट्द्रव्यस्वाध्याय: ॥



(नाभितायांके बार–ए देशी.)

सिद्ध नमुं करजोरी, पास नमुं हितकारी; जस सेवें सुरवरवृंद, नर नारी बहु प्यारी. ॥ १ ॥
श्रुतदेवी सुपसाय, कीजे मति निरमलरी; मया करो मुज माय, दीजे वचन अललरी. ॥ २ ॥
लोकालोक स्वरूप, कहुंएक कहुंश्र विचारी; तामें जीव अजीव, जिनवर वचन सुचारी. ॥ ३ ॥
पंच अजीव बखान, एकही जीव सुचारी; पंच अरूपी होय, पुद्गलरूपी न चारी. ॥ ४ ॥
तीन द्रव्य तहां एक, तीन अनंत कहेरी; तामें चेतन एक, पंच अचेत लहेरी. ॥ ५ ॥
चार अकरता होय, दो करतार ठहेरी; सबही लोकस्वरूप, एक अलोक नहेरी. ॥ ६ ॥
चलन हेतु धरम होय, थिरही अधर्म लहीरी; पुग्गल जिउ अवकाश, एक आकाश सहीरी. ॥ ७ ॥
कालही वरतन हेत, नवही पुराण करेरी; निश्चे अरु व्यवहार, दोय स्वरूप धरीरी. ॥ ८ ॥

अथश्रीनेमिराजुलप्रीति.

(राजनगरनोरे सोनीओ. ए देशी.)

सुमति जिणेश्वर वीनवुं, स्वामी सुमतितणो दातार रे;
जे नेमि ने राजुल प्रीतडी, ते कवियण कहे सुविचार रे. ॥ १ ॥
इम राजुल नेमिशुं वीनवे, कंता वीनती अवधार रे;
जे माहरे मन तुं वालहो, ते जाणे करतार रे. इम. ॥ २ ॥
परणवा काजें नेमजी, प्रभु आव्या तोरण बार रे;
ए जीव ढोरूया ते रूडी करी, तें माहरी न करी सार रे. इम. ॥ ३ ॥
ए रथ फेर्यो जब नेमजी, तब राजुल रुवे अपार रे;
ए नेहवडी पिउ पिउ करे, दो आंखे आंसुधार रे. इम. ॥ ४ ॥

ए जीवनजीव श्री नेमजी; ए तुं मुज प्राणाधार रे;
ए नेह विलुधी कामनी, तुं कां छोडे निराधार रे. इम. ॥ ५ ॥
ए नेमजी नेह तुमाहरो, जेहवो तरूके त्रेह रे;
ए पतंगरंग परें कारमो, तें वहेलो देखाड्यो छेह रे. इम. ॥ ६ ॥
ए अष्ट भवंतर आदरी, कां नवमे दीधो छेह रे;
एक वांक विना जे परिहरी, ए ते मुज साले देह रे. इम. ॥ ७ ॥
ए नेमजी तें मोशुं करी, ए तेहवी न करे कोइ रे;
ए तें कीधी तिम हुं करुं, तो जनमांहि हांसी होइ रे. इम. ॥ ८ ॥
ए नेमजी लालिपालि माने नहीं, सखी नेमजी कठीन कठोर रे;
ज्यां वात न माने वालहो, तिहां अबलानुं शुं जोर रे. इम. ॥ ९ ॥
ए नेमी मति राजुल कहे, कंता सुख भोग संसार रे;

ते जोग जआ मापां जोगवी, पछे लेशुं संयमभार रे. इम. ॥ १० ॥
ए सविप जोकी मनती जजे, ए मा विधि इण संसार रे;
जे परणी नारी परिहरी, ते मूरख रमे परदार रे. इम. ॥ ११ ॥
ए शिवरमणी वेश्या सारीखी, जेने मातंग सेती प्रेम रे;
जेणे हरीकेशी म्हेल्यो नहीं, ए तेशुं रातो नेमि रे. इम. ॥ १२ ॥
ए नेह निठुरने नवि हुवे, श्रीनेमि कहे सुण नार रे;
ए तोरणथी जब फिर चल्या, हिव पीछे किहीं पोकार रे. इम. ॥ १३ ॥
ए वरसी दान देइ करी, नेमि लीधो संयम भार रे;
ए गिरि गिरनारें चढी करी, प्रभु पाम्या केवल सार रे, इम. ॥ १४ ॥
ए रंग राख्यो राजेमती, संयम लीधो नेमिने हाथ रे;
ए पिउ पहिली मुगते गइ, तहां तूठो श्री जगनाथ रे. इम. ॥ १५ ॥

ए धन धन राजेमती सती, जिणे पाली अविहड प्रीति रे;
हजी जगमांहे सहु जस भणे, ए उत्तमनी आ रीति रे. इम. ॥ १६ ॥
ए वीनती नेमें मानी खरी, पछे मिलिया मुगति मझार रे;
तिहां सुख अनंता भोगवे, ते कहेतां नावे पार रे. इम. ॥ १७ ॥
ए संवत सोल नवाणुए, गीत गायो मन उल्लास रे;
ए भणे गुणे जे मानवी, नेमि तेहनी पूरे आश रे. इम. ॥ १८ ॥
सती शिरोमणि राजेमती, श्रीनेमिजी त्रिभुवनराय रे;
जसु सुरनर सेवे अहनिशि, मुनि ठाकुरने सुखदाय रे. इम. ॥ १९ ॥

इतिश्री नेमिराजुल गीत.

——>>•<<——

अथश्रीनेमिराजुलबारमासि.

(इडर आंबा आंबलीरे-ए देशी.)

सद्‌ गुरु पाय प्रणमी करी रे, गाइश नेमि जिणंद;
शिवादेवीनंदन अति भलो रे, जिणें दीठे परमाणंद—
सखी मेरी, जाय मनावो नेम. हुंतो नेमि विना रहुं केम, मारे नेमिशुं अधिको प्रेम;
सखी मेरी, जाय मनावो नेम. (आंकणी.) ॥ १ ॥
आषाढो आव्ये घके रे, उनह्यो मेघ अपार;
वीजली झबुके चिहुं दिसें रे, सांभरे मुज भरतार. सखी. जाय. ॥ २ ॥
श्रावण मासें सरवडे रे, वरसे वारंवार;
चातुक तो पिउ पिउ चवे (लवे) रे, किम रहिये निराधार. सखी. जाय. ॥ ३ ॥
भादरवे मासें भलो रे, पामे फाफी रेल;

आश हुती मुज कंतनी रे, तेतो गयो अत्र म्हेल. सखी. जाय. ॥ ४ ॥
आसो आश फले सही रे, जो आवे भरतार;
हुं तन मन आपीने मिलुं रे, वाधे प्रीति अपार. सखी. जाय. ॥ ५ ॥
कातिक मासें कंतने रे, समरे सोहागिणी नार;
इहां विछडीआ साजन मिले रे, राणी राजुल हरख अपार. सखी. जाय. ॥ ६ ॥
मगशिर मनसा माहरी रे, मिलीए नेमि जिणंद;
सहज सलूणो व्हालो शामलो रे, जिण दीठे परमाणंद. सखी. जाय. ॥ ७ ॥
पोषें तन सुख पोषीए रे, अतिसे मीठा आहार;
नेमिशुं नेह धरी खरो रे, सुख विलसीजे सार. सखी. जाय. ॥ ८ ॥
माहें मोटी जामनी रे, यौवन लहेरे जाय;
नेमि विना रति न ऊपजे रे, मुने घमी वरसां सो थाय. सखी. जाय. ॥ ९ ॥

फागुण फागे रमे सहु रे, फर फर वाजे वाय;
अबिल गुलाल उडे घणो रे, नेमि विना न सुहाय. सखी. जाय. ॥ १० ॥
चैत्रे चतुर श्रीनेमिनेरे, मिलवा दोडे मन;
सासज पहिलां सांभरे, माहरे अंग न लागे अन्न. सखी. जाय. ॥ ११ ॥
वैशाखे विरहा तणी, वेदन खमी न जाय;
वैद्य-विचार क्यों न ऊपजे, मुजने नेमि मिळ्ये सुख थाय. सखी. जाय. ॥ १२ ॥
जेठे में जाण्युं सही रे, नेमि न आव्यो नेटि;
पूरव प्रीति जाणी करी रे, कांइ न मेलि त्रेटि. सखी. जाय. ॥ १३ ॥
सखी साहिब माहराशुं जइ रे, वीनती करो हजार;
राणी राजुलने रमवा जणी रे, तेम्हो गढ गिरनार. सखी. जाय. ॥ १४ ॥
पूरव जनमनी प्रीतम्ही रे, राणी राजुल नार;

नेमिशुं नेह धरी खरो रे, जाय मिलि गिरनार. सखी. जाग. ॥ १५ ॥
मन वैरागे पूरीने रे, लीधो संयम-न्नार;
पिउ पहिली मुगतें गइ रे, आवागमन निवार. सखी. जाय. ॥ १६ ॥
हिवे मुनि गकुर कहे सांन्नलो रे, वाविशमा जिनराज;
राणी राजुलने राखो कने रे, सारो वांछित काज. सखी. जाय. ॥ १७ ॥

इतिश्री नेमि राजुल बारमासी संपूर्ण.

अथ श्रीथूलीन्नद्रनीसज्झाय.

वीर जिणेसर वीनवी, लागी ते गोयम पाय; गाइशं थूलिन्नद्र राजियो, जिम सुखसंपति थाय—
थूलिन्नद्र साधुजी धन ताहरो अवतार; तें पाम्यो न्नव पार. थूलि. धन. १
पाडलिपुरमांहे न्नलो, राज करे नंदराय; तेहने बुद्धिनिधान सुंदर, सकडाल मंत्री सवाय. थूलि. २

थूलिभद्र नी सज्झाय ११०

सौविप राणी अति भली, लाछलदे जसु नाम; शीळ सुनाणिशि सुंदरी, महिमा गुणमणिधाम. ३
लाछलदे कामानसें, रूपनो थूलिभद्र हंस; सकडालसुत सोहे भलो, कुल मांहे अवतंस. थूलि. ४
तिहां नगरमें वस नायका, कोश्या ते नामें नार; रूपें ते रंभा सारिखी, तिणे मोह्यो सहु संसार. ५
श्री थूलिभद्र सुकुमाल सुंदर, दीसतो देवकुमार; रूप देखी कोश्या वीनवे, तुं मुज प्राण आधार. ६
मधु वचन रचना रंजियो, श्री थूलिभद्र कुमार; पंचेंद्रि विषय सुख अनुभवे, इच्छतणे अनुसार. थू.७
करता बहु नाटिक भरे, थै थै अहनिशि सार; मानी वार कोडी कंचन तणी, विलसे तिहां वर्ष बार
राय वचने सकडालशुं, कोप्यो तिहां नरराज; दरबार तुं आवे मती, माहरे नहीं तुज काज. थू.९
सिरियो तिहां साथे हुतो, मंत्रवी सघली वात; राय रंजवाने कारणे, कीधो पितानो घात. थूलि.१०
स्वामीधर्मी जाणी करी, राजा दिये सनमान; शिरपा तुमे सरिया लियो, आओ मुज परधान. थू.११
सिरियो ते वचनुं इम कहे, वीनती सुणो महाराज; वडा भाई थूलिभद्रनें, सुंपो सघलो काज. थूलि.१२
राय तेडे सिरिया गुणो, थूलिभद्र आवे कुल देश ? सरियो कहे कोश्या घरें, विलसे सुख अशेष. थू.१३

कोश्यानेथी थूलिभद्रने, तेडी पूछे नरराय;परधान पदवी तुमे लियो, तो मुजने सुख थाय. थूलि.१४
थूलिभद्र वलतुं इम कहे, संभलो एक विचार; ए राजकाज मेलां अछे, ए डुरगति दातार. थूलि.१५
ए माय ताय बंधव बहिन, पुत्र कलत्र परिवार; ए स्वारथ करी संसारमां, मिल्यां अनंतिवार. थू.१६
ए तन धन यौवन तेहवो, जेहवो रंग पतंग; इम जाणी जिन धर्म आदरुं, जो मिले सद्गुरुसंग. १७
इण अवसरें गुरु आवीआ, श्रीविजयसंभूति अणगार;उत्सव मेघकुमार ज्युं,करी लीधो संयमभार.
पंच महाव्रत आदरी, पाले संयम श्रीकार; जिनवाणिशुं अहनिशि रमे, करे सफल अवतार. थू.१९
श्रीथूलिभद्र चारित्र लिउ, संभल्यो कोश्या नार; मूरछा खाइ धरणी ढली, शोचे मनह मझार. २०
शिर केश तोडे अंग मोडे,फाडे ते कंचुकि चीर; अति रुदन करती इम कहे,लागे विरह डुःख तीर.
स्नान अंजन तिलक आदि, तजे सोल शिंगार; तंबोल सरस आहार छंडी,रही समरे भरतार. थू.२२
अनुक्रमे आषाढ आवियो, सदगुरु करे सुविचार; चउमासें रहेवा चिहुदिसें, मूक्या चेला चार. थू.२३
पहिलो रह्यो सिंहनी गुफा, वीजो अहीबिल पास;त्रीजो रह्यो कूप ऊपरें, थूलिभद्र कोश्या आवास.

थूलिभद्र आव्यो अंगणे, हरखि ते कोश्या नार; पाप लागी मुनीवरने कहे, आज तूठो करतार. २५
आ चित्रशाला अति विशाला,शय्या अति सुकुमाल;रंगेंद्री विषयसुख अनुभवो,कापी विरह दुःख जाल.
थूलिभद्र कहे अमे मुनि थया, संभल कोश्या नार; संसार-सुख राचुं नहीं, मत करजो मनोहार.२७
कोश्या ते वलतुं इम कहे, संभलो प्राण आधार;आर्द्रकुमार नंदिखेण ज्युं, पछे लेजो संयमभार.थू.२८
थूलिभद्र वलतुं इम कहे, छंडे ते अंगे विचार; कुंडरीक एकदिन विषयने सुखे, पहुतो नरक मझार.
इणि वचन कोश्या बूझवी, श्राविका कीधी सार;एक राजपुरुष राजा विना,और सहु परिहार. थू.३०
आगमवाणि संभले, करे पोरह पच्चक्खाण; साधुगुरु सेवे सदा, पाले श्री जिनआण. थूलि. ३१
चउमासि तत्थ त्रिण आविया,जिहां विजयसंभूति अणगार;वंदतां गुरु इम कहे,आवो दुष्करकार.थू.३२
थूलिभद्र कोश्या बूझवी,आव्यो गुरुने पास;दुष्करकार त्रिणवार श्रीगुरु,उभा थइ कहे शाबास.थू.३३
सिंहगुफा जे साधु हुतो,नरकी चोडयो तिणिवार;अरणमांहिं अमे एकला,पच्चक्खो रह्या मास चार.थू.३४
षटरस सरस आहार करतो,रहेतो कोश्या घरबार;नितु नाटारंभ जोवतो,तेहने कह्यो शाबास.थू.३५

सदगुरु वलतुं इम कहे,संभलो शिष्य विचार;नारि अग्नि नर घृतकुंभ सरिखो,पिघले अंग निवार.थू.३६
थूलिभद्र मेरुगिरि चूलिका,चव्यो न चित्त लगार; हाव भाव गुणिकातणो,नाण्यो मनह मझार.थू.३७
आदेश द्यो अमे जोइशुं, कोश्या अछे जिहां नार;सदगुरु वलतुं इम कहे, ते न पले आचार. थूलि.३८
गुरु वचन संभली विहार कीधो,गयो कोश्या घरबार;दासीए दीठो आवतो,मोहो लीधो तिणिवार.थू.३९
तसु रूप देखी रंजियो, कोश्या अछे तुमे नार;दासी कहे सुज स्वामीनी,वेठी महेल मझार. थूलि.४०
ऋषि कहे कोश्या मेलवो, दासी कहे उछरंग;सवा लाख टका हुवे हेमना, तो मलवुं सुचंग. थू. ४१
चउमासा मांहे ऋषि चालियो,जइ दीनव्यो महीपाल;नेपाल देशी राये दीधो,रतन कंवल सुकुमाल.थू.४२
रतनकंवल ऋषि लइ चाल्यो,आव्यो पालिनी पास; शुकवचन भोले लोकी ते, ऋषि कर्पारे निराश.
पाछो वली नृप जाचियो,आप्यो वीजो वार;जतन करी ऋषि लेइ चाल्यो,पाली दंड मझार. थूलि.४४
शुक कहे सवा लाख जाए,संभलो भील विचार;ऋषि लूंटया बोला फिर्या,कने नहीं कंइ लगार.थू.४५
भील कहे बोल वापनो,संभलो तमे ऋषिराज;ए शुकवचन साचुं करो,सारो तुमचो काज. थू. ४६

रतनकंवल देखाडियां, झीले मूक्यो तिणिवार;ते आणी कोश्याने देइ,हर्षो करे मनोहार. थूलि. ४७
कोश्या कहे ऋषि सांभलो,हिवे सजुं सोल शिंगार;स्नान अंजन करुं तां लगी, वेसो घरने वार.थू.४८
रतनकंवल अंगलूणो,करी नाख्यो तिणिवार;ऋषि देखी कोश्याने कहे,आशुं कर्युं रे गमार ! थू. ४९
कोश्या कहे ऋषि सांभलो,सवा लाख एहनो मोल;मूरख ते पांचे गम्यां,ते तो कहिये अमोल. थू.५०
कोश्याए ते ऋषि बूझवी,मोकल्या गुरुनी पास;पंच महाव्रत फरी उचर्यां,जनमांहि पाम्यो हास.थू.५१
श्रीथूलिभद्र मुनीश्वरें, जिणें बुझवी कोश्यानार; सुरनर सहु संथव करे, ए मोटा अणगार. थूलि.५२
शीले ते सवि संकट टले,शीले ते सवि सुख थाय;शीले ते सुर सानिध करे,पातिक दूर पलाय.थू.५३
चोराशी चोवीशी लगे, रहेशे जेहनुं नाम; अलप भवने अंतरे, लहेशे शिवपुरि ठाम. थूलि.धन.५४
संवत सोल नवाणुए, आगरा नयर मझार; ए भणे गुणे जे मानवी, तेहने सदा सुखकार. थूलि. ५५
वडतपगछ गुरु राजियो, श्रीपार्श्वचंदसूरींद; रूपें ते रतिपति हारव्यो, भविजननयनानंद. थूलि. ५६
श्रीसमरचंद्र सूरीश्वरु, पेखतां पातक जाय; तसु श्री रायचंद्र सदगुरु, नामे नवनिधि थाय. थू. ॥५७॥

जुगप्रधान गुरु राजिया, श्रीहीराणंदचंद्र उवज्झाय; तसु शिष्य पभणे मुनि ठाकुर, सहिया मुक्ति उपाय.
॥ थूलि० ॥ ५७ ॥ इति श्री थूलिभद्र अष्टपंचाशिका प्रबंध समाप्त.



अथश्रीथूलिभद्रजीनीसज्झाय.

(माइ तुंगीआ गिरि शिखरें सोहे ए देशी.)

पाटलीपुर वर रायनंदन, मंत्री भलो सकडाल रे;
तसु घर लाछलदे रूपें रंभा, सती ने सुकुमाल रे. ॥ १ ॥
श्री थूलिभद्र ऋषि भमर भोगी, योगी तत्त्वनो जाण रे;
साढी वार कोडि विलसी छंडी, कोश्या नारि सुजाण रे. श्री थूलि. ॥ २ ॥
तात मरणें मन वैराग्यो, जाग्यो मोहनिद्रा छंडी रे;
श्री विजयसंभूती गुरुपासि दीक्षा, लेइ धरमशुं प्रीति मंडी रे. श्री थूलि. ॥ ३ ॥

कोश संभली लीध संयम, दुखें दाधी अंग रे;
श्री थूलिभद्र चौमासे आवी, प्रतिबोधे मन रंग रे. श्री थूलि. ॥ ४ ॥
कोश हाव भाव विलास कीधा, दीधा सरस आहार रे;
चौमासि राख्या चित्रशाली, हिये हरख अपार रे. श्री थूलि. ॥ ५ ॥
पूरव प्रीतें कोश बोधी, शोधी तत्त्व विचार रे;
श्राविका तें सूधी कीधी, देइ देशणा सार रे. श्री थूलि. ॥ ६ ॥
सकडालसुतें शुद्ध शील पाळ्युं, मोडयो मयण विकार रे;
चौराशी चौवीशी नाम रहशे, ते कहे सहु संसार रे. श्री थूलि. ॥ ७ ॥
संवत सत्तरसें अडोत्तर, जेठ शुदि तिथि सातम सार रे;
नयर खंभातें मुनि भणे ठाकुर, आणी हरख अपार रे. श्री थूलि. ॥ ८ ॥

इतिश्री थूलिभद्र स्वाध्याय.

अथ श्रीसिमंधरस्वामीस्तवनं.

(उत्तराध्ययनें शोल्या मोल्मेंजी ए राह.)

श्रीसिमंधर तुमशुं प्रीतडीजी, में कीधी चित्त लाय;
दूरि रह्यां ते नवि विसरेजी, नेहलियो नावे रे सवाय. ॥ १ ॥
ए मनडुंने मोह्युं रे जिनजी तें माहरुंजी, जिम चकोर चित्त चंद;
नामने लीधे रे हियडुं उल्लसेजी, वेल्ये परमाणंद. ए मनडुं. ॥ २ ॥
अलजोने आवे रे अंगें अति घणुंजी, दूर वसंते रे वास;
दर्शनीहं देखाडो रे एकवार आवीनेंजी, पूरो मारा मननी रे आश. ए मनडुं. ॥ ३ ॥
संदेशा कहावुं रे दिन सास वंगमेजी, जो चाले रे कोइ साथ;
विसमीने वाटें रे पंथि कोइ नवि वहेजी, ते जाणे जगनाथ. ए मनडुं. ॥ ४ ॥
मन तन वचने रे सांजन तुं सहीजी, निश्चय ने व्यवहार;

जीवन जीवथी रे माही वालहोजी, तुं मुज प्राणाधार. ए मनडुं. ॥ ५ ॥
शासन तुमारे रे जिनजी छे घणाजी, मुज मनि तुं जगदीश;
रागी ने कुरागी रे सरीखा लेखवोजी, ते देखी घटे मुज रीश. ए मनडुं. ॥ ६ ॥
काशीशने राखी रे मीतकी पालशुंजी, ते जाणे विशवा रे वीश;
दीपे ने तुमारारे रुडा गुण बहुयाजी, ते समरुं निशिदिश. ए मनडुं ॥ ७ ॥
गुणने तुमारा रे शीमे छे घणाजी, ते कहेतां नावे रे पार;
दयालिमर बिरदो रे सदेतां दोहिलोजी, हिवे करजो सेवकनी सार. ए मनडुं ॥ ८ ॥
सुरतरु सरीखा रे जाणी सेवियेजी, वंछित फल दातार;
ए चितडुंने लागे रे तादृश नामशुंजी, ते रहिये मंजारि संजारि. ए मनडुं. ॥ ९ ॥
कहो न लागे रे सघलो शासिमोजी, साहिब तुं रे सुजाण;
नरम हमारी रे किम मानो नहींजी, तुमे मगो गुणजाण. ए मनडुं. ॥ १० ॥

ए प्रीतडीने कीधी रे गुण तारा सांभळीजी, श्रीगुरुजीनी पास;
रंगभर रातो रे ठाकुर इणिपरे कहेजी, हिये होशे लील विलास. ए मनडुं. ॥ ११ ॥

अथ श्रीसिमंधरस्वामी स्तवन.

(राग भैरव.)

सुणो सुणो रे सिमंधर सुखदातार, माहरा जीवन प्राणाधार. सुणो. ॥ १ ॥
तुम नाम निरंतर हृदय मझार, मुखें जपतां हुवे हरख अपार. सुणो. ॥ २ ॥
तुम वदन पूनमचंद्राकार, गति जित्या गज रहे वन मझार. सुणो. ॥ ३ ॥
तुं उपकारी दातारी अपार, तुं दुखतरुकप्पण कहियें कुठार. सुणो. ॥ ४ ॥
तुं ज्ञानी ध्यानी धरमधार, तुं मनमोहन महिमाभंडार. सुणो. ॥ ५ ॥
हुं निशिदिन समरुं वारंवार, गुण कहेतां किमहि न आवे पार. सुणो. ॥ ६ ॥
ऋषि ठाकुर एहवो कहे विचार, शिवसुख आपो म लावो वार. सुणो. ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिनेंद्र आलोयण स्तवन. ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible] जिनवर तणी, नाम परमाद उपगार थाये [illegible]णो ॥ सुण [illegible] गुरुमुख सही सांभळी, हिये समकित ने निरत लहिये वली ॥ १ ॥ [illegible] सव [illegible] करे, जिणथकी जीव संसारसागर तरे ॥ दोष लागा जिके [illegible] आलोइये, जीव निरमल हुवे जग जिन बोलिये ॥ २ ॥ दोष लागे जिके चार परकारना, [illegible] नाम ने [illegible] ॥ [illegible] लागे पाप जे कीजिये, प्रथम ते नाम संकल्प [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] अनुसरी, दोष ने जीव परमाद मांगा वली ॥ कूदतां गमतां [illegible] नाम करि दोष नीको निहां ॥ ४ ॥ विगमतां जीवने गिनर न [illegible] दोष उपजे [illegible] ॥ अनुक्रमे [illegible] अविक इक एकथी, दोष [illegible] ॥ ५ ॥

॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] पाम, [illegible]

नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण तणीय आशातना कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमड्ढ एकासण आंबिल उपवास, अनुक्रमे एह आलोयण सुगुरु बतावे तास ॥ ६ ॥ ए जो खंमित थाये अथवा किहांइ गमाय, तो वलि नवा करायां दोष सहु मिटि जाय ॥ थापना अणपडिलेह्यां पुरमड्ढनो तप धार, खिरतां एकासण ते गमतां चोथ बे वार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमड्ढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं ज्ञेदे मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमीशुं अप्रीति, जघन्य एकासणथी आलोयण चढती रीति ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज्ञ विनाश्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चौरिंदी त्रसियां एकासणथी वृद्धि ॥ बहु बि ति चोरिंदीय हण्यां त्रि ति चो उपवास, संकल्पादिक चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकाश ॥ ए ॥ उदेही कुलियावना कीडीनगरा ज्ञंग, बहु जल नाह्यां धोयां दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमिपातन आंबिल इक एक, जीवाणी ढोलंतां होय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक एक पंचेंडि उपद्रव होय, दोय त्रण आठ दसे उपवास आलोयां जोय ॥ बहु पंचेंडी उपड्व खट अठ ने दस वीस, चिहुं प्रकारे चढती आलोयण

एकेंद्रि संघट्ट कीध ॥ बी मर तेजो सचित ज्ञत वीध, दंम एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ तिण पंचे विण लोही पाये, एकासण निम पुरिमड्ड माये ॥ गइ मुद्दगनि आंबिल सारो, तिम ठये अठम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार उठंनी राखे, व्रत पच्चख्खाण करे सट साखे ॥ दोषे मिछाउक्कड दाखे, आलोयण तहने अजिजाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पुरो कहेतां नावे पार ॥ तोपण सेवेवे तंत सार, निरमल मन करतां निसतार ॥ २८ ॥ धन्य श्री वीर जिणेसर सामि, जसु आगम वचने विध पामी ॥ जीनकल्प वाला अंग आदि, वलीय परंपरा गुरु परसादि ॥ २९ ॥
॥ कलश ॥ इन जेह धरमी निन विरमी पाप आप आलोयणे, एकंत पुछे गुरु बतावे सकल दूषण जोयने ॥ विधि एह करसो तेह तरसो धरमवंत तणे धुरे, ए तवन श्री ग्रमसींह कीधो सहरने फतरांच पुरे ॥ ३० ॥

इतिश्री वीरजिन आलोयण स्तवनं.

॥ अथ श्रीशांतिजिनस्तवन ॥

केवण पाताले निवसंति नैरने सदा, शुं घणो भाखिये जिणवरे परखदा ॥
भुजगगति किणि हुइ सैयल जगे सुखकरो, कैवण परचक्रना भीम जण भयहरो ॥ १ ॥
केवण माहो सदा आपणो ये नही, जीपवो कवण संसारे साचो सही ॥
धर्मनी गोठि कहि मूरख शुं भखे, जगतना जीवनी उपमा कुण लहे ॥ २ ॥
वांणियो भमत व्यापारे वंछे किश्युं, रांयने ऋद्धि ने वृद्धि आपे किश्युं ॥
जीवनो घातक जीवनो शुं हणे, जीव उपगारने देते गुरु शुं भणे ॥ ३ ॥
रवितणुं खेत्र शुं विष्णुं आयुध किशुं, जीवनो वृंद जलमांहि वहुलो किशुं ॥
सुरतणो वास जे तास शुं भाखिये, खीरनो सार शुं जाणि जगे राखीये ॥ ४ ॥

---

१ नाग, २ गर्व, ३ उर, ४ रिपि, ५ नग, ६ गल, ७ रिपु, ८ छल, ९ नल, १० लाभ, ११ नीति, १२ माण, १३ माता, १४ दिन, १५ अंग, १६ तिमि, १७ नाक, १८ घर,

वेणसई नीपनो मधुर सुर कुण करे, शंत्रुने जीपवा किशुं एकठ सरे ॥
देर तणी घरणि कुल घरणि मंगलि कही, एहनो नाथ माह्यो कहो को लही ॥ ५ ॥
उंडी एकवीस वे वे अक्षर मंण्डिये, तेहनो आगलो अक्षर टांकीये ॥
प्रथम अक्षरे लहुं नाम जगे जेहनो, तेहने समरणे पापक्षय देहनो ॥ ६ ॥
निर्मल वाणी जविपण जाणी, सेवकनी तमे मने घरो ॥
वहु अंबर कल समे अहनिशि नमि नमि, लीले जवसायर तरो ॥ ७ ॥

॥ इतिश्री शांतिजिनस्तवन संपूर्ण ॥

---

१९ वंस, २० दम, २१ उमा.

आ दरेक जडनो पेहलो अक्षर वापरवाथी ए वंचाय छे के–"नागउरि नगरे छनलाणी मामादि शांतिनाथ वंदउं."

आ मायामां द्रम १ पद मायाना रूपमां वंचाय छे माटे नागोर नगरे छनलाणी मामादे शांति नाथ वंदुं. ए स्पष्टार्थ याय छे.

॥ अथ श्रीनेमिजीन स्तवन ॥

[1]गिरिसुतापति कवण वखाणिये, शशि समान जगे कुण जाणिये ॥
कॅवण मानवनां मन मोदए, कॅवण अंगे अवंगे सोहए ॥ १ ॥
कुंण कहो जनवदन अलंकरे, विषमे मारगें कवण ते संचरे ॥
कॅवण धारे चंद्र तणी प्रभा, किमे कही गुरुजनने खलसभा ॥ २ ॥
रसतणो रस कवण लहे सही, हुंअ जुउ विचरे कुण पी मही ॥
तुरिय वर्ग विचाले कुण रहे, [12]जिणहरे बहु शोभा कुण वहे ॥ ३ ॥
कॅवण कैटभ कंस ति निर्जणे, रमणि चरणे कवण ते रणऊणे ॥
कॅवण मल्लिसु जन्म तणी पुरी, कॅवण तारे जल करि धरि तरी ॥ ४ ॥

१ श्रीकंठ, २ वदन, ३ रमणी, ४ हाटक, ५ नयन, ६ गुरुण, ७ रजनी, ८ वराभी, ९ रसना, १० मंथान, ११ इकार, १२ नगर, १३ श्रीपति, १४ नेउर, १५ मिथिला, १६ नारद.

जसु द्वेष मति उपजे, तेहने जवतणी स्थिति घणी नीपजे ॥ १५ ॥ जेथ जिनवचनथी जीव उपरावगा, गछ निज रागि ते जाणिये सही शगा ॥ प्रकरण सूत्र मति एकठी जे करे, रागी निरागी ते सम वन्दि मन धरे ॥ १६ ॥ माग कुमाग ए जेद मिछत्त ए, तेहने जाणिये जिणवर जत्ति ए ॥ धन्य जे स्वामिना वचन अंगीकरे, समकित प्रवहणे जवजलनिधि तरे ॥ १७ ॥

॥ ढाल ॥ एक पूरव लख पालिय, संयम जवजय टालिय, पालिय साधु समाचारी खरी ए ॥ बहु जिय मुगति पहुचाम्यिय, टाली कर्मनी आम्यिय, आगल शिवरमणीसें वर वरी ए ॥ १८ ॥ माघ अंधारी तेरसे, साथें मुनिवर दस सहससें, परिवस्था अष्टापद शृंगे जइए ॥ छह उपवासे अणसण, सीधुं जिह नही जर मरण, प्रज्जु शरण करिये एक मना सही ए ॥ १९ ॥

कलश ॥ प्रज्जु शरण करिये जवजल तरिये हरिये कसमल मन तणो ए, मुज ठाकुर मिलिज सुरतरु फलीज वुधणाउर मुख मंमणो ए ॥ प्रज्जु तुम गुण सारा अतिहि उदारा में मुखे जाए किम कह्या ए, इम जणे समरचंद पाठक जिनजी नाम मात्र गुण जे लह्या ए ॥ २० ॥ संवत

सोल संवछरे, कातीक मासें एह ॥ थय मनरंगे आपणे, कीधी नही सवंद ॥ २१ ॥

इतिश्री घुघणाउर आदिश्वर स्तवन संपूर्णं ॥



॥ अथ श्रीऋषभजिन स्तुतिः ॥



गीर्वाणमालार्चितपादपद्मं नाभेयमातंकिललब्धवर्णाः॥ यूयंनुतश्रीजवनैः समस्तैः यथाप्रणूपन्त अपार सारम् ॥ १ ॥ मयात्रविश्वेभ्रमता जिनेश नाकर्णितंतेवचनंश्रुतिभ्याम् ॥ अमी अतःकर्मगणाः सुदुष्टा मांहन्तुमुद्यन्तिवराकमात्रम् ॥२॥ कृपांविधायाशुततश्चतेभ्यः मां मोचयस्वा-श्रितदेवसेव ॥जगज्जनानन्दकरश्रनाभि नरेन्द्रसूनोमरुदेवमात ॥ ३ ॥ त्वयाप्रभोलब्धश्रियास्वकीय मार्गेपिवत्ताशिवमुक्तिलक्ष्मीः॥ नत्वत्समः कश्चिदभूज्जिनेशः सुवर्णवर्णाङ्ग जिताङ्गमार ॥ ४ ॥आद्यो जवनतीर्थकृतांच आद्यो धात्रीपतीनांप्रथमोमुनीनाम्॥ सत्केवलज्ञानभृतां धुरीणः समुद्गमन्नीरिमतां-

दधानः ॥ ५ ॥ यस्यप्रधानंपरमंनिरीक्ष्य वक्त्रंकुमुद्वन्धुरयंमृगाङ्कम् ॥ मन्येविज्ञित्रंकिमितिप्रकर्तुं धत्तेश्रियानिर्जितशुद्धकान्तिः ॥ ६ ॥ प्रमुदितवदना ठन्दः पृथुजघनधरानिशेशाननाः कुचकलशन्नराः सुविम्बाधराः ॥ न्नजतिवरजनो लन्नेयुर्वराः प्रमुदितवदनाः स्त्रियस्तंनरम्म् ॥ ७ ॥ इत्थंश्रीवृषज्ञध्वशंन्नुः स्तुतःसागर साधुना ददातुन्नूरिशंदेवः वृषलक्ष्मा जिनेश्वरः ॥ ८ ॥ इति श्रीऋषन्नजिनस्तुतिः

—⋙❀⋘—

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तुति. ॥

संसारागाधविस्तार पारापारन्नयंकरात् ॥ मांपाहित्रिदशश्रेणि सेवितानघपत्कज ॥ १ ॥
अश्वसेनोद्न्नवोद्दाम वामकामानलंप्रन्नो ॥ विघेहिशमनंनामा कर्णनाम्बुधरेणते ॥ २ ॥
रागद्वेषादयोडुष्टास्तस्करा मुक्तिवर्त्मनि ॥ मांप्रयातंप्रमुष्णन्ति ततोरक्ष जगत्प्रन्नो ॥ ३ ॥
डुष्टाष्टकर्मसमिधः प्रदह्यन्नगवन्नगाः ॥ शुक्लध्यानाग्निनासिद्धिं केवलादष्टविष्टप ॥ ४ ॥

जपस्वामिन्जनधर्मं प्रज्ञावान्सागरोपतिः ॥ अलज्जत्परमानन्दमेकुराज्ञः सुखप्रजम् ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिन स्तुति.

॥ अथ श्रीमहावीरजिन स्तुति. ॥

श्रीमन्मुक्तिरमानाथं वीरनाथंनुवीतज्ञो ॥ यदितिव्यग्रनोरोज वाछालिग्रनमिव्रत ॥ १ ॥
यद्रूपंवीक्ष्यपञ्चेषुः सुरस्त्रीज्ञिरपीप्सितम् ॥ लज्जयानङ्गतांमाप त्रिलोकविजयीकिमु ॥ २ ॥
जन्माभिषेकसमये प्रेंखोलितइलाधरः ॥ तस्यकिंवपर्यंतेवीर्यं मानवैरेकजिह्वया ॥ ३ ॥
यस्यानेकान्गुणान्वक्तुं गीःपतिःशतजिह्वया ॥ नशक्नोतिततोमन्दो हंकथंवक्तुंशक्नुयाम्॥४॥
एवंस्तुतःप्रभुर्वीरः सागरेणमुमुक्षुणा ॥ अनारतंस्वभक्तेभ्यो ददातुपरमंसुखम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीनेमिजिन स्तुति ॥

श्रीनेमिनाथंजविकाब्जजर्घ्यं तमालनीलछविमूर्तिधारकम्म् ॥ यदीयपादाब्जरजः प्रमर्दान्तरोल-

न्तेकिलन्भूरिसौख्यम्म ॥ १ ॥ यदीयसद्देशनयाजन्मोपि लन्नेतनीरागमशोकवृक्षः ॥ यश्चेतनावान् खलुकायधारी किंतस्यवर्ण्येतनरासुरस्य ॥ २ ॥ न्नूपालधारु विजयान्वयसूरन्नूतः राजीमतीस्तन विशालविशालहार ॥ मां पाहिमोहन्नरटस्यन्नयाज्जिनेश शेवैयनाकिनरवन्द्यपदारविन्द ॥ ३ ॥ श्रीरामकृष्णावपित्वत्प्रशादाद्नविष्यतस्तीर्थकरौविशुद्धौ ॥ न्नदारसम्यक्त्वधरौबलिष्ठौ महान्नुजौगौर विनीलवर्णौ ॥ ४ ॥ योवीतरागस्तवधर्मनिष्ठः प्रयातिसिद्धिंकिमुचित्रमत्र ॥ सुरागयुक्तोपितवक्रमाब्ज छन्देनरोवैतिपरंपदंवै ॥ ५ ॥ इत्थंश्रीनेमिनाथस्यःस्तवंकुर्वन्मुमुक्षुक ॥ सागरो लन्नतांदेव परमानन्दजं सुखम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीशांतिजिन स्तुति. ॥

समप्रध्वापरध्वान्त विध्वंसनन्नोमणे ॥ मुक्तिवामांप्रधानंच शान्तिनाथप्रयच्छमाम् ॥ १ ॥
विश्वसेनमहिनाथ गोत्रोदधिनिशाकर ॥ अचिरोत्तसन्न संक्रीमातत्पराद्वैतन्नूपण ॥ २ ॥
पारापतोविवेकश्च त्वयात्रातोदिव्पेनकात् ॥ मांकथंत्रायसेनत्वं विवेकैतवसेवकम् ॥ ३ ॥

भवद्भूपंचतुर्दिक्षु प्रस्थितंवनिरीक्षितुम् ॥ चतुर्मुखो भवध्दातास्वंचमेनेकृतार्थताम ॥ ४ ॥
मुमुक्षुवक्कचंद्रस्य शिष्यःसागरसञ्ज्ञकः ॥ प्रणाम्रतिपरंब्रह्म नास्तियत्रजराभयम्म् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीचित्रकूटचैत्यपरिपाटि ॥

विमल विवेक विचार, ज्ञानकला भंमार; जे गुरु नित दिये ए, तस पय प्रणमिये ए. ॥ १ ॥
मोहतिमिर भरपूर, जेह करे गुरु दूर; ते मन शुध्दि नमी ए, मागि वचन अमी ए. ॥ २ ॥
चैत्यप्रवाम्नि रचीश, त्रिकरण सत्य नमीश; चित्रकूटि अति घणा ए, चिंब श्रीजिनतणा ए. ॥ ३ ॥
अश्वसेन नरनाथ, तस सुत वहु जननाथ; चैत्य भटे वरे ए, देखी नयन ठरे ए. ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ जिनचंद, नमिये धरी आनंद; वांछित सुखकरु ए, वंदित सुरवरु ए. ॥ ५ ॥

(ढाल गाह्ली.)

पल्लिवालगण देहरे, दृष्टि निरखतां मन हरे, गुण करे सीमंधरजिन वंदतां ए;
जिणहर नाणावालतणे, त्रिभुवन जन जसु जस भणे, सुखि घणे श्रीमुनिसुव्रत वंदिये ए. ॥ ६ ॥

संघपति खरहत्थ कारीय, शीतलजिन सुखकारीय, वारीय कुमति नमीजे ते सदा ए;
हवे चोपरीवह चैत्यघरे, ठाकुरसी कारित वरे, हवे घरे मुनिसुव्रत नमिये मुदा ए. ॥ ७ ॥

(ढाल जमावली.)

हवे मालविये श्री आदिनाथ, सवि बिंब सहित नमुं जंतुनाथ; जंभारी वेला तणि शांति, चौमुख नमिये मन धरिय खंति ॥ ८ ॥ वलि शीतल आदिजिनेश पास, मूलनायक पूरे चित्त आश; शाह सहणा जिणहरे वीय देव, जसु इंद्र सवे मिलि करें सेव ॥ ए॥ तिहां अजित जिनेसर गुण उदार, नमिये जन मन आनंदकार; जोजा वसही श्रीशांतिदेव, विविह परे वंदी करुं सेव ॥१०॥

(ढाल.)

राजसिंघ मंत्री तणे ए, चेईहरे श्री शांतित; वंदीजे मन भाव धरे, फेमे चउ गति भंतित. ॥ ११ ॥ करधि चौमुख आदिजिण, वराही संभव सामित; सोम चिंतामणि वंदिये ए, जिम हुवे वांछित कामित ॥ १२ ॥ सुमति सुमति कर वंदीए ए, पंचम जिनवर वंदत; लशवाल कारित

ज़ुवणि, वंदित सुरनर वंदित ॥ १३ ॥ चंद्रप्पह आणंद करे, आदिश्वरजिन जाणित; जाव धरी सो वंदिये ए, ज्ञान प्रमुख गुण खाणित ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥

तेवीशमा जिण वंदिये ए, जव संजव पाप निकंदिये ए; पालितलावइ पंचमो ए, जिन वंदी शिवपुरे वीसमो ए ॥ १५ ॥ मूल गंजारे पाश ए, सहु तोमे जवडुख पास ए; जिनहर नमुं आशंवरे ए, जे दीठे जवडुख वीसरे ॥ १६ ॥ केइ प्रवाहे वाहिया ए, मिथ्या मत वांदे साहिया ए; ते इइ आणे जंति ए, तस जाणी रत्नमय जंति ए ॥ १७ ॥ सवि जिन प्रतिमा सारिखी ए, ए वात अछे आगमें लिखी ए; वेष विशेषे न वंदिये ए, इम कहेतां समकित निंदिये ए ॥ १८ ॥ इम गिणि कुमति दूर करो ए, शुद्ध समकित जाव हृदे धरो ए; जिन प्रतिमा समतुल कहो ए, इणे शुद्ध जावे शिवपुरि लहो ए ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥

तीर्थस्तंभ पासे अछे तुं भमरली, अतिहि उदार प्रासाद तुं भमरली; वीरजिनेश्वर वंदिये तुं० जिणे कही धर्मह आदि ॥ तुं भ० ॥ २० ॥ पास सुपास दुइ एकगं तुं० दीसे काउसर्ग वंग; तुं भ० उलट धरी ते वंदिये तुं भ० आपे सुख अभंग ॥ तुं भ० ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रप्रभ वंदिये तुं भ० भवसय संसयहार; तुं भ० शशिलंछन जग मोदतुं तुं भ० अभय करे जयकार ॥ तुं भ० ॥ २२ ॥ प्रतिमा अदबुद आदितणी तुं भ० जोतां हर्ष अपार; तुं भ० जे जनवंदे एक मना तुं भ० ते पामे भव पार ॥ तुं भ० ॥ २३ ॥ अष्टम जिनवर वंदिये तुं भ० चंद्रप्रभ जिनराय; तुं भ० पीतलिये प्रासादे सदा तुं भ० थाये निर्मल काय ॥ तुं भ० ॥ २४ ॥ सूराणे श्रीसुमतिजिण तुं भ० खरहथ वसही सांतित; तुं भ० पार्श्वनाथ जिन शामलो तुं भ० नमतां करे भव अंत ॥ तुं भ० ॥ २५ ॥ सुमति जिनेश्वर वंदिये तुं भ० आपे सौख्य अनंत; तुं भ० नागलिये चित धरी नमुं तुं भ० सोलसमा श्रीशांति ॥ तुं भ० ॥ २६ ॥

॥ ढाल ॥

लोलावसही श्रीशांतिजिणंद, दीठे मुज मन अति आणंद; सकोशले श्रीरिसह नमीजे, जिम मनवांछित शिव पामी जे ॥ २७ ॥ पूनमिये श्रीसुमति जुहारो, जिम नव संचित पातिक हारो; इग्यारमो जिन श्री श्रेयांश, छेदे जे क्रोधादिकनो वंश ॥ २८ ॥

(चोपाइ छंद.)

छत्रित वाले आदि नमीशुं, शिवपुरपंथ सुखे पामीशुं; तोला शाह घरें जिन जोय, पार्श्वनाथ हुं वंदु सोय ॥ २९ ॥ अष्टापद शत्रुंजय जाण, विपुल गिरिंद सुतीर्थ वखाण; कनकाचल वेभार उज्जंत, शेत्र शिखरे वंदुं जगवंत ॥ ३० ॥ राणकपुर अर्बुदगिरिशृंग, वरकाणे वंदुं मनरंग; एह आदि जगे तीरथ गाम, ते सविहुं हो मझ प्रणाम ॥ ३१ ॥

(ढाल.)

इम चौवीश जिनेंद्र नमीजे, मानव जन्म तणां फल लीजे, कीजे दूर प्रवाह;

जिहं जिन प्रतिमा दृष्टिये दीसें, तिहां वंदीजे चित्त जगीशें, रीस न कीजे लगार. ॥ ३२ ॥
श्री अनुयोगद्वारे कहिये, निक्षेपा चारे सद्दहिये, लहिये समकित साचो;
तेह मांहि इण काल विशेषे, निक्षेपा ठुइ जेह उवेखे, लेखे कुमति म राचो. ॥ ३३ ॥
तिणे कारण नाम ठवणा मन धरी, हुं वंदुं मिथ्यामति परिहरी, करी जिन आगम साखी;
हवे जिनवचन विचार्या शुद्ध, गुरु मुखें ते नही कहुं विरुद्ध, कीध विचार मन राखी. ॥ ३४ ॥
जिनवचने हिंसा नवि भाखो, जे पूछे तसु इण परे दाखो, राखो निरतो बोध;
जे गुरु इण उपदेशें चाले, ज्ञानक्रिया ते नित अजुआले, ते जाणुं मुनि योध. ॥ ३५ ॥

(कलश.)

इण परे मन रंगें सद्गुरु संगें चैत्य सवि में वंदिया ए, पूर्यो मन सुकृत टाल्यो दुष्कृत पाप सवि मुणि निंदिया ए; जे अतीत अनागत संप्रति जिन श्री पासचंद शीषें स्तविय, वेले सुखदायक वांछित कारक श्री जिनचंदो जन जविय ॥ ३६ ॥ इति श्री चित्रकूट चैत्य परिपाटी समाप्तः

अथ श्री सम्यक्त्वदीपक दोधका (सोरठा) छंद.



जेह तणो आदेश. सावद्यनय दीसे नही; तेहनो किम उपदेश, जूला लोक मतांतरं ॥ १ ॥
ते नवि न करे कांय, जे अनुमोदे कारने; पशु जिम तापथा जाय, मुग्ध किंपि जाणे नहीं ॥ २ ॥
सावद्यमग उपदेश, देतां जे शंके नहीं; विहु मिलि म्हेले वेष, तेहनुं शुं अनुमोदिये ?! ॥ ३ ॥
ढांकया कूप समान, मुग्ध तिहां धसकी पके; जंजे जिननी आण, बे जव विणठा तेहना ॥ ४ ॥
मुनिवर पोषदशाल, दीसे जे मंदि रह्या; जाणे वालगोपाल, ते तो ढयाम्हा कुआ ॥ ५ ॥
गरजु होशे जेह, जाणी पाणी काढशे; मांहे न पमशे तेह, काज सरे कांठे वतां ॥ ६ ॥
मा होजो नर धीर, ढांकया कूआ ढूकमा; लहेशुं नीर न तीर, जीवित गए तिहां दोहिलुं ॥ ७ ॥
क्रिया अनंती वार, आगें इण जीवें करी; तोप न पाम्यो पार, विण समकित ते वेगलो ॥ ८ ॥
किया थकी शिव दूर, समकित हुंती ढूकमो; वाजे वाजी तूर, धावत धंधा चूकशुं ॥ ए ॥

क्रिया तणो विश्वास, जे तेहने आवे हिये; विणु समकित ते पास; पंन्नित जन जाणे सही ॥११०॥
नहुं राचिये गमार, फटा टोप किरिया तणे; उलखि समकित सार, जो आशा शिवपद तणी ॥११८॥
सांजल जो सहु कोय, (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि वीनवे, शिवसुख दायक होय; आण सहित किरिया मिलि१२

(देशना संबंधी आर्या छंद.)

अक्खेवणि विक्खेवणि णिव्वेयणी तहय होइ संवेयणी ॥ तं सुण माणो जीवो वेरग्गं लहइ गुरुमूले ॥ १ ॥ आयारं ववहारं देऊ दिठंत दिठिवायाई ॥ देसिज्जइ जीएसा अक्खेवणि देसणा पढमा ॥२॥ परमय विज्जाहिं परमय वयणाहिं जीइ परमयाऊ जणे ॥ निक्खेविज्जइ एसा विक्खेवणि देसणा वीया ॥ ३ ॥ उवसम विवेगसंवर समया संतोष संजवं सुक्खं ॥ वन्निज्जई जीएसा संवेयणि देसणा तईया ॥ ४ ॥ जरा मरण रोग सोगाइएहिं अइ दारुणं जवसरूवं ॥ पयम्निज्जइ जीएसा णिव्वेयणि देसणा तुरिया ॥ ५ ॥

॥ श्रोता परीक्षानी सज्झाय ॥

(राग कालंगडो.)

वरसे पुष्करावर्त्त सुमेहा । तव पृथिवी भेदाये नीर । पण एक मगसेलीउ न भेदाये । अति न्हानो नें कठिन शरीर ॥ १ ॥ तिम गुरुवचने किमें न भेदाये । जे प्राणी होय भारी कर्म । कंठ (शुंक) शोष जो अति घणो कीजे । तोय न पामे सूधो धर्म ॥ २ ॥ बावना चंदन गंध तजीने । कसमल ऊपर माखी जाय । परिमल कमलतणो छंडीने । भेंडकूं नित कादव खाय ॥ ३ तिम०॥ काले कावल गुलियलि कापड । चोल तणो नवि बेसे रंग । वायस वान न थाये धोलो । जो नित न्होवे यमुना गंग ॥ ४ तिम० ॥ चिगटे कुंभे जल नवि भेदे । न रहे काणे भाजन नीर । रवि देखी घूवड हुए अंधो । पान न लहे वसंत करीर ॥ ५ तिम० ॥ मूंग कांगडू कण मांहे जेहवो । पाणी अगनि न ठीपे अंस । जव केलव्या न होवे तंडुल । बग सीखव्या न थाये हंस ॥ ६ तिम०॥ मृगमद अगर कपूरे वास्यो । लसण न पामे रूडो गंध । सूरज शशिहर दीवा जोतें । किमही

नवि देखे जात्यंध ॥ ७ तिम० ॥ ऊग्यो चंद चोरने न गमे । मेर्दं जवासो सूकी जाय । खीर खांम घृत मीठो ज्रोजन । पेट कूतराने न समाय ॥ ८ तिम० ॥ मीठी डाख न वायस चाखे । श्वानपुंछनी न समी थाय । श्रांबानुं वन (करहो) ऊंट चरे नही । अन्याइने न गमे न्याय ॥ ए तिम० ॥ खाय न संनिपातियो साकर । पापी ने धरमी न सुहाय । रुचे नही चंपो मधुकरने । घुण नित सूको लाकम खाय ॥ १० तिम० ॥ गाम समीप नदी मूकीने । रासन्न राखें खररू श्रंग । कुलवंती कामिनी तजीने । नीच करे पररमणी संग ॥ ११ तिम० ॥ नल फीटीने सेलमी न थाये । इक्षु तणे जो वाधे संग । दूध गुलें जो लींव सींचाये । तोहे मीठो नवि थाय प्रसंग ॥ १२ तिम० ॥ खीर सर्प मुख न हुवे श्रमृत । काच कमायो रतन न होय । खारो न टले समुद्र नो नदीयें । मोटे वम फल नीरसज होय ॥ १३ तिम० ॥ माथे मणि नितु वहे ज्रुजंगम । तोहे ते नवि निरविष हुंत । राम तणी सेवा करे हणुमंत । लंगोटी अधिको न लहंत ॥ १४ तिम० ॥

(ढाल–श्री सदगुरुवचन करे शुं तेहने ए राग) इम लौकिक संबंध विचारी । लोकोत्तरनी

सुण जो वात । चित्रे ब्रह्मदत्त बहु समजाव्यो । विरति तणी नवि आणी धात ॥ श्रीसद्गुरुवचन करे शुं तेहने. १५ महावीरनो शिष्य जमाली । तिहनें नवि लागो उपदेश । कालिगसूरीयो कपिलादासी । गोसालो पामशे कलेस ॥ १६ श्री० ॥ विष्णुकुमरनां वचन सुणीने । नमुचि न मानी कांई सीख । मारखहार उदाई नृपनो । वार वरस लगि पाली दीख ॥ १७ श्री० ॥ शिष्य पांचसे केरो नायक । अंगारमर्दक नामें सूरि । श्रावक परख्यो अजव्य दया विणु । निर्गुण जाणी कीधो दूरि ॥ १८ श्री० ॥ संवेगी सावद्याचारज । सूत्र विरुद्ध तिणें कह्यो विचार । नागिल वंधव बहु समजाव्यो । सुमतिअं कुगुरु न तज्या लगार ॥ १९ श्री० ॥ शीलसनाह रिषिये प्रतिबोधी । रूपीये नवि काढ्यो साल । वरस पंचास तपे तप ललणा । तसु फल न थयो एके वाल ॥ २० श्री० ॥ ईसरने मन धर्म न जेयो । रज्जा महासतीने थयो रोग । फासू जलथी काया विणसे । इम जामें पाढ्यां बहु लोग ॥ २१ श्री० ॥ पालककुमर नेमि जइ वंद्या । कंम्रीक पाढ्यो चारित्र । कृष्ण सांबे वीरे जइ वंद्या । फलें फेर अति थयो विचित्र ॥ २२ श्री० ॥ संगति एहने हुंति रूमी । पुण नवि मीठ्यो

सार विचार । कर्म निकाचित जेहने पोते । ते प्रतिबोध न लहे लगार ॥ २३ श्री० ॥ दृष्टिरागें नर जे हुए रातो । जे हुइ दोषी अति घणघोर । मूढ वचन परमारथ न लहे । विग्रह पड़िया वदे कठोर ॥ २४ श्री० ॥ ए चिहुंने धर्म कहेवा वेसे । ते नवि जाणे आगम रीत । कूकरवदनें कपूर ज घाले । जे माद्दपणने न धरे चित्त ॥ २५ श्री० ॥ लोह वणिग जिम करे कदाग्रह । सूत्र न साचो मीठे जेह । लोक प्रवाहे मूंड मेळावे । साचो धर्म न जाणे तेह ॥ २६ श्री० ॥ च्यारी कर्म घणाने ए परें । हलूकर्म मीठे ततकाल । सनतकुमार चिलातीनंदन । थावच्चासुत गयसुकमाल ॥ २७ श्री० ॥ पर्षद पुरुष जोइने कहिवो । धर्म कह्यो इम आचारंगि । नंदी सूत्रें लोप संसारी । ब्रह्म करे ज्यो ज्यो मनरंगि ॥ २८ श्री० ॥

अथ श्री ब्रह्मचर्यव्रत द्विपंचाशिका.

——॥——

(छुण छुण कंतारे सीरा सोहामणी–ए देशी.)

ढाल–गोयम गणहर पाय प्रणमी करी, ब्रह्मव्रत स्तवशुं रे हर्ष हीये धरी;
सूधो पाली रे भवसागर तरी, पामी पामे रे पामशे शिवपुरी.

ऊथलो–शिवपुरीनां सुख लहे भवियण तेह फल बंभचेर तणुं,
मन वचन कायें शुद्ध पालो किशुं कहिये जिय घणुं;
सिद्धांत मांहे अछे विस्तर तेह संखेपें भणुं,–
ते भविकना उपकार हेतें साररूत सवे शुणो. ॥ १ ॥

१ ऊथलो ए हरीगीत छंदना जेवी ढबनो मात्रामेल छंद छे. अने २८ मात्राओ दरेक पदमां होय छे.

ढाल–नारी रूपें रे जगमांहे मंगीउ, पासति नरने रे समरथ खंगीउ;
एहथी डुस्तर जगमांहे ले नदी, जाल मनोहर रमणी इम कही.
उथलो–इम कही जिणवरें उत्तरझयणे अध्ययनें वत्तीशमे,
जे हुए कर्म्मे लहुअ प्राणि नारी विषय न वीसमे;
ए ठंगिवानो करे उपक्रम हीये जावे जावना,
अबला तणो जे पिंग बांध्यो तेह फल ले पापना. ॥ २ ॥
ढाल–पाप असंखह राशि एकठी मिली, स्त्रीयोनिने रे पामे संजली;
श्रुत मांहे जाखे रे इणि परें केवली, एहवी सन्मुख जोइए केम वली?
उथलो–वली संजली नारी पेखी करे श्लाघा जे जगें,
ते मोहे माता रंगे राता जमे जवमांहि तां लगें;
पुदगल अनंता एम जाणी रूप देखी चिंतवे,

मल मूत्रनो भंमार तनु ए सुची किम ते संभवे. ॥ ३ ॥
ढाल–मुख ते लालें रे भरियो नाशिका, पुण सिघाणो रे परतिख पासिका;
नेत्र ते पीडे रे कान मेलें भर्यां, कुच पलग्रंथीरूप हिये धर्यां.
उथलो–धर्यां कोठा हाड केरा मेद मांस रुधिर भर्यां,
नसाजाल अमेध पूर्यां पेट चर्मे परवर्यां;
जघन मूत्रे नखशिखादिक अशुचि देह अछे सही,
विषय वाह्यो काम अंध जिय यथास्थिति जाणे नही. ॥ ४ ॥
ढाल–विषय रसासव माता जीव ए, जुगताजुगतो न जाणे कीव ए;
तिल तुस मित्तं सुख दुख मेर समं, कुश अग्र विंदु सागर उपमं.
उथलो–उपमा दुखनी देशथी ए सर्वथी जगगुरु कहे,
जे विषय वाह्यो कर्म बांधे पार किम तेहमथ लहे;

मध्यम वये बहेन समाणी, ते नमिये उत्तम प्राणी रे. जो. ॥ ४१ ॥
ब्रह्मव्रत तरु राखण काजे, नववाडी कही जिनराजे रे; जो.
ते कहीशुं गुरुमुखे धारी, सोलमो अज्झयण संभारी रे. जो. ॥ ४२ ॥
वेसे सूवे जिहां नारी, तिहां न रहे ब्रह्मव्रतधारी रे; जो.
मूषक कूकरू मंजारी, दृष्टांत हिये अवधारी रे. जो. ॥ ४३ ॥
मा बहेन सुता वधू आदें, ए जाख्यो जिन विधिवादें रे; जो.
नारी अग्नि नर घृतकुंभ, पिगले तिम विणसे बंभरे. जो. ॥ ४४ ॥
नाक कान चरण कर पाखे, दांत रहित सिथिल अंग दाखे रे; जो.
पूरवधर दशवियालें, शतवर्षी व्रती न निहाले रे. जो. ॥ ४५ ॥
विकथा जाति कुल बल रूप, नेपथ्य शृंगार सरूवरे; जो.
स्त्री सरीर आलोक न कीजे, एकांति व्रते चित्त दीजे रे. जो. ॥ ४६ ॥

एक आसने शयने न वेसे, अंग फरसथकी मन विणसे रे; जो.
मागहिय संगें कूलवालू, वेणी फरसें संभूति सीआलू रे. जो. ॥ ४७ ॥
कुच आदि नयणे नहु निरखे, देखी मातादिक परखे रे; जो.
कोरूयंतरे वास न करीए, पूरव जोग हिये न समरिये रे. जो. ॥ ४८ ॥
अति सरस आहार न जिमिये, रस छंडी इंद्रिय दमिये रे; जो.
अति मात्रा आहार ते टाले, देह पोखे फवले पाले रे. जो. ॥ ४९ ॥
विभूषण अंगे वरजे, नववाडे मनमथ तरजे रे; जो.
ऊदारिक वैक्रिय वेदें, नव नव अढार इम भेदे रे. जो. ॥ ५० ॥
सूधो जे व्रत आराधे, ते शिवसुख सुरसुख साधे रे; जो.
जंबू ने गयसुकुमाल, ए मुनीनो शील विशाल रे. जो. ॥ ५१ ॥
दोष देखी अग्र गुण देखी, जिणे नारी दूर करेखी रे; जो.

समकित वैरागे पूरा, ते नमिये नित नित सूरा रे. जो. ॥ ५२ ॥

(कलश. हरगीत सम वृत.)

एकेक इंद्री वशे आठे कर्मग्रंथि सुदृढ करे, अनादि अने अनंत चउगइ काल अनंत संचरे;
श्रीपासचंदसुरिंद शिष्य समरसिंघ इम उच्चरे, इंद्रितणो जे करे संवर देवें शिवरमणी वरे. ॥५३॥

इति श्री ब्रह्मचर्य बावनी स्वाध्याय संपूर्ण.

॥ अथ श्री वीतरागाष्टक. ॥

(शिखरणी छंद.)

चिदानंदंकंदं जिनपति जिनेंद्रं अघहरं, सदा शुद्धं ज्ञानं विशदवर ध्यानं सुखकरं;
शरण्यं कारुण्यं अचल शिवअर्कं मुनिवरं, अनंतं अव्याधं परमपदसार्कं जिनवरं. ॥ १ ॥
हितं सर्वसत्वं सुगुणगुणराजं जगपतिं, विधी ब्रह्मं रम्यं विदित सब योगं मगपतिं;
अनेकं एकंवा हरन सब रोगं प्रभु तुमे, सदा शक्ति व्यक्ति परम सुखरक्ति विभु तुमे. ॥ २ ॥

जगत्वंद्यं जेष्टं जयति जगश्रेष्ठं जगगुरुं, महाधीरं वीरं सकल मति ज्ञासं जगद्दरं;
महाजाग्यं जोग्यं जगतजनपालं गतद्दरं, महामोहंसोहं रहितरजपंकं जयकरं. ॥ ३ ॥
गुणाधीशंधीशं रटत तव नामं मुनिजनं, महा मुक्तं गुप्तं कटत सव क्लेशं भ्रमवनं;
महा युद्धं सिद्धं चढत सुखश्रेणी दमयुतं, महाकिर्त्ती स्फुर्त्ती घटत दुखश्रेणी समयुतं. ॥ ४ ॥

(द्रुतविलंबित छंद.)

अघी गुणाकर शंभु सुधाघनी, जविजनांबुजबोधविकाशनी; कुमतिखंडन घोर यतीश्वरं, सुमतिमंडन शंकर ईश्वरं ॥ ५ ॥ जवत जावित जूत विनाशने, तरन तारन पालन शासने; प्रबल कर्मदलंदहतमोहनं, मदनकंदन आननसोहनं ॥ ६ ॥ अड सुरासुर–किन्नर–अर्चितं, अमल जासत ज्ञान सुखार्चितः सरव सत्वहितं गुनसागरं, सुख अनंत महाद्युतिआगरं ॥ ७ ॥ अतिशयं वसु पुन्य अलंकितं, जगतनाथ परं अघ शोभितं; सहससिद्धिलसद् वपुलक्षणं, सरव सिद्धिपरं जव रक्षणं ॥ ८ ॥

(कलश) इम तरनतारन दुरितवारन सकल सुख संपतिकरो ॥ रविहर्ष विधुवर चरन चितधर थुणयो श्री जगदीशरो ॥ निधि पूर्न केशव चंद वत्सर रचित गुनमनी दाम ए ॥ आनंदकंदा हरत फंदा उदय सुरगवि काम ए. ॥ इति श्री हर्षचन्द्रसूरीश्वर चरणकमल सेवी उदयचंद्रेण विरचिता वीतरागस्तुतिः ॥



॥ अथ श्री पांसठा यंत्र उद्धारमय श्री चोविशाजिन स्तोत्र. ॥

(अनुष्टुप् छंद.)

आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथा नमिम् ॥ अजितं जितमोहारिं पार्श्ववंदे गुणागरम् ॥ १ ॥
नेमिनाथं त्रिलोकीशं शांतिंच सुविधिं तथा ॥ अनंतनतदेवेंद्रं स्तुवेहमभिनंदनम् ॥ २ ॥
सुव्रतं सुव्रतं नौमि श्रेयांसं सुखदायकम् ॥ विमलं विमलाचारं धर्मं पद्मप्रभंजिनम् ॥ ३ ॥
मल्लिनाथं जिनेशं च वासुपूज्यं जगद्गुरुम् ॥ कुंथुं च शीतलं वंदे सुपार्श्वं परमेश्वरम् ॥ ४ ॥

संजयं जगदानंदं चंद्रप्रभं नमाम्यहम् ॥ सुमतिं वीरमर्हंतं संघंचापि चतुर्विधम् ॥ ६ ॥
यंत्रोयं जिनसंज्ञाभिः पंचषष्ठ्यंक निर्म्मितम् ॥ पूज्यते यस्य युक्तास्य मंदिरं सततं खलु ॥ ६ ॥
तद्गृहे कोटि कल्याणं श्रीर्विलसतो लीलया ॥ कुष्टापस्म भूतादि नश्यते व्याधि वेदनाः ॥ ७ ॥

॥छ॥

१	१८	२१	२	२३	दादा
२२	१६	९	१४	४	पास
२०	११	१३	१५	६	चंद
१९	१२	१७	१०	७	सूरि
३	८	५	२४	२५	जी

(मालिनी छंद.)

जयति सुखमनेकं तस्य यो मानवश्च
विमलमतिरनिंद्यं स्तोत्रमेतद्वितंद्रः ॥
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत्
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो वदाण ॥ ८ ॥

॥ इति महामहोपाध्याय मुनि श्री मेघराजगणिकृतं स्तोत्रम् ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजिन स्तोत्रम्. ॥

भजे भजे नाथ तवांह्रिपद्मं लभे लभे ते न कुतः प्रसादम् ॥ सदैव चिंतामणिपार्श्वदेव विहाय चान्यान् भुवि सर्वदेवान् ॥ १ ॥ नो प्राज्यं राज्यं प्रार्थये प्रार्थयेहं नो गीर्वाणानामाधिपत्यं सदैव ॥ एकांतेनाशुस्तंभनेश प्रसत्तिं, यौष्माकीणां श्रीभुक्तिमुक्तिप्रदां वै ॥ २ ॥ वरीवृत्यते भक्तिशक्तिर्मदीया दनीध्वस्यते चेत्त्वयि व्यूढविघ्नम् ॥ तदा लोकेश त्वमस्योसिनैव परं रीतिरेषा भुजिष्यस्य नाथम् ॥ ३ ॥ सुरनरमधुपालीपीतपादारविंदे, विजयिनिखलविघ्नव्यूहविध्वंसदक्षे भवति भवति नाथे मुक्तिलक्ष्मीसनाथे त्रिभुवनजनतानां सर्वसंपन्निदाने ॥ ४ ॥ यदह ममलभक्त्या सेवमानोपि शश्वत् किमपि न च लभेयं स्वामिनः सैव देला इति मनसि निधेया कापरेटाख्यपार्श्व तव गुणमणिमाला मालिनी ह्रसिरेषा ॥ ५ ॥ घनसिद्धिसमृद्धिदं श्रुतिदं सुरराजसमाजनतं मतिदम् ॥ यदिवांछसि सूतिविभूतिमदं भज रे करहेटकपार्श्वपदम् ॥ ६ ॥

फलवड्हिजिनेशसुरशेनतं स्वकसेवककद्धितकल्पतरो ॥ ददतां मम नाथ पत्र नने निजपाद सरोरुह नक्तिमलम्. ॥ ७ ॥

॥ श्री अनंतनाथजिन स्तवन ॥

सांजलुं जिम जिम स्वामीना गुण, अधिक उत्तमसार; निकलंक ए अति ऊजला, जिणे जीत्यो रे मोतीनो हार के ॥ १ ॥ जाणुं रे जिन जोवुं, मारे हीअडे रे आणंद अपार के; ते आगल मन ढोवुं, मुज नशे नवे रे श्री अनंत आधार के. जाणुं रे. ॥ २ ॥ आरंन परिग्रह परिहरी, नपनो केवल नाण; सव इंद्र मिलि महिमा करे, हवे वरते रे त्रिजुवनमांहे आण के. । जा०॥ ३ ॥ प्रजु पापपूजेवाजणी, हवे मिलीप परषदा बार; मधुरी वाणी मोहता, प्रजु बोले रे धुरे धरम विचार के. । जा०॥ ४ ॥ (ढाल २ जी. अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, ए राह.) जिनजी नाखे रे नविपण उलखो, पहेलो जीव प्रकार; पृथिवी पाणी रे पावक पवन शुं, वणसइ प्रसहि

विचार ॥ ५ ॥ आप सरीखा रे सवि जीव जाणजो, दणवो कोइ न होय; दुःख अनिष्टाली रे सौ को नहीं, सुख वांछे सहु कोय । आप० ॥ ६ ॥ जो कोइ आपणो एक रोम छेदणे, तो न गमे मन मांहे; एहवुं जाणी रे परह मपीडजो, इम जाण्युं जगनाहे । आप० ॥७॥ परनी पीडाजी हे परिहरो, पालो सघला रे जीव; जमरी जेहवी रे हिंसा नवजलें, जीवदया छे रे दीव. आप.॥८॥ (ढाल ३ जी.) जीवदया पालेवा कारण, जीनजी कह्यो उपाय; कूडो बोल किमे मत बोलो, कूडे पाप न थ य॥९॥ मुज मने मानियो रे, एहवो स्वामी तणो उपदेश; अमृतपान रुचे सवि केहने, कूडिया वतिय विशेष। मुज० ॥ १० ॥ परधन कांइ न लीजिये, चोरीकार कलंक; इणे भवे नृपति निग्रह लहिये, परभवे नरक निशंक। मुज०॥ ११ ॥ धन कंचन परिग्रहनी ममता, म करो करो संतोष; अंते शाथ न आवे मायें, परिग्रह पग पग दोष। मुज०॥ १२ ॥ (ढाल ४ थी.) रमणीसंगे म राचजो, जे करे दोष रंग रे; गुणगण गले इण संगते, जिम अगनिये घृतकुंभ रे ॥ १३ ॥ शीयालवत जिम राखजो, जग यश पामो जेम रे; नेह न होये कमलो, परनारीना

प्रेम रे । शील०॥ १४॥ अबला आदेकी सम गणो, वांकी भृकुटीबाण रे; नरहिरणा पडजो परशा, छूटे ते लोचनबाण रे. शील. ॥ १५॥ काने कुंडल झलहले, पाये नेवर झणकार रे; गजगति चाले कामनी, देखी म धरो विकार रे। शील० ॥ १६ ॥ (ढाल ५ मी.) स्वामी कहे हिंसादिक टालो, मनमांहे क्रोध न राखो; मान माया लोभ किमे म चूको, मधुर वचन मुख भाखो. शोभागी सुंदर निंदा निवारो, निज सुकृत संयम कांइ हारो। शोभागी० ॥ १७ ॥ अवता दूषण परना म कहो, परयश परहो म नाखो; मूढ़ागे कोइ धूल उछाले, सूरज न हुए झांखो। शो०॥ १८॥ तेहवी समता आणो जेहवी, शत्रुमित्र सम लेखो; सिंहमेनराग कुमर इम बोले, जिम तुमे शिवपुर पेखो। शो० ॥ १९ ॥ (ढाल ६ ठी.) स्वामी तुमारी शिक्षा सांभलीजो, जिसी खड्गनी धार; चाली न शकुं इण कारेजी, कायर अछुं अपार. ॥ २० ॥ भोलो रे भागो हिवमां सुगतिनो रे, सिद्धनी शी आश; तरबो तरबो रे प्राणी तुजने दोहिलो, विण जिणचरण निवास। भोलो० ॥ २१ ॥ परने पीडा में बहुली करीजो, कूडो कह्यो रे प्रसंग;

चोरी करीने परिग्रह मिळीव रे, रम्यो त्रिपय रस रंग. जो. ॥ २२ ॥ रात दिवस हुं क्रोधे धधकयो, मान रह्यो भरपूर; माया मोहे लोभ घणो कियो, ममता मूकी दूर। जो०॥२३॥ (ढाळ७मी.)

स्वामीजी तुमारी शिक्षा सांभळीजी, पाळी हुं न शकुं एहां जगतराय; कह्यो न तुमारो माथे में धर्यो, माथे धरिया छे ताहरा पाप । जगत०॥ २४ ॥ दीपके में ताहरा रुडा गुण घणांजी, कंठे मे धर्यो ताहरो नाम । ज० कीरती तुमारीजी जीने में वरीजी, तुम आगळ धरी बे जोडी हाथ. जगत. ॥२५॥ जारें रज धरो में ताहरा पापनीजी, हिवे करजो सेवकनी सार। ज० बापने बालक शुं बहुलो बीनवेजी, हुं भमियो छुं बहुल संसार। जगत० ॥ २६ ॥ छोरुनी पीडा किम पीहर मानवेजी, मुजने छे एक ताहरो आधार; ज० सार्वीने मुजशाना कुंवर तुं थयेजी, देजो मुजने वहेलो भवनो पार. सेवीने स्वामी तुमे छो जिहांजी । जगत० ॥ २७ ॥

(कळश.)

जिहां जनम मरण न रोग सोग न दुप न चोर लगार, मारि छे पण अंत नही छे जिहां ॥१८॥

सुख अपार; (श्री)पार्श्वचंद्रसूरीश्वर पाय नमी जणयो श्री विजयदेवसूरं, अनंतनाथ चउदमो तीर्थंकर सेव्यो आणंद पूरं. ॥ २८ ॥



॥ श्रीचतुर्विंसतिजिन–स्तुतिः ॥

(आर्या छंद.) श्रीगौतमगणधारं शुभतरुराजीप्रतानजलधारम् ॥ त्रिभुवनशोभाकारं नौमि सदा सुंदराकारम् ॥ १ ॥ (त्रिभंगी छंद.) आदीश्वरदेवं सुरकृतसेवं पुण्यविशालं भूपालं, प्रभुमजितं ध्येयं सुरनरगेयं ज्ञानामेयं वंदेहम्॥ संभवभगवंतं शिवजयवंतं रमावदंतं शुभवंतं, संवरनृपनंदन श्री अभिनंदन मौरे नित्यं जगदीशम् ॥ २ ॥ (आर्या छंद.) मेघमहीपतिपुत्रं सुमतिं पद्मप्रभं स्तुवे शुभदम् ॥ श्रीमज्जिनं सुपार्श्वं चंद्राभं चंद्र समचक्रम् ॥ ३ ॥ (त्रिभंगी छंद.) सुविधिं गुणजलधिं वांछितनिधिं वंदे सततं सच्चमुदं, शीतलजिनमिज्यं नतसुरवर्यं कृतवरचर्यं सदैर्यं; समतां विभ्राणं विश्वत्राणं रुचिरप्राणं श्रेयांसं, जिनवासुपूज्यं वासवपूज्यं धृतशिवराज्यं शोभार्यम् ॥ ४ ॥

(आर्या छंद) विमलं विमलज्ञानं जिनाधिराजं प्रज्ञासुरमनंतम् ॥ धर्मं धर्मनिदानं शांतिजिनं नौमि सद्भक्त्या ॥ ५ ॥ (त्रिभंगी छंद.) जनमुदंधरंतं भुविविचरंतं तमोहरंतं गुणवंतं, वहु सिद्धिं दधतं पूर्तिवदंतं भवंतरंतं श्रीमंतम् ॥ कुंथुंजिनराजं प्रवरसमाजं स्तौमिमुदारं श्रीमल्लिं, निर्म्मलतरकीर्तिं निरुपममूर्त्तिं सुवतजिनपंक्तिं शुक्लयम् ॥ ६ ॥ (आर्या छंद.) इक्ष्वाकुवंशमानस-हंसं वंदे नमिं जिनाधीशम् ॥ नेमिं हरीवरवंद्यं ख्यातं पार्श्वजिनं वीरंच ॥ ७ ॥

(स्रग्धरा छंद.) इत्थं श्रीतीर्थराजान् सुरवरमहितान् विश्वविश्वप्रतीतान्, गंगागोक्षीरचंद्र-प्रवरतररुचि-प्रल्पकीर्ति-प्रतातान् ॥ श्रीमत्पूर्णेन्दुशिष्य-प्रथित-सुहृदयो भक्तितः स्तौतिपूज्यान्, भव्यांभोजालिसूर्यान् श्रितवर-रतिदान् सर्वदानंदचंद्रः ॥ ८ ॥

श्रीजिनेंद्र- स्तुतिः

(इंद्रवज्रा छंद) देवाः प्रभोयंविधिनात्मशुद्ध्यै, भक्त्यासुमेरोः शिखरेऽभ्यषिंचन् ॥ संस्तूयसे त्वं समया समोद-मुन्मूद्रते ज्ञानदशा यथा मे ॥ १ ॥

(उपजाती छंद.) ध्यानानुकंपाधृतयः प्रधानो-ल्लासिस्थिरा ज्ञानसुखक्रमंच ॥ मुनाग्रमंति त्वयि सिद्धिसौधाऽधिरूढकर्मोज्झितविश्वरूपः ॥२॥ संसारजीतं जगदीशदीनं मांरक्ष रक्षाक्रमरक्षणीयम् ॥ प्रौढ-प्रसादं कुरु सौम्यदृष्ट्या विलोकय स्वीय-वचश्चरेहि ॥३॥ नतेंद्र ! विज्ञवित दोष! दानादरिद्रा अपि वीत दौःस्थ्याः ॥ त्वयिकृता जूरिघना अनंतज्ञानद्विशासक्रममंकुमासान् ॥४॥ विवेजवैर्मुक्तिमनाद्विपाया-स्तवस्त्रिपूर्जीविश्वविसंघ्यम् ॥ कल्याणकानां जिनपंचपर्वी-माराध्य जन्यः क्षपतेऽष्टकर्म ॥५॥ शाम्येनपश्यन् त्रिजगद्विवेकी, श्रयन् प्रजो पंचसमित्युपैति ॥ अपास्यसतत्त्यपि सिद्धिमध्ये, सिद्धंजवेनोपजयाउपेशम् ॥६॥ मुक्त्वाजयं सौख्यमवाप्तुमंगी, धीमांस्त्यजन् मोहमघस्यहंता ॥ योमुच्यमानस्तमसासिवीयेत् त्वत्सेविता काम्यतु सोग्रनेतः ॥७॥ क्षेमेपुत्रक्षुत्सुधनायमानो, हितः पितेवामृतवद्गुरापः ॥ मम प्रजोजन्पतरंस्वजूत्यी, जायं सदानंदमयः प्रदेयात् ॥८॥

॥ श्रीपंचतीर्थि–स्तुतिः ॥

(गीती) श्रीनाभिसंभवविभुं, भवसंभवकलुषकूट–संहरणम् ॥ अज्ञानध्वांतहत्यै, पुरतस्तमसो-र्कमंमलं वंदे ॥ १ ॥ (छंद भुजंगी.) जगज्जृंभ-चंचच्चिदानंदवासं, निराधार-निर्लेप-रूपावभासम्॥ त्रिनिक्षेप-निक्षेप-दुर्बंधरिक्तं, युगादीश्वरं मूर्द्धलोकाभिषिक्तम् ॥ २ ॥ (आर्या) श्रीजितशत्रुभवमव, भवनंत्रैलोक्यजंतुराशीनाम् ॥ अभवनमध्याशानां भवोद्भवानां सदा सेवे ॥ ३ ॥ (भुजंगी.) श्रुतीनामगम्यं स्वतो भिन्नजानां, सुगम्यं स्वयं संविदां नीरजानाम् ॥ मनःकायवाचां निगूढं रहस्यं, स्वरूपाजितं सिद्धिभाजं सदास्यम् ॥ ४ ॥ (आर्या) श्रीशांते स्वर्णकांते, महिष्टमंदारमूलमहतरो ॥ मामुद्धर दुःखाब्धेः सत्त्वाधिकसौख्यसागरंधेहि ॥ ५ ॥ (भुजंगी) जनुर्यस्य लोकोपकारैक हेतु-र्महातंककक्षक्षये धूमकेतुः ॥ अचिंत्य-प्रभावोद्धरं यस्य नाम, तुलोत्तीर्णधाम्ने तदस्मै नमामः ॥ ६ ॥ (आर्या) यन्नामसिद्धमंत्राः कृतसंकेताश्वसन्निधिंयांति ॥ नागेंद्रमुखादेया स्तमाश्वसेनिंजिनंस्तुमहे ॥ ७ ॥ (भुजंगी) अदृश्यामनश्यामशस्यामरस्या-मपारामहारामचारामभाराम् ॥ कलांकांचिदस्ये-

करूपां दधानं, निरुल्लेखसद्लक्षणः संविधानम् ॥ ८ ॥ (आर्या) श्रीवीरतीर्थंकृतन, उत्तमार्गानु शुद्धाय बुध्या ॥ विभ्रांतैः परसमयै-रबाधितं शासनं जयति ॥ ९ ॥ (भुजंगी) निरुद्योग निद्राविनी राग भाव-प्रतिद्वंद्व समृद्धं प्रसाध्यस्वभावम् ॥ महानंदसौधे सदाग्रः शमाप्ते, निरीशाय कर्मेनिद्रस्मैनमस्ते ॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडित) इत्थंश्रीजिनपंचकस्तुतिमिषाद्भक्तिर्मयाविष्कृता, सद्वृत्तैः श्रुतिबोधिदः सुविशदो हेतुः सदा दैवतम् ॥ संसारभ्रमभंजने गरमलंकारस्वविने प्रभुः स्मारमारा मविधूदयाय सततंभूयादियं भाविता ॥ ११ ॥ इतिश्री पंचतीर्थी स्तुतिः ॥

श्री वीशविहरमानजिन नमस्कार.

(ॐ) समरी जिनराय धरी बहु भाय लिवं गुणगाय सदा सुखकारी, विहरमाणवीश लोकत्रय ईश मुदा जगदीश नमुं हितधारी; क्षेत्र विदेह सदा सुखगेह मनोरथरेह भजो शिवतारी, मुनिदशलक्ष पाइ जिन सत्य सारि बहुभ्रत्य भजे इकतारी ॥ १ ॥ सिमंधरदेव भजुं नित मेव करुं नित सेव ध्यान करितोरे, जुगमंधरस्वाम अनंतगुणधाम टारिसव काम भवभ्रम ठोरे; जपुं जिन बाहु

जिहाँ जब लाइ हरिकत साहु सुधाकर जोरे, सुबाहु अरिहंत गिणु नितमंत करोमन खंत घणुं मनमोरे ॥ २ ॥ जंबुद्वीप च्यारि नमे नरनारी ईतजनचारि रंग रसरत्तो, धातकीय खंड छमंग अंग मंदि अठजिन तंदि सबे जग वत्तो; स्वामि संजात स्वयंप्रभु गात सोवन सम धात महागुन जुत्तो, रिखभानन देव अनंतवारिदेव सुरप्रभ देव नमुं मणिमत्तो ॥ ३ ॥ विशाल जिननाम वज्रधर साम हुए रिमराम जगिकजग केरो. पुष्करदीवअर्द्ध गुनमनि तिहां चंद्रबाहु रिद्ध श्रेपगुण फेरो, भुजंग जिनराय ईशर सुरराय नेमि प्रभुराय रहुं गहि केरो, संयम तप काय सदा मन लाय वीरसेन राय हरे मनमेरो ॥४॥ स्वामि महाभद्र करे नित भद्र सोम्यगुनचंद्र जजुं चित्त लाई, देवयशाईश सुरानर धीश नामि निज शीश जिनं गुन गाई; जिन अनंतवीर्य मेरु जिम धीर्य अनंत गुण वीर्य टारि कर्मदल धाई, दशरथ धरि प्रेम अठजिन एम जप्यां जग खेम हुशे तुम्ह भाई ॥ ५ ॥ इम वीश अरिहंत सोवन तनकांत विदेहपंचसंत जिनेसर राया, आसी लख पुव्व गृहवास सब तजी मन भाव जिवे रिखराया; पूरव इक लाख परे जिनराख सिद्धंतकी साख पोरे तप काया, अतिशे

चोत्रिश वाणी पणत्रिश गुणे जगदीश भरो मन भाया ॥ ६ ॥ चौविह संघताण करे सुखनाण योजन लगि वाण महासुख सासे, कुंथुं अर जम्म विने जिन पम्म मुनिसुव्रत नम्मि मने दीन जासें; चोसठ मिली इंद नमे नरवृंद दिये सुखकंद मणुजववासें, जवेचंद गुरुराय नमी तसु पाय वीश जिनराय दशरथ गुन भासे. ॥ ७ ॥

श्रीजिन नाम रक्षा स्तोत्रं प्रारंभ.

सर्वातिशय संपूर्णान् ध्यात्वा सर्वजिनाधिपान् ॥ पंच-वर्णान् पंचरूपविरपडुमकुंजरान् ॥१॥ चतुर्गात्रीश्चतुर्वक्त्रान् चतुर्विंशतिसंमितान् जैनी सर्वांगेषु रक्षां कुर्वे दुःखौघघातिनीं ॥ २ ॥ शिरो मे वृषभः पातु भालं श्री अजितप्रभुः पातां मे श्री जिनो नेत्रे संभवश्चाभिनंदनः ॥ ३ ॥ सुमतिः पद्मप्रभश्च श्रवणौ ममरक्षताम् ॥ सुपार्श्वो रक्षतु घ्राणं मुखं चंद्रप्रभप्रभुः ॥ ४ ॥ रसनां सुविधिः पातु कंठं श्री शीतलो जिनः ॥ स्कंधं श्रेयांसः श्रीवासुपूज्यश्च विमलो भुजौ ॥ ५ ॥ अनंत श्री धर्मनाथौ पातां मे करपल्लवौ ॥ शांति मेंहृदयं रक्षान्मध्यं नाभिं कुंथ्वरौ ॥ ६ ॥ मल्लिः कटीं

एवं गुरुः स्वामी श्री गौतमस्तन्निचित गुणनिधिः कीर्त्यते केन तुल्यः ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्रम् ॥

तीर्थेश्वरं जगन्नाथमर्हंतं बोधिदं प्रभुम् ॥ सन्मानपरमानंदं योगीशं परमेष्ठिनम् ॥ १ ॥ सारैमणिरत्नौघकनकाकारमप्ययम् ॥ जनोल्लासक—पीठस्थं त्रिपक्ष—वरचामरम् ॥ २ ॥ विचित्र रचना चैतातपत्रित्रय शोभिनम् ॥ अन्यशासन वादीन्द्रैर्वंदितांह्रीसरोरुहम् ॥ ३ ॥ भव्य मानसमालिन्य प्रक्षालन जलप्रदम् ॥ प्राणि जन्माद्य तापौघ निवारकजलप्रदम् ॥ ४ ॥ त्रैलोक्य भेदमार्तंडमदकन्दर्पविदारकम् ॥ निर्विघ्नमद्दातारं पार्श्वयक्ष प्रसेवितम् ॥ ५ ॥ विपत्संगरना-शानि वांछितानि ददातरम् ॥ महानाग—भयत्रानामुपद्रव विघातकम् ॥ ६ ॥ सर्वज्ञं सर्वगं सार्वं शास्वत [illegible] प्रमाणेनसंमेयं वादिनां विजयप्रदम् ॥ ७ ॥ रमारामावशो रम्या पद्मावत्युपासकम् ॥ वंदे नवनिधिं पार्श्वमाश्वसेनि महस्विनम् ॥ ८ ॥ (आर्या वृतम्) इत्यनुजीव्ये-नमथ [illegible] ध्यायात् शिवसुखैः पार्श्वजिनो नम्रिमता संस्तुतस्तोत्रात् ॥ ९ ॥

श्री आदिनाथजीनुं स्तवन.

(मांभरिआ मुनिवर धन धन तुम अणगार—ए देशी.)

शत्रुंजयमंडण आदिजिन, दीनतणी अवधार; मुज मन तिम वळगी रह्योजी, जिम न शकुं कतार, मनमोहन जिनवर छे साचो तुम नाम. मन समवडि काया मिलेजी, तो नहो अंदुंगाम; नित नित करी प्रदक्षिणाजी, प्रभु तुम करुं प्रणाम. मन. ॥ २ ॥ जे प्रभु मुजने तें कह्योजी, ते तो में नवि थाय; वैरी-कर्म जिहां तिहांजी, विकट ते केम थाय. मन. ॥ ३ ॥ इणगिरि जे उत्तम चड्याजी, ते न रह्या संसार; जे नीचा नही कतर्याजी, ते पहोता जवपार. मन. ॥ ४ ॥ जाणुं उत्तम गति लहुंजी, ममता नहुं मूकाय; ने छंडी गुण पण गळ्योजी, समरथ विण न लिवाय. मन. ॥ ५ ॥ ते समरथ पण मुज नहीजी, रे मन हजी तुं विमास; वामन ते फल किम लहेजी, जे ऊंचा आकाश. मन. ॥ ६ ॥ रे मन तुज आव्यो अछेजी, मांकड्नो वैराग; एतो थिर तो दिज रहेजी, जे माथे हुए ज्ञाग. मन. ॥ ७ ॥ एमनाथप्रभुनो सहीजी, जेतुं लिण थिरथाय; सोनैये (सुवनटंक) कोडी

धर्मेजी, पर देखे तिण जाप. मन. ॥ ८ ॥ सघल संयोग विना मिढ्येजी, काज न चढे प्रमाण; एक
चक्रे रथ किम वहेजी, निश्चे इम तुं जाण. मन. ॥ ए ॥ अमतुम बे साथे मिलीजी, पामी अवसर
जाय; करिशुं प्रभुसेवा वळीजी, हियडां मुऋशुं आव. मन. ॥ १० ॥ घणुं घणीपरे इम कह्युंजी,
तोपन मूके पाठ; उत्तम पाम्या प्रभुतणाजी, जे जाए ते जाउ. मन. ॥ ११ ॥ काया आवी मुज्ज-
शुंजी, चित्त रह्युं तुम पास; ते प्रभु थिर करी राखजोजी, तुमचे चरणे निवास. मन. ॥ १२ ॥
मनभ्रमर तुम पयपंकजेजी, रमण करुं निशदीश; परमानंदी परिमलेजी, पूजुं तास जगीश.
मन. ॥ १३ ॥ शत्रुंजयमंडन तुम्हशुंजी, मैं मांडी अधुआर; चित्त तिहां काया इहांजी, मति
मूकेजो विसार. मन. ॥ १४ ॥ दूर थतां प्रभु ढूकडाजी, कीधा एणे उपाय; ए मन तुम मुज बिचे
फरेजी, गति आगति खिणमांय. मन.॥१५॥मननी गति छे जेहवीजी, तेहवी तननी थाय; तो प्रभु
सेवा वाहरीजी, वेळा थोडी जाय. मन.॥१६॥ स्वामी अहनिशि उलगेजी, चित्त चपल पण वारी;
मुज पण ए फल संपजेजी, अनुमतिने आधारि. मन. ॥ १७ ॥ आलोची कायाशुं सहीजी, हुं वेहलो

आवीश; पार्श्वचंद्रसूरी विनवेजी, वंछित फल पामीश. मन. ॥ १० ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन. ॥

(देशी झांझरीआमुनिनी.)

श्री मुनिसुव्रत वीनवुंजी, त्रिभुवनतिलक समान; सुरतरु गो चिंतामणि अधिको, गुणमणि रयणनिधान, जगतगुरु तुमसम अवर न देव, जगनायक जगतारक मिलियो, अहनिशि करशुं सेव. जगत. ॥ १ ॥ प्राणत देवलोकथी चवियां, वीशसागर जिहां आयु; राजगृह नयरें अतिसुंदर, सुमित्र नामे तिहां राय. ज. ॥ २ ॥ पद्माराणी रंभसमाणी, तासकुखे अवतार; श्रावणशुदी पूनम दिन पाम्यो, जगजीवन आधार. ज. ॥ ३ ॥ श्रवण नक्षत्रे चंद्रने योगें, छत्रपति अवसर होय; जनम जेठ वदि आठम दिवसें, पाम्यो रिख वली सोय. ज. ॥ ४ ॥ मकरराशि कुर्मलंछन प्रभु, शामल वर्ण शरीर; धनुष वीश वीशमो जिनेश्वर, सायर जिम गंभीर. ज. ॥ ५ ॥ (ढाल राग भैरव.) प्रभुगर्भथकी दिनरात, मुनिनीपरे सुव्रत मात; तिणे मुनिसुव्रत विख्यात. ॥ ६ ॥ ए

नाम सजन मांही दीधो, सुरनरवरि अंगीकार कीधो; निजजनम तणो फल लीधो. ॥ ७ ॥ प्रभु दिन दिन क्रमे क्रमे वाधे, रायलच्छिजोग समाधे; लूखे परिणामें साधे. ॥ ८ ॥ राजरिद्धि रमणी भंडार, ए जाणी सहुए असार; ठंडी ढपे संयमभार. ॥ ९ ॥ उपन्नो तिहां मणनाण, राजगृह दिक्खाठाण; तप छठ कर्यों परिमाण ॥ १० ॥ फागण शूदि बारसे जाणो, हिव पारणुं प्रथम वियाणो; ब्रह्मदत्त गृहि सुवखाणो ॥ ११ ॥ प्रभु दुःकर संयम पाली, तप सबल करी कर्म टाली; ज्ञान केवल अनि अजुआली ॥ १२ ॥ फागण वदी बारसे जाणी, केवल महिमा ति वखाणी; तिहां करे विबुध तिपनाणी ॥ १३ ॥ चंपक तरुतले छठ कीधो, उपदेश अमृतसम दीधो; भवियणजण कारिज सीधो ॥ १४ ॥ अढार थया गणधार, सहसत्रीश हुवा मुनि सार; तप-संयम-शीलभंडार ॥ १५ ॥

(ढाल राग वसंत.) पचास सहस साहुणीये जास, परिवहिये संयमनो निवास; मुनिसुव्रत स्वामी नमुं भाय, पाय प्रणमे नरपति अमरराय ॥ १६ ॥ सहस सतर एक लख अधिक जाणी, श्रावकव्रत बार सहित वखाणी ॥ मु० ॥ १७ ॥ त्रिण लाख अधिक सहस चउतीश, श्राविय

गुणगावें निशिदीश ॥ मु० ॥ १८ ॥ वरुणाज्ञिदाण यक्ष करे सेव, नरदत्ता नामि तास देवि ॥ मु० ॥ १९ ॥ आयु पाली वर्ष सहसत्रीश, सम्मतशिखरि आव्या जगीश ॥ मु० ॥ २० ॥ संथारो करी प्रभु सिद्ध पत्त, जेठ वदि नवमी दिनि नमुं नित्त ॥ मु० ॥ २१ ॥

(कलश) इम वीशम जिणवर भविपण सुखकर जंबूनयरिश्रे ध्याइये ए, श्रीपार्श्वचंद्रसूरिवर शिष्य समरचंद एकवीश ठाणे गाइये ए; सोलसय नवुत्तर वरषें पोष वदि आठम दिनि आराधिये ए, प्रभुपय सेवा फल वंछित लहिये अनुक्रमि शिवसुख साधिये ए ॥ २२ ॥

॥ श्री उपदेशरहस्य सझाय ॥

" गुरु आरे गुण तुम तणा " ए देशी.

विनय करीने गुरुगम सांभली, आगम अरथ विचारुं रे ॥ विणु परमारथ जाण्या पाखे, किम पामीस भवपारु रे ॥ १ ॥ वापडला जीवडला एह, मरम मन राखे रे, विधि उपदेश जे हिंसा जाणे, तेह प्रत्ये तुं भाखे रे ॥ वापडला ॥ ए आंकणी ॥ धर्मकथा उववाइ

उवंगे, एह यथास्थित वाणी रे ॥ प्रथम अंगे अध्ययन चोथे, जिनउपदेश ते जाणी रे ॥ वापम्ला० ॥ २ ॥ साधु गृही अधिकारे जिणवर, सहुए जीव रखावे रे ॥ तिणहीज वचने मूल रखावी, सूखिम केम हणावे रे ॥ वापम्ला० ॥ ३ ॥ अलिय अदत्त अवंभ परिग्रह, जिन उपदेशे म जोइ रे ॥ सूखिम वादर मांहोमांहे, श्रुत विपरीत न होइ रे ॥ वापम्ला० ॥ ४ ॥ जे गीतारथ नाम कहावे, थापि ए नदी उतारु रे ॥ सावद्य कारणे आमो मंने, ते कहीये अविचारु रे ॥वापम्ला० ॥ ५ ॥ आचारांगे दशाश्रुतकंधे, साधुतणे अधिकारे रे ॥ एक जले एक थले पाउ करीने, जयणा जलें उतारे रे ॥ वापम्ला० ॥ ६ ॥ जे जले पद ते लोकाचारे, जे थले ते उपदेशे रे ॥ इण विणु मोटत मोटत मोटे, दींसे नदीय प्रवेशे रे ॥ वापम्ला० ॥ ७ ॥ केवली उद्मथ जल उतरतां, इरियावही संपराई रे ॥ अनुक्रमे वेउने किरिया लागे, एह रहस्य ट्यो ज्ञाई रे ॥ वापम्ला० ॥८॥ थरुापीने इरियावहीया, सकषायी संपराई रे ॥ एक उपदेशे विणु उपदेशे, वीजो आगमे थाई रे ॥ वापम्ला० ॥ ९ ॥ सरखी जयणा करतो रागी, निरागी पण चाले रे ॥ एक उत्सूत्रे बीजो

सूत्रे, अंतर जरिये ठाले रे ॥ वापमला० ॥ १० ॥ राग दोष परहरवे जयणा, निश्चय नय व्यवहारे रे ॥ केवल नाणी एहज जाखे, अवर यथास्थित वारे रे ॥ वापमला० ॥ ११ ॥ पंचम अंगे सप्तम दशमे, अढारमे शत बोले रे ॥ एह जाव जे निरता जाणे, तसु मति किमे न डोले रे ॥ वापमला० ॥ १२ ॥ सावद्य लव जे इरियावहिया, ते निश्चय सद्दहीये रे ॥ कहत विचाले संख न लाजे, व्यवहारे केम कहीये रे ॥ वापमला० ॥ १३ ॥ पंचय चारित्र चार यथास्थित, पंचम जिन विधि वादे रे ॥ एह सद्दहणा उत्तम लहीने, जोला म पड प्रमादे रे ॥ वापमला० ॥ १४ ॥ एह रहस्य जग वीरलो कोइ, जिन जाखित चित्त राखे रे ॥ श्री साहुरयण गुरु चरण प्रसादे, श्री पार्श्वचंद्रसूरि दाखे रे ॥ वापमला० ॥ १५ ॥

॥ श्री मेघकुमार सज्झाय ॥ समकितद्वार गजारे.पेसताजी ए देशी. ॥

वीरजिणेशर वंदु त्रिगतशुंजी, प्रणमी गोयम पायरे; थविर दरखे हुं ऋषिराजियोजी, मेघकुमर जले जायरे ॥ १ ॥ सहज सोजागी साधु शिरोमणीजी, जेहनुं चरित्र विस्तारे; स्वामी

सुधर्म जंबूश्रते कहेजी, छठा अंग मझाररे ॥ सहज० ॥ २ ॥ नयरी राजगृही अति रलियामणीजी, श्रेणिक तिहां नृप साररे; धारणीदेवी तसु घरि सुंदरुजी, मंत्री अभयकुमाररे ॥ सहज० ॥ ३ ॥ धारणीदेवी गज सुपन लहेजी, पूछ्या पंडितराजरे; पुत्र होशे नृप तुम घर राजियोजी, सिध्यां सघलां काजरे ॥ सहज० ॥ ४ ॥ धारणीने मन मोहलो ऊपनोजी, त्रीजा मास मझाररे; पंचवरण जलधर जनवेजी, वरसे मोटी धाररे ॥ सहज० ॥ ५ ॥ देव आराधी मोहलो पूरवेजी, मंत्री अभयकुमार नवमे मासे पुत्ररतन जणयोजी, नामे मेघकुमाररे ॥ सहज० ॥ ६ ॥ कला बहुत्तर [illegible] राणी रमणी आठरे; देव दोगंदुकनी परे भोगवेजी, विलसे लक्ष्मीठाठरे ॥ सहज० ॥ ७ ॥ [illegible] वीर समोसर्याजी, वंदे मेघकुमाररे; समजावीने माता पिताजी, लीधो संयम [illegible] ॥ सहज० ॥ ८ ॥ [illegible] सूतो साथेजी, बहुला साधु संचाररे; [illegible] ॥ सहज० ॥ ९ ॥ [illegible]

(ढाल बीजी) रवि उगमते आवियो रे, वीरजिणेशर पास; वीर [illegible] मन उल्लास रे मेहा, सांजल माहरी वाण, तुं तो गुणमणि केरी खाण, तुं तो शुभ मति हियडे आण, जिनवचने प्रीति म आण रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १ ॥ इहांथकी जव पाछले रे, त्रीजे [illegible]; छ दंत मेरुप्रज हाथियो रे, सहसगमे करी आढ्य रे मेहा ॥ सांजल० ॥ २ ॥ ग्रिष्म- [illegible] रे, [illegible] ते गजराज; पहोतो एक सर एकलो रे, पाणी पीवा काज रे मेहा ॥ सांजल० ॥ ३ ॥ [illegible] रे, खूतो ते अंतराल; पूरव वैरी हाथियो रे, पीडे ते ततकाल रे [illegible] ॥ [illegible] रे, चोसालो वरसांज; काल करी विंध्याचले रे, [illegible] ॥ [illegible] दंत मेरुप्रज रातमोजी, सात सयां परिवार; [illegible] ॥ ६ ॥ वन दव कागरवा करे रे, [illegible] ॥ सांजल० ॥ ७ ॥ उन्हाले [illegible] रे, [illegible] रे मेहा ॥

सांजल० ॥ ८ ॥ ससलो एक तिहां रहेवारे, पामे नहीं जरी लाग; तें पण कान खुजालवारे, उपाड्यो एक पाग रे मेहा ॥ सांजल० ॥ ९ ॥ गज पग हेठे ससलो रह्यो रे, लाग्यो अति सुकमाल; जीवदया मन लेखवी रे, राख्यो पग अंतराल रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १० ॥ रात अढी वन दव दलो रे, ससलो पहोतो ठाम; हाथी पण तूटी पड्यो रे, मूओ शुभ परिणाम रे मेहा ॥ सांजल० ११ ॥ जीव दया मन लेखवी रे, श्रेणिक घरि अवतार; गज भवे जे दुख तें सह्यो रे, तुं कां नहि संजार रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १२ ॥ वचन सुणी जगगुरुतणारे, चेत्यो मेघकुमार; जातिसमरण ते लहे रे, बिहु नयणां करे सार रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १३ ॥ पुनरपि दिक्षा आदरीरे, जप तप कीधा अपार; विपुलगिरिकरे मेघजी रे, संथारो मनोहार रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १४ ॥ काल करी सुरपति थयो रे, विजय विमान मझार; एकण भवने अंतरे रे, लहेशे भवनो पार रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १५ ॥ इम शिष्य ठामे आणीओरे, सद्गुरुए ततकाल; रायचंद्रसूरी जयोरे, पभणे मुनि मेघराज रे मेहा ॥ सांजल० ॥ १६ ॥

॥ श्री वीशस्थानकतपनी सज्झाय. ॥

(वीर सुणो मोरी वीनती. ए देशी.)

वीश थानक तप सेविये, भव्य प्राणी रे आणी मन भाव; श्री अरिहंत इम उपदिशे, ए तपना रे मोटा परभाव ॥ वीश० ॥ १ ॥ नमो अरिहंताणं गुणो, पद पहिले रे मन हरख अपार; रूपत भावत भेदशुं, जिन पूजा रे करे आठ प्रकार ॥ वीश० ॥ २ ॥ नमो सिद्धाणं एहवो, शुद्ध चित्तें रे गुणो बीजे ठाण; आराधो सिद्धचक्रनुं, जिम थाए रे निज जनम प्रमाण ॥ वीश० ॥ ३ ॥ पवयणस्स नमो गुणो, त्रीजे ठाणे रे करो नाण अभ्यास; भगति करो सिद्धांतनी, जिम पावो रे तुमे लीलविलास ॥ वीश० ॥ ४ ॥ आयरियाणं नमो गुणो, चोथे बोले रे पूजो गुरुजीना पाय; नमो थेराणं पंचमे, गुणो सेवो रे धरमी मुनिराय ॥ वीश० ॥ ५ ॥ पंडित गुरुने पूजिये, छठे गुणिये रे नमो उवज्झाय; नमो सव्वसाहूणं सातमें, वलि सेवो रे तपसी सुखदाय ॥ वीश० ॥ ६ ॥ नमो नाणीणं आठमे, गुणिये भणिये रे नवा स्तवन सज्झाय; नमो दंसणधारी गुणो, पाले नवमे रे

समकित सुखदाय ॥ वीश० ॥ ७ ॥ विनयसंपन्न नमो इसो, पद दशमे रे गुणिये शुन्न ध्यान; विनय करो गुणवंतनो, इण रीते हो लहिये शिवस्थान ॥ वीश० ॥ ८ ॥ इग्यारम थानक गुणो, पडिक्कमणां रे बे सांझ सवार; चारित्तस्स नमो इसो, पद ध्यावो रे शिवसुखदातार ॥वीश०॥ ए॥ गुणो बंजयारीणं नमो, आठ पहोरी रे करो पोसह लील; बारमें ठाणे पालिये, शुन्न जावे रे निरमल गुण शील ॥ वीश० ॥ १० ॥ नमो क्रियाधारी जणी, मन गुणिये रे नित तेरमें ठाण; सामायिक पण लीजिये, दोष टालो रे बत्रिश प्रमाण ॥ वीश० ॥ ११ ॥ तप अधिको करो चउदमे, नमो तवस्सी रे गुणिये मन रंग; तपसी सेवा कीजिये, वलि रहिये रे तपलीने संग ॥ वीश० ॥ १२ ॥

(ढाल बीजी—देशी थंजणपुरनी.) अतिथिदान बहु जावे दीजे, नमो गोयमाइणं गुणीजे; पनरमी किरिया एह; प्रतिमाने जूषण पहिरावो, नमो जिणाणं ए पद ध्यावो, सोलमे धरी सनेह ॥ १ ॥ आठ पहोरी पोसह विधि करिये, ध्यान नमो चारित्तस्स धरिये, ए विधि सतरम ठाण; नमो नाण उठरंगे जलिये, नमो नाण ए गुणणो गुणिये, अढारमे परिमाण ॥ २ ॥ नमो सुअस्स

गुणो मन चंगें, पुस्तक पूज करो बहु जंगें, ए जुगणीसमें रीत; नमो तीत्थ ए ध्यान धरावो, संघ चतुर्विध जक्ति करावो, वीशमे शास्त्र विदीत ॥ २ ॥

(ढाल त्रीजी.) दोय दोय सहस्र प्रत्येके करेरे, गुणिये गुणणो सुविशेषे; चारशो उपवास पूरीजे रे, समकित गुण शुद्ध धरीजे ॥ १ ॥ ए वीश स्थानक विधि जाणी रे, सेवो मन उलट आणी; विधिशुं जो ए तप वहिये रे, तो तीर्थंकर पद लहिये ॥ २ ॥ जावे स्तव चारित्र धारी रे, रूप जावे विधि सागारी; सेवे जे नर ने नारी रे, ते मोक्षतणां अधिकारी ॥ ३ ॥

(कलश.) इम वीशथानक तपतणी विधि शास्त्रने अनुसार ए, जे वहे नर ने नारी विधिशुं धन्य तसु अवतार ए; श्री रतनपुरवर संघ सुखकर जगतनाथ जिणेसरो, तसु चरणपंकज नमे जावे वखतचंद मुनिवरो ॥ १ ॥ इति श्रीपद्मचन्द्रसूरि संतानीयोपाध्यायेन कृतम् ॥

॥ श्री अवंतिसुकमालनां चोंढालियां. ॥

सोना रुपाके शोगठे सइयां खेलत बाजी--ए देशी.

गोयम गणधर पाय नमी सरसती संभारी, श्री अवंतिसुकुमालनो कहुं चरित्र विचारी; मालवदेश सोहामणो उज्जेणी नयरी, धण कण कंचण रयण भरी नवि गंजे वैरी ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर अति भला वर पोल पगार, वाव्य सरोवर वन वली सोहे घणा फार; सारथवाही तिहां वसे भद्रा इणि नामें, आर्यसुहस्तीसूरीजी आव्या तिणे ठामे ॥ २ ॥ प्रतिमा जीवितस्वामीनी वंदेवा काजें, समोसर्या वनमांहिआठे पूरण गुण गाजें; नगरमांहि बिहु साधुने गुरु दे आदेश, जोवो उपाश्रय सूझतो यती योग विशेष ॥ ३ ॥ भद्राघरि मुनिवर गया भावें ते वंदे, किण कारण तुमे आविया पूछे आणंदे; लाभ उपाश्रयना घणा बोल्या सिद्धांतें, तिण हेतें गुरु मोकल्या आपो एकांतें ॥ ४ ॥ वाहनशाला मोकली रहेवा देखाडे, सपरिवार गुरु तिहां रहें मन धर्म रमाडे; नलिनीगुल्म विमाननो अध्ययन संभारें, श्री गुरुभाषित तिहां भला ते सयल विचारें. ५ गोखे बेठो भूमि सातमी बत्रीशे नारी, रूप लावण्य कला भरी यौवनवय सारी; सोल शिणगार सजी भला रंभा रतिरूपें, नाटिक गीत रसें रमें जिम अमर सरूपें ॥ ६ ॥ सांभलया अध्ययन ते कुंवर दे

कान, अमियरसायण जेहवो संजलिता ज्ञान; प्रासाद हुंती छतरी गुरु पासें आवे, अति रूडी परि सांजली मन जावना जावे ॥ ७ ॥ गुरुजी एह विमाननो जिशो कहियो विचार, ते दीठो पूरव जवें जोगव्यो अपार; जातिसमरणने बलें संजारे साचुं, मांची श्रीगुरुने कहे ए वयणडुं जाचुं ॥ ८ ॥ जगवन् हुं जड़ातणो नंदन अवधारो, इणि विमान पूरव जवें थयो अमर विचारो; हिव पुण तिम करुं तेहथी लहुं एह विमान, मुजने चारित्र द्यो तुम्हे सर्व सौख्यनिधान ॥ ए ॥

(ढाल बीजी) प्रजुजी सुखकर समकित दिजे—ए देशी. सुगुरु कहे सांजल रे कुंवर डुःकर चारित्रजार; लोहतणा जव केम चवावे, किम वहिये लोहजार ॥ १० ॥ कुंवरजी कोमल अंग तुमारो, ए व्रत डुःकर अम्हारो (आंकणी.) अगनिज्वाल किणि परे पीवाय, अगनिमांहि किम चाले ? तुला तुले मेरु कहो किम, फणिमणी किणि परे झाले ? ॥ कुंवर० ॥ ११ ॥ बांहे रतनागर किम तरिये, खम्गधार किम चांपे; सिंहतणे मुखें किम रहिये मंनी, मरण जये जे कांपे ॥ कुंवर० ॥ १२ ॥ जड़ानंदन वलतुं जंपे, साची वाणी

गुणाली; हुं विण ठुकर आणि चारित्र, पाळीश मामाचारी ॥ कुंवर० ॥ १३ ॥ श्रीगुरुजी सुज तवे, शुभ दया आणो; निरवद्योषरि आहारी पावुं, एह वचन शुद्ध जाणो ॥ श्री गुरुजी०॥ १४ ॥ चारित्र आदरि अणसण पाळुं, साहस मन संताळुं; थोडे कालें कारिज साधुं, पापतणा मल टालुं ॥ श्री गुरुजी० ॥ १५ ॥ गुरु कहे मात अंतेउरी अनुमति, लेइ संयम मागो; मोहतणी निद्रा मुकाने, ज्ञान विवेके जागो ॥ कुंवर० ॥ १६ ॥ अनुमति मांगी कोइ न आपे, करे आपणपें लोच; देवे वेष दतानो आदरी, करी कषाय संकोच ॥ श्री गुरुजी० ॥ १७ ॥ तिणि वेषे गयो गुरु पासे, श्री गुरु वत उचरावें; गुरु आदेशे अणसण लेइ, स्मशान थानकें आवे ॥ श्री गुरुजी० ॥ १८ ॥

(ढाळ त्रिजी–गुरु गोतम गणधर चरणे शीश लगाउं–ए देशी.) कंथेरीतणे वने काउसग करवा आप. नवकार जपंतो काउसग निशंकण ठाय; सुकुमालपणे पगलाथी रुधिर झरंती, तृषणा तेणे दुःखवलता कांता० (त्रूटक.) तिणे गंधे निशांथी शियाली, निज बालकशुं आवे, तिहिं लागी ... , मसाणे रण चावे; चटचट करती चर्मज तोडे, तड तड करती

मंस; धिगधिग मेह कटकी, कस थे पग कर्या निर्मंस ॥ १९ ॥ एक पहर गम्यो इम रुअडे धर्मह ध्यानें; जाणे करे विनासण एहवी समता माने, इम बीजे पहोरे जांघमांस आहारं, त्रिपता आठ प्राणी इम कही तेह न वारे; त्रीजे पहोरे उदर नक्ष करतां कर्मतणो क्षय जाणं, चोथे काल करीने पुहता नलिनीगुल्म विमाने; पूज्य पुरुष ए धर्म आराधक इम कही उछव मंडे, देवी देव तणो गण तिहांकण नक्तिनाव नवि खंडे ॥ २० ॥ बत्रीशे रमणी गुरुने कहे तिवार, कहो नगवन किहां छे अम्हतणो नरतार, उपयोगें जोई परि सघली संनलावी, गुरु नापित बोल्युं नद्र आगल आवी, (त्रूटक.) आवी माता अने अंतेउरी, फंफेरी घन दीठो; नुइ सींचे तिहां रुदन करंती, कां थयो पुत्र अपूठो. एक वार चारित्र लइने, अम्ह अंगण कां नाव्यो; हिव तुम्ह दरसण कहिंये होशे, इम मनमांहि नाव्यो ॥ २१ ॥ (ढाल चोथी.) वैदरनी वनमां वलवले. ए राग. रमणी कहे सुण नाथजी, अम्ह ऊपर तज्यो मोह; पुण कां मूक्यां मातजी, ते साथे शो छेह ॥ २२ ॥ वली वली कहे रे अंतेउरी, स्वामी सुणो अम वात; इम उतावल कां

करी, इम कां उहव्यां मात ॥ वली० ॥ २३ ॥ सिप्रा पासे कुंवरने. कीधो अग्निसंस्कार; जद्रा जावे जली चली, जावे अनित्य संसार ॥ वली० ॥ २४ ॥ पुत्रशोक अग्निये करी, दाधी अति अपार; जद्रा टाढक पामवा, वांछे चारित्र ज्ञार ॥ वली० ॥ २५ ॥ सात क्षेत्रे वावरी, घण कण कंचन कोमि; एक वधू आधान छे, घरज्ञार ति जोमि ॥ वली० ॥ २६ ॥ अवर अंतेज्ञरशुं तिहां, जद्रा चारित्र लेइ; तप संयम सूधा करी, सुर पदवि पामेइ ॥ वली० ॥ २७ ॥ पुत्र अवंतीसुकु-मालनो, थयो कलानिधान; चिता ठामे निज तातने, जोइ ज्रूमि प्रधान ॥ वली० ॥ २८ ॥ एक प्रासाद करावियो, ते छे इण काले; श्री सिद्धसेनदिवाकरे, दीपाव्यो चाले ॥ वली० ॥ २९ ॥ एहवा रिषि गुण गावतां, जाय पातिक दूरि; एक मना आराधिये, कहे श्री विनयदेवसूरि ॥ ३० ॥

॥ बावन यमक गर्जित रहनेमीजीनी सज्झाय. ॥

राग मारुणी. (सांज्रलजो मुनि संजमरागी–ए देशी.)

पावस ऋतु वरसे घनमाली, ज्रीनो पदेरण फाली रे; चीर जगावतें तन

कयालि, रहनेमि मति चाली रे ॥ १ ॥ ममकर ममकर देवर आली, अम्हेत्र नही ते वाली रे; सतीअ शिरोमणि राजुल वाली, वचन बोले टंकशाली रे ॥ मम० ॥ २ ॥ दिवस घणा दीक्षा तें पाली, इणि कारणि निटाली रे; सुकुल जात बांधव वनमाली, हीयके जोय निहाली रे ॥ मम०॥ ३ ॥ मम काया पेखी सुंवाली, भ्रम भूलो वंवाली रे; मलमूत्रे भरी विकराली, तोही न चेते हाली रे ॥ मम० ॥ ४ ॥ एहवी आल करे रे पींमाली, अम्हेत्र नही गोवाली रे; वाघ गाय चीतर जिम ताली, त्रिहे मेघ मराली रे ॥ मम० ॥ ५ ॥ इणे आले जो अरे कपाली ! मन्मथ देही वाली रे; ईई काया कीधी ढिढाली, रावणे दुरगति भाली रे ॥ मम० ॥ ६ ॥ इण आले उत्तम गति टाली, दे दुरगति कंटाली रे; शोभा सुयश लिये उदाली, अपशतणी परनाली रे ॥ मम०॥ ७ ॥ इण आले बांधे रे भवाली, कांय तें लज्जा राली रे; महीमां कीरती होशे काली, अवर केही देत्तं गाली रे ॥ मम० ॥ ८ ॥ सुणि मुनि मेरी शीख विशाली, तिज किन माकममाली रे; कां घाले रज कंचन थाली, चतुर चेतो मनवाली रे ॥ मम० ॥ ९ ॥ शीलें शिवमंदिर पटशाली, जनम

करणी दूरजी; सज्झायध्यान तवि कीजिये, तजिये विकथा दूरजी ॥ श्रीबारह० ॥ १३ ॥ समकित एक धरिये, अग्यारे व्रत परसाइजी; करशो रूप बारम व्रत, दीजे दान सुसावजी ॥ श्रीबारह० ॥ १४ ॥ मुनि सागर इम शीखवे, श्रावक श्राविका सारजी; बारह व्रत ए धारियें, देवलोक अवतारजी ॥ श्रीबारह० ॥ १५ ॥ देवलोक सुख जोगवी, पछे जन्मे महाविदेहजी; संयम लेइ जाय शिवपुरें, एहमां नही संदेहजी ॥ श्रीबारह० ॥ १६ ॥

॥ सती सुजद्रानी सज्झाय ॥

जिन गुरु गौतम पाय नमी, कहीशुं सतीअ चरित्रो; जिन धर्मा चंपापुरे, जिनदत्त शेठ पवित्रो. (त्रुटक) पवित्र बेटी हुवें तेहना, सुजद्रा नामे सती, बुधदास बोवें कपट श्रावक थइ, परणी गुणवती; पोसह सामायिक जैनधर्म, देव गुरु राती रहे; महा मिथ्यातणी नणंद सासु, अहोनिश मत्सरवहें ॥ १ ॥ एहवुं जाणी जोइ रही, बुधदासें निज नारी; मुनि जब आवे व्होरवा, छंदर जिम मंजारी. (त्रुटक) जिम ताक तेम सासु, पुत्रने माता कहे, पतीथ माथे वहू विलसे, एम दोला किम रहे; पुत्र

बोले मात म कहो कनक मल कुण जाल ए, सतीअमांहे ए शिरोमणि दोषी दूषण आल ए ॥ २ ॥ पारण काजे सती घरें, को मुनि आवे तव गाढे; आहार देतां ऋषि लोचनें, तृण जीभे करी काढे (त्रुटक) काढतां तृण शीश, सिंदूर लागे ऋषि निलाम ए, ते देखी सासु वहूकरणी पुत्रने देखाड ए; व्यभिचारिणी निज नारी जाणी प्रेम पतिनो ऊतरे, सासुए दीध कलंक जाणी सुभद्रा बहु दुख धरे ॥ ३ ॥ देहरासरें काउसग रहे, शासनदेव तिहां आवे; पुत्री खेद कांइ मत करो, इम कहीने बोलावे. (त्रुटक) सुभद्रा कहे मात वेगं जिनशासन शोभा चढे, तिम कीजे देवि ततक्षण चंपापोळ चिहु जडे; मांहे बाहिर पशु पंखी बहु नरनारी मिली, नगरसेहें सकळ चंपा हुइ आकुळ व्याकुळी ॥ ४ ॥ गयण रही कहे देवता, को सती कांची कुवा कांढे; तंतु काचे बांधी चालणी, जळ काढी पोळे छांटे. (त्रुटक) पोळे छांटे तोज उघडे एहवें उत्सुक थइं, घणी नारी बहु खप करि विलखाणी लाजी गइं; इम सुणिने ते सुभद्रा सासुने जइ वीनवे, मा तुमारी आज्ञा पामुं पोळ ऊघाडुं हवे ॥५॥ मुंह मचकोडी इम सासु कहे, हुं तुज चरित्र सवि जाणु;.लोक जणाव्यामां छे

किशुं, तुज सत केहुं वखाणुं(त्रुटक)वखाणुं हवे कहे सुभद्रा मात मुज सत जोईयें, इम कही चाली भूप केडे पंचवदनी सोहिये; चालणी जळ काढी तीने पोळ ठांटी ऊघडे, कुसुम वरसे जय जयारव करे सहु आदरवडे ॥ ६ ॥ चोथी पोळ ऊघाडिये, कर जोडी नृप भाखे; वीजी सतीअ ऊघाडशे, इम सुभद्रा दाखे (त्रुटक) सुभद्रा परिवारशुं रे राय राणी परिवरी, घरे आवी कुटुंब बोधी ठेहडे संयम वरी; लही सद्गति शील समकित कीरति वाधो अधिकवी, मुनि मेघराज आणी उल्लट सती पहेली वर्णवी ॥ ७ ॥

॥ श्री सती अंजनासुंदरीनी सज्झाय. ॥

(धनिनंदन जिन दरिसण तरसियें–ए देशी.) गिरिवैताढ्ये रे प्रह्लादन पुरें, प्रह्लादन तिहां राय; राणी रूडी तस पदमावती, पवनंजय सुत थाय ॥ १ ॥ शील सदा फल साजन सेवियें, जग जस पसरे रे जेम; जिणीपरें पाळ्युं रे आगे अंजना, शील धरो तन तेम ॥ शील० ॥ २ ॥ महेन्द्रराजेन्द्र अंजनी निजसुता, पवनंजयने रे दीध; शील सुभागिणी अंजना सुंदरी, जुगताजुगतुं

रे कीध ॥ शील० ॥ ३ ॥ एक दिन पवनंजय निज मित्रशुं, कन्या जोवारे जाय; देवरतनकुंवर गुण सांभळि करी, कोधे पवन भराय ॥ शील० ॥ ४ ॥ मन पाखे ते कन्या परणिओ, आंणी भार वरीय; रावण साथे हे चाल्यो कटकीये, जननी दीध आशीष ॥ शील० ॥ ५ ॥ घरमां मकी रे भूरे अंजना, पवने पंखी वियोग; देखी आव्यो रे रागभर्यो निशि, मिलीने बिहुं संयोग ॥ शील० ॥ ॥ ६ ॥ कटके पहोतोरे माता विण कहे, पेट सहित ते नार; देखी काढे रे सासु घर थकी, पहुती वनह मझार ॥ शील० ॥ ७ ॥ पाले सतीअरे शील सोहामणुं, हनुमंतसुत तिहां थाय; सूरजकेते रे देखी भाणेजी, निज नगरे लेइ जाय ॥ शील० ॥ ८ ॥ पवनंजय पण जीती आवियो, सती न दीठी रे जाम; करिवा लाग्यो रे आप हत्या घणी, मित्र निवारे रे ताम ॥ शील० ॥ ९ ॥ पवनंजय मित्र जोतो युवतीने, सूरजकेत आवास; पामी तिहांथीरे लेइ निजपुरे, आव्यो मन उल्लास ॥ शील० ॥ १० ॥ बहुपरे विलसीरे राज्य सोहामणुं, साधी संयम काज; स्वर्गे पहोतीरे चौथी अंजना, पभणे मुनि मेघराज ॥ शील० ॥ ११ ॥

॥ श्री दशारणभद्रनी सज्झाय. ॥

(भेगरे उतारो राजा भरथरी–ए देशी.)

वीरजिणंद समोसर्या, दशनपुरे मुनिरायरे; सुर नर इंद्र सेवा करे, हरख धरी मुनिराय रे ॥ १ ॥ दशारणभद्र राजा चिंतवे, आणी मन अभिमानरे; किणेरे न वांद्या तिम हुं वांदशुं, महारो जनम करीश परमाण रे ॥ दशा० ॥ २ ॥ चतुरंग सैन्यशुं परिवर्यो, साथे सवि परिवाररे; त्रिभुवन तृण सम मानतो, वीर वंदिया हर्ष अपार रे ॥ दशा० ॥ ३ ॥ सोहमपति अवधियें करी, जाणियो अति अभिमानरे; इंद्र एरावण आविया, दीपता मेरु समान रे ॥ दशा० ॥ ४ ॥ पंच सय बार मुख शोभता, मुख मुख आठ आठ दंत रे; दंत दंत आठ आठ वावडी, वाव्यें वाव्यें आठ कमल हुंतरे ॥ दशा० ॥ ५ ॥ कमळ कमळ लाख पंखडी, पत्रें पत्रें नाटक होय रे; पदम पदम विच करणीका, तिहां जिनमंदिर जोय रे ॥ दशा० ॥ ६ ॥ इंद्र इंद्राणी आठशुं, पूजे जिनबिंब भावरे; चोसठ सहस गज एहवा, आव्या वंदवा जिन सुरराज रे ॥ दशा० ॥ ७ ॥ इंद्र रेगली भूप इम जाणो,

मान जीपत्रा कर्यां उपाय रे; सिंह शिपाळ न होय सही, लेइ संयम लगाडुं पाग रे ॥ वशा० ॥ ॥ ८ ॥ दानेश्री शांति जिणेशरु, माने श्रीवशारणजन्द्र रे; जोगे श्रीशालिज्जइ गुणनीलो, शीले श्रीथूलिज्जइ रे ॥ वशा० ॥ ९ ॥ तपवलें करम क्षय करी, पामियो मुक्ति निस्तंइ रे, आचार्य (श्री) शिवचंइ पाय नमी, विनवे मुनि रामचंइ रे ॥ वशा० ॥ १० ॥

॥ श्रीगुरुगुणनी सज्झाय. ॥

" देखो गति दैवनी रे " श्रीश वरण घरमां वस्या रे घुणभरवामानंद–ए देशी.

वीरजिणेश्वर पय प्रणमी रे, गुरु गुण कहिशुं उदार; नामे नवनिधि संपजे रे, पामे जवनो पार ॥ १ ॥ सद्गुरु राजियो रे, श्रीराजचंद्र सूरिंद; वम्नतपगछ जगमंडणो रे, दीपे तेजें दिणंद ॥ सद्गुरु० ॥ २ ॥ जंबूनयरे दीपतो रे, जावकशाह सुतन्न; मात कमळादे उर धर्यो रे, जन्म्यो पुरुष रतन्न ॥ सद्० ॥ ३ ॥ वैरागें संयम लियो रे, श्रीसमरचंद्रसूरि पास; शास्त्र घणा पूज्ये जण्या रे, पूरे वांछित आश ॥ सद्० ॥ ४ ॥ आचारिज पदवी हुई रे, पंच महाव्रत धार; छकायनी

रमणं स्वात्मानिशं धीमयम्; ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं, श्री सिद्धाचल-मौलिराजमतथं वंदेऽहमादीश्वरम् ॥ १ ॥ (इंद्रवज्रा वृत्तं) श्रीमद्युगादीश्वर-मात्म-रूपं योगींद्र गम्यं विमलाद्रि-संस्थम्; सद्ज्ञानसद्दृष्टि-सुदृष्ट लोकं, श्रीनाभिसूनुं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥ (उपजाति वृत्तं.) राजादनादस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोज पीठम्; देवेंद्रवंद्यं नरराज-पूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सद्रम्यकूटे जिनराज-मूर्ती. श्रीमद्युगादीशमिहत्वनी निनाथ, शत्रुंजयस्याः परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्येकसरोरुहास्य, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य; योद्वादशांगी विदधे गणेशः सपुंडरीको जयतात् शिवाद्रौ ॥ ५ ॥ चउदशाणं सयमंडणाणं; बावन्नदिपाल गणाहिवाणम् ॥ पुयाउआ जत्थ विराजमाणा, सत्तुंजयं तं पणमामि निच्चम् ॥ ६ ॥ चनइकम्मा परिणामरम्मा, लद्धव्वधम्मा सुगुणेहिं जुत्ता; चत्तारिअठ्ठादस दुन्नि देवा, जत्तय तवाइं जिणाइं वंदे ॥ ७ ॥ अणंत नाणी अणंत दंसिणो, अणंत सुक्खाण अणंत वाणिणो; आसंजत्ता जम्म सिवंवरमा, सम्मेयसेलं तमहं शुणामि ॥ ८ ॥ जम्मेय सिद्धा पढमो

मुणिंदो, गणाहिवो पुंमरीयो विसिठो; अणेग साहू परिवार संजुओ, तं पुंमरीयावलमंनयामि ॥ए॥

॥ कलश. (मालिनी वृत्तं.) विमलगिरिवतंसः सिद्धिगंगावुहंसः सकलसुखविधाता दर्शनज्ञानदाता; प्रणतसुरनरेंद्रः केवलज्ञानचंद्रः सृजतु मुदमुदारं नाभिजन्मा जिनेंद्रः ॥ १० ॥

॥ विषयविकार त्यागनी सज्झाय. ॥

राग केदारो.(कर मन जजननो व्यापार. ए राग)विषकोंविषयविषमविकार,विषयविषम अपार, जगमें विषय विषम अपार; लही भजत नर रूपिया ते, तउ तजत न सार, जगमें विषय०॥ १ ॥ इंद्र चंद्र दिणंद नरपति, जगतजंतु अपार; नीच ऊंच अयान ड्याने, सब किये एक हार ॥ जग० ॥ २ ॥ जंत्र मंत्र न यंत्र पाकुं, मूल मणि उपचार; कला बुद्धि विनाण विद्या, सबहिसें अनिवार॥ ज० ॥ ३ ॥ श्रवण चिंतन ध्यान पूजा, करत तत्व विचार; करत तप जप सुकृत किरिया, तोउ जरत नही मार ॥ ज० ॥ ४ ॥ जदपि मुनिव्रत सबे डुद्धर, मेरुगिरिसम भार; तदपि सबतें

महामत अति, विकट खांमाधार ॥ ज० ॥ ५ ॥ नंदिषेण अषाढभूति, आइसे अणगार; शुद्ध तन मन वचन पाको, शुद्ध व्रत आचार ॥ ज० ॥ ६ ॥ इन्द्रों आदि अनेक मुनि व्रत, तजी भज्यो आगार; जिन चतुरनर ढले ऐसे, तो कहा और गँवार! ॥ ज० ॥ ७ ॥ धन्य तासु अनंग ग्रीषम, ताप मेटि पसार, जनित समता शीतलाइ, वरसि श्रुतजलधार ॥ ज० ॥ ८ ॥ वरजी वामा काम वामी, पामी संयम सार; तरी भवोदधि पार पाए, करी सफल अवतार ॥ ज० ॥ ए ॥ त्रिविध त्रिविधे कनककामिनी, जिन किए परिहार; कर्मसिंह मुनि तासु पद जुग, नमत वारंवार॥ ज० ॥ १० ॥

श्रीजिनेश्वर दंमकस्तुतिः

(श्रीदनागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजश्रीराजचन्द्रसूरीन्द्रपादांबुजनिवासिना श्रीजयचन्द्रसूरिणा कृता)

(दंमक छंद.) रचितरुचिरचंदनागेंद्रखेचेंद्रमर्त्येंद्रसद्भक्तिसंसक्तनम्रीभवन्मौलिनीलेंद्रसंजात रोचिष्मपालिस्रजासंकुलं निर्मलं यस्य ते भक्तसत्प्राणिसम्मोदकिंजल्कसारं पदाब्जं भवासार-

संतापतापापहं तं स्तुवेहं सदा श्रीजिनं भोजनं विमलसलिलहारमंदारकुंदेन्दुपुण्णोपहारामलमन्-
कौमुदीसारविस्तारकर्पूरपूरामलस्फाररूप्याद्रिडिंडीरविस्फूर्ति संकाशकीर्त्यमृतापारकाष्टांतकल्लोल-
मालाविराजिष्णुसिंधुं समासाद्य भव्या महानंदभाजो भवंति ध्रुवं; सकलविमलसुंदराकारभव्यक-
वर्त्तीशविद्याधरस्फारनागामराधारकादिप्रजामोदनागाररूपस्वरूपैरनंतस्वगोदेशलेशोपि रूपस्य लोको-
दरोदारसन्निर्मलस्फाररागाद्यलेशाणुपुंजोपजातस्य दृष्टोऽपि नो विप्रं शंकरं, सबलमदनकंस-
कालादिब्रह्मामराधीशमार्त्तंडसच्चंद्रपाणमातुरायन्यचित्तोन्नतिध्वंसविध्वेकमच्छत्रविख्यातितामानमातं-
गनिर्लुंटने ते वराशापराः सज्जनास्त्वत्प्रभावाच्च सारंगनाथाधिका यस्य भांतीह वै नाभिराजांगजं
सज्जयं ॥ १ ॥ प्रगटविकटसंकटाविमदानक्रमानेकदुर्वादिनैयायिकासारसांख्याक्रमालापचाचाल-
नैयायिकामर्त्यवद्यत्व वैशेषिका शेषदोषाश्रया तारचार्वाकसंकल्पनामात्रसंभूतिताजैमनीया-
दिदुर्वादिसद्ध्वांतविध्वंसमार्त्तंडकल्पं सदा, प्रशमरसजलक्षालितानेकसंसारकांतारमार्गभ्रमाने-
कनीचोच्चवैपम्यदुःस्थानसंस्थानसंचारदुर्ध्यानतावायुवेगांगसंलग्नदुःपापमालं दयोदारसुध्यानतान्नो-

[illegible] नूतनानी•

[illegible]

[illegible] मृणालिनी•

[illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ नजन नजन

[illegible] गुरुगौ [illegible] च गणाः

[illegible]

[illegible]

[illegible] गणाः

[illegible] मन्दाक्रान्ता•

[illegible]

अवाणी सुधासारधारातिमाधुर्यसंजेत्रिनी क्षीररत्नाकरालोलरंगत्तरंगानुगा सत्कटाक्षावली,मरकतक-
लहंसलीलागतिर्या तिविस्मेरशुक्लाम्बुजाजस्मितागण्यलावण्यपुंजांकिता रामलाटास्वदालेरमंशोज्जितां-
गा न वक्तुं क्षमं शीलसिंधुप्रकाशातिरेकं नवप्रेमरम्या मनोवृत्तिरस्याः किमन्यत्पुराणैर्ज्जनैर्नाकिगमात्रिकं
वर्णिता ॥३॥ असितनलिनकज्जलश्यामलांगाश्वसेने ! वचोतीतमहात्म्यमस्यानुजानानवेदरकुदंदेहि-
नः कासशूलज्वरातंकविस्फोटकोदुर्नेदवातप्रमेहक्षुतक्षतस्त्रीपश्चार्शप्रथाराजयक्ष्मादिरोगव्रजादृष्टदेहा
ज्रवंति ध्रुवं,गहनतरकानने ज्रीवणे शैलसंघेतिदुर्गे च मार्गे रणे दूरदेशांगणे ज्रीमवारांनिधौ दुस्तटीसन्नि-
धौ शत्रुवर्गे वटे संकटे विस्तरद्वेतिदुर्दस्यदावानलेन्येषु वैषम्ययुक्तेष्वयुक्तेषु कल्पाणमालावृता निर्वृता।
विषमविषधरापदाव्यालशार्दूलदर्पाक्रकोलोत्पतद्भूतवेतालनागमहोत्पातपक्षामरोद्दंमचंमाधिनीरामरी-
शाकिनीमाकिनीमारिदृष्टातिज्रीप्यंतरक्षोजमुख्या अनेके न बाधां विधातुं समर्थाःसदोपद्रवाज्जित्वा,
विशदविमलसिद्धिजाजो यदीयमसादाज्जनाःसयशोज्रीष्टसंकल्पनाशामरक्ष्माहृदाधारदीनमजानाम-
दं दीनभूतस्त्वदुद्भूतपादांबुजसंश्रितस्तन्मशाशोकरोगाद्यनेकाकुलात्क मां कटतः पार्श्वनाथ!मन्नो!॥४

परमनगरगुरुं मोदमेनेरमेसंक्तिं मारमानेत्नशमेपु वक्रं महानंदनूनमणिमुक्तिमार्गैकमार्गैकदर्शं गदाशिममादां हुरे मनमातेगमाजावरं मंगलोन्मीलनं मौनसारं मुनिं जन्नूतं प्रमामाश्रयं सन्मतं सन्मतं, प्रशमरसविशालं महाज्ञानमानं समानं विमानं निरीशं महेशं विज्ञासं नठरं कदा सत्करं निस्तुलं कोमलं निर्मलं धर्मयुक्तं विमुक्तिं गतं सद्गतिं निर्गतिं नीरसं सद्गमं साकारं वर्णनातीतमावर्णितं सज्जनैश्वाप्य दक्षं मनः कनकनिकरदेहजं पुंडरीकोज्वलं निर्मलं लोकमुस्वामिनं निर्ज्जरं निर्ज्जरोपासितं शत्रुमित्रेषु न द्वेषरागाश्रितं जनमौडपमदं चेतरासंगनिर्वारकं निश्चलं नैकदेशे स्थितं संकलांकाविशून्यं सजेशारयं निःशरणं शरणं मतां, अकलमकलसञ्चारित्रं पवित्रं विपत्त्रं विशिष्टं गरिष्टं महेष्टं महान महानं नवीनं महांनं मुशानं सुशानं महामुस्तुरितं नितांतं भजे वर्द्धमानं जिनं वीतवीनं नदीन ममामलनोलेधितं महर्तं भानिरं पुण्यपुन्नादिमत्तादरं ॥ ५ ॥ श्रीराजचंद्रसूरींद्रपादांबुजनिरालिना, जयचंद्रेण कृतं स्तवं, चावड्यं महष्टं मया ॥३॥ इतिश्रीजिनेंद्रदंमकस्तुतयः ॥

॥ सासुवहूना झगडानी सज्झाय. ॥

सुण बोटल दे तुंरे वडावण, रतन परायो कांई हर्णजी; मे वांदया ते मन रग जोजन नव मासांए उदरे धर्यांजी ॥ १ ॥ उदरे धर्यारी नव मास कारण, जनमवेदन में सही. कानां नो कानपा फोक पाणी, एक दिन पिण सुख नही ॥ २ ॥ पोतमारी पल पल में पलाल्या, हाथ मल करी खोइया; पाउरे अंचल ग्रही नीचोया, मूत्र मल इम धोइया ॥ ३ ॥ सुण सासु दो सीख सयाणी, वात इसीपरे कांइ कहोजी; अब मांको पूग्न जनको; साचो संबंध ए सहीजी ॥ ४ ॥ साचोरी संबंध हुओ पुराणो, लेख बांध्या नवि टले; जब आप दमशुं हुओ जेजो, कांइ मागु नुं लहे ॥ ५ ॥ म्हें दियोथो तो आणी पायो, नाचतो तो नाचती; दिन दश उघारो मांगी लीओ, सदा तुं क्युं राखतो ॥ ६ ॥ सुण बोटल दे तुं रे वयोकडी, वायां वदि वदि मारो नग लियोजी; तें बांध्या दे कामट जोड़ा कामणो, कामण डीमण तें कियाजी ॥ ७ ॥ तें कियारी कामण मांहि राख्यो, मो दिशि नही देखदे; हुं पुत्त पुत्त बोलाय रहेती, पुत्त किमही न देखहे ॥ ८ ॥ वहु जूग्री

रहो रही मात देती, वार वार जिमाइयो; खेलणारी पल पल रिसाय रहेतो, गरथ दे दे मनाइयो ॥ ९ ॥ सुण सासु हो सीख सयाणी, वात इसी परे कांई कहोजी; जब जपनो हो लाल हमारो मांगी जीव न ते लह्योजी ॥ १० ॥ न लह्योरी सासु भीख मांगी, जूठ राम न कीज हे; जब पांच मिलि करी दाम जोरूया, दोष किणही न दीज ए ॥ ११ ॥ तें चोक वेसी वेष पहेर्यो, पिता मारो नामियो; चाहोरी मांग्यो हरष करी करी, तें घणोई पाइयो ॥ १२ ॥ सुण बोटल हे उवा रंडे तुने, कांइ जियो थारा बापरोजी; मेंतो आपणो हे कवडी साटे, रतनज वेच्यो लाखरोजी॥१३॥ लाखरो रतनज दियो परायो, में तुने दियो घणो; लुगडा चीदमी वेष वागा, उलेच्यो घर आपणो ॥ १४ ॥ चीरमा मोग लाग दापा, रीतभांत घणी लही; नगराय वेटो तें गरथ लियो, कूदी तुं जूठी हुइ ॥ १५ ॥ सुण सासु हो सीख सयाणी, रतन परायो कांइ कियोजी; किणे थांकाहो किया नहोरा, जूठ राम ये कांइ लमोजी ॥ १६ ॥ जूठी राड न लमो सासु, लाल में आपणो कियो; ऊरनो थांकी कुखमांहि, आपणो करी में जियो ॥ १७ ॥ जब धणी आपां मांग राख्यो, जूल जन

पस्तावए; आग आगेरे रीत हुंती, हुत हुंती आवए ॥ १८ ॥ सुण वोटल हे पुत्तां दे जाया, माय मनोरथ सहु फलेजी; एकज हे आदिजिणेसर, मरुदेवी माता उदरे वधांजी ॥ १९ ॥ उदर वधांरी मरुदेवी माता, रायजादा रंजणा; जिण आप पहेली माय तारी, दोय नवनयणंजणा ॥ २० ॥ हुं ओर केताइक कही वखाणुं, हाथकी जिम आंगली; सुकुल वहू सपूत जाया, माय मन पुंगो रली ॥ २१ ॥ सुण सासुद माने रे आपां कांइ, बुरो जलो हुय पहयोजी; मे थांका हो पुत्त सरीखा, पुत्त जण जण घर जयांजी ॥ २२ ॥ में पूत जाया हुआ पोता, आगे हुंती तुं एकलो; सो माणसोकी हुइ घणीआणी, ग्यानमें गिणती चली ॥ २३ ॥ श्री आदिनाथ त्रिलोकनायक, दोय वहू परणाव ए, श्री जरत सरीखा मोक्षगामी, पुत्त सो एक जाय ए ॥ २४ ॥ सुण वोटल हे आदिसर, मरुदेवी माता ते जलीजी; उतो जादव हो नाय नेमिसर, शिवादेवी माता ते जलीजी ॥ २५ ॥ संजलीअ वांमादे मनोहर, पारसनाथनी ते हुइ; अवर केताइक कहुं वखाणी हाथकी जिम आंगली ॥ २६ ॥ सामानाम लाया प्रगट किया, नाथ ने त्रिजुवनधणी; श्रीहरषकीर्ति

पदे मोक्षगामी, जगतमें महीमा घणी ॥ २७ ॥

॥ श्रीवर्द्धमानजिनस्तुतिः ॥

(उपजाति वृत्तं.) श्रीवर्द्धमानं करुणानिधानं, श्रेयोनिदानं कुगतेः पिधानम् ॥ शिवैकधानं गुणैः प्रधानं, गताभिमानं स्तुतिसावधानम् ॥ १ ॥ (स्रग्धरा वृत्तं.) वीरं ज्ञानाब्धिवीरं प्रणत जपदं हेमरोचिःशरीरं, धीरं कामाग्निनीरं परमपदगतं प्राप्त संसारतीरम् ॥ ज्ञातं सिद्धार्थजातं विबुधबुधनतं भूपतिक्षत्रजातं, सिद्धं बुद्धं प्रबुद्धा नमत नमत तं सिद्धये बुद्धये च ॥ २ ॥ कुंभे ग्रामेऽभिरामे त्रिभुवनजनता पावके पावके वा, मोढेरे हस्तिकुंभी प्रवरतरपुरे वायडे नाणके च ॥ नंदिग्रामे च मुंडस्थलगजपदयो स्तुंगवैभारशैले, देवं श्रीवर्द्धमानं विपुलगुणगणै र्वर्द्धमानं नतोऽस्मि ॥३॥

अध्यात्मनीसज्झाय अथवा गीत.

अध्यातम विनु क्युं पाइ हो मेरे ललनां, परम पुरुषको रूप; अघट अंग घट मिलि रह्यो हो, महिमा अगम अनूप ॥ अ० ॥ १ ॥ विरम वरम पुरो भयो हो, आयो सहज वसंत; प्रगटी

सुरूचि सुगंधता हो, मनमधुकरमय मंच ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमत कोकिला गहगही हो, वही अपूरव चाल; भरम कुहिर वाहर फटे हो, घटि जाभाजम भाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ माया रजनी लघु भई हो, सम रस दिवस सजीत; मोह कंपको थिति घटी हो, संसम शिशिर व्यतीत ॥ अ० ॥ ४ ॥ शुभ दल पल्लव लहलहे हो, होहि अशुभ पत भार; मलिन विषय रति मालती हो, विरति वेली विस्तार ॥ अ० ॥ ५ ॥ शशि विवेक निर्मल भयो हो, थिरता अमिय ऊकोर; फेली समकित सुचंद्रिका हो, समुदित नयनचकोर ॥ अ० ॥ ६ ॥ सुरति अग्निज्वाला जगी हो, समकित भाव अमंद; हृदयकमल विकशित भयो हो, प्रकट सुजश मकरंद ॥ अ० ॥ ७ ॥ दिढ कषाय हिमगिरि गवले हो, नदी निरझरा जोर; धारं धार नावह चली हो, शिवसागर सुख ठर ॥ अ० ॥ ८ ॥ वितथवात प्रभुता मिटी हो जग्यो जथारथ काज ॥ जंगल भूमि सुहानि हो नृपवसंतकोराज ॥ अ० ॥ ९ ॥ खट भव परिनति वसुधा भइ हो, अष्ट कर्म वन जाल; अलख अमूरति आतमा हो, खेले धर्म धमाल ॥ अ० ॥ १० ॥ नयपंकित चाचर मिली हो, ज्ञान ध्यान डफ ताल; पिचकारी पदसाधनो हो,

सारस्पृतसंपगरसारम् ॥ शुभ्रकांतिविशालं द्विरदसुचालं पार्श्वजिनं जितमारं, श्रीवीरं वीरं कर्मणि-नीरं पापमलेशमसारम् ॥ ७ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्तं) इत्थं सर्वसुरासुरेश्वरगणैःसंस्तूयमानाः सदा, प्रत्यूहव्रजसंतमोदिनकरा योगींद्रचित्तस्थिराः ॥ संतु श्रीधृतितुष्टिमंगलप्रदाः श्रीराजचंद्रैर्नुताः श्रीसूरीश्वरचक्रमौलिमुकुटैरानंदसंदोहकम् ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनपालितजिनरक्षित स्वाध्यायः ॥

("राग आसाउरी" भेळरे उतारो राजा भरथरीनी अने त्रूटकनी हरीगीतनी.)

ढाल–नयरी चंपावति जाणिये, माकंदी सुत दोयजी; जिनरक्षित जिनपालित, अतिह विचक्षण दोयजी ॥ न० ॥ त्रूटक–तुपि ढुन्नि सम्मति लइ किपाणो चढ्या प्रवहण पूरिया, जर समुद्रमांहे गया जेतले उतपात अनेक उदीरिया; अकाले अंबर गाजवीजें वाय वाजे अति घणो, वरसात वरसे अति अंधारो थयो तिहां बीहामणो ॥ १ ॥ ढाल–तट तटक तटके वंधणा, फट फट फाटे नावजी; पन पूरे वेग्नि मांहेडो, जे संसारे सद्दावजी ॥ तट० ॥ त्रूटक–सङ्गाव ए

संसार केरो आथनो कुण मद करे, पाटियो लाधो त्रिहु बंधव सुखे ते सागर तरे; रतन दीप ति लही वापी वात वेसी तिह करे, तेतले रतनदीप देवी आवी वचन ति उचरे ॥ २ ॥ ढाल–करवाल कर तीखो ग्रही, सुणजो दे नर दोयजी; अम्ह वचन प्रतिपालजो, तो तुम्हने सुख होयजी ॥ क० ॥ त्रूटक–इम शीख देइ लेइ आवे कुंवर दोय निजमंदिरे, अवसर अनेरे इंद्र आदेशें समुद्र शोधन संचरे; तव शीख दीधी त्रिहु नरने सुखे रहेजो घर तुमे, रामति कीजो सदा करजो घरे नावुं जा अमे ॥ ३ ॥ ढाल–कवही रति नहु उपजे, तो पूरव वनखंडजी; उत्तर पश्चिम जाइजो, लहेशो सौख्य अखंडजी ॥ क० ॥ त्रूटक–अखंड सौख्य नवि लहो कवही घरे पाछा आवजो, पण रखे दक्षण वनमझारें वारुंनु मत जाइजो; तिहां छे भुजंगम काल दारुण तुम्ह जीव विपति करे, इम कही चाली अतिप वेगं पाछे नर वन संचरे ॥ ४ ॥ ढाल–त्रिहुं मांहे सुख नवि लह्यो, चिंते चित्त मझारजी; दक्षण वार्यो किण कारणे, वीससीये नही नारजी ॥ त्रि० ॥ त्रूटक–परनारीनो विश्वास केहो दुःखदायक ए सदा, चित विमासि दुन्नि बांधव दक्षिण वन जाये

सारभूतसंयमसारम् ॥ शुक्लकांतिविशालं द्विरदसुचालं पार्श्वजिनं जितमारं, श्रीवीरं वीरं कर्मणि-धीरं पापमलेशमसारम् ॥ ७ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्तं) इत्थं सर्वसुरासुरेश्वरगणैःसंस्तूयमानाः सदा, मत्पुण्यजसंतमोदिनकरा योगींद्रचित्तस्थिराः ॥ संतु श्रीधृतितुष्टिमंगलप्रदाः श्रीराजचंद्रैर्नुताः श्रीसूरिश्वरचक्रमौलिमुकुटैरानंदसंदोहकम् ॥ ३ ॥

॥ श्री जिनपालितजिनरक्षित स्वाध्यायः ॥

("राग आसाउरी" अथवा उतारो राजा भरथरीनी अने त्रूटकनी हरीगीतनी.)

ढाल–नयरी चंपावनि जाणिये, माकंदी सुत दोयजी; जिनरक्षित जिनपालित, अतिहि विचक्षण सोयजी ॥ न० ॥ त्रूटक–हुवि तुम्नि सम्मति लइ किपाणो चढ्या प्रवहण पूरिया, जर समुद्रमांहे गया जेतले ततखिण अनेक ऊडीरिया; अकालि अंबर गाजवीजें वाय वाजे अति घणो, सरतान वरसे हति अंधारो थयो निशा बीहामणो ॥ १ ॥ ढाल–तट तटक तटके बंधणा, फट फट फोट नावजी; धन पूंछ वेळि मांहिलो, जे संभारे सदावजी ॥ तट० ॥ त्रूटक–सङ्नाव ए

संसार केरो आपनो कुण मद करे, पाटियो लाधो बिहु बंधव सुखे ते सायर तरे; रतन दीप ति लही वाणी वात वेसी तिहं करे, तेतले रतनदीप देवी आवी वचन ति उचरे ॥ २ ॥ ढाल–करणाल कर लीनो ग्रही, सुणजो दो नर दोयजी; अम्ह वचन प्रतिपालजो, तो तुम्हने सुख होयजी ॥ क० ॥ त्रूटक–इम हीय देइ लेइ आवे कुंवर दोय निजमंदिरे, अवसर अनेरे इंद्र आदेशें समुद्र शोधन संचरे; तव शील दीधी बिहु नरने सुखे रहेजो घर तुमे, रामति कीना सदा करजो घरे नावुं जा अमे ॥ ३ ॥ ढाल–कवही रति नहु उपजे, तो पूरव वनखंडजी; उत्तर पश्चिम जाइजो, लेहशो सोख्य अखंडजी ॥ क० ॥ त्रूटक–अखंड सोख्य नवि लहो कवही घरे पाछा आवजो, पण रखे दक्षण वनमझारें वांकुं मत जाइजो; तिहां छे भुजंगम काल दारुण तुम्ह जीव विरति करे, इम कही चाली अतिय वेगें पाछे नर वन संचरे ॥ ४ ॥ ढाल–ग्रिहुं मांहे सुख नवि लह्यो, चिंते चित्त मझारजी; दक्षण वार्यो किण कारणे, जीससीये नही नारजी ॥ ग्रि० ॥ त्रूटक–नरनारीनो विश्वास केहो दुःखदायक ए सदा, चित्त विमासि दुन्नि बांधव दक्षिण वन जाये

साररधृतसंयमभारम् ॥ शुभकांतिविशालं द्विरदसुचालं पार्श्वजिनं जितमारं, श्रीवीरं वीरं कर्मणिमीरं पापमलेशमसारम् ॥ ८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित वृत्तं) इत्थं सर्वसुरासुरेश्वरगणैःसंस्तूयमानाः सदा, प्रद्युम्नजसंतमोदिनकरा योगींदुचित्तस्थिराः ॥ संतु श्रीधृतितुष्टिमंगलप्रदाः श्रीराजचंद्रैर्नुताः श्रीसूरीश्वरचक्रमौलिमुकुटैरानंदसंदोहकम् ॥ ९ ॥

॥ श्री जिनपालितजिनरक्षित स्वाध्यायः ॥

("राग आसाउरी" भेगरे उतारो राजा भरथरीनी अने त्रूटकनी हरीगीतनी.)

ढाल—नयरी चंपावति जाणिये, माकंदी सुत दोयजी; जिनरक्षित जिनपालित, अतिह विचक्षण सोयजी ॥ न० ॥ त्रूटक—हुवि तुम्नि सम्मति लइ कियाणो चढ्या प्रवहण पूरिया, जर समुद्रमांह गया जेतले उतपात अनेक उदीरिया; अकाल अंबर गाजवीजें वाय वाजे अति घणो, अस्मान वरसे अति अंधारो थयो तिहां बीहामणो ॥ १ ॥ ढाल—तट तटक तटके बंधणा, फट फट फाटे सारजी; पत्र मूके वेदि मांहेजो, जे संसारे सदावजी ॥ तट० ॥ त्रूटक—सद्भाव ए

संसार केरो श्रायनो कुण मद करे, पाटियो लाधो त्रिहु बंधव सुखे ते सायर तरे; रतन दीप ति लही वापी वात वेसी तिह करे, तेतले रतनदीप देवी श्रावी वचन ति उचरे ॥ २ ॥ ढाल– करवाल कर तीखो ग्रही, सुणजो हे नर दोयजी; श्रम्ह वचन प्रतिपालजो, तो तुम्हने सुख होयजी ॥ क० ॥ त्रूटक–इम शीख देइ लेइ आवे कुंत्रर दोय निजमंदिरे, अवसर अनेरे इंद्र आदेशीं समुद्र शोधन संचरे; तव शीख दीधी त्रिहु नरने सुखे रहेजो घर तुमे, रामति क्रीमा सदा करजो घरे नावुं जा श्रमे ॥ ३ ॥ ढाल–कवही रति नहु उपजे, तो पूरव वनखंमजी; उत्तर पश्चिम जाइजो, लहेशो सौख्य अखंमजी ॥ क० ॥ त्रूटक–अखंम सौख्य नवि लहो कवही घरे पाछा श्रावजो, पण रखे दक्षण वनमझारें वारुंतु मत जाइजो; तिहां ठे भुजंगम काल दारुण तुम्ह जीव निपति करे, इम कही चाली अतिय वेगें पाछे नर वन संचरे ॥ ४ ॥ ढाल–त्रिहुं मांहे सुख नवि लह्यो, चिंते चित्त मझारजी; दक्षण वार्यो किण कारणे, वीससीये नही नारजी ॥ त्रि० ॥ त्रूटक–परनारीनो विश्वास केहो दुःखदायक ए सदा, चित विमासि दुन्नि बांधव दक्षिण वन जाये

गुरु; दुर्गंध आवे मृतक केरी अस्थि ढगला पेख ए, नपजीत हुंता घडया आघा शूलिविंधनर देख ए ॥ ५ ॥ ढाल–पूछपुं तुं कोण नर अछे ? काकंदीनो वासिजी; लघु अपराधे इम कयुं, रतनदीप निवासीजी ॥ पू० ॥ त्रूटक–वासि इहांनी अछे पापिणी पुरुषने शूली दिये, स्वारथे हीणो जाणी करी अपराध पुण थोके किये; माकंदीसुत तसुपास पूछे कहो किम अमे निस्तरुं, उपकार हेते कहुं तिणे सेलग यक्ष सेवा करो ॥ ६ ॥ ढाल–आवी तिहां पूजा करी, सेलग आगमर पारीजी; तारुं पालुं केहने ?! निसुणी पभणे कुमारजी ॥ आ० ॥ त्रूटक–अमने तारो अने पालो अमोने तमे उदरा, सेलगें यक्षतुं कहुं जो नर रखे नारी हिये धरो; करी वचन अंगी यक्षिर पुंठे समुद्रमांहे चालिया, तेनखे आवी देवी बोले जिनरक्षित जिनपालिया ॥ ७ ॥ ढाल–मोर नाप ! तुम्हे क्यां गया, माहरो कुण अपरावजी; विण अवगुण कांइ परिहरो, मुजथी किसो साहसजी ॥ म० ॥ त्रूटक–एमादि कपट करी डिगाव्यो जिनरक्षित इम चिंतवे, पूरव जोग थी संजोग तिहां पूरवी संभवे; एहने ... चढ्यो ... करी जब चलि ... जिनपालि

मन दृढ कपा तन सलाग वग उल्पा ॥ ८ ॥ ढाल—गुरु पान रहण कह्या, समुद्र ते भवजल पूरतण नारी वचन जे वीसले, रूलशे ते भवनूरजी ॥ गु० ॥ त्रूटक—भवनूरी रूलशे जिनरक्षित जिम विषयरागें मुंझशे, भवपार लहेशे जिनपालित जिम विषय अशुभा बूझशे; भणे आचारिज (श्री) समरचंद्रसूरि विषय राग निवारीए, भवसमुद्र संयम पोते बेसी आप पार ऊतारिये ॥ ए ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीयवृद्धतपागच्छाधिराजश्रीसमरचन्द्रसूरीन्द्रेशकृतः श्रीज्ञाताधर्मकथांगनवमाध्ययनस्य

(जिनपालितजिनरक्षितनाम्नः) स्वाध्यायः ॥

॥ श्रीजीरावल्लापार्श्वजिनस्तोत्र. ॥

(स्रग्धरा वृत्तं.) श्रीवामेयं विधुमधुसुधासाररसारस्वजावं, न्यायापेतोद्धतमतिचमत्कारकारिप्रभावम् ॥ जीरापल्लीपदमविपदं वारिदाच्छायदेहं, निःसंदेहं विमलकमलाकेलिगेहं स्तुवेहम् ॥ ॥ १ ॥ स्फाराकारा ननु जिनपते! दृश्यते ते च मूर्त्तिः। स्फूर्त्तिस्तस्याःपुनरनुपमा विश्वविश्वप्रसिद्धा ॥ शौंडीराणां न खलु महिमा मूर्त्तिमात्रानुपायी, पश्चालोपि प्रबलकरटिध्वंसधीरो मृगारिः ॥ २ ॥ चौरा-

संजोग; उपजोग जोग कीधा अनंत, तोपण नवि आव्यो किमे अंत ॥२४॥ तिणकारण आणि मन संतोष, विरति करि निरति टालिये दोष; जेअ छे अनक अनंतकाय, तसु नीम घरुं ज्यां एह काय ॥ २५ ॥ (ढाल.) हरियकाय हिव जाति अब केला नालियर, कारणि वीना चारि पान नींबु बीजोर; खरबूजा चीभडा जाति खेजडिया कपर, ढुन्नि जाति नीलुआ तणी चिणिपाने ऊजर ॥ २६ ॥ कालिंगड ओनडा जाल तिडूरा मिलिय, अवर जिअ छे हरियकाय ते सहुए टलिय; गुंदा निमल नलिय जाति हिव चिंति संनारुं, काल विशेषे जे सदोष ते जाणी वारुं ॥२७॥ करपर रेजडि कपर शुंठ आमल म्यारडिय, सेलर मोनी वालुलिया काग्लिंविलिय; मतीराने गोठवडी वोलिजुं जे धान, तसु निमल हिव धान तणुं संनालुं मान ॥२८॥ चोखा जाति जुवारि मगर मग मठ जव ऊवार, गोहुं चोला चणय तुयरि वरटी ने वाजर; चीणो जे जागि अवरधान तिहनो पचखाण, घेवर ओबरा नोम हिव मादिम परिमाण ॥ २९ ॥ साकर साकरदल निबोप खारिक गुल खंड, सिधोडा टोपर खजूर चावलियो गुंद, लेरी बीजो गुंदवटा हिव चांदे नीम,

दिनप्रति अविरति टालीना मंनीजे सीम ॥ ४० ॥ द्रव्य वीश सचित्त पंच दिन विगइ चियार, जूती उइ तंबोल जाति नियचित्त विचार; सोपारी सुरकुसुम चंद एला खरवन्दिय, पदिरेवाने काज वस्त्र नंग वीशज गणिय ॥४१॥ कुसुम नीम दय करद सगन्द वाहिणी नरवाहणा, कोटीओ ए जाव जीव दोविन चउ सयण; आसण जयणा तन विलेप ठइ कोठ वलि टीलो, दिवसे पालशुं यंत्र थंत्र नहु करिये ढीलो ॥ ४२ ॥ जो कोइ उपजे काज तो विन ठद जोयण, अधिक न चालु एह नीम बहु पाव निमोयण; इक अंगोहल दिवस वरष प्रति अठय न्हाण, पीवाशुं मुज कुंभ तिन्नि ए नीर प्रमाण ॥ ४३ ॥ पनरशेर दिन असनमान चोपन्द इक शेर, खाइम पंचहशेर मिली साइम अयशेर; दिवस प्रते साजणा पंचहिय कर्मदान, श्रमणोपासक करे नही बहु दोष निधान ॥ ॥ ४४ ॥ टाली न शकुं सर्व पकी हुं विरति करेशुं, वरस वरस ए सहुअ निरति हियडे समरेशुं; धाणे धोवण एक एकसो नंग प्रमाण, विसय रुप्प सोवन्न एकसो गिणि गदियाण ॥ ४५ ॥ (ढाल.) अवर इंगालिया कर्म हुं टाळीशुं, उचवुं गुरु तणी शास्त्र मत पालीशुं; विसयमण वरति सवि

शार आटो मिजो, एह करेवा तणी नथिप मुज मन रली ॥४६॥ रापण दशमण अंत्रफल ववहरुं, मदन जिपार तसु अधिक सवि परिहरुं; साफिप जाफिप कर्म नहु किज्जए, चार वीघा तणुं अथ धारिज्जए ॥ ४७ ॥ कोफिप कर्म परिमाण ए जाणिये, आगरदंतनो जलप नहु माणिये; दश१ मण लोइ पम्बास ने फिटकडी, वीश मजीठ मण अवर लख आखडी ॥४८॥ ठसप मण दाव मन उलिज पइ वरसपं, तेजनी जाति मण त्रिसप गुजमण सपं; खंड चालीशमण एकमण सहू मंत्रा अम्ना मुझए ड्डकरं ॥ ४९ ॥ डुवइ व्यापारं मुज नीम चउ चउ पपं, वरस विष-शलिञ अदिफल मण पंचपं; पंत्र पीलण नही कर्म निल्लंठणं, दव तणो दाण न करेमि सर-सर वल ॥५०॥ असइ जल पोर ए दोष में टालिपे, अवर व्यापारनी जयण बहु पालिपे; चउविह अनत्थ दंड अट्ठमअने, तासु वेरमण करि समरिपे दिनप्रते ॥ ५१ ॥ न शकीए सर्वथी ठंडीए शालिस्यु, जयणा करता हुइव मरं मुज मोहिदुं; राजमंत्रीपद आरति नहुं करुं, नगरजनवादनुं रोद मन नहु धरुं ॥ ५२ ॥ हांफ दीवणजतें ऊीवणं गेजणं, टालिशुं न्हाणि न्वण पहुल जसेरलणं;

हिंसक वस्तु दाक्षिन्य विणु नापिये, पाव जवएस बहु जयण मन आपियें ॥ ५३ ॥ विवसप्रति इक सामायियं पूरिशुं, नवमव्रति मन तणी आश इम पूरिशुं; दशमव्रति दिशिदि संक्षेपमें किज्जए, इणि परे मणुअजन्म सफल जाणिज्जए ॥ ५४ ॥ वरस प्रति पोषहा वार हुं पालिशुं, सकतिनी सीम अतिचार पुण टालिशुं, दिशि अवलोइशुं जोजन अवसरे, साधु संयोगव्रति बारमें मन धरे ॥ ५५ ॥ दुहा ॥ इणि परि पाली बार व्रत, शुद्ध करी समकित सार, (श्री) पार्श्वचंद्र गुरुध्यायिने, जेम पामुं जवपार ॥ इतिश्री श्रावकव्रतविचार स्वाध्यायः

॥ श्रीयुगादिदेवस्तुतिः ॥

श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचन्द्रसूरिचरणसरसीरुह-
चंचरीकेण वाचकमुनिवरवरदराजेन कृता ॥

॥ जुजंगी छंदः ॥ शरच्छर्वरीशांशुराशावलक्षं लसद्ध्यानवन्मानसश्वेतपक्षं ॥ जिनं नाजिजं

शाल आटो मिलो, एह करेवा तणी नथिय मुज मन रली ॥४६॥ रायण दशमण अंबफल ववहरुं, सहस चियार तसु अधिक सवि परिहरुं; साम्पिय जाम्पिय कर्म नहु किज्जए, चार वीघा तणुं क्षेत्र वोलिज्जए ॥ ४७ ॥ फोम्पिय कर्म परिमाण ए जाणिये, आगरदंतनो जलप नहु माणिये; इकीरु मस लोइ पन्नास ने फिटकमी, त्रीश मजीठ मण अवर लख आखमी ॥४८॥ ठलय मण पीप रम वलिज पइ वरसयं, तेलनी जाति मण त्रिसय गुलमण सयं; खंम चालीशमण एकमण पीप रम वलिज पइ वरसयं, सर्वथी वंमतां मुकए डुकरं ॥ ४९ ॥ डुपद व्यापारं मुज नीम चउ चउ पयं, वरस विपलक्रां, सर्वथी वंमतां मुकए डुकरं ॥ ४९ ॥ डुपद व्यापारं मुज नीम चउ चउ पयं, वरस विष सरवलिज अहिफण मण पंचयं; यंत्र पीलण नही कर्म निब्लंछणं, दव तणो दाण न करेमि सरशोषणं ॥५०॥ असइ जण पोष ए दोष में टालिये, अवर व्यापारनी जयणा बहु पालिये; चउविह अनरथ दंम अटमव्रतें, तासु वेरमण करि समरिये दिनप्रतें ॥ ५१ ॥ न शकीए सर्वथी वंमीए दोहिलुं, जयणा करतां हुइये सवि मुज सोहिलुं; राजमंत्रीपद आरति नहुं करुं, नगरजनवादनुं रोइ मर्ड नइ धरुं ॥ ५२ ॥ होम दीचणजलें झीलणं, खेलणं, टालिशुं न्हाणि खल बहुल जलेखणं;

हिंसक वस्तु दाक्षिन्य विणु नापिये, पाच अनरथ वडु जयण मन थापियें ॥ ५३ ॥ शिक्षाव्रत इक सामायिक पूरिशुं, नवमव्रति मन तणी आश इम पूरिशुं; दशमव्रति दिशिदि संखेपमें किज्जए, इणि परे मणुअजन्म सफल आणिज्जए ॥ ५४ ॥ वरस प्रति पोषदा वार हुं पालिशुं, सकतिनी सीम अतिचार पुण टालिशुं, दिशि अवलोइशुं भोजन अवसरे, साधु संयोगव्रति बारमें मन धरे ॥ ५५ ॥ दुहा ॥ इणि परि पाली बार व्रत, शुद्ध करी समकित सार, (श्री) पार्श्वचंद गुरुप्रसादिने, जेम पामुं भवपार ॥ इतिश्री श्रावकव्रतविचार स्वाध्यायः

॥ श्रीयुगादिदेवस्तुतिः ॥

श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचन्द्रसूरिचरणसरसीरुह-
चंचरीकेण वाचकमुनिवरवरदराजेन कृता ॥

॥ भुजंगी छंदः ॥ शरच्चर्वरीशांशुराशावलक्षं लसद्ध्यानवन्मानसश्वेतपक्षं ॥ जिनं नाभिजं

ध्वस्तमोहान्धकारं स्तवीमि प्रभुं प्राप्तसंसारपारम् ॥ १ ॥ अगाधे भवाम्भोनिधौ संपतन्निर्जनैर्यस्य ते सातशात्राङ्घ्रियानम् ॥ समाश्रित्य वेगाद्वितीर्णः स तस्मै नमस्तुभ्यमस्वप्नवृन्दार्चिताङ्घ्र ! ॥ २ ॥ महाबोधदुर्बोधतापात्रमार ! कुवादीभसेनावधे सिंहसार ! ॥ नवीनोल्लसद्भासुरस्वर्णदेह ! जय त्वं प्रभो ! केवलज्ञानगेह ! ॥ ३ ॥ भवत्प्रोक्तसद्वाक्यपीयूषधारां पिबन्ति न हि प्राणिनो ये तुधाराम् ॥ कथंकारमिहं भवेदत्र तेषां सरोगान्यवागाऽऽविलानां विशिष्टम् ॥४॥ वचस्तावकं रागभृद्वाचया यः समं वक्ति कालुष्यवत्या विशुद्धम् ॥ श्रयत्र त्रियामा स्वरूपाद्य ईश ! स जन्मांध उक्तः खलुबुद्धिमद्भिः ॥ ५ ॥ सरागोक्तशास्त्रव्रजेभ्यो नमोऽस्तु मिथःसांप्रतं संविरोधं भजद्भ्यः ॥ अधीताजनं मादृशं ये प्रकामं भवक्षोपु वह्वाटनिं चक्रतीश ! ॥ ६ ॥ वचो वेरपवद्व्यावरंश्रद्दधाति विभो ! वक्ति यस्तारकं भव्यजातिः ॥ क्रमस्तं न जेतुं प्रपाणिस्वर्ग इवोन्मत्तसारङ्गसङ्घःशरास्यम् ॥ ७ ॥ द्रुतंस-न्दवा नंव प्रोप्यमाने नमोनस्य पाथेयमानन्ददानम्॥ प्रपच्छेदकं श्रेयमां यन्निधानं तदास्तां मम स्वा-ः ता तेऽभिधानम् ॥ ८ ॥ समस्यान्तो बालकासारसंस्थं भवारक्तदंक्रिल्लोल्लासनेऽङ्ग ॥ अद्यानीश ! म

निर्जितक्षीरजातं तुष्टं त्वन्मुखं पश्यतो यातु कालः ॥ ९ ॥ अनन्तैः समालिङ्गिता या जिनेश ! मनोमोदिनी मुक्तिनामा विकामा ॥ तयाऽहर्निशं क्रीडमानोऽपि चित्रमिदं गीयसे त्वं बुधैः सुदृशीलः ॥१०॥ सुरा आसते कोटिशःसन्निधिगणा भवान्रत्नमन्ये हि ते काचखण्डाः ॥ न ते तेऽम्बरे जाप्रतीह ग्रहाः किं जगच्चक्षुषः करतुलास्ते तु नाथ ! ॥ ११ ॥ कति त्वद्गुणान्काशहासेन्दुगौरा । नणोहत्यहं कुर्वे आसत्रिविश्वान् स्वचीरे कियन्नह्यति स्वर्णमत्रा–धिगत्येश ! निःस्वो हिरण्यक्षितिधम् ॥ १२ ॥ स्रग्धरा वृत्तं ॥ इत्थं श्रीआदिनाथस्तवनमतिमतिप्राप्तसिद्धान्तसारैः कालेऽस्मिन् दुःखमारे प्रबलमतपतो भूरिपाखण्डजाले ॥ यैर्जैनं शासनं सत् प्रकटितममलं सम्यगुद्भासितं च श्रद्धालूनां हितार्थं परमशिवपुरश्चकृत्य पार्श्वस्थमार्गम् ॥ १३ ॥ तेषां विद्याब्धिप्रेसरविबुधशिरोलङ्कियापापाश्रीनन्दो-पाध्यायानांप्रवादिप्रततत्तरुगणोन्मूलनेभपत्राणाम् ॥ चश्चच्चारित्रभाजां भवजलनिपतत्प्राणभृतारकाणाम् स्वर्गङ्गानीरहारोज्ज्वलतरयशःपावितक्ष्मातलानाम् ॥ १४ ॥ गीतिः ॥ चरणारविन्दसेवन–मधुपः शिष्याणुवरवराजाख्यः॥ जडमतिरपिनिजदर्पा–चकार चित्तार्त्तितापहरम् ॥१५॥

॥ इतिश्रीवाचकवरमुनिवरवरदराजेनकृताश्रीयुगादिदेवस्तुतिः संपूर्णा ॥

॥ श्रीआचारंगसूत्रना लोकविजयाध्ययननी सज्झाय ॥

" हरर आंबा आंवलीरे दीठी दाडम द्राख " ए-राग. (अथवा) जेम तरुपाकुं पांदडुंजी, पडतां न लागे वार-ए देशी.

श्री आचारंग सूत्रनोजी, अध्ययन बीजो एह ॥ लोकविजय नामे करीजी, भाखे अरिहंत तेह ॥ १ ॥ (सुण सीख) रे प्राणी परिहर विषय कषाय, जेम अनुपम सुख थाय रे प्राणी. ॥ ए आंकणी ॥ लोक शब्दे इहां जाणीयेंजी, विषय कषाय प्रसंग ॥ विजय केहेतां ते जीतवाजी, जेथी थाय दुःख भंग ॥ रे प्राणी० ॥ २ ॥ बीजांकूर न्याये करीजी, विषय कषाय संबंध ॥ चतुरगति भमवा तणोजी, तेहथी थाय छे बंध ॥ रे प्राणी० ॥ ३ ॥ नरक तिर्यंचगतें दुःख लहेजी, वलि गरभावास ॥ कर्म ताथे तप्यो जीवडोजी, जन्म जराने नास ॥ रे प्राणी० ॥ ४ ॥ आधि उपाधिने व्याधियेंजी, ते अति दुःखीओ होय ॥ महा मोह आडे मह्योजी, क्षण एक सुखित्त म

जोय ॥ रे प्राणी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक ते अनर्थनाजी, कारण कारज न्नाव ॥ जाणी तजीने जीजीवेजी, सु अवसरनो लाव ॥ रे प्राणी० ॥ ६ ॥ आर्यक्षेत्र उत्तम कुलेजी, पामी नर अवतार ॥ धर्म श्रवण रुचि उद्यमेजी, अप्रमत्तताने धार ॥ रे प्राणी० ॥ ७ ॥ न्नव शतकोटी दोहिलोजी, जाणी अवसर एह ॥ संयम अनुष्ठाने रमेजी, समय दरशी मुनि तेह ॥ रे प्राणी० ॥ ८ ॥ चित्र जीवे वली जंबुयेंजी, गजसुकुमार मुनीश ॥ विषय कषाय वेलि ठेदिनेजी, पाम्या मुक्ति जगीश ॥ ॥ रे प्राणी० ॥ ९ ॥ विषयादिकमां जे फस्याजी, ब्रह्मदत्तादिक तेह ॥ नरकगते डुःख न्नोगवेजी, हजी सुखी नाव्यो ठेह ॥ रे प्राणी० ॥१०॥ इम जाणी न्नवि परिहरोजी, म करो एहशुं रंग ॥ जेथी वेगे तुमे पामशोजी, मुक्तिवधुनो संग ॥ रे प्राणी० ॥ ११ ॥ नागपुरीय तपागच्छेजी, श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीन्द्र, तासचरणकजसेवतांजी, कहे मुनि सागरचन्द्र ॥ रे प्राणी० ॥ १२ ॥

॥ इतिश्री लोकविजयाध्ययनस्वाध्यायः संपूर्णः ॥

कुंथुनाथ अरि मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम; पार्श्व वीर ए जिन चोवीश, जगवत्सल जगगुरु जगदीश, प्रणमीजे धरी प्रेम ॥ ३ ॥ (ढाल २ जी. प्रथम सुपन गज निरख्यो–ए देशी.) प्रथम भरत नरिंद, बीजो सगर सुरिंद, मघवा त्रीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शान्ति चक्रीश, छठो कुंथु गणीश, सातमो अरि नरनाथ, अठम सुभूम सनाथ ॥५ ॥ नवमो पदमसरेश, हरिषेण दशमो कहेश; इग्यारम जय ताम, बारमो ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्रीसर बार, क्षेत्र भरत शिणगार; मघवा सनतकुमार, पहुंता सरग मझार ॥ ७ ॥ सुभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तमी नरय निरत्त; आठ थया शिवगामी, ते प्रणमुं शिर नामी ॥ ८ ॥ (ढाल ३ जी. मुनिवर आर्य सुहस्ती–ए देशी.) पहिलो त्रिपृष्ट जाण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंभू जाणिये ए; पुरुषोत्तम चोथ, पंचम परगमो, पुरुषसिंह प्रमाणिये ए ॥ ९ ॥ छठो पुरुष पुंडरीक, दत्त तीम सातमो, लखमण नामे आठमो ए; नवमो कृष्ण नरेश, ए नव केशव, प्रह ऊठी ए पण नमो ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच छठी गया ए; सातमो पंचम नेर, चोथी

आठमो, नवमो तीजी नारया ए ॥११॥ अचल विजय ने जद्र, सुप्रज्ञ सुदर्शन, आनंदन शुज्ञमति ए; रामचंद्र वलज्ञद्र, वलदेव ए नव, आठे थया शिवगति ए ॥ १२ ॥ वलज्ञद्र ब्रह्मलोक, काल उत्सप्पणी, जाशे शिव कृष्ण सासणे ए; अथवा निपुलाक नाम, तीर्थंकर होशे, चउदमो इम वहु श्रुत जणे ए ॥ १३ ॥ (ढाल ४ थी. कुमरपणे प्रज्ञु रहेतां काल सुखे गमे ए देशी.) अश्वग्रीव ने तारक, मेरुक वलिमधु तिसा ए, निशुंज्ञ अने प्रल्हाद, रावण जरासिंध जसा ए; ए नव प्रति. वासुदेव नरकगति गामिया ए, तोपण जाविजिनेश केइ प्रणमुं सया ए ॥ १४ ॥ (ढाल ५ मी. सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं ए देशी.) शांति ने कुंथु अर एह जव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही, वीर वासुदेव अरिहंत जव जुजुआ, देह त्रिणसाठ पण जीव गुण सठ हुआ ॥ १५ ॥ वासुदेव वलिय नलदेव केरा पिता, एकहीज थाय नव एण लेखे छता; तीन चक्रधरतणा मिलिय बारे टल्या, एम त्रेसठना तात इगवन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्ततणी टाली दीजे जिशे, माय सहुनी अड साठ लेखे इशे; एह नररयणनो ध्यान जे नित धरे, तेह सुरपद लही

मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥ (कलश.) इम थुणयो तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करे सुर नर सेव ए; तेसठशिलाका पुरुष उत्तम जयवंता वरतो सदा, अह समय तेहनां चरणपंकज "वल्लभचंद" नमे मुदा ॥१८॥ इतिश्री युगप्रधानकनकचन्द्रसूरीश्वर संतानीय मुनिराजश्री वल्लभचन्द्रेणकृतं स्तवनम् ॥

॥ निंदापरिहारनी सज्झाय. ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान —ए राग ॥

चेतनशुं मन लाइयेरे, परिहरि पापप्रमाद; वलि विशेषे टालवोरे, विरुवो परपरिवादो रे ॥ १ ॥ समता मन धरो. परनिंदा बहु दोषो रे, गुण प्रकट करो ॥ जिम पामो भव शोषो रे, समता मन धरो. ए आंकणी ॥ खिणमांहि संयम सहु गमेरे, जे संच्यो चिरकाल; परनिंदा करतो जतीरे, बोले उपदेश मालोरे ॥ स० २ ॥ जेहने जे दूषण दियेरे, तेहिज पामे आप; पंचम अंगे जाणवोरे, भव भव जिणे संतापो रे ॥स०॥ ३ ॥ परनिंदा पातिक

कह्योरे, बीजे अंगे विचार; नरकादिक उख अनुजवेरे, करि तेहनो परिहारो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ आप वखाणे अधिकतार, थाज मदें अति लीण; जिणे दूषणे पर दूखियेरे, ते परजवे लहीए हीणोरे॥स० ५ ॥ लोकिक ग्रंथे इम कह्योरे, परनिंदक सोवाग, जिहां ते जाये जलें करीरे, ते सींचीजे मागोरे॥ स०॥६॥ परनिंदक पर पूठनोरे; मंस करे आहार; दशवैकालिके इम जणयोरे, पंन्डित लहशे सारो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु धर्म संघनीरे, सुरनिंदा मिथ्यात; समकित होय प्रशंसतांरे, त्रीजे अंगे विख्यातो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ परगुण हिये संजारियेरे, अवगुण परिहरि दूर; श्रीपार्श्वचंद्र पाये नमी कहेरे; मुनि ब्रह्म आणंद पूर रे ॥ समता मन धरो ॥ ९ ॥ इति स्वाध्यायः ॥

॥ श्रीजीरापल्लिपाटक आदिश्वरजिनस्तुतिः ॥

अनुष्टुप् वृत्तं.॥ देवदेवैर्वितं देवं, नाभिभूपतिनंदनम् ॥ वृषभांकेन संयुक्तं, तं सार्वं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ मरुदेवांगजन्मानं, साधुवृंदसुसेवितम् ॥ केवलज्ञानभास्वंतं, तं देवं स्तोमि भावतः ॥ २ ॥ सुरासुरनरेंद्राणां, पूज्यं गुणगणैर्वृतम् ॥ तृतीयारनभोरविः; वीरं वंदे मुदा सदा

शोक पखो रे ॥ १३ ॥ (कलश.) इम कुण्यो तीर्थंकर चक्रीधर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासुदेव [illegible] केवली करे सुर नर सेव ए; [illegible] पुरुष उत्तम जयवंता वरतो सदा, प्रह समय [illegible] "[illegible]" नमे मुदा ॥१८॥ इतिश्री युगप्रधानकनकचन्द्रसूरीश्वर संतानीय [illegible] स्तवनम् ॥

॥ निंदापरिहारनी सज्झाय. ॥

॥ [illegible] रे, केवल ज्ञान निधान —ए राग ॥

[illegible] मन आदरोरे, परिहरि [illegible]; वलि विशेषे टालवोरे, [illegible] परपरिवादो रे ॥ १ ॥ समता मन धरो. परनिंदा बहु दोषो रे, गुण प्रकट करो ॥ जिम पामो ज्ञान [illegible] रे, समता मन धरो. ए आंकणी ॥ [illegible]मांहि संयम सहु गमेरे, जे संग्यो [illegible]; परनिंदा करतो जांणे, [illegible] उपदेश माजोरे ॥ स० २ ॥ जेहने जे दूषण दियेरे, [illegible] तव तव जिण मंतारो रे ॥स०॥ ३ ॥ परनिंदा पातिक

कह्योरे, बीजे अंगे विचार; नरकादिक दुःख अनुजवेरे, करि तेहनो परिहारो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ आग वखाणे अधिकतार, आठ मदें अति लीण; जिणे दूषणे पर दूखियेरे, ते परजवे लहीए दीणोरे॥ स० ५ ॥ लोकिक ग्रंथे इम कह्योरे, परनिंदक सोवाग, जिहां ते जाये जलें करीरे, ते सींचीजे मागोरे॥ स०॥६॥ परनिंदक पर पूठनोरे; मंस करे आहार; दशवेकालिके इम जणयोरे, पंमित लहशे सारो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु धर्म संघनीरे, सुरनिंदा मिथ्यात; समकित होय प्रशंसतारे, त्रीजे अंगे विख्यातो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ परगुण हिये संजारियेरे, अवगुण परिहरि दूर; श्रीपार्श्वचंद्र पाये नमी कहेरे; मुनि वह्मो आणंद पूर रे ॥ समता मन धरो ॥ १ ॥ इति स्वाध्यायः ॥

॥ श्रीजीरापह्लिपाटक आदिश्वरजिनस्तुतिः ॥

अनुष्टुप् वृत्तं.॥ देवेंद्रैर्वंदितं देवं, नाजिनृपतिनंदनम् ॥ वृषजांकेन संयुक्तं, तं सार्वं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥ मरुदेवांगजन्मानं, साधुवृंदसुसेवितम् ॥ केवलज्ञानजास्वंतं, तं देवं स्तोमि जावतः ॥ २ ॥ सुरासुरनरेंद्राणां, पूज्यं गुणगणैर्वृतम् ॥ तृतीयारनजोदीप्र; दीपं वंदे मुदा सदा

मंत्र न तंत्रजी ॥ प्रीति० ॥ १ ॥ नाग नमो कोइ सहस वरस लगी, किरिया करो अनंतजी; करो तपस्या कोडि वरस लगी, जावे नजो जगवंतजी ॥ प्रीति० ॥ २ ॥ संयम पालो कोडि वरस लगी, धरो ध्यान असमानजी; मुनिवरो नजी रहो वनवासि, करो बहु धूमरपानजी ॥ प्रीति० ॥ ३ ॥ मुंड मुंडावो लोच करावो, नगन रहो गृह वेशजी; जटा वधारो तिलक वणावो, नावे हुवो दरवेशजी ॥ प्रीति० ॥ ४ ॥ जोगी जंगम यति संन्यासी, वेष अनेक प्रकारजी; ले ले मूरुपा धार अनंती, न हुवो को निस्तारजी ॥ प्रीति० ॥ ५ ॥ प्रीति न तोमी अधिकी कोडी, सकलगुणे प्रधानजी; गोतम गणधर सपले चावो, न लहे केवलज्ञानजी ॥ प्रीति० ॥ ६ ॥ सिजंनव घठदश पूरवधर, तेहस हवो मनाकजी; आंतु नाख्या नयण थकी जिन, सवल प्रितीनो गकजी ॥प्री० ॥ ७ ॥ हरख कंजर कंचे लोचो, वशनव धार व मासजी; रीसाणो नाइ नवि बोले, नमियो वहु वनवासजी ॥ प्रीति० ॥ ८ ॥ बारनली हुं वंची रानिदा, हाथे तांतण तारजी; चार वरस लगी वाड न मेलत, मुनिवर आर्द्रकुमारजी ॥ प्रति० ॥ ९ ॥ मगुधनति बहु उपसर्ग कीधा, प्रीति

हुवो अंधजी; रामचंद सीता मन साचो, वांचो एह संबंधजी ॥ प्रीति० ॥ १० ॥ जीव संभूततणो मरी हुओ, ब्रह्मदत्त चक्रधारजी; हा कुरमति कुरमति करंतो, पहुतो नरक मझारजी ॥प्रीति०॥ ११॥ बार वरस लगी चारित पाळ्यो, नारि नागिला ध्यानजी; भावदेवें ए संयम छोड्यो, जोड्यो प्रीतिशुं मानजी ॥ प्रति० ॥ १२ ॥ घर परिवार तजी नाट कियो, कंधे उपाड्यो वंसजी; इलापुत्र अति प्रीते नडियो, शिवगामी सुप्रशंसजी ॥ प्रीति० ॥ १३ ॥ शिवगामी रहनेमि ऋषीश्वर, राजिमतीनुं रूपजी; देखी ध्यान थकी जे चलियो, प्रीति अलख स्वरूपजी ॥ प्रीति० ॥ १४ ॥ लाखुमांहि लट थई मरीने, प्रीतें चारे नारजी; एह अचंबो देखो हुओ, वैराग्यो भरतारजी ॥ प्रीति० ॥१५॥ बालक मारी मंस भखे ए, दीसे ए अणगारजी; प्रीति बेटा इम सीखिया, भृगु भृगुनी वलि नारजी ॥प्री. ॥ १६ ॥ दही मांहि औषध बहु घाली, प्रीते मुनिने दीधजी, हरसपदि मुनि अणसण कीनो, एह अकारिज कीधजी ॥ प्रीति० ॥ १७ ॥ गौतमने केसी मुनि पूछे, संसारमांहि कुण पाशजी; प्रीति पाश छे अति भयंकर, उत्तराध्ययन सुभाषजी ॥ प्रीति० ॥ १८ ॥ रातें उठ्यो दासी प्रीतें, लेवा

" सहज अंगार " इम जाणे, श्री संघने जयजयकारजी ॥ श्रीजि० ॥ १६ ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीय-
तपागच्छीयवाचकश्रीमद्धर्मसिंहमुनिनाकृतः स्वाध्यायः ॥

अथ श्रीराजर्षि सुकोसलजीनी सज्झाय.

(राग) गोयम गोयम गणहर पाये नमी ए, गाइशुं गाइशुं श्री मुनिराय के; नामे सुकोसल मुनि तिलो ए, सुंदर सुंदर कोमल काय के. गोयम. (त्रू०) पाए नमी साधु सुजाण केरा कहुं चरित्र मोहामणुं, एक लाख जोयण दीप जंबू भरतक्षेत्र तिहां भणुं; साकेत नामे नगर मांहे कीर्तिधर तिहां राजियो, जिनधर्मी पुण्ये भरी सुणे दान ने गुण गाजियो ॥ १ ॥ (राग) तसु घर घरणी सोहामणी ए, रूपे ए रूपे ए यौवनमान के; राणी सहदेवी जाणी ए, सुकोसल कुमार तस कुमार के तसु (त्रू०) जाणीए गुणवंत शीले राग रंगे नित रमे, पंचितांग सुर जिम सुख भोगवे ... प्रसंगे ... पालियो

परवर्यो वेगे राजनीति धरे खरी ॥ २ ॥ (ढाल) नरपति नरपति निरखे नयणमे ए, सूरज सूरज ग्रहण आकाश के; चतुर पणे इम चिंतवे ए, रवि किम रवि किम पमियो पास के. नर. (त्रूटक) वपणडां रूडां राज अंपे अहो अथिर संसार ए, शशि सूर सरीखा ग्रहण पामे कर्म विषम अपार ए; पुत्र परिजन पशु पराक्रम कोइ न आमो आव ए, संवेग रंगे राय चडियो जावना इम जाव ए॥३॥

(ढाल २ जी गीता छंदानी) (चालती) तव राजा रे कहे कुटुंबी पुरुषने, सज्जाइरे करो वोलावो सज्जनने; नृप पदवी रे कुमर सुकोशलने दिये, कीर्तिधर रे जूपति चारित्र तव लिये. (त्रू०) तव लिये चारित्र खरो पाले दोष टाले तेहना, तप करे डुःकर साधु सुंदर लाज्ञ छपे निज देहना; ग्रामानुग्रामे विहार करतां तप चोमासी पारणे, साकेतपुर मुनिराय आवे जमे घर घर बारणे ॥ ४ ॥ (चालती) इण अवसर रे सहदेवी गोखे चमी, ऋषि देखी रे राणी घण क्रोधे नडी; तेमावी रे चरवाशार मते जणे, इण मुनिवर रे शुं करिवो छे आपणे (त्रू०) आपणे नगरे म आववा यो जाइ वरजो एहने, तव नफर आवे साधु पासे छलसे ऋषिरागने; ते वचन राणीतणा

॥ स० ॥ १३ ॥ निशि ते देरे [illegible] रही, देर टले कुंवरनो जामतो; क्रोध करित वैताळीनो, जड [illegible] दुःखो दाम तो ॥ स० ॥ १४ ॥ देवी [illegible] पड्यो, वैगसंनारे पूरन जेह तो; रूप देरे [illegible], तो [illegible] कुंवर न [illegible] नेह तो ॥ स० ॥ १५ ॥ वाप पिकुवें प्रति घणो, हुवे कुंवरने [illegible] तो; [illegible] कुंवरे ताडियो, जड हुवो तन नेह अगाह तो ॥ स० ॥ १६ ॥ [illegible] मुर [illegible], [illegible] नावे गिरि परचंद तो; थयो सचेतन [illegible], जड कियो कुंवरे [illegible] तो ॥ स० ॥ १७ ॥ [illegible] जणी, आवे सुर विद्याधर कोडि तो; वृष्टि करे [illegible] तो ॥ स० ॥ १८ ॥ इम जदा [illegible] पालियो, [illegible] [illegible], नेत्र जिसी दामिनी [illegible] तो ॥ स० ॥ १९ ॥ [illegible] ठवि [illegible] तो; कुंवर कहे तुमे [illegible], जिण [illegible] [illegible] तो ॥ स० ॥ २० ॥ [illegible] कुंवरी [illegible], [illegible] [illegible] तो ॥ स० ॥ २१ ॥ [illegible]

वेगे तस दीधो मान तो; रूपिनो वचन मिट्यो सही, जिणे कहियो एहवो अहिनाणतो ॥ २२ ॥ मानससर जे आवसी, जक्ष तणो जप करसी जेह तो; ए कन्या आठे तणो, होसी वर तेहीज निःसंदेह तो ॥ स० ॥ २३ ॥ इम कहि ते परणाविया, वासजवन सूतो सुविचार तो; सेज थकी धरणी पड्यो, जागतां देखे एह प्रकार तो ॥ स० ॥ २४ ॥ मनशुं विमासी चालियो, एकलमल्ल अटवीने संग तो; गिरिशिखरे जिहां घर अछे, देखि गयो तिहां मन रंग तो ॥ स० ॥ २५ ॥ करुणास्वरे एक कामिनी, करत जपे मुखे सनतकुमार तो; तिणे ते पूछी एम कहे, मनने मेल तेहज जरतार तो ॥ स० ॥ २६ ॥ सांजलो पुर साकेतनो, सुरजिचंद राजा घर नारि तो; चंद्रजसा मुज मापडी, दूत एक आव्यो सुविचार तो ॥ स० ॥ २७ ॥ रूप देखाड्यो कुमरनो, तिणि मुजने तस ऊपर नेह तो; वीजे ठामे मागणों, तात कियो सुणी मादरो तेह तो ॥ स० ॥ २८ ॥ गोखें चढी हुं तिणसमे, विद्याधर अपहरी तिवार तो; इण थानक मूकी गयो, इम कहेतां वलि हुइ ते वार तो ॥ स० ॥ २९ ॥ असनवेग खेचरींदनो, सुतवज्रवेग उपाडे नारि तो; तत्खिण कुंव-

रे ते हण्यो, धरणी पड्यो मुष्टिप्रहार तो ॥ स० ॥ ३० ॥ सनतकुमारे ते वरी, अस्त्रीरत्न सुनंदा नाम तो; रूपगुणे अति आगली, चक्रीश्वर सुखनो अतिधाम तो ॥ स० ॥ ३१ ॥ तस जगनी संध्या वली, आवी बंधव मुओ देखी तो; कोपे चडी वली उपसमे, निमित्तवचन संभारे विशेष तो ॥ स० ॥ ३२ ॥ जे तुज बांधवने हणे, ते ताहरो होसी भरतार तो; इशो कहीने कुमरशुं, पाणीग्रहण करे तिणि वार तो ॥ सु० ॥ ३३ ॥ तिण अवसर दोय आविया, विद्याधर बोले विख्यात तो; तुम ऊपर आवे चढी, जे तुम पुरुष हण्यो तस तात तो ॥ स० ॥ ३४ ॥ भवनवेग नरपति थकी, चंद्रवेग वली मेली साथ तो; आया तुम सेवाभणी, करो कृपा अम ऊपर नाथ तो ॥ स० ॥ ३५ ॥ तिण अवसर संध्यावली, विद्या खचर संबंधी जेह तो; कुंवरने आपे सही, असनवेगशुं झूझे तेह तो ॥ स० ॥ ३६ ॥ वहतां वार घणी थइ, असनवेगनो कीधो घात तो; राज लियो सवि तेहनो, पाले सनतकुमार विख्यात तो ॥ स० ॥ ३७ ॥ विद्याधर सवि ओलगे, सुख विलसे सुर जेम उदार तो; चंडवेग इम वीनवे, सोकन्या परणो सुजसार तो ॥ स० ॥ ३८ ॥ एक दिन

मुजने दाखव्यो, पाणिग्रहण तणो अहीनाण तो; आठ रमणि जे परणशे, नवनवेग राजानी जाण तो ॥ स० ॥ ३९ ॥ पुरज्ञवना वैरथी, जर्के अस्ताक्र मनाव्यो हारि तो; ते कारण वली पुछियो वेर किसीपरे हुओ तिवार तो ॥ स० ॥ ४० ॥ रुषि बोले तिहां ज्ञानशुं, सांजल एहनी पूरव वात तो; कंचणपुर राजाजलो, विक्रम जश जुवने विख्यात तो ॥ स० ॥ ४१ ॥ सारथवाह तिहां वसे, नागदत्त घरे अपत्नर नारि तो; विस्नुसिरी नामे सही, नृपनी दृष्टि पडी इक वार तो ॥ स० ॥ ४२ ॥ अंतेउर मांहे धरी, रक्त हुओ राजा तिण साथ तो; बीजी नारि न सांजरे, न्याय तणो तेन गणे काथ तो ॥ स० ॥ ४३ ॥ तिण उखे ते गहेलो थयो, नागदत्त तेहनो जरतार तो; तेह वचन मुखें उच्चरे, जमे नगरे तेहिज संजार तो ॥ स० ॥ ४४ ॥ जूपति लज्जा अवगणी, अवगण्यो अंतेउर सार तो; विस्नुसिरि इक मन वसी, राजलणी बंनी कणवार तो ॥ स० ॥ ४५ ॥ राणी सवि एकठी मिली, पंचसयां मिलि कीधो मंत तो; कामण जोगे ते हणी, विस्नुसिरिनो एह वृत्तांत तो ॥ स. ॥ ४६ ॥ शोगकलित राजा हुवो, विकलपणे इम बोले बोल तो; एहनो साथ न म्हेलशुं,

मोह न उंम्हे तेह निटोल तो ॥ स. ॥ ४७ ॥ पासे नित वैठो रहे, मंत्रीसर कीधो परपंच तो; प्रछन पणे अटवी परे, मृतक तणो ए जाणे संच तो ॥स. ॥ ४८ ॥ तस अणदीठे परिहरे, नृपति असनादिक सवि जोग तो; अइने देखाम्हे जेतले, मृतक तणो थयो नूंमो जोग तो ॥ स. ॥ ४९ ॥ तव नृप संवेगे धम्यो, दीक्षा ले मोटे मंमाण तो; चरण करण पाली करी, त्रीजे कलपे लह्यो शुन्न गण तो ॥ स. ॥ ५० ॥ चविय रत्नपुरें ऊपनो, शेठ कुले जिनधर्मी नाम तो; समणोपासक जाणीये, जेहचो नाम तिशो परिणाम तो ॥ स.॥ ५१ ॥ सारथवाह मरण लहे, विकलपणे रमणिने राग तो; वंन्नण कुले ते ऊपनो, अनुक्रमे हुउ त्रिदंमी भाग तो ॥ स. ॥ ५२ ॥ तप छउ मासी आचरे, रतनपुरी आव्यो इक वारतो; राय घरे पारण न्नणी, तेम्यो तापस अविचार तो ॥ स. ॥ ॥ ५३ ॥ जिनधर्मीने तिणे समे, पेखत सत्वल न्नराणो रीस तो; पूरव वैर तणा उदे, रायप्रते बोले गुजगीश तो ॥ स. ॥ ५४ ॥ एहनी पुंठे पारणो, मुजने छे करवानो न्नाव तो; राय वचन अंगी करे, तिले तेहचा मांड्या प्रस्ताव तो ॥ स. ॥ ५५ ॥ श्रावकनी पुंठे घरे, थांचानो न्नाजन

ज्ञरी खीर तो; उत्पले जीमे तिहां, प्रगथ्र पलयो ने रुधिर शरीर तो ॥ स. ॥ ५६ ॥ वेचन शुं निज घर गयो, श्रावक मन आणे वैराग तो; दीख ग्रही कात्रसर्गे रह्यो, पनर पनर दिन दीसने ज्ञाग तो ॥ स. ॥ ५उ ॥ मांस ज्ञखे ते पंखीआ, इम उइ मास तणे अवसाण तो; आराधी सुरपति हुवो, पहिले कढ्प थइ तस आण तो ॥ स. ॥ ५ट ॥ तापस ते वाहन पयो, इंड तणो एरावण जाण तो; फकीन दिये तप आचर्यो, तेहनो फल एहवो निरवाण तो ॥ स. ॥ ५१ ॥ तिहांथी तिरि नरना ज्ञवे, ज्ञमत पयो अस्तापि विमान तो; इंड चवीने तुमे थया, सहदेवी उदरयणनिधान तो ॥ स. ॥ ६० ॥ रुपिनो कहण निवेदियो, चंमवेगे नरवर तिणि ठाण तो; सनतकुमारे ते सुणयो सो कन्या परणी तस जाण तो ॥ स. ॥ ६१ ॥ एवंकारें एकसो, दश अधिकी रमणिनो जोग तो; ज्ञमर रमे जिम मालती, विविध परें तिम विलसे ज्ञोग तो ॥ स. ॥ ६२ ॥ अन्य दिने इछा उपनी, मानससर जोवाने काज तो; इण थानक आवी रह्या, मिलन हुवो एतुम्हशुं आज तो ॥ स. ॥ ६३ ॥ अवसर जोइ वीनवे, मित्र कुंवरने वे कर जोमी तो; चाल तुं हथिणापुर ज्ञणी, जननी पिताना

जाणे परिणाम तो ॥ स. ॥ ८१ ॥ कुंवर पणे मंडलिक पणे, सदस पंचास वरीस तो; लाख वरष चक्रीपणे, तिम चारित्र पाळ्युं सुजगीश तो ॥ स. ॥ ८२ ॥ अणसण संमेते करी, मासदिवस पाले निरतिचार तो; कर्मखपी सिद्धे गयो, नामे दुर्गति दूर पलाय तो ॥स.॥ ८३ ॥ सोलहसें सित्तोतरें, श्रावण सुदि तेरसे शनिवार तो; उत्तराध्ययन संक्षेपथी, वृत्ति थकी कीधो उद्धार तो ॥ स. ॥ ८४ ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि पाय नमी, हरख धरी ए रचियो रास तो; मुनि उदय कहे जे भणे, तिह घर मंगल लछि निवास तो ॥ स. ॥ ८५ ॥ इतिश्रीमन्नापुरीयवृद्धतपागछाधिराजयुगप्रधानश्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरशिष्यमुनिश्रीउदयचन्द्रेणकृतःश्रीसनतकुमाररासःसंपूर्णः ॥

॥ श्रीवीरप्रभुना अग्यार गणधरनी स्तुतिः ॥

(उपजाति वृत्तं)–श्रीइंद्रभूतिं पृथ्वीसुपुत्रं, माक्षीणलब्ध्यादिगुणैः पवित्रम् ॥ जगज्जयंगीतमगोत्ररत्नं, श्रीगौतमस्वामिनं नमामि ॥ १ ॥ सुधासुधान्ताप्रिययोविताने, संपूरितानंतमनोनितांसम्र ॥

विश्वैकविश्वाविलसद्विभूतिं, श्रिये श्रये श्रीमुनिमग्निभूतिम् ॥ २ ॥ श्रीवीरदत्तत्रिपदीनिधानं, सुरां-
सुरैः संश्रितसन्निधानम् ॥ संस्तुत्य सत्यं प्रभवानुभूतिं, सेवे मुनिं संप्रति वायुभूतिम् ॥ ३ ॥ निजान्-
वयांभोधिविधुत्वचंद्रं, सत्यंविनिर्जितसनिंद्रतंद्रम् ॥ व्यक्तीकृताव्यक्तसुयुक्तिसूत्रं, व्यक्तंश्रयेश्रीध-
नमित्रपुत्रम् ॥ ४ ॥ श्रीभद्दिलाकुक्षिदरीहरीशं, मीनध्वजध्वंसनसद्गिरीशम् ॥ व्याख्यातविख्यात-
दयाख्यधर्मं, स्तुवे सुधर्माणमनंतवर्मम् ॥ ५ ॥ धनाधिपश्रीधनदेववंशे, मुक्तोपमां यः प्रदरीधरीति ॥
श्रीमंडितः सद्गुणमंडितः स्व, र्निर्वाणसौख्यं च चरीकरीति ॥ ६ ॥ सामौर्यजाया विजयासुधन्या,
यथा सुतो यो जनितो जनन्या ॥ तं मौर्यपुत्रं त्रिपदीसुपात्रं, स्तवीमि चामीकरचारुगात्रम् ॥ ७ ॥
श्रीदेवभूदेवसदेवनंदनं, देवीजयंतीसुपुनः सुनंदनम् ॥ भूमींद्रभोगींद्रगणैरकंपितं, श्रीवीरशिष्यं कश्र-
पाम्पकंपितम् ॥ ८ ॥ (उपजातिवृत्तं.) सद्वंशलावण्यवरेण्यदेहं, सौभाग्य भाग्यासुदयैकगेहम् ॥
श्रीपारिजातोनमभूरितेहं, मुदाचलभ्रातरमाश्रयेहम् ॥ ९ ॥ दीनार्थिसात्कृतनामधेयं, श्रीदत्तवंशा-
द्भुतभागधेयम् ॥ चातुर्यगांभीर्यगुणैरदार्यं, मेतार्यभीयाज्जनितांगकार्यम् ॥ १० ॥ शिष्टोपदि-

निरखतां, एवडे पाप उल्लास. ॥४॥ मैं प्रभु पेखणेरे पास सोहामणो, सेवकजनसाधार; दंसण देखीरे शक्ति बलि वीनवुं, धो आमतेणमव्हार. ॥ मैं०॥ ५ ॥जिण दिन वेलारे सफली ते घडी, वंदुं श्री जिनराज; परषद पुरीरे ये जिन देशना, सारे त्रविषण काज ॥ मैं० ॥ ६ ॥ परषद चारे रे कहिशुं विगतशुं, ते श्री गुरुमुखें धारो; वैमानिकदेव आवें उत्तरे, बेसे इशान मझार ॥ मैं०॥ ७ ॥ बीजी परषद राषराला जके, धर्म सुणे मन लावि; त्रीजी परषद नारी मनुष्यनी, सुणे छत्री तिहां आवि ॥ मैं०॥ ८ ॥ पूर्व दिशियारे आवी हुतर, बेसे बहुला साघ; जिनने प्रणमेरे हर्ष हिये घणो, टाली मन आशाव ॥ मैं० ॥ ९ ॥ बीजी परषद साहुणी गुणभरी, वैमानिकनी रंभ; त्रीजी परषद जोवे जावता, मनमाहे न धरे दंभ ॥ मैं० ॥ १० ॥ दक्षिण दिशिथीरे आवी नैऋत, जगगुरु प्रणमे जोड; ज्योतिषचक्रनीरे देवी इहां, चहिली परषद होइ ॥ मैं० ॥ ११ ॥ भवनपतिनीरे देवी परषद, बांधी बेसे रंगि; बीजी परषद आवे व्यंतरी, वचन सुणे मनरंगि. ॥ मैं० ॥ १२ ॥ पश्चिम दिशियीरे आवी वायवें, चहिली परषद देव; बेसे सुणे निज परिवारशुं, मन करे निशदिन ॥ मैं०॥

॥ १२ ॥ बीजी परषद भवनपति सहु, अहनिशि सारे सेव; जिनगुण गावे उल्लट अति घणें, त्रीजी व्यंतर देव. ॥ मैं० ॥ १४ ॥ (ढाल त्रीजी.) परषद प्रति जिनजी कहें, तुमे सुणजोरे भविपण लोय; मणुअ जन्म छे दोहिलो, एतो लाधोरे हवे आलें म खोय. ॥ १५ ॥ घनवाणी जिनवरतणी, जिणे सुणतां हुए परमाणंद; पाप टले पोतातणां, जव जोई वामानोनंद. ॥ घन० ॥ ॥ १६ ॥ हिंसा मृषा निवारीए, नविलीजे अदत्तादान; ब्रह्मव्रत रुडुं पालिये, टालिये अंगथी अभिमान ॥ घन० ॥ १७ ॥ केवल पामी सिद्धि गया, तार्या तिहां सघला लोक; पद कायाना पीहरु, न वपाव्यो केहने मन शोक ॥ घन० ॥ १८ ॥ (कलश.) जगि भीमभंजण कर्म गंजण जिणं त्रेवीशम वंदिये, तसु नाम जपिये कर्म खपिये नेहवल्लि निकंदिये; नयणोर नयरें वछराज शाह घरि देहरासरि जिन संथव्यो, सूरींद श्री पार्श्वचंद शिष्य मुनि वाघराजें वीनव्यो. ॥ १९ ॥
॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागछाधिराजश्रीपार्श्वचंन्द्रसूरीश्वरशिष्यमुनिराजवाघराजेनकृतं स्तवनं. ॥

आत्मशीक्षानी सज्झाय.

श्री पति मारग आदर्यो, परिहरि घर जंजाल प्राणीजी; राग ने दोष न छंडिया, किम वंचीजे काल ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ चतुरपणे चित्त चिंतजे, भवजलनिधि उत्तार प्राणीजी; पसर्यो पहट परा लगें, किम पामिश तस पार ॥ प्राणी० चतु० ॥२॥ पहिलो जाणी सोदेलडो, अब कांइ दोहिलो माग; प्रा० चपल तुरंगम छे चड्यो, थिर करि कर ग्रहि वाग. ॥ प्रा० च० ॥ ३ ॥ नयणे निरखि श्रवण सुण्यां, खिण खिण आणिश रोष; प्रा० विरस कहीश रसनारसें, कर्मतणो ए दोष ॥ प्रा०च० ॥४॥ शुरपणो तुज त्यां लगी, नहु देखे करवाल; प्रा० देखी देखि महारथी, भाजशि जिम शिशुपाल ॥प्रा० च० ॥ ५ ॥ भाव घणे थयो संयमी, कायरपणो करीश; प्रा० परिसह सहेवा अवसरे, वेजव कांइ गमीश. ॥ प्रा० च०॥ ६ ॥ त्रिण जोबन लखमी नदी, सुखे न उधमे वार; प्रा० स्वर्ग तणो इम सनिकछे, ए संसार असार ॥प्रा०च०॥ ७ ॥ नयण अंजण काने कुंडल नादा मुक्ताधार; प्रा०
[illegible]

प्रा० तोही तुं थाके नहीं, चउगति मांहि ज्रमंत ॥ प्रा० च० ॥ ए ॥ जब कांई तुज ऊपजे, खिण मन अनुज्नवरीस; प्रा० अमरस वीसारी करो, समर समर जगदीश ॥ प्रा० च० ॥ १० ॥ वलि वलि नरज्नव दोहिलो, लाधो आलोम हार; प्रा० राग दोष वे परिहरि, आवागमण निवार ॥ प्रा०च० ॥ ११ ॥ गुरु मुखें प्रवचन तें सुण्या, ज्रण्या गुण्या बहु वार; प्रा० तिहां कषाय सवि टालवा; पदे पदे एहिज सार ॥ प्रा०च० ॥ १२ ॥ इम जाणी व्रत पम्विज्या, दशविध यतिनो धर्म; प्रा० प्रथम तिहां करवी क्षमा, एहिज मूल मरम्म ॥ प्रा० च० ॥ १३ ॥ वोलि वचन पलटिये, ए गिरि गुरुत्त दोष; प्रा० इम गिणि दोष निवारिये, आणी मन संतोष ॥ प्रा०च० ॥ १४ ॥ अग्नि पवन जिम लाग्निया, क्रोध मान तिम होय; प्रा० दहतां ऊगरशे किशुं ? इशो विमासि जोय ॥ प्रा०च० ॥ १५ ॥ क्रोधें परदुख ऊपजे, क्रोधें मृषा बोलाय; प्रा० अदत्त असज्य संज्नापणे, सहुए व्रत ऊखाय ॥ प्रा० च० ॥ १६ ॥ पच्चख्खाण करी परिहर्या, परिग्रह ने आरंज्न; प्रा० हुं जाणुं ते वंम्पिया, माया लोज्न अवंज्न. ॥ प्रा. च० ॥ १७ ॥ वकुश कुशील जे जिण कह्या, सकशाई श्रुत

मोद; प्रा० ते अरमस्य न जाणीए, जाणदा श्री जगनाह ॥ प्रा० च० ॥ १८ ॥ नमत्तां त्रिभुवन ओवतो, पानक किहां न ताय; प्रा० छीमा रमलिवर पामिया, शरणाइ श्री साव ॥ प्रा०च० ॥१९॥ मुक्तिरमणि एहनी मती, इरगुं थिर घरवास; प्रा० करतां तेहने मेलिशे, थाशे मन उल्लास ॥ प्रा० ॥ च० ॥ २० ॥ श्रीपार्श्वचंद्र सुरी शीसवे, आरे आप संजाय; प्रा० सुगुरु साखें जे भाखियो, तेह वचन मति पात ॥ प्रा० च० ॥ २१ ॥ इतिश्रीयुगप्रधानाचार्यश्रीपार्श्वचंन्द्रसूरीणाकृतः स्वाध्यायः

श्रीरिषभदत्त ने देवानंदाजीनी सज्झाय.

(देशी हांसरिया मुनीनी.)

वीरजिनेसर आविपाजी, माहणकुंड निवेश; पेई बहुसाले रह्याजी, देता धर्म उपदेश. जगजीवन विरजी तुम सम अवर न कोय, मातपिता जिणे पावन्याजी, थाय पहेलां पुरलोय. ॥ जगजीवन. ॥ १ ॥ रिषभदत्त सुणी ए चयाजी, उलट अंग न माय, देवानंदाप्रति भणीजी, जिन

वंदन पातिक जाप. ॥ ज० ॥ २ ॥ नाणे भाणसम दीपताजी, हरे अनाण अंधार; सो जिन वीर पधारियाजी, साथे श्रमण परिवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ महासाज नामें सुण्याजी, अभिगम अधिक विशेष; किंहु वंदण पूजपेजी, सांभलवो उपदेश. ॥ ज० ॥ ४ ॥ चालि प्रिय तसु वंदवाजी, इह परभव सुखकार; तहत्त करी हरखे कहेजी, वेकर जोडी नार ॥ ज० ॥ ५ ॥ कौटुंबिक नर तेडियाजी, देइ तेहने आदेश; धर्म यांन तुम सज करोजी, चाले ते सविशेष ॥ ज० ॥ ६ ॥ शामखुर सोवन मेखलाजी, रुप्यासिंग सुचंग; नाथ राशि सविरुपमेंजी, नीलकमल करि रंग ॥ ज० ॥ ७ ॥ इश्या वृषभ जोत्री करीजी, घंटारव अभिराम; तहत्त करी ते तिम कर्युंजी, सेवक सार्यो काम ॥ ज० ॥ ८ ॥ न्हाण विलेवण तव करेजी, पहिरे बहु शिणगार; धर्म यांन आवी चडेजी, नारी ने भरतार ॥ ज० ॥ ९ ॥ निज परिवारेरे परिवर्याजी, आवे जिनवर पास; पंच अभिगम साचवेजी, वंदे मन उल्लास ॥ ज० ॥ १० ॥ पंच अंगें नमि वीरनेजी, उभो देवाणंद; वदन कमल जिनवीरनोजी, निरखे मन आणंद ॥ ज० ॥ ११ ॥ खीर अमीसम घन झरेजी, विकसे नयन विशेष; रोमराय सवि उल्लसेजी, कंचुक

तणे विशेष. ॥ ज० ॥ १२ ॥ अनिमिष दृष्टिये जोवतांजी, दीठी गौतमस्वामि; वंदी पूछे वीरनेजी, ए नारी कुण नामि ॥ ज० ॥ १३ ॥ सुण गोयम जिनवर कहेजी, ए मुज पूरव मात; रिषभदत्त निवे पिताजी, ए सुण निरती वात ॥ ज० ॥ १४ ॥ पूरवपुत्र नेहें करीजी, आणे अति अनुराग; अनिमिष दृष्टिये जोवतांजी, सुणि धर्म धरे वैराग ॥ ज० ॥ १५ ॥ समतारस चित्तपूरियेंजी, कीधो मस्तकें लोच; यथाविधि चारित्र लियेजी, करे कषाय संकोच ॥ ज० ॥ १६ ॥ अंग इग्यार भणे गुणेजी, चारित्र पाळे मांय; नंदस्वल रिषभदत्त करेजी, करम खपाव्यां होय ॥ज०॥ १७ ॥ इणि परे चारित्र पाळियेजी, देवानंदा माय; चंदनबाला गुरुणी कनेजी, पाले निरतिचार ॥ ज० ॥ १८ ॥ गयो कर्म केवल लहीजी, पाम्यां अविचल ठाण; तेहना गुण हिये धरेजी, भाव धरे प्रणाम. ॥ ज० ॥ १९ ॥ इति ॥

अथ श्री मेघकुमारमुनिनी सज्झाय.

धारिणी मह विनवे जिनेश्वर हा, मनने मेघकुमार; दीक्षा देविदो, शिरताज नगरी समोसर्या,

कदि आवे करतार, दीक्षा दोदिली. पाली जावे केम, साधु संतापे एम, नदी मुज उपर मेम, कून कहु तो नेम. ॥ दी० ॥ १ ॥ रात हुइ खटमासनीरेहां, वेदन वधती आय; ॥ दी० ॥ दुखरां वाधां माणसांरेहां, जनमारो किम जाय ॥ दी० ॥ २ ॥ आवे जावे उपरेरेहां, नर पतियांरी नीर; ॥ दी० ॥ ए सहु आप सवारथी रेहां, कुण जाणे परपीर ॥ दी० ॥ ३ ॥आगें देखी आवतां रेहां. हस मिलता सहुकोय; ॥दी०॥ दिव साथी हुना पछी रेहां, सार न पूछे कोय ॥ दी० ॥ ४ ॥ दीक्षालघु नीचे सुवेरेहां, काढण लागा कैद; ॥दी०॥ साचो काम सयाँ पछे रेहां, वैरी हुवा वैद ॥दी०॥ ॥५॥ जो हुं पहिली जाणतो रेहां, तो न करतो ए काज; ॥दी०॥ दिव हुं पिण परवश पड्योरे हां मुछिजली ववराज. ॥ दी० ॥ ६ ॥ अथवा क्युं न गयो अजेरे हां, शरम न कीधी जाय; ॥ दी० ॥ आपणे हाथे आपणोरे हां, पग कहो केम कपाय ॥ दी० ॥ ७ ॥ ए उघो ए मुदपति रेहां, दीनवधुं महावीर; ॥दी०॥ मे म्हारे थें थांहरे रेहां, सस्पो वस्पो (सर्योवर्यो) इणसीर. ॥दी०॥८॥ इम चितवीने आविपारे हां, महसमें जिणवर पास; ॥ दी० ॥ वीर कहे किम साधुजीरे हां, दीसो आज उदास

॥ दी० ॥ ए ॥ हाथीरे ज्ञव तुं हुवोरे हां; पर उपकार प्रधान; ॥दी०॥ सार करी शशलातणीरे हां, दीधो अज्ञयादान ॥ दी० ॥ १० ॥ सात दिवस वेदन सहीरे हां, वीजें ज्ञव बहु ज्ञांत; ॥ दी० ॥ तिण उल आगे ए किशुं रेहां, न करे केम निरांत ॥ दी० ॥ ११ ॥ वचन सुणया महावीरना रेहां, श्रवण अमृत समान; ॥दी०॥ ईहापोहें उपनो रेहां, जातीसमरण ज्ञान ॥ दी० ॥ १२ ॥ दीधो मिछा उक्कडं रेहां, अज्ञिग्रह लीधो एह; ॥दी०॥ नयणपखे न करुं कदे रेहां, उपध हुं इण देह. ॥ दी० ॥ १३ ॥ चतुरपणे चारित्र लियो रेहां, सूधे मन परिणाम; ॥दी०॥ मुनि श्रीसार नमे सदारे हां; त्रिविध त्रिविध शिर नाम. ॥ दी० ॥ १४ ॥ इतिश्रीवादीन्द्रश्रीपार्श्वचंद्रसूरीन्द्र विनेयश्री सारमुनिराजेनकृतः स्वाध्यायः ॥

रात्रिज्ञोजन निवारक सज्झाय.

माहे, जिण लागीणोरे माय. (एदेशी)

मगनी तव गाफ पमेजी, कुंमळ पुर अवतार; दोळ पदोधर जांगीतजी, तेहना बहु कुमार

रे मानव, रात्री भोजन वार. दोष अनंता ऊलखपोजी, ज्युं न पमो संसार रे ॥ मान० ॥ १ ॥
रत्नाजननी रूपमीजी, पुत्र सलूणारे दोष; हंसकुमर भाइ वमोजी, केशव लहुडो होयरे. ॥ मा० ॥
॥ रा० ॥ २ ॥ एकदिन रमतां भेटियोजी, साधु शिरोमणि शूर; धर्मघोष नामे मुनिजी, आया
आणंद पूररे. ॥मा०॥रा०॥४॥ साधु भणे रयणी तणाजी, भोजन ठामे भेद; तेहनी सुर सेवा करे
जी, मुक्ति नही संदेहरे ॥मा०रा०॥ ५ ॥ राते रांध्यो रात जिमेजी, ए उत्तकृष्टो दोष; दीहां रांध्यो
रात जिमेजी, पापतणो बहु पोषरे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ रात्रें रांधी म्हेलियोजी, दिवस करे आंहार;
ते नर पापें बांधियाजी, अति बहु जीवसंहार रे ॥ मा० रा० ॥ ७ ॥ दिवसें रांध्यो दिने जमेजी
घणी तजे दोष दोष; पुन्यवंत ते नर पूजियेजी, जेनर एहवा होयरे ॥ मा०रा०॥ ८ ॥ साधु समी
पें सांभलीजी, रात्री भोजन दोष; वे बांधव व्रत आदरेजी, आणी मन संतोषरे ॥ मा०रा० ॥९॥
घरआवी माता कनेजी, वालु मागे दीस; च्यार घडी दिन पाछलेजी, पिता करे बहु रीसरे ॥मा०रा०॥
॥ १० ॥ विहती मांता नवि दियेजी, मौन्य करीने जाय; लंघण करतां दीहडाजी, पांच.इणीपरें

॥ दी० ॥ ए ॥ हाथीरे नव तुं हुवोरे हां; पर उपकार प्रधान; ॥दी०॥ सार करी शशलातणीरे हां, दीधो अन्नयादान ॥ दी० ॥ १० ॥ सात दिवस वेदन सहीरे हां, वीजें नव बहु नांत; ॥ दी० ॥ तिण डुख थागे ए किशुं रेहां, न करे केम निरांत ॥ दी० ॥ ११ ॥ वचन सुणया महावीरना रेहां, श्रवण अमृत समान; ॥दी०॥ ईहापोहें उपनो रेहां, जातीसमरण ज्ञान ॥ दी० ॥ १२ ॥ दीधो मिछा डुक्कर्म रेहां, अनिग्रह लीधो एह; ॥दी०॥ नयणपपे न कहुं कदे रेहां, उपध हुं इण देह. ॥ दी० ॥ १३ ॥ चतुरपणे चारित्र लियो रेहां, सूधे मन परिणाम; ॥दी०॥ मुनि श्रीसार नमे सदारे हां; त्रिविध त्रिविध शिर नाम. ॥ दी० ॥ १४ ॥ इतिश्रीवादीन्द्रश्रीपार्श्वचंद्रसूरीन्द्र विनेयश्रीसारमुनिराजेनकृतः स्वाध्यायः ॥

रात्रिनोजन निवारक सज्झाय.

मादी, मिण न्यारीणोरे जाय. (पदेशी)

मगनी सज नाक पमेजी. कुंमळ गुर अपतार; दोठ पदोधर जांपीतजी. तेवना बहु कुमार

रे मानव, रात्री ज्ञोजन वार. दोप अनंता उलख्योजी, ज्युं न पमो संसार रे ॥ मान० ॥ १ ॥
रंज्ञाजननी रूपमीजी, पुत्र सलूणारे दोप; हंसकुमर ज्ञाइ वमोजी, केशव लहुडो होयरे. ॥ मा० ॥
॥ रा० ॥ ३ ॥ एकदिन रमतां ज्ञेटियोजी, साधु शिरोमणि शूर; धर्मघोष नामे मुनिजी, आया
आणंद पूररे. ॥मा०॥रा०॥४॥ साधु ज्ञणे रयणी तणाजी, ज्ञोजन ठांमे जेह; तेहनी सुर सेवा करे
जी, मुक्ति नही संदेहरे ॥मा०रा०॥ ५ ॥ राते रांध्यो रात जिमेजी, ए उत्कृष्टो दोष; दीहां रांध्यो
रात जिमेजी, पापतणो वहु पोषरे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ रात्रे रांधी म्हेलियोजी, दिवस करे आंहार;
ते नर पाँप बांधिपाजी, अति वहु जीवसंहार रे ॥ मा० रा० ॥ ७ ॥ दिवसें रांध्यो दिने जमेजी
धर्मी तजे दोय दोष; पुन्यवंत ते नर पूजियेजी, जेनर एहवा होयरे ॥ मा०रा०॥ ८ ॥ साधु समी
पे सांज्ञलीजी, रात्री ज्ञोजन दोप; ते वांधव व्रत आदरेजी, आणी मन संतोपरे ॥ मा०रा० ॥९॥
घरआवी माता कनेजी, वालु मागे रीस; च्यार घडी दिन पाछलेजी, पिता करे वहु रीसरे ॥मा०रा०॥
॥ १० ॥ दिहतो माता नवि दियेजी, मौन्य करीने जाय; लंघण करतां दीहडांजी, पांच इणीपरे

मलो जे न मानेति प्रतिमा तुम्हारी, तिले हीति अरिहंत जिन आण हारी; वली जे जगे साधुनी मारती बोले, तिके विण कह्यो पारकी गांठ खोले. ॥ ए ॥ करे व्याप व्यापारनो मूल पाखे, प्रजो ते किमे ताहरी आण राखे ! जिके धर्म आरंन आरंज जाणे, नही परगदे तिहज संवर वखाणे. ॥ १० ॥ सही आप छे तेहने समिति जंग, तुम्ह साखि जाणा तणो मूल अंग; इवं पन्नगो जे तुम्हे तेह माखुं, मन वचन तन स्वामि तुम्ह वचन राखुं. ॥ ११ ॥ प्रजु मूर्ति जावि तुम्हने जुहारं, करां पवमासीम मन सुगुरु वारुं; दया आणशुं धर्म करिशुं प्रमाणं, महावीरजी हीन नमोनेजिणाणं. ॥ १२ ॥ (कलश.) इम नपरी वगमी, जगेत्रे पगमी, तिणि गामें श्रीवीर जिण; मह लही वेडु मन मांडु: जवनव मांगुं तुम्ह शरण. ॥ १३ ॥

श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवन.

(हवकालिंदंर) कल्याण कुशः समुदाम्नाथः सुरासुरैः सेवितपादपद्म ॥ निरुपातकीर्तिः सकलकलाशो, ददातु मे सर्वमहोदिवानि. ॥ १ ॥ (मल्हारतोड़ी) नाम गुण ज्ञान श्री

पासकंटालिये, नमिये सवि संकट कंटकं टालिये; हियफले माण जिन आण तसु पालिये, जावजल पापमलपंक पखालिये. ॥ २ ॥ मदतमे स्वामि तुम्ह नाम समरे सदा, जेह नर नारि ते लहे सुख संपदा; एक चित्त प्रणमशे मूरति ताहरी, आतीसे तेहने आपदा परिहरी ॥ ३ ॥ जेहना मांहिला नयन ठे आवर्यां, सुदृढ जर दंसणावरण गुण अणुसर्यां; तेह तुम्ह नामने थापना किम लहे, सूत्रि प्रकटी जणी तहत्ति नहु सद्दहे ॥ ४ ॥ पेखतां रूप सरूप प्रभु तुम्हतणो, ऊपजे हियफले हरख मुज अतिघणो; चंद चकोर रवि चकपंखी अली, कमल पेखेवि जिम तेहने मन रली. ॥ ५ ॥ एम प्रभु पापनी सेव नितु वंछिये, जवतणा पापसंताप सवि वंचीये; पद्दवी आश प्रम पासजी पूरजो, सेवक चित्त चिंता सवि चूरजो. ॥ ६ ॥ (इंद्रवज्रा छंद.) कंटालिकस्थान विभूषणाय, विश्वेश्वराय च्युतदूषणाय; कल्पाणवल्लीवनवारिदाय, श्रीपार्श्वनाथाय नमोस्तु नित्यम् ॥ ७ ॥ इति सूरीश्वर कृतम् ॥

सिद्धिपामी इणि गिरें, विहु मास केरी करी संलेहण केवल पाम्यो सेहरें; केवल दंसण नाण स-
हिया सोख्य विलसे जे सदा, तसु पद नमीजे पाप खपीजे मुरति निरखीजे मुदा. ॥ ३ ॥
(ढाल) इण गिरि दीठे मन उल्लास ए, होवे निरमल बुद्धि प्रकाश ए; पूजे तत-
खिण वंछित आश ए, हेलें छूटे भव दुख पास ए. (त्रू०) भव दुःख जावे सुख पावे शुद्ध आणे
भाव ए, चउकुगति केरा न हुए फेरा टले सवि संताप ए; इण गणि आगे जेह आव्या तासु
मनवांछित फल्या, सिद्धांत साखें सुगुरु भाखे घणा नर ते सांभल्या ॥ ४ ॥ (चा.) श्रीथावच्चासुत
गुणखाणीए, ज्ञाता धर्म्म अंगे जाणीए; सहस पुरुषशुं इहां समोसर्या, काज विशेषे सह्यो
तेहना सर्या. (त्रू.) सर्या काज तसुहि रिषिश्वर सहस साथें सीधला, पंचसयशुं सेलग आरिय
मुगति पहुता ते भला; जालिमयाली प्रमुख इणि गिरि अनंता मुगतें गया, एकेक कहेतां विस्तर
होव निणि संखेपे संग्रुह्या ॥ ५ ॥ (ढाल २ जी) सहज पाले निरुपम ते जिणवर पय वंदे, मात
कहेतें उत्तर हाथा करे ते नेर; दो दो धर्म भाख्या श्रुत चारित्र प्रकारें, कृष्णादिक वासुदेव मस्तकि

आणा धारे ॥ ६ ॥ ते वीर कहो जे तप बलि कर्म खपाव्यो, जिनधर्म प्रकाश्यो धर्मसिंह तिणि जाण्यो; अरजुन आवें पंच पांडव कीधी सेव, हरपालें लीधी रूडी जिणवरदेव ॥ ७ ॥ वलि रतन चारित ते पाळ्यो प्रभु धन धन्न, जयराज लियो शिवनगरीनो अनुदिन्न; माधवनी पदवी पामे जे तुम्ह दास, हंसराज तणी परि गमन कर्युं सुप्रकाश ॥ ८ ॥ पुण्यवती प्रभु वाणी सहु जविय आराधे, ते लीला करतां देलां शिवसुख साधे; संपूरे मनह मनोरथ सघलां स्वामी, जीवी जे चिरमिह लीधे प्रभुने नामि ॥ ९ ॥ रुजादि जवनी नासे जे ध्यान कीजे, नवकार गुणंतां नव पद मादि थवीजे; राखी मति रूडी कूडी बुद्धि सवि टाली, चंद्र जिम शीतल जीवदया व्रत पाली ॥ १० ॥ गुण पूरा जिनवर शूरा विविध प्रकार, अज्जाए दीधो रूपज्ज नाम सुविचार; में गाइ ए स्तुति निज मतिने अनुसारि. वनराजी सेवे ठकी ऋद्धि विस्तारि ॥ ११ ॥ इणि गुणि प्रभु राजे चउत्रिश अतिशय गाजे, जिनदंसण दीठे जवसंकट सवि जाजे; एणे परिवारे परिव-रिया छरिंद, प्रभुयात्रा कारण आव्या श्रीपासचंद ॥ १२ ॥ (कलश) शेत्रुंजगिरि श्री ऋस-

॥ वि० ॥ १४ ॥ विहु नयमांहि सवि अवतरिया, निश्चयनय व्यवहारि किरिया ॥ वि० ॥ १५ ॥ (उपदेशाधिकार–ढाल चोथी–फागनी देशी.) जाषा च्यार जिनागमें जाखी जिणवर देव, इक सत्य बीजी असत्य वली त्रीजी मिश्र जेव, चउथी हित व्यवहार जे सत्य असत्य न होइ, ए च्यारे जाषातणा जेद बेतालिश जोइ ॥ १६ ॥ च्यार जाषा ए जाणिये विहुनो करे विवेक, सत्य अने व्यवहार जे अवसरि जाखे छेक; असत्य अने मिश्र जाषा एहतणो परिहार, करो एम जिणवर कहें जाणपणानो सार ॥ १७ ॥ पर पीमा जिहां उपजे सावद्यनो लवलेश, ते जाषा नवि जाखे कर्म खपे अशेष; केवली इम उपदेशे सत्य अने विवहार, एह मर्म उपदेशनो जाणे ते सुविचार ॥ १८ ॥ (जाषाधिकार) (ढाल पांचमी–देशी मेघकुमारना गीतनी) जगवंत जाखी जे दयाजी, ते शुद्धि संसार; सर्व जीव हितकारणीजी, पालक लहे जवपाररे जीवमा उलखे साचि तेह; बारह परषदमांहि कहीजी, पढम अंगें तसु जेयरे ॥ जी० ॥ १९ ॥ सर्व जीव हणीए नहीजी, त्रस थावर जग जेद; एहज धर्म छे शाश्वतोजी, साधु श्रावकनें

छठे सातमेजी, गुण ठाणे पालंत; निश्चय ठाणे चोदमेजी, पाली कर्म टालंतरे ॥ जी० ॥ २१ ॥ जिनशासनमांहि चागरेजी, मुख्ये दया धर्म एक; पण सूधुं ते नवि लहेजी, तेहनो एह विवेकरे. ॥ जी० ॥ २२ ॥ अल्पवृष्टि पति गोचरीजी, नदी उतरणो ठाम; मृषा वचन धर्म कारणेजी, निद्रा त्रीजे जामरे ॥ जी० ॥ २३ ॥ किंबहुना केई पनवेजी, पाप अढारह ठाण; आचिरवा ने ठांहनाजी, कहावे अम्हे सुजाणरे ॥ जी० ॥ २४ ॥ जिन विधिवादे जे कहेजी, न लहे ते जिन धर्म; हिंसा धर्मीति जाणीएजी, नहु पामे शिवशर्मरे ॥ जी० ॥ २५ ॥ (दयाधिकार) (ढाल छठी–मुनिवर गोचरी करी चल्या ए देशी) कालें अनंते दोहिलां, लहतां एपअंगगजी; स्पारे ए जिणवरे ज्ञाखिया, उत्तरऋपणि चउरंगिजी ॥ चेतन० ॥ २६ ॥ चेतन करि लही आतमा, धरि वैराग मनमांहिजी; विषय कषाय सवि परिहरी, करिवो धर्म उछाहिजी ॥ चेतन० ॥ २७ ॥ लाख चोराशी जीव योनि भमी, त्रिभुवन नव नव वेषजी; पुण्य संयोगें पामियो, जनम ते आरिज देशजी ॥ चे० ॥ ॥ २८ ॥ जाइ कुल बल रूपा, इत्यादिक गुण जुत्तजी; माणसनो भव दोहिलो, सावय कुल

संजुत्तजी ॥ चे० ॥ २ए ॥ सांजलवा श्री जिनतणां, वचन उल्लदां जाणिजी; सुगुरु मुखें साची सद्दी, विधिपूर्वक मति आणिजी ॥ चे० ॥ ३०॥ सद्दहणा साची सद्दी, तत्त्वातत्त्व विचारजी; जेदवा जिणवर वागर्या, एदिज समकित सारजी ॥ चे० ॥ ३१ ॥ वीरिय तप संयम विषें, मन तनु वचने शुद्धजी; नरवर नारी पाली थया, शिवनगरी मांहि सिद्धजी ॥ चे०॥ ३२ ॥ (परमात्माधिकार) (ढाल ७ मी–विषयें न गंजिए ए देशी) श्रावक धर्मने योगिजे, तेहना गुण इकवीश; स्वाजाविक अंगे वसेजी, जाणीजे निशिदीसोरे ॥ ३३ ॥ गुणनिधि संसीये, ते श्रावक सुविचारोरे; समकित शुद्ध धरे, पाले ते व्रत वारोरे ॥ गुण० ॥ ३४ ॥ अक्षुद्र इंद्रिय पंच पञ्चवमां, प्रकृतियें शशि सम सोम; सर्व लोकने प्रिय करे, अक्रूरपणो मनि प्रेमोरे ॥ गुण० ॥ ३५ ॥ पापथकी बीहे सदा, अशठ सदाऽखिल दोष; लज्जा दया गुण मनि वसे, अवगुणि मऊठ सोयरे ॥ गुण० ॥ ३६ ॥ सोमदृष्टि सहिजे सदा, गुणना रागी जाणि; धर्मकथा अहनिशि करे, सुपक्षमाहक मनि माणिरे ॥ गुण० ॥ ३७ ॥ दीरघदर्शी अहनिशें, विशेषतणा मनि नाण; विनय करे चालें सदा,

विनीत जाव सुवखाणरे ॥ गु० ॥ ३८ ॥ उपगार किपो नहु छंडने, पर हित चिंते जेह; एनमादि गुण सहितशुं, विचरे श्रावक तेहोरे ॥ गु० ॥ ३ए ॥ (श्रावक गुणाधिकार) (ढाल ८ मी. देशी वलालानी) पंच महाव्रत पाले, विषय कषाय जे टाले; पंचाचार न लोपे, समकित तरु दृढ रोपे ॥ ४० ॥ पंच सुमतिशुं विचरे, त्रिण गुपतिनी खप करे; एक विध असंयम वरजे, राग दोष दोष तरजे ॥ ४१ ॥ त्रिविध त्रिविध षटकाय, राखे रखावण जाय; राखतां अनुमोदे, आपणपे परनोदे. ॥ ४२ ॥ आरंभ परिग्रह छंडी, ब्रह्मचर्य प्रीति मंडी; सहे परिसह बावीश, नव कल्पे सुजगीश. ॥ ४३ ॥ दश विध यति धर्म सूधो, पाले न करे ए गूधो; बारह जावण जावे, तप वले कर्म खपावे ॥ ४४ ॥ चारित दंसण नाण, त्रिणि रयण गुण खाण; सूधां जेह आराधे, तसु दंसणे प्रीति वाधे ॥ ४५ ॥ वीरजिन तीरथे वरते, वरस एकवीश सहस निरते; एहवा साधु आराधुं, अहनिशि शिवसुख साधुं ॥ ४६ ॥ (साधु गुणाधिकार) (ढाल ए मी. राग धनाश्री) हवे सद्दहणा सूधी करुंरे, श्रीश्रुतने अनुसार; दृष्टिराग सवि दूरे परिहरोरे, करी परीक्षा सार ॥ ४७ ॥ जिनवरे इम

कह्योरे, किरिया मांहे मिथ्यात; सद्दहणा मांहि सावद्य जिहां हुवेरे, न हुवे जिन मत वात. ॥जि०॥ ॥ ४० ॥ त्रिणे पक्ष विस्तारे कह्याजी, सूयगंग बीय खंध; धर्म अधर्म ने मिश्र विच रियेजी, किरिया ठाण संबंधि ॥ जि० ॥ ४ए ॥ धर्म पक्षमांहि मुनिवर कह्याजी, अरधमि मिथ्यादृष्टि; मिश्र पक्षमध्यि श्रावक सवि लह्याजी, जेहनी सूधी दृष्टि ॥ जि० ॥ ५० ॥ अधर्म उथापे धर्म थापे यतीजी, मिश्रे मिश्र रहंति; थापन उथापन तेहनी नवि करेजी, पुण्य पाप न कहंति ॥ जि० ॥ ॥ ५१ ॥ धर्म मिश्र आरंभ देखे जिहांरे, मुनिवर रहे उदास; बीअ अंगे अध्ययन इग्यारमेंजी, एह न्याय सुप्रकाश ॥ जि० ॥ ५२ ॥ मिश्र गमि जे पुण कहे यतीजी, खटकाय घातिक सोय; ए हवे घातक पाप जिको कहेजी, आजीविका वेदक होय ॥जि०॥ ५३॥ एहवी सद्दहणा सूधी जेहनीजी तहिज सुगुरु सुसाधु; एहवा गुरुने श्रावक जे भजेजी, पामे सुख निरवाध ॥ जि० ॥ ५४ ॥ (सद्दहणाधिकार. ढाल १० मी देशी विवाहलानी. इंडवा) राग द्वेष तुम्हे टालो, जिनवर ये उपदेश; रागादिक वश जे थया, पाम्या तिणे क्लेश. रमणी रागे नरके गयो, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति

स्वामी; राजतणो लोभी थयो, कोणिके वली पामी ॥ ५५ ॥ घेवरक्षिपक ऋषीश्वर, नर्ये नरके पहुतो; इम जाणी द्वेष परिहरो, मुनिवर मांहि महंतो; राग द्वेष दोय पाहुना, पाप करम आणी टाले; ते सवि कर्म खपाविय, ज्ञानकला अजुआले ॥ ५६ ॥ (राग द्वेषाधिकार. ढाल ११ मी देशी विवाहलानी. तुं तिहां पं.) संयम तप शुभ आदरो ए, जिम तुम्हे लहो जयकार तो; ५७ जिणवर इम कहे ए, संयमि तपि सुख होय तो, मुक्तिवधू जीव लहे ए ॥ ५८ ॥ बारह भेदे तप तपो ए, संयम सत्तर प्रकार तो ॥ जि० ॥ ५९ ॥ संजमे करम आश्रव टले ए, तप कर्यं निर्जरा होय तो. ॥ जि० ॥ ६० ॥ सराग संयम जे करे ए, ते लहे शिवसुख वासतो ॥ जि० ॥ ६१ ॥ वीतराग भाव जे निरवहे ए, माणे शिवपुरि वास तो ॥ जि० ॥ ६२ ॥ (तप संयमाधिकार. ढाल १२ मी. माइ धन सु.) जिनप्रतिमा वंदिये, जिन वंदन फल होय; शाश्वती अशाश्वती बिहु प्रकारे जोय; शासय चिहुं नाम, ऋसह चंदाणण नाम, वर्द्धमान वारिषेण ति वंदो मन अभिराम ॥ ६३ ॥ धन धन जिनशासन वीतराग जिहां देव; सुर असुर विद्याधर जेहनी सारे सेव. राग दोष दूर

इतिश्रीऋषभजिनस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्री पार्श्वनाथचैत्यवन्दनम् ॥

पार्श्वनाथनमस्तुभ्यं विघ्नविध्वंसकारिणे ॥ निर्मलसम्यग्ज्ञानन्द ॥ परमानन्ददायिने ॥१॥ अश्वसेनाधनीपाल ॥ कूलचुडामणे प्रभो ॥ वामासूनो नमस्तुभ्यं ॥ श्रीमत्पार्श्वजिनेश्वर ॥२॥ क्षितिमण्डलमुकुटं धार्मिकनिकटं विभ्रमकटं धामभटं भवरेणुसमीरं जलनिधितीरं सुरगिरिधीरं गम्भीरम् । जगत्रयशरणं दुर्मतिहरणं दुर्धरचरणं सुखकरणं श्रीपार्श्वजिनेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृतभद्रम् ॥ ३ ॥ कमठे धरणेन्द्रेच स्वोचितं कर्मकुर्वति प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेस्तुवः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जिनेन्द्र स्तुतिः ॥

भावोमेरः पुनाना मिह सुरसरितं वीक्ष्य कारुण्य धाम्ना ॥ धृत्वा मूर्तिश्रितत्वः परम हिमवता येन गङ्गास्वतुल्यम् । यात्रिश्रके चतुर्दिक् समुदितजनता शुद्धये शुद्धवर्णा ॥ व्याख्या वाणीविलासैः स दिशतु कुशलं धीगुणाढ्यो देवः ॥ १ ॥ सम्यक्प्रत्यक्ष मस्तः समस्तमूर्तिभुवो महम कल्पकल्पं ॥

शाकं लेखा अशेषा वशाशातनयनं नान्यमन्यन्त धन्यम् । द्रष्टुं दृष्टिद्वयेनाखिलमपि युगपन्नैन तत्रा-
रमन्तः ॥ स श्रीमान् शान्तिनाथः प्रथयतु मम तां भूयसीं सौख्यलक्ष्मीम् ॥ २ ॥ स ध्यानज्वलने
ज्वलायविकलं यस्येन्द्रनीलछवे ॥ देहस्य श्रुत एव केवलवधूपाणिग्रहं कुर्वतः । तन्वन्तिस्म समंततः
प्रसृमरा मारूढ्य दूर्वाङ्कुर श्रेणीकार्यमसौ मुदं वितनुतां श्रीपार्श्वनाथः प्रभुः ॥ ३ ॥ सिद्धयत्नोद्वाह
विधौ सतृष्णो निष्णातचेतास्तुरगाधिरूढः । प्रौढाप्सरःसंहतिगीयमानगुणःश्रिये वीरवरो जिनोऽस्तु
॥ ४ ॥ नवाब्धिजाताः सुगुणावदातवृत्तस्वभावा हृदि पुण्यभाजाम् । येऽहारमुक्ता इव संवसन्ति
दिशन्तु तेऽन्येपि जिनाः सुखानि ॥५॥ ये बीजमात्रां त्रिपदीं निधाय मनोऽवनौ बुद्धिजलेन सिक्ताम् ॥
चित्रं क्षणात्कोटिगुणामकार्पुस्तन्वन्तुतोपं गणधारिणस्ते ॥ ६ ॥

॥ श्री वासुपूज्य स्तुतिः ॥

श्रीमन्तं वासुपूज्यं प्रवलवलजरान्नीरुकुम्भीन सिंहं ॥ शश्वल्लीलाविलासं त्रिभुवनपतिभि र्वन्द्य-
पादारविन्दम् । विन्दन्तं विश्वलोकं तदनु-विगणनातीत मेवाप्यलोकं शुद्धात्मानं निरेनोमलममलम-

देवाः श्रीपार्श्वसंहतमस्ता वरिवस्यमानः श्रीपार्श्व एव जयति प्रभुतामधानः ॥ २ ॥ सत्पथ मासस्य सितो दशम्यां प्रसूत वामेशसुतं जयन्तम् निशातमोवङ्कुनमीश्वपनेशु स्तमांसि सर्वाणि महान्तराणि ॥ ३ ॥ भवाप्ततीर्थविवजन्मपल्ला हीनानि तेनासुमतां हितेन संजातदर्या इति देवयन्ति शुद्धि निशा हानि महानि चापुः ॥ ४ ॥

॥ श्री धरणोरगेन्द्रस्तोत्रम् ॥

धरणोरगेन्द्रसुरपतिविद्याधरपूजितं जिनं नत्वा क्षुद्रोपद्रवशमनं तस्यैव महास्तवं वक्ष्ये ॥ १ ॥ सुरलोकनाथपूजित हर हर दुरदारवारजुष्ट मति पन्नग निर्वं महाबलभुजरूपानान उत्सेधम् ॥ २ ॥ विदा महस्वरोधसा गगनायक वीर वार्तेनानन्द पन्नगकुलं कुलोत्तम निर्विवतां भव नगाधिपनाथ ॥ ३ ॥ सर्वेरि महानाग नागाधिपरत्नफणातपछायाः ककिकुणन्द दावन्द निःदला ममहन्ति विषावरोधम् ॥ ४ ॥ ॐकार संपुटमनं शामकोर दशदभर्व दशानम् भवानन्तिः च-[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]

स्फोटान् ज्वालागर्दभि शाकिनि विषवेगांश्चापिरोगांश्च ॥ ६ ॥ मारणं स्तम्भनं चैव शत्रोरुच्चाटनं तथा। मोहनं द्वेषितं चापि क्रियाभेदात् करोति तत् ॥ ७ ॥ दैत्यामरेन्द्रपूजित निर्नाशितदुष्कर्ममलपटल क्षपयति जिन हुं फुटत्वं पन्नगकुल विषमविषदर्पम् ॥ ८ ॥ निर्मथितभवभयोद्भव षोडशविद्याधिपत्यमुपपन्नः श्रीपार्श्वनाथविषहर इलि २ मातङ्गिनी स्वाहा ॥ ९ ॥ श्रीपार्श्वनाथ सुरपतिमुकुटतटोद्घृष्ट पादनलिनयुगम् नागाष्टककुलविषापह हाँ ही हे है हो हौ हं हः ॥ १० ॥ सकलभुवनाभिनन्दित गुरुस्त्वं पन्नगेन्द्रकृतपूजः विषमविषानलशमनो जलद इव जलप्लुता लोकाः ॥ ११ ॥ दैत्योपसर्गभूषण जलधरधारानिपातधौतमल सर्वज्ञ नागवन्दित सर्वविषाक्षेपणेनमस्ते ॥ १२ ॥ ॐहन २ दह २ पच २ मथ २ संहर २ क्षप हुं घचालि कुण्ड घम २ पूरय २ विषोद्भवणं हुं फुट स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐचुरु २ मुरु २ फुरु २ फार फार २ पलदः त्वं किलि २ किलि २ कलितैः कलिकुण्डकलाकलापज्ञः ॥ १४ ॥ ॐ पः पः सः सः हः हः ठः ठः उर रिन्निरु दरुहन्त शान्तस्त्वम् विषवन्दे विष्पयनं कुरु शीघ्रमुरु छवाख्या-

मार ॥ १५ ॥ हंसाक्षरालज्जीवस कुपिता सरजलदजलधरापोतः अन्यस्तानलज्वालं तवह उद्ट नाग विषम् ॥ १६ ॥ कमलदल स्थितविस्याति मध्ये भुजगावृतं जिनं नत्वा पोडशदेव्योपगतं बीजाक्षरसंयुतं ताडि ॥ १७ ॥ वन्ध्यानां सुतजननं म्रियमाणापत्यरक्षणं परमम् पद्ममिदं रोगहरं महराशिनि नूत निनसिम ॥ १८ ॥ दष्टक सर्वाङ्गगतं पद्ममिदं ध्यातामृत स्रवदम् ॥ कुर्याद्विषापहारे प्रणवाद्यैः पञ्चनिर्देशैः ॥ १९ ॥ व्यस्तसमस्तविपार्ति वहुधा परिकल्प्य पञ्चपञ्चनिर्वर्णैः ॥ जिननामाक्षरसहितैः परस्परं सर्वविषमथनम् ॥ २० ॥ क्षिपउँ स्वाहापञ्चक मानन्दतं पञ्चभूत रत हररम् ॥ नागाट कुलोरेते मन्त्ररज स्तम कजानु गतम् ॥ २१ ॥ रेफ संपुट मध्यस्थं ककारं हरिदमलन्ते भाकान्त दीरवर्णानं स्तम्भये त्रिदशानपि ॥ २२ ॥ नीलोत्पल दलश्यामं ककार संपुटं स्थितम् । हकारवेष्टितं शुभं स्वैनानपि पातयेत् ॥ २३ ॥ तमद्भवपाक्रान्त मिन्द्रगोपसम- प्रभं रक्तबिन्दुकसंस्थं स्तम्भयेत्रिपुरान्तरम् ॥ २४ ॥ कुन्देन्दुधवलवर्णाभं निर्वांदं पद्म सिन्त-

वकारावेष्टितंशुद्धं स्त्रवन्तंविषनाशनम् ॥ २६ ॥ हस्ताङ्गुलीषुविन्यस्तं वामकरेभूतपश्चकंसकलम् । अपहरत समस्तविषं साधकमुष्टिकमावन्धात् ॥ २७ ॥ धरणोरगेन्द्रसुरपतिविद्याधरपूजितंदैत्यदेवता भिनुतम् । जिनगुरुमप्रमेयं चतुर्वर्णविभूषितं स्मरयेत् ॥ २८ ॥ आजानुकनकगौरं आनाभेःशंखकुन्ददरधवलम् । आकण्ठतोनवदिवाकरकान्तितुल्य मामूर्धतोंजननिभंगुरुडस्यरूपम् ॥ २९ ॥ सुँहवर्णपक्षंपक्षराजं वैनतेयंमहाबलम् । नागान्तकं जितारिंच अजितंविश्वरूपिणम् ॥ ३० ॥ विनतायाः सुतंदेव्यं विहङ्गंपन्नगोत्तमम् । गुरुन्मन्तंखगेशंच काश्यंकाश्यपनन्दनम्॥ ३१ ॥ द्वादशैतानिनामानि गुरुडस्य महात्मनः । यःस्मरेत्प्रातरुत्थाय स्नातोवायदिवाशुचिः ॥ ३२ ॥ विषंनक्रमतेतस्य नचाहिंसन्तिपन्नगाः । नदुष्टाश्चपयन्त्येव सर्वकार्याणिसाधयेत् ॥ ३३ ॥ एवंभूतेस्स्मरेद्यस्तु श्रीपार्श्वनामभिर्जिनम् । तस्यदोषाःप्रणश्यन्ति विषंचमलयंव्रजेत् ॥ ३४ ॥ ग्रहदुस्त्रमुम्भ्रजननं सर्वोपद्रवप्रशान्तिकरम् । प्रध्वस्तदुरितनिचयं पार्श्वयोगीश्वरंवन्दे ॥ ३५ ॥ इतिमालामंत्रपदैरभिष्टुतयःस्मरेत्त्रिसन्ध्यमपि । सकरोतिनागक्रीडां विषश्वविषवेदनातीतः ॥ ३६ ॥ भक्तिर्जिनेश्वरेयस्य गन्धमा-

पापत्ता पर्वे समूलं च विनश्यति॥२३॥ क्षमा तुल्यं तपो नास्ति न संतोषात्परं सुखं। न च तृष्णा परो व्याधिर्न च धर्मो दयापरः ॥ २४ ॥ दानेन भोगी भवति मेधावी वृद्धसेवया । अहिंसया च दीर्घायुरितिप्राहुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥ यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः। तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीत तु वर्जयेत् ॥ २६ ॥ सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्। योऽर्थे शुचिः स हि शुचिर्नमृद्वारिशुचिः शुचिः ॥ २७ ॥ सज्जनसंसृष्टे दासो नकर्तव्यःकदाचन । घटी पिबति पानीयं ताड्यते झल्लरी यथा ॥२८॥ दानं वित्ताद्दतं वाचः कीर्तिधर्मौ तथायुषः । परोपकरणं कायादसारात्सारमाहरेत् ॥ २९ ॥ न माता शपते पुत्रं न दोषं लभते मही। न हिंसां कुरुते साधु र्नदेवः सृष्टिनाशकः ॥३०॥ स्वाधीनेऽपि कलत्रे नीचः परदारलम्पटो भवति । संपूर्णेऽपि तडागे काकः कुम्भोदकं पिबति ॥ ३१ ॥ काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः। क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥३२॥ दानं दरिद्रस्य प्रभोश्च शान्तिः यूनां तपो ज्ञानवतां च मौनम्। इच्छानिवृत्तिश्च सुखान्वितानां दया च भूतेषु दिवं नयन्ति ॥३३॥ मातृगुर्वी द्रविणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्। दिनस्य पूर्वा

परार्थभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३४ ॥ सुपात्रदानाच्च भवेद्धनाढयो धनप्रभावेण करोति पुण्यम् । पुण्यप्रभावात्सुरलोकवासी पुनर्धनाढयः पुनरेव भोगी ॥ ३५ ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीय बृहत्खरतराचार्य श्रीसहजकलानिधिसूरिवरचरणाब्जचंचरीकेण मुनिनीरधिशशांकेन संगृहीता सामान्यनीतिश्लोकमालिका ॥

॥ श्री सिद्धाचल चैत्यवंदनम् ॥

॥ धरणेंद्रमुखानागाः पातालस्थानवासिनः सेवंते यं सदातीर्थराजं तस्मै नमोनमः ॥ १ ॥ चमरेंद्रबलींद्राद्याः सर्वे भुवनवासिनः । से० । २ । किंनरकिंपुरुषाद्याः किन्नराणां च वासवाः । से० ॥ ३ ॥ राक्षसानामधीशाश्च यक्षेशाः सपरिच्छदाः । से० । ४ । अणपन्नीपणपन्नीमुख्याव्यंतरनायकाः । से० । ५ । ज्योतिषां वासवो चंद्रासूर्यावन्येपिं खेचराः । से० । ६ । मनुष्यलोकसंस्थाना वासुदेवाश्च-चक्रिणः । से० । ७ । इन्द्रोपेन्द्रादयोप्येते सिद्ध विद्याधराधिपाः । से० । ८ । ग्रैवेयकानुत्तरस्था मनसा-

त्रिदिवौकसः । से० । ए । एवं त्रैलोक्यसंस्थाना स्त्रियोरगनरामराः । से० । १० । अनंतमक्षयं नित्य, मनंतफलदायकं । अनादिकालजं यच्च तीर्थं तस्मै नमो नमः ॥११॥ सिद्धातीर्थकृतोऽनंता यत्रसेत्स्यंति चापरे मुक्तेर्लीलागृहं यच्च तीर्थं तस्मै नमो नमः ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ युगादिदेवचैत्यवंदनम् ॥

प्रगे युगादौ देवेश सूरस्त्वमुदितो नवः तमोध्वंसं वितन्वानो दर्शयन्नर्थसंपदः ॥१॥ नमस्ते विश्वनाथाय, विश्वदर्पप्रदायिने, विश्वोत्तरचरित्राय, विश्वतााताय हे प्रभो ॥ २ ॥ तवावतारे भरतक्षेत्रं स्वर्गाद्धिशिष्यते, पावित्र्यं चाद्यसंजातं, सनाथं च जगद्गुरो ॥ ३ ॥ इति ॥

। महावीरस्वामिचैत्यवंदनम् ।

जयइनवनलिणकुवलय, वियसियसयवत्तपत्तलदलछो, वीरो गइंदमयगल, सुललिअगइ विक्कमो भयवं ॥ १ ॥ मउयिवयइमुत्तिठं, भवंमियं जस्स जरहवासंमि, सोवज्जमाणसामि, तिलुक्कदिवायरो घयउ ॥ २ ॥ गादाजुअलेफाविणं, मयमोहविवज्जियं जिणाणंगं । थोसामितिलोयगुण, निणाणं

महावीरं ॥ ३ ॥ सुकमालधीरसोमा रत्तकिसणपंडुरा सिरिनिकेश्रा । सीअंकुसगहनीरू, जलथल-नहमंम्लणातिन्नो ॥ ४ ॥ नचयंति वीरलीलं, हाउं ऊइ सुरहिमत्तपडिपुणा, पंकयगइंदचंदा, लोअण-चक्कमिश्रमुहाणं ॥ ५ ॥ एवं वीरजिणंदो, अच्छरगणसंघसंथुओ भयवं । पालित्तयमइ महिओ । दिसउ खयं सव्वदुरिआणं ॥ ६ ॥ इति ॥

। गिरनारमंडनश्री नेमिनाथचैत्यवंदनम् ।

श्रीशैवेय ? जयाऽमेयगुणरत्नमहोदधे ! जयापार कृपाधार स्फारसंसारतारक ! ॥ १ ॥ श्रीमन्नेमिजिन ! स्वामिन् ! सहजेनाऽद्भुततेजसा, तमोमग्नं भवोद्विग्नं मामुद्धर कृपापर ! ॥ २ ॥ रागादयोऽरयो देव ! ये पुरा निर्जितास्त्वया, त एव तद्विरोधेन, बाधन्ते मां त्वदाश्रयम् ॥ ३ ॥ सर्वं भावैकसामान्य, मौदासीन्यमिदाश्रयन्, त्वं चेदुपेक्षसे तच्चे, कुतः सुस्वामिताऽमिता ॥ ४ ॥ उदेति न मुदे यावत्त्वन्मयं चिन्मयं महः स्वामिन् ! मोहतमस्तावद्यिचांतजायतेंऽगिनां ॥ ५ ॥ संसार सागरस्यांत मोंहावर्त्तगतः प्रभो ? क्वामात्रभवदूध्यानयानपात्रं महं श्रये ॥ ६ ॥ अहो मनोऽत्नं

चित्तं सशल्कतकदाग्रहं तथा प्रसीद विश्वेश ! यथासीदति न क्वचित् ॥ ७ ॥ तृष्णयातरलं स्वामिन् ! विह्वलं स्मरतापतः शांतिमेति यदि स्वांतं, त्वद्ध्यानामृतमज्जनात् ॥ ८ ॥ जातु किं जंतवो यांति क्रोधक्रूराध्वना विभो शमैकसारं त्वन्मार्गं, मार्गयंते यदि क्षणं ॥ ९ ॥ पापकर्मकृतोन्माथ नाथ ! तत्कुरु येन मे स्वल्पीभवंति संकल्पा, विषयग्रहगोचराः ॥ १० ॥ परानंदह्रदे मेऽस्तु निमग्नस्य जगत्प्रभो ! वेद्यवेदकभेदैकशून्यता त्वत्प्रसादतः ॥ ११ ॥ नार्थयेऽन्यद्विभो ! किंचिद्याचे शमैतदेवहि, समुल्लसतु मच्चित्ते, त्वत्प्रसादात्परं महः ॥ १२ ॥ इतिश्री नेमिनाथ चैत्यवंदनम् ॥

॥ श्रीपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते ॥ ह्रींधरणेंद्र वैरुट्या । पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥ शान्तितुष्टिमहापुष्टिधृतिकीर्तिविधायिने ॥ ॐ ह्रीं द्विड्व्यालवेतालसर्वाधिव्याधिनाशिने ॥ २ ॥ जयाजिताख्याविजया, ख्यापराजितयान्वितः ॥ दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥ ३ ॥

॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंद सरोराज । मरालायार्हते नमः ॥१॥ सर्वेषां वेधसामाद्य । मादिमं परमेष्टिनाम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं । श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ २ ॥ कल्याण पादपारामं । श्रुतगङ्गा हिमाचलम् ॥ विश्वाम्भोजरविं देवं । वन्दे श्रीज्ञातनन्दनम् । ३ ।

॥ अथ कर्मना पंदर बंध विचार ॥

प्रश्न–पन्नर बंधननो अर्थ स्पष्ट रीते समजाओ.

उत्तर–आ नीचे प्रमाणे व्याख्या शास्त्रकारोये आपेल छे.

१–चक्रवर्ती जोग निमित्तें वीजुं औदारिक शरीर करे त्यारे औदारिक औदारिक बंधन कहिये.

कायोत्सर्गना १९ दोष ।१६९।

शरीर आछादित राखे ते.

१३ भमुहंगुलि दोष--आलावो गणवाने अर्थे अथवा कायोत्सर्गनी संख्या गणवाने अंगुलि तथा पांपणना चाला करे ते.

१४ वायस दोष--कागडानी परे डोला फेरवे ते.

१५ कपित्थ दोष--पहेरेला वस्त्र यूका अथवा प्रस्वेदे करी मलिन थवाना भयथी कोठनी परे लुगडुं गोपवि राखे ते.

१६ शिरकंप दोष--यक्षावेशितनी परे माथूं धुणावे ते.

१७ मूक दोष--मुंगानी परे हुं हुं करे ते.

१८ मदिरा दोष--आलावो गणता मदिरानी परे बडबडाट करे ते.

१९ प्रेक्ष्य दोष--वानरनी परे आसपास जोया करे, होठ पुट चलावे ते.

आ दोषोथी थती अविधि जाणीने तेनो त्याग करी काउसग्ग करवो.

॥ प्रश्नोत्तर ॥

प्रश्न–गुरु महाराजने वांदण देवामां पच्चीश आवश्यक साचववा जोइयेते किया ?

उत्तर–२–अवनत, १–यथाजात, १२–आवर्त, ४–शिरनमन, ३–गुप्ति, २–प्रवेश, १–निष्क्रमण, यदुक्तम्—

दोवणयं महाजायं, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं ।
डुपवेसिगनिखमणं, पण वीसावसय किइकम्मे ॥ १ ॥

ए प्रमाणेना पच्चीस आवश्यक कृतिकर्म एटले वांदणाने विषे थाय. वांदणा देनारे आ पच्चीस आवश्यक साचववा बराबर उपयोग राखवो जोइये. कारण के तेथी विपरीत रीते वर्त्ततां एटले आवश्यक साचव्या शिवाय वांदणां देतां तेथी थवानुं जे फल ते प्राप्त थतुं नथी. यदुक्तम्—

किइकम्मंपि कुणंतो, नहोइ किइकम्म निजरा भागी ।

पणवीसा मन्नयरं, साहुठाणं विराहंतो ॥ १ ॥

न्नावार्थ–ए पचवीश आवश्यकमांथी अनेरुं एक पण स्थानक विराधतो साधु तेमज साध्वी, श्रावक अने श्राविका होय ते, कृतिकर्मने करे छे, अर्थात् वांदणा देठे तोपण तेथी जे कर्मपरिशाटनरूप निर्जरा थाय तेनो संविन्नागी न होय, अर्थात् ते वांदणा देवानुं जे निर्जरारूप फल ते न पामे.

प्रश्न–ए पचवीश आवश्यकनो अर्थ बतावो.

उत्तर–वांदणाने विषे बे अवनत एटले बेवार शरीरनो उपरीतन न्नाग नमाववो. ज्यारे प्रथम ' इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए ' एम कही गुरुने वांदवानी इच्छा बतावी अवग्रहमां प्रवेश करवानी आज्ञा मांगतो एटले " अणुजाणह मेमिउग्गहं ' ए पद बोलतो शरीरनो उपरनो न्नाग नमावे–ते एक अवनत जाणवुं. बीजीवार वांदणा देतां बीजुं थाय, ए बे अवनतरूप बे आवश्यक जाणवा.

यथा जात एटले प्रसव पामतो बालक जेम रचित करसंपुट वाळो होय तेम कर संपुट करेला हाथने ललाटे लगाडे ते यथाजात आवश्यक कहिये.

बार आवर्त्त—एटले शरीरनां व्यापर रूप सूत्राभिधान गर्भित काय व्यापार विशेष जाणवा. ते बे वांदणामां मइने बार आवर्त्त जाणवा. एक वांदणे छ आवर्त्त थाय ते आ प्रमाणे-प्रथम त्रण आवर्त्त "अहो" "कायं" "काय" ए बे बे अक्षरे थाय, एटले पोताना हाथना बे तळां गुरुचरणे लगाडे तथा उत्तान हाथे पोतानो ललाट देश स्पर्शे. गुरुचरणे हस्त लगाडता पहेलो अक्षर अने ललाटे हाथ लगाडतां बीजो अक्षर बोलवो एम ए त्रण पद बोलतां त्रण आवर्त्त. पछी हाथ जोडी "वइक्कंतो" पर्यंत बोले अने त्यांथी बीजा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरनां जाणवा. तेमां एक अक्षर गुरु चरणे लगाडतां, बीजो अक्षर उत्तान हाथे, वच्चे विश्रामरूप कहे अने त्रीजो अक्षर ललाट देशे हाथ लगाडतां बोले, जेम "जत्ताभे" "जवणि" "ज्जंचभे" एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना जाणवा. ए प्रथम वांदणे छ अने बीजे वांदणे छ कुल बार

पणवीसा मन्नयरं, साहुठाणं विराहंतो ॥ १ ॥

ज्ञावार्थ–ए पचवीश आवश्यकमांथी अनेरुं एक पण स्थानक विराधतो साधु तेमज साध्वी, श्रावक अने श्राविका होय ते, कृतिकर्मने करे छे, अर्थात् वांदणा दे तोपण तेथी जे कर्मपरिशाटनरूप निर्जरा थाय तेनो संविज्ञागी न होय, अर्थात् ते वांदणा देवानुं जे निर्जरारूप फल ते न पामे.

प्रश्न–ए पचवीश आवश्यकनो अर्थ बतावो.

उत्तर–वांदणाने विषे बे अवनत एटले बेवार शरीरनो उपरीतन ज्ञाग नमाववो. ज्यारे प्रथम 'इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए' एम कही गुरुने वांदवानी इच्छा जणावी अवग्रहमां प्रवेश करवानी आज्ञा मागतो एटले "अणुजाणह मेमिउग्गहं" ए पद बोलतो शरीरनो उपरनो ज्ञाग नमावे–ते एक अवनत जाणवुं. बीजीवार वांदणा देतां बीजुं थाय, ए बे अवनतरूप बे आवश्यक जाणवा.

यथा जात एटले प्रसव पामतो बालक जेम रचित करसंपुट वालो होय तेम कर संपुट करेला हाथने ललाटे लगाडे ते यथाजात आवश्यक कहिये.

बार आवर्त्त—एटले शरीरनां व्यापर रूप सूत्राभिधान गर्भित काय व्यापार विशेष जाणवा. ते बे वांदणामां थइने बार आवर्त्त जाणवा. एक वांदणे छ आवर्त्त थाय ते आ प्रमाणे-प्रथम त्रण आवर्त्त "अहो" "कायं" "काय" ए बे बे अक्षरे थाय, एटले पोताना हाथना बे तलां गुरुचरणे लगाडे तथा उत्तान हाथे पोतानो ललाट देश स्पर्शे. गुरुचरणे हस्त लगाडता पहेलो अक्षर अने ललाटे हाथ लगाडतां बीजो अक्षर बोलवो एम ए त्रण पद बोलतां त्रण आवर्त्त. पछी हाथ जोडी "वइक्कंतो" पर्यंत बोले अने त्यांथी बीजा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरनां जाणवा. तेमां एक अक्षर गुरु चरणे लगाडतां, बीजो अक्षर उत्तान हाथे, वच्चे विश्रामरूप कहे अने त्रीजो अक्षर ललाट देशे हाथ लगाडतां बोले, जेम "जत्ताभे" "जवणि" "ज्जंचभे" एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना जाणवा. ए प्रथम वांदणे छ अने बीजे वांदणे छ कुल बार

आवर्त्त जाणवा.

चतुः शिरः-एटले चार वार शिर नमाववुं. ते पहेला त्रण आवर्त्त थया पछी एकवार अने बीजा त्रण आवर्त्त थया पछी एकवार एम एक वांदणामां बे वखत अने बेमां थईने चार वखत मस्तक नमाववुं ते.

त्रिगुप्त-एटले मन, वचन, अने काया, ए त्रणने वांदणा देता अन्य व्यापारथी गोपवी राखवा ए त्रण गुप्ति. बे प्रवेश-एटले बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रहमां प्रवेश करवो ते.

एक निष्क्रमण-एटले एकवार निकळवुं. ते आ प्रमाणे प्रथम वांदणे आज्ञा मागी "निसीहि" कही संडासा अने जमीन पूंजी अवग्रहमां प्रवेश करे, अने पछी "आवस्सिआए" कही पाछा पूंजी अवग्रहथी बहार निकळे, बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण बहार निकळे नहि गुरु महाराजना पादमांज रह्यो छतो बीजो वांदणो समाप्त करे छतो पण थाय नहि एटले बे वार प्रवेश करवो अने एकवार बहार निकळवुं एम पण आवश्यक कहिये. ए सर्व मळीने पचीस

आवश्यक थाय छे; ते भवभयभीरु जीवोये तेनी रमणता करवी जेथी करेल अनुष्ठान सफल थाय. विशेष खुलासो गुरुगमथी जाणवो.

प्रश्न–क्रिया जेने प्रिय होय ते जीवनुं कल्याण थाय के नहि.

उत्तर–ते जीवनुं कल्याण थाय केमके जे क्रियावादि छे, क्रिया जेने प्रिय छे, क्रियाना उपर बहु आदर छे, ते जीव भव्य छे, अने नियमथी अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनी अंदरज मोक्ष पामे. ॥ यदुक्तम् दशाश्रुतस्कंधचूर्णौ.

जो किरियावाइ सो भवो णियमा सुक्कपाखउ।
अंतपुग्गल परिअट्टस्स सिज्झइ नियमा ॥ १ ॥

प्रश्न–शुक्लपक्षि जीव कोने कहिये ?

उत्तर–अर्द्ध पुद्गल परावर्तमां कांईक न्यून संसार जेनो बाकी छे, निश्चे करी ते शुक्लपक्षी, एटले शुक्ल पक्षना चंद्रमानी माफक सुज्ञान वैराग्य क्षमादि गुणे करी ते जीव वृद्धि पामे छे, तेथी ते शुक्लपक्षि छे, अने तेथी विपरीत ते जीव कृष्ण पक्षी. ॥ यदुक्तम्. तत्रैव.

जेसिमवढ पुग्गल परिअट्टसेसउअ संसारो ।
ते सुक्कपखिया खलु अवरे पुण कण्ह पखिया ॥ १ ॥

प्रश्न–परमयोगी कोण ?

उत्तर–जेने कोइ मित्र नथी, अने शत्रु पण नथी, आ मारुं छे, आ परनुं छे, आ प्रिय छे, आ अप्रिय छे, एम मानवुं जेनुं नथी, इंद्रियोना विषयोमां जेनुं चित्त फसातुं नथी विषय विरक्त छे, अने कषायोथी जेनुं मन रहित छे, ते परम योगी, ॥ यदुक्तमध्यात्मकल्पद्रुमप्रकरणे--

न यस्य मित्रं न च कोऽपि शत्रुर्निजःपरो वापि न कश्चनास्ते ।
नचीन्द्रियार्थेषु रमेत चेतः, कषायमुक्त परमः सयोगी । १ ।

प्रश्न–श्रा जव परजवमां कया गुणे करीने मनुष्य सुखी थाय छे ?

उत्तर–जे कांइ कार्य करे ते सांचो विचार करीने विवेक पूर्वक करे, अने कोइनाथी ठगाय नही, तेमज सरल स्वजाववान् अने जाति कुल अतनी लज्जाने धारण करनार, निर्लज्जता जेनामां नथी, निर्मल आशयथी अढार दोष रहित देव अने शुद्ध जापक गुरुराजनी पुजाजक्ति बहुमान करनार, अने माता पितादि वडीलोनी उचित जक्तिकारक, वली उत्तम कार्यनी अजिलाषाने धारण करनार, अने परोपकार करनार, वली धर्मनी मूल व्यवहार शुद्धिने धारण करनार, एवो गुणवान् पुरुष आ जवमां अने परजवमां संपदाने पामे छे, तथा चोक्तम्. तत्रैव. ।

दाक्षिण्यलज्जे गुरुदेवपूजा, पित्रादिजक्तिः सुकृताजिलाषः ।
परोपकारव्यवहारशुद्धी, नृणामिहामुत्र च संपदे स्युः । १ ।

थाय छे। जन्म जरा, मरण, प्रमन्य सदाय नरकादि जवसंततिनो आत्यंतिक क्षय थाय छे, अने जन्म मरणनी परंपरानो क्षय थवाथी एकान्तिक अने आत्यन्तिकादिक गुणयुक्त स्वात्म स्थिति रूप मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. तेथी परंपराये सर्व कल्याणोनुं जाजन विनय छे. अर्थात् विनय गुणथी उत्तरोत्तर सर्व श्रेय तथाय छे अने समस्त क्लेशनो सर्वथा क्षय करी, अक्षय अनंत अव्याबाध एवुं मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे. पडुक्तम्. प्रशमरति प्रकरणे–

विनयफलं शुश्रूषा गुरु शुश्रूषा फलं श्रुतज्ञानम् ।
ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥
संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् ।
तस्मात्क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥ २ ॥
योगनिरोधाद्भवसंततिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः ।
तस्मात्कल्याणानां सर्वेषां जाजनं विनयः ॥ ३ ॥

सुभाषित व्याख्यान संग्रह.

प्रथम व्याख्यान.

श्रीजिनागमबोहित्थं संसारार्णवतारणम्
ममेदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

...रण कर्या बाद व्याख्याननी शरुवात वखते नीचे प्रमाणे वाक्यरचना रचवी.) ...श्री जगवंत अनंतगुणवंत, महंत केवलज्ञानधारक, जवजयनिवारक, संसारतारक, ...ताप तापठारक, सर्व जीव हितकर, प्राणी मात्रना पीहर, तत्त्वज्ञानजास्कर, श्रीदेवा- ...धितरागदेव प्ररुपित सद्ज्ञानोपदेशाधिकार संबंधी तत्त्ववाणी व्याख्यानकार कथन करे छे ते हे जव्यप्राणी ! सकलसुख खाणीरूप वाणीने हैयामां आणी तेनो रहस्य जाणीने पोताना सुवि-

निरोध थकी जन्म जरा, मरण, प्रबन्ध लक्षण नरकादि जवसंततिनो आत्यंतिक क्षय थाय छे, अने जन्म मरणनी परंपरानो क्षय थवाथी एकान्तिक अने आत्यन्तिकादिक गुणयुक्त स्वात्मे स्थितिरूप मोक्षनी प्राप्ति थाय छे. तेथी परंपराये सर्व कल्याणोनुं जाजन विनय छे. अर्थात् विनय गुणथकी उत्तरोत्तर सर्व श्रेय सधाय छे अने समस्त क्लेशनो सर्वथा क्षय करी, अक्षय अनंत अव्याबाध एवुं मोक्ष सुख प्राप्त थाय छे. यदुक्तम्. प्रशमरति प्रकरणे—

विनयफलं शुश्रूषा गुरु शुश्रूषा फलं श्रुतज्ञानम् ।
ज्ञानस्य फलं विरतिर्विरतिफलं चाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥
संवरफलं तपोबलमथ तपसो निर्जरा फलं दृष्टम् ।
तस्मात्क्रियानिवृत्तिः क्रियानिवृत्तेरयोगित्वम् ॥ २ ॥
योगनिरोधाद्भवसंततिक्षयः संततिक्षयान्मोक्षः ।
तस्मात्कल्याणानां सर्वेषां जाजनं विनयः ॥ ३ ॥

सुभाषित व्याख्यान संग्रह.

प्रथम व्याख्यान.

श्रीजिनागमबोहित्थं संसारार्णवतारणम्
ममेदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

(प्रथम मंगलाचरण कर्या बाद व्याख्याननी शरुवात वखते नीचे प्रमाणे वाक्यरचना रचवी.)

श्री अरिहंत भगवंत अनंतगुणवंत, महंत केवलज्ञानधारक, भवभयनिवारक, संसारतारक, सकलपाप संताप तापठारक, सर्व जीव हितकर, प्राणी मात्रना पीहर, तत्त्वज्ञानभास्कर, श्रीदेवाधिदेव वीतरागदेव प्ररुपित सद्ज्ञानोपदेशाधिकार संबंधी तत्त्ववाणी व्याख्यानकार कथन करे छे ते हे भव्यप्राणी ! सकलसुख खाणीरूप वाणीने हैयामां आणी तेनो रहस्य जाणीने पोताना सुवि-

दांने आचारमां मूकवा आतुर रहो के जेथी भवसमुद्रनी पार जवानो समय सानुकूल थाय अने समस्त संताप जाय!

तत्त्वज्ञाणीमां प्रथम शुं शुं जाणवानी जरूर छे

(शार्दूलविक्रीडित छंद.)

“ तत्त्वानि (७) व्रत (५) धर्म (१०) संयम (१७) गति (४) ज्ञानानि (५) सद्भावना (१२),
प्रत्याख्यान (१०) परीषहैं (२२) इन्द्रिय (५) मद (८) ध्यानानि (४) रत्नत्रयम् (३);
लेश्या (६) आवश्यक (६) काय (६)
संज्ञा (१०) कर्म्म (८) ;

इत्ये–ज्ञान.

वखाणनुं अने तीर्थ फरश्यानुं तत्त्व न जाण्युं तो ते सर्व निष्फलज छे, माटजे साररूप तत्त्व नव छे ते प्रथम जाणवाज योग्य छे. ए नव तत्त्वादि बोलोनुं निरूपण नीचे मुजब छेः-

नवतत्त्व-१ जीवतत्त्व, २ अजीवतत्त्व, ३ पुन्यतत्त्व, ४ पापतत्त्व, ५ आश्रवतत्त्व, ६ संवरतत्त्व, ७ निर्जरातत्त्व, ८ बंधतत्त्व अने ए मोक्षतत्त्व आ नव तत्त्व छे.
नव तत्त्व जाणया समज्या पछी पांच महाव्रत जाणवानी जरूर छे.

पांच महाव्रत-१ प्राणातिपात विरमणव्रत, २ मृषावाद विरमणव्रत, ३ अदत्तादान विरमणव्रत, ४ मैथुन विरमणव्रत अने ५ परिग्रह विरमणव्रत. आ पांच मोटां व्रत छे. ते जाणवां अने आत्महितार्थी तथा धीरवीर पुरुषोये आदरवां-पाळवां के जेथी भवपार थायछे.

धर्मनां दश लक्षण-१ क्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव. ४ मुक्ति, ५ तप, ६ संयम, ७ सत्य, ८ शौच, ९ अकिंचन, अने १० ब्रह्मचर्य आ दश ज्यां पूर्णपणे होय त्यांज धर्म मनाय छे.

(इन्द्रिय ५.) ६ फरसन, ७ रस, ८ घ्राण, ९ चक्षु, १० श्रवण, ११ क्रोध, १२ मान, १३ माया, १४ लोभ, १५ मनोदंड, १६ वचनदंड अने १७ कायदंड. आ सत्तरनो त्याग करे तेज संयमी कहेवाय छे.

चार गति–१ देवगति, २ मानवगति, ३ तिर्यंचगति अने ४ नरकगति आ चार छे.

पांच ज्ञान–१ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान अने ५ केवलज्ञान आ पांच ज्ञान छे, ते प्राप्त करवा यत्न आदरवो.

बार भावना–१ अनित्य, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचि, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा, १० धर्म, ११ लोकस्वरूप, अने १२ दुर्लभबोध आ १२ भावनाओ भाववा योग्यज छे.

दश पच्चक्खाण–नवकारसी १, पोरसी २, पुरिमड्ढ ३, एकासणुं ४, एकलठाणुं ५, आयंबिल ६, उपवास ७, दिवसचरिमप्रत्याख्यान ८, अभिग्रह ९ अने विगइ १० आ दश पच्चक्खाण पैकी गमे ते प्रत्याख्यान पोतानी शक्ति मुजब हमेशां करवुंज जोइये.

बावीश परिषह—क्षुधा परिषह १, तरशा परिषह २, टाढ परिषह ३, ताप परिषह ४, डांस परिषह ५, अचेलक (वस्त्र ?) परिषह ६, अरति परिषह ७, स्त्री परिषह ८, चर्या परिषह ९, नैषेधकी परिषह १०, शय्या परिषह ११, आक्रोश परिषह १२, वध परिषह १३, याचना परिषह १४, अलाभ परिषह १५, रोग परिषह १६, तृणफास परिषह १७, मल परिषह १८, सत्कार परिषह १९, प्रज्ञा परिषह २०, अज्ञान परिषह २१ अने सम्यक्त्व परिषह २२ आ बावीश परिषह समयपरत्वे साधु जनने सहन करवाज जोइये.

पांच इन्द्रिय—स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) १, रसनेंद्रिय (जीभ) २, घ्राणेंद्रिय (नाक) ३, चक्षुरिंद्रिय (आंख) ४, अने श्रोतेंद्रिय (कान) ५ आ पांच इंद्रियोने पोत पोताना विषयनी अंदर वश्य—कबजे राखवीज जोइये.

आठ मद—जातिमद १, कुलमद २, रूपमद ३, तपमद ४, बलमद ५, श्रुत-ज्ञानमद ६, लाभमद ७, अने ऐश्वर्यमद ८ आ आठ जातना मद कदापि करवा नहीं.

चार प्रकारनां ध्यान–आर्त्तध्यान १, रौद्रध्यान २, धर्मध्यान ३ अने शुक्लध्यान ४ आ चार ध्यान पैकी प्रथमनां बे त्यजी देइ पछीनां बे अवश्य अंगीकार करवां.

रत्नत्रयी–ज्ञान १, दर्शन २ अने चारित्र ३ आ त्रण अमूल्य रत्ननो जरूर संग्रह करवो.

छ लेश्याउ–कृष्ण लेश्या १, नील लेश्या २, कापोत लेश्या ३, तेजो लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ अने शुक्ल लेश्या ६, आ छ लेश्याउ पैकी प्रथमनी ३ लेश्याउ त्यजी पाछलनी ३ भजवी जेथी भव भ्रमणानो अंत समय आधीन थाय छे.

छ आवश्यक–सामायिक १, चौवीसत्थो २, वंदणा ३, प्रतिक्रमण ४, कार्योत्सर्ग ५ अने प्रत्याख्यान ६ आ छ आवश्यक अवश्य करवाज योग्य छे.

छ काय–पृथिवीकाय १, अप्पकाय २, तेउकाय ३, वाउकाय ४, वनस्पतिकाय ५ अने त्रस काय ६ आ छ कायमय संसार छे, एउनी विराधना न थाय तेम पलें पलें खबरदारी राखी वर्त्तवुं.

पंदर योग–सत्यमनोयोग १, असत्यमनोयोग २, ...

योग ४, सत्य वचन ५, असत्य वचन ६, सत्यासत्य वचन ७, असत्यामृषावचन ८, औदारिक ९, औदारिकमिश्र १०, वैक्रिय ११ वैक्रियमिश्र १२, आहारक १३, आहारकमिश्र १४, तैजस अने कार्मण १५ आ पंदर योग पैकी तजवा जेवा योग्य जाणीने जीवनव्यवहारने निर्मल राखवो.

पांच समिति–इर्यासमिति १, भाषासमिति २, एषणासमिति ३, आदान भंडमात्र निक्षेपणा समिति ४ अने उच्चारपासवण खेलजल्ल पारिठावणिया समिति ५ आ पांचे समितिनुं सदा सेवन करवुं.

दश प्राण–पांच इंद्रिय ५, मन बल ६, वचन बल ७, काय बल ८, श्वासोश्वास ९ अने आयु १० आ दश प्राण पैकी प्राणी मात्रमां ओछा वधता प्राण होय छे तेनो विचार ध्यानमां लइ दश प्राणधारी ज्ञानवान मानवे जीवन सफल करवा खंतवंत थवुं.

आठ प्रमाद–अज्ञान १, असंयम २, मिथ्यात्व ३, राग ४, द्वेष ५, मतिभ्रंस ६, धर्मअनादर ७ अने मनवचन काय अप्रशस्त ८ आ आठ प्रकारना प्रमाद त्यजी देवा.

तपना बार भेद–अनशन १, उणोदरी २, वृत्तिसंक्षेप ३, रसत्याग ४, कायक्लेश ५, संलीनता ६, (आ छ बाह्य तपना भेद छे.) प्रायश्चित्त ७, विनय ८, वैयावच्च ९, सज्झाय १० ध्यान ११ अने उत्सर्ग १२ आ (छ अभ्यंतर तपना भेद छे. ए बेउ प्रकारना मलीने) बार भेद वडे तपनी आराधना निरंतर कर्याज करवी.

दश संज्ञा–आहार संज्ञा १, भय संज्ञा २, मैथुन संज्ञा ३, परिग्रह संज्ञा ४, क्रोध संज्ञा ५, मान संज्ञा ६, माया संज्ञा ७, लोभ संज्ञा ८, लोक संज्ञा ९ अने उघ संज्ञा १० आ दश संज्ञा, सन्निया–संज्ञावंत जीवोमां रहेली होय छे ते पैकी दुष्टसंज्ञानो त्याग करी सुसंज्ञाने आदर आपवो.

आठ कर्म–ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७ अने अंतराय ८ आ आठ कर्म संसारी जीवनी पछवाडे लागेलां छे तेउनो नाश करवा सतत उद्यमी थवुं.

पचीश कषाय–अनंतानुबंधी क्रोध १, अनंतानुबंधी मान २, अनंतानुबंधी माया ३, अनं-

तानुबंधी लोज्ञ ४, अप्रत्याख्यानि क्रोध ५, अप्रत्याख्यानि मान ६, अप्रत्याख्यानि माया ७, अप्रत्याख्यानि लोज्ञ ८, प्रत्याख्यानि क्रोध ९, प्रत्याख्यानियो मान १०, प्रत्याख्यानिमाया ११, प्रत्याख्यानियो लोज्ञ १२, संजलणो क्रोध १३, संजलणी माया १४, संजलणुं मान १५, संजलणो लोज्ञ १६, हास्य १७, रति १८, अरति १९, ज्ञय २०, शोक २१, डुगंछा २२, पुरुषवेद २३, स्त्रीवेद २४, अने नपुंसक वेद २५, आ पचीश कषाय छे ते सर्वथा त्यजवा योग्य छे,

त्रण गुप्ति–मनो गुप्ति १, वचन गुप्ति २, अने काय गुप्ति ३, आ. त्रण गुप्तिने निरंतर सेववी योग्य छे.

चोत्रीश अतिशय–तीर्थंकरनुं शरीर अति अद्भूत, रोग पशीनाथी रहित होय. १, श्वासोश्वास कमलना सरखो सुगंधवंत होय २, शरीरमानुं लोही मांस सफेद वर्णवंत होय ३; आहार निहार कोइना जोवामां न आवे ४, (आ चार अतिशय जन्मथीज होय छे,) एक योजननी अंदर देव, मानव पशु पक्षी कोमोनी संख्या ए मले छतां तेटलीज सीमामां समाय ५,

परमात्मानी योजनगामिनी वाणी होय ६, परमात्मानी वाणी प्राणी मात्र पोत पोतानी नापामां समजी शके तेवी परिणमे. ७, पीठ पाछळ देदीप्यमान नामंडळ विद्यमान होय ८, सवाशो योजन लगी वेर नाववाळा जीवोनी अंदरनां पण वेर शमीजाय. ए, सात प्रकारनी इतिना नय न होय १०, महामारीनो रोग न थाय. ११, हदथी उपरांत वर्षादि न थाय १२, हदथी उछी वृष्टि पण न थाय १३, काळ न पडे १४, स्वचक्र परचक्रनो नय न होय. १५ (आ अग्यार अतिशय कर्मक्षय थइ केवलज्ञान उपजे त्यारे होय छे.) आकाशे धर्मचक्र प्रभुनी आगळ आगळ चाल्या करे. १६, पादपीठ सहित सिंहासन साथेज चालतुं रहे. १७, रत्नमय त्रण छत्र माथापर विद्यमानज रहे. १८, हजार योजन उंचो ध्वजदंड आगळ चाल्या करे. १ए, नवकमळ उपर पगलां मूक्या करे. २०, सोना रुपाना त्रण गढ थाय. २१, परमेश्वर चारे बाजुए सन्मुख रूपथी बिराजेला जणाय. २२, देवता चैत्य वृक्ष हाजर राखे. २३, कांटा मात्र प्रभु पग मुके त्यां उंधा थइ रहे. २४. प्रभुने रस्तामांनां तमाम वृक्ष लताउ नमतां

जणाय २५, डंडुनी नाग्याज करे २६, अनुकूल पवन वाया करे. २७, शकुन प्रदक्षिणा देता जाय. २८, पांचे रंगनां सुगंधी फूलोनो वरसाद आकाशमंडलना अंदरथी देवो करो करे २९, दीक्षा लीधा पछी वाल नख न वधे. ३०, हमेशां एक कोडी देवो सेवामां हाजर रहे. ३१, छए ऋतु अनुकूल जणाय. ३२, श्वेत चामर ढळ्यां करे, ३३, अने इंद्रधनुष म्होंरे अग्रणी चाल्या करे. ३४, (आ ओगणीश अतिशय देवताना करेला होय छे. ४–११–१९ मली ३४ थया.)

एवा चोत्रीश अतिशयवंत भगवतनी वाणीमां लीन रही आत्म कल्याणनी प्रेरणामां निरंतर मच्या रहेवुं जेथी हे भव्यजीवो ! आ भवनी अंदर सर्व प्रकारनां सुख अने परभवमां शुभगति अथवा मोक्ष लक्ष्मी सहेजमां प्राप्त थाय ए माटे जिनवाणी उपर दृढ सद्दहणा राखी मंगलिकमालाने वरो अने भवभ्रमणाने हरो !

(शार्दूलविक्रीडित.)

" धर्मः कामगवी यदीयचरणा दानादयो यन्मुखं,
शुभा जीवदया विवेकविलसत्पुच्छछटालंकृतिः
अश्रेयस्तृणचारिणी शुभपयः संपत्तिहेतुश्च या,
आलस्यादिकपद्ध्यतोऽहरगणात् दक्ष त्वया रक्षताम् ॥ २ ॥

श्री अरिहंत जगवंत अशरण शरण जव जयहरण शिवसुख करण तरणतारण षट् जीवनिकाय वत्सल जव्य जीव प्रते धर्म रुपी कामधेनु संबंधी व्याख्या कही बतावे ठे के हे दक्ष चतुर मानवो ! धर्म रुपी कामधेनु जूख दुःखने दूर करी सुखमां स्वाधीन राखनारी ठे.

जेम कामधेनु सर्व प्रकारे पवित्र छे, तेम धर्म पण सर्व प्रकारे पवित्र छे. कामधेनु जेम ज्यारे जोइये त्यारे उत्तम दूध आपी सेवन करनारने तुष्टि पुष्टि आपे छे, तेम धर्म पण सर्वोत्तम सुखरूप सुगति आपी सेवन करनारनी जवभ्रमणा टाली स्वर्गापवर्गरूप तुष्टि पुष्टि आपे छे. जेम कामधेनु सर्वमान्य छे, तेम धर्म सर्वमान्य छे. जेम कामधेनु दारिद्र्यने नजीक आववा देती नथी, तेम धर्म पण दुर्गतिरूप दारिद्र्यने नजीक आववा देतुं नथी. जेम कामधेनु उज्वल वर्णवंत छे, तेम धर्म पण उज्वल तत्त्ववंत छे. जेम कामधेनु थोडा खर्चे महान् लाभनी भेट करावे छे, तेम धर्म पण सहज महेनतमां महान् आनंदनो लाभ वडे छे अने जेम कामधेनु मानवंती मंगल रूप छे तेम धर्म पण मानवंत महामंगल रूप छे, तथापि तेने तृप्ति आपवा सारवार करवानी जरूरज छे. जो तेनी सारवार सारी रीतें करवामां आवे तो बेशक अवर्णनीय आनंद आपे, धर्म माटे पण तेवीज रीति अनुसरवामां आवे एटलेके दया दान दक्षता साथ दश लक्षणो पालण करवामां आवे तो बेशक महदानंद अर्पे छे, माटेज जेम कामधेनुने बलवान् चोर हरी न जाय ते माटे आलश त्यजी (तेनुं जेम) संरक्षण करवुं योग्य छे, तेम काम

मनमांहे कहेला काठिया रूप मजबूत चोरोथी धर्मधेनुनुं रक्षण करवुंज योग्य छे, नहीं तो ते दुष्टो गुप्तपणे क्षणमां आखी धर्मनी हानि करेछे. जेथी सावधानी साथ धर्मधेनुनुं रक्षण करी अनंत सुख प्राप्त करवुं.

काठिया रूपी तेर सबळ चोर छे ते एके:—

(गाथा छंद.) आलस्स १, मोहा २, वन्ना ३, थंभा ४, कोहा ५, पमाय ६, किवणत्ता ७, भय ८, सोगा ९, अन्नाणा १०, विक्खेव ११, कुतूहला १२, रमणा १३. ॥१॥

पहेलो काठियो—आळस नामनो छे ते शुभ धर्म करणी करवा जतां घरमांथी बहार निकळवानी विचारणाज मनमां न आववादे. मात्र विविध प्रकारना घरकाममां लुब्ध बनावी देवानी प्रेरणा करेछे.

बीजो मोह काठियो—जे देव गुरुदेवनी अंदर अथवा पुत्र स्त्रीमां निर्विवेकपणे मोह राखवानी प्रेरणा करावे छे जेथी धर्म तरफ लक्ष लगाज न थवा दे.

त्रीजो अवज्ञा काठियो–ते बीजा बधा गुणीजनो ज्ञानीओने माटे निंदा कराववानीज वृत्ति पेदा करे, जेथी ते कहेतोज फरेके ए मूर्ख शुं समजे छे! एनामां (ज्ञानादि) कशुं नथी. एवी रीते अनेक अवर्णवाद बोलवामां मस्त रहे, किंवा मलीन वस्त्रपात्रादि सहित तथा सकल संस्कार रहित पाखंडी छे वगेरे निंदा करे जेथी गुणी ज्ञानीना नजीकज जवा न पामे.

चोथो अहंकार काठियो–ते गुरु गुणिजनने देखी मोटाइने लीधे मस्तक न नमावतां स्थंभ बनी रहे, जेथी गुणि गुरुनो समागम थवानो समयज हाथ न लागवा दे.

पांचमो क्रोध काठियो–ते गुरु प्रमुखने विनाकारणे लडे चडे अने रीसाइ रहेतां तेमनी हजूर न जाय, जेथी सदुपदेशना लाभथी बेनसीब (दूर) रहे छे.

छठो प्रमाद काठियो ते–विकथा (राजकथा देशकथा भोजनकथा अने स्त्रीकथा) अने वंध मद विषय कषायमां लीन बनी जतां गुरुपासे न जाय जेथी ज्ञानोपदेशनो स्वाद अनुभववा भाग्यशालि न थाय.

शुभांग व्याख्या नंबर ११३०

सातमो कृपणता काठियो–ते वेहरे उपासरे जवाथी जरापण चोखा बदाम वगेरेनुं खर्च थाय ए कंजुसाइने लीधे त्यां जाय नही जेथी मंगल कल्याणना मार्गथी दूर रहे छे.

आठमो जय काठियो–ते महान् दुष्टकर्मकर्त्ताने नर्क प्राप्त थाय छे अने त्यां जयंकर त्रासजर्यां दुःखो जोगववां पडे छे वगेरे वगेरे जयानक नर्कजय वर्णनना जयने लीधे डरीने अथ वा तो कोइ शत्रुथी डरीने बहार न नीकले जेथी निर्जयतानो रस्तो हाथ चडे नहीं.

नवमो अज्ञान काठियो–ते अज्ञान मार्गमां दोरी एवुंज बोलाव्या करे के मांस जक्षणमां, मदिरा पीवामां अने मैथुन सेववामां कशो दोष नथी. ॥ न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये नच मैथुने ॥ प्रवृत्तिरेषाजूतानां, निवृत्तिस्तुमहाफला ॥ १ ॥ स्वर्ग नर्क छेज नहीं, ग्रंथो गपनोज जंडार छे. वगेरे वगेरे मिथ्यात्वना वचनने लीधे गुरु गुणी तरफ श्रद्धा उत्पन्न थायज नही, अने श्रद्धा पेदा थया विना आत्मकल्याण थवानो पंथ हाथ चडेज नहीं.

दशमो आक्षेप काठियो–ते आ हमणां करवुं छे, अने आ पछी करवुं छे, एम घणा कामोनी

जलोजथाथी आकुलव्याकुल थतां निश्चय विचारने ताबे न थइ शके, जेथी विचारमांने विचारमां मानवभव एले गुमावी बेसे छे.

अग्यारमो शोक काठियो–ते व्हालाना मरणथी शोकने स्वाधीन थइ रहेतां धर्मोत्साह आववा न पामे, जेथी गुरुवाणीना वियोगने लीधे सदा शोकमां ग्रस्त बनवानो वखत हाजरी आपे छे; एटलेके दुष्टगति थवाथी शोक मटवानो समय पाछज क्यांथी थवा पामे.

बारमो कुतूहल काठियो–ते नाटक, चेटक, सरकस, गानतान, बाजी, रम्मत, गम्मत, वगेरे खेल तमाशानी अंदर मशगुल रह्या करे जेथी धर्म तरणी अणगमो बतावे, तेना लीधे परिणाममां मनुष्यजन्म अफल थाय छे.

तेरमो रमण काठियो– ते कूकडा, घेटा, तेतर वगेरेनी लडाइ कराववामांज मन आनंद मान्या करे जेथी धर्म तरफनी उर्मीओज पेदा न थाय.

आ तेर काठियारूपी सबल चोरोथी धर्मरूपी कामधेनुने बचावी लइ तेनाथी मलता लाभ

संतोष पामवो डुर्लन्न ले एम कहेवामां आव्युं ले.

पांचमो सकार संघसेवा ए पण अत्यंत डुर्लन्न ले. संघ एटले साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका आ चतुर्विध संघनी अनन्य प्रकारे–पूर्ण न्नक्तिन्नाव वमे सेवा करवी. तेमने वस्त्रपात्र न्नोजन-औषध-मकान-सन्मान अने स्वामीवत्सल वगेरे वमे संतोषी तेउनी सेवा करवानो न्नाव दृढ थवो बहुज मुश्केल ले.

जे श्रावक श्राविका साधु साध्वीने वस्त्रपात्रादिनी मुशीबत वेठतां निहाली अथवा पोताना स्वधर्मी न्नाताउने न्नूखना डुःखथी रीबाता निहाली मनमां जरा पण अरेकार आणतां नथी अने पोतपोतानी शक्ति मुजब तेउनुं कष्ट कापवाने माटे बनती कोशीष करतां नथी ते पुन्यनां न्नागी थतांज नथी. केमके संघ ए पच्चीशमा तीर्थंकर समान पूज्य ले; माटे ते संघनी सेवा पूजा न्नावन्नक्तिनी अंदर जे उदारचित्त थतां नथी ते खचीत न्नाग्यहीनज मनाय ले. परंतु कर्मना कठीन योगना संयोगवमे ते चतुर्विध संघनी सेवा प्राप्त थवा जेवी शकती नथी तेथीज तेने डुर्लन्न मानवामां आवे ले.

ऊपर बतावेला पांच सकार सहेलाइथी प्राप्त थइ शकता नथी; तथापि जो ते पांचे सकारने प्राप्त करवा माटे एक सरखो यत्न हाथ धरे तो बेशक दुर्लभ छतां सुलभ थइ शके छे.

पूर्व समयनी अंदर बेशुमार मानवोए पांच सकारोनो सत्कार कर्यो छे जेथी तेओ सहेलाइथी भवसागर तर्या छे, तेमज हालमां जे पांच सकारनुं सर्व प्रकारे सेवन करे छे तेओ भवोदधि तरवानी तैयारी करी रह्या छे, अने हवे पछी जेओ आ पांचे सकारनुं निर्मळ तन मन वचनथी निरंतर सेवन करशे तेओ भवना अंतने भली रीते भेटी शकशे एमां जरा पण शक नथी. माटे हे भवि प्राणियो ! संसारतारक ए पांच सकारोने प्राप्त करवा पुन्यकरणी करो के जेथी पांचे सकारो सुलभ थतां जन्ममरणना भयथी मुक्त थइ सिद्धिपदना भागी थवा भाग्यशाळी थइ शको. एवी जिनवरनी वाणी सांभळी भविप्राणी भाव आणी हैये धरो अने अमलमां लावो के जेथी उभय जय मंगळ केळी कमळा वरी सुगतिना संगी थाओ.

व्याख्यान चोथुं.

(अनुष्टुप् छंद.)

" अनित्यानि शरीराणि, विभवो नैव शाश्वतः ॥
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥ ४ ॥ "

श्री जगदीश जिनराज गरीबनिवाज जगज्जनहितकाज भवजलनिधि पार थवा पाज रूप सुंदर सुधाथी पण अत्यंत मिष्ट प्ररुपणा आ प्रमाणे करी गयेल छे के,–

उग्या-उग्या सो तो आथमे, फूल्या सो करमाय;
चण्या देवल गिर पडे, जन्म्या सो मर जाय.

चंद्रमा सूरज अने तारा आदि जे उग्या होय छे ते आखर अस्तज थवाना छे अगर थाय

छे, जे वनस्पति–फलफूल वगेरे फूलेल छे ते करमायज छे, जे मकानो-मेहलो-कोट-किल्ला वगेरे चणेल छे ते आखर जमीनदोस्त थवा(पडी जवा)नाज छे, अने जे प्राणीमात्र जन्म्यां छे ते आखर मरणने शरण थवानांज छे अथवा थाय छे ज. परंतु कोइ हमेशां एक स्थितिथी कायम रहेनारज नथी ! केमके,–

देखो लोगो माटी फूली, माटी देखी माटी फूली; माटी आवे माटी जाय, हसी रमीने माटी थाय.

हे लोको ! सकर्मा दरेक जीव, चेतन के जड माटीमांथी पेदा थाय छे. माटी एटले मृत्तिका अथवा मांस-चाम एमांथीज दरेकनी उत्पत्ति होय छे. छतां माटीनी पेदाशने निहाळी मातापितारूप माटी फूले छे–खुशी थइ मकलाय छे; परंतु तेने खबर नथी के बधी वस्तु माटी अथवा पृथ्वी–योनिमांथीज प्रकट थाय छे अने पुनः आयु नाश थये तेमांज समाइ जाय छे तथा हसी रमीने माटीज बने छे. एथी मूल श्लोक जाहेरमां लावे छे के प्राणी मात्रनां शरीर अनित्य–नाश थनारांज छे. ज्यारे जे वस्तु नाशवंत छे त्यारे ते वस्तु उपर ममता राखवी ए केवळ घेलछाज छे माटेज

नित्य वस्तु जे धर्म तेनी सदैव सेवना करी अनित्य शरीरनी जन्मयात्रा सफल करवी. ए संबंधने
एक दृष्टान्त छे के–

प्रधानेन सुमित्र त्रितय क्रमम् ॥ तृतीयां हितकृज्ज्ञात. स एव सुखः स्तया

क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां जितशत्रु राजाना राज्यमां बुद्धिनिधान नामनो प्रधान नामप्रमाणे काम
करनारो हतो, अने ते तमाम राज्यकारभारनो भार वहन करतो हतो. राजा
तेना उपर पूर्ण प्रसन्नता आपतो हतो. पण राजा अज्ञानी पूर्ण ममताने लीधे विशेष
मान आपतो हतो. ए प्रधानने त्रण मित्र हता. ते पैकी पहेला मित्रनुं नाम नित्यमित्र, बीजो पर्व
मित्र अने त्रीजो प्रणाम मित्र हतो. ते प्रधान, नित्यमित्रनी हरहमेशां भोजन वस्त्र वगेरेथी भक्ति
करतो हतो. तेमज पर्वमित्रनी दशहरा दीवाली हुताशनी वगेरे पर्वकालने दिवसे भोजनादिथी
भक्ति करतो हतो. अने प्रणाम मित्रनी फक्त छटक सलाम रावो नमस्कार तथा मीठे वचनोथी
ज्यारे मले त्यारे संतोष आपतो हतो.

राजा कोइना कोइ दिवस मित्र थया नथी अने थशे पण नहीं. ए नियमानुसार एक समय ते राजा, प्रधान ऊपर कोपायमान थइ गयो, जेथी ते प्रधान पहेला नित्यमित्रने घेर जइ पोतानी ऊपर पडेली आफत संबंधी वात कही ऊभो रह्यो; पण तेणे चोख्खुं कह्युं के–'राजाना शत्रुने सन्मान आपवुं ए खानाखराबीनोज मार्ग छे माटे कृपा करी तमो अहींथी बीजे पधारी जाओ. माराथी राजानो धुंस झीलाशे नहीं.' आम जवाब मळतां प्रधान पर्वमित्रने त्यां गयो अने त्यां पण अथ इति वात कही संजळावी उत्तरनी राह जोवा लाग्यो. ते बीजा मित्रे पण कह्युं के– "तमारी संगतिवडे अमो पण शिक्षाना पात्र थइए माटे महेरबानीनी राहे अन्य स्थळे पधारो." आवो जवाब मळतां प्रधान त्रीजा प्रणाममित्रने घेर गयो अने त्यां पण प्रथम प्रमाणे कही ऊभो रह्यो, एटले ते त्रीजा मित्रे पुष्कळ दिलासो आपी कह्युं–'जरा पण राजानो भय राखशो नहीं. मारुं घर–धन–कुटुंब अने शरीर नाश पाम्या पछीज तमोने ते जोवा पामशे. पण ते पहेलां तो मगदूर नथी के तमारा सामी नजर पण करी शके.' इत्यादि कही सन्मान सह

संतोष आप्यो, अने पोताना मित्रने निर्भय पूर्वक मकाननी अंदर राख्यो.

ते पछी ते मित्रे राजेंद्र पासे जइ कला केलवी महाराजानी प्रसन्नता मेलवी निवाजसमां प्रधानना अपराध क्षमावी तेने निर्भयपुक्त अभयदाननो भोगी कराव्यो. कहेवानो मतलब एज के धर्म छे ते प्रणाममित्रनी पेठे अभयदानदाता–प्राणरक्षक छे एटले के जीवने त्रण दोस्तदार छे ते ए के पहेलो देहमित्र, बीजो कुटुंबमित्र अने त्रीजो धर्ममित्र छे. पहेला दोस्तदार देहने हमेशां खान पान वस्त्र वगेरेथी साचवतां छतां ते वगती वेली करेली छमछने विसरी जइ नाश पामे छे, एटले के सेवकनी सेवानी कशी कदर न करतां वियोग आपे छे–पण पोतानो थतो नथी. बीजो कुटुंबमित्र पण दुःख आवी पडतां के काल आवी पहोचतां परब दिवसोए साचवेली सेवा छतां कशी गरज सारतो नथी. सुखनोज संगी रहे छे. ज्यारे जे मित्र–

सुखरी वेला सांगणा, दुखरी वेला दूर; वे सज्जन वोलावियै, वहेती नदियां पूर.

मतलबनाज संगी होय ते मित्रनो त्यागज करवो. त्रीजो धर्ममित्र छे ते प्रणामरूप छे

तथापि कष्टमां पडेला पोताना आराधकने आ भव परभवमां पण मनमानती निर्भयता अने सुखसंपदा आपी अभय पद आपे छे. कह्युं पण छे के—वनमां-रणमां-शत्रुजलमां-पाणीमां-आगमां-समुद्रमां अने विषम विपद्वाली जगामां फक्त धर्ममित्रज सहायता आपे छे. माटेज कहेवानी जरूर छे के त्रीजा मित्रना समान धर्ममित्र परम उपकारी छे. छेह-दगो न आपे तेवो चोलमजीठना रंगवत् प्राण अने पण साथे छोडनार छे. माटेज कहिये छिये के—

धर्ममित्र बिहडे नहीं, बीजा बिहडी जाय; इसो जाणी धर्म सेविये, इरत परत सुख थाय!

अर्थात् बीजा बधा मित्रो बदलाइ बेसे, पण धर्मरूप मित्र कदी पण बदलाइ बेसतोज नथी. जेथी हे भविजीवो!

नित्यमित्र सम देह छे, कुटुंब पर्व समान; हितकर जाणो थापणो, धर्म सदा सुखदान.

एथीज मूल श्लोकमां कहेलुं छे के अनित्यानिशरीराणि-शरीर अनित्य-नाशवंत छे एम समजी धर्मनो संग्रह करवो.

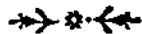
कूवामांथी पाणी न वापरिये तो ते पाणी निरोगी अने अखूट रहेतुंज नथी; पण उलटुं गंडुं थइ दुःखदाता निवडे छे. एवीज रीते माया–धन पण खर्च्ये वावर्येज अखूट अने विमल शोभावंत रहे छे. केमके मूल श्लोकना त्रीजा पदमां कहेल छे के–नित्यं सन्निहितो मृत्युः–हमेशां मरण तो म्हों अगाडीज फेरफुंदडी दीधा करे छे. ते जेम चकलानी ऊपर वाज उचिंती झपट मारी प्राणने परलोक पहोचाडे छे तेम काल पण उचिंते आवी दोट देइ कोट मरडी नाखशे के बधी बाजी परवारी जशे अने कशुं जोर चालशे नहीं. कह्युं छे के–

मंत्र तंत्र यंत्र जडी धरीही रहत धरी घरीहुको होत न बचाव कहु प्रानको,
दोरी धाव उपध उपाव कहु चले नाही दीप ज्युं उलझाय जाय प्रेर्यो पवमानको;
दूरहीतें देखतही रोप रहें खगकुल परत अचिंत्यो आय दाव ज्युं सीचानको,
छांरी सब आर जार राज माया मोह जार अंतकाल शरण भजन भगवानको. १

माटे पडछायानी पेठे साथेने साथे रहेला कालथी बचवा धर्मनुं शरण ग्रहण करवुं जेथी

शाश्वत सुख स्वाधीन थाय छे. केमके धर्म प्रभुप्ररूपित सत्य धन छे, ते धनना सेवनथी अनंत जीव अक्षय सुखना संगी थया, थाय छे, अने थशे ज एम जाणी हे भविप्राणी सुखनी खाणीरूपी धर्म धननो संग्रह करी सदैव शाश्वत सुखना सेवनार थाओ के जेथी कल्याणकमला वरो अने फरी संसारमां फेरा न फरो !

व्याख्यान पांचमुं.



(अनुष्टुप् छंद.)

गतः सारेत्र संसारे सुखभ्रांतिः शरीरिणाम् ॥
लालापानमिवांगुष्टे बालानां स्तन्यविभ्रमः

श्री अरिहंत भगवंत सुरासुरसेवित शातादाता भयत्राताओे एवुं प्रकाशेल छे के, हे भविजीवो !

मळ्यो, एथी अत्यंत आनंद मानी मस्त चित्तवंत थयो दिवस निर्गमवा लाग्यो.

कुबेरदत्ता साध्वीजीने छठ अठम तप करतां अने खांडानी धार प्रमाणे चारित्र पालतां कर्मक्षय थये अवधिज्ञान प्राप्त थयुं अने अवधिज्ञान मारफत ज्यारे कुबेरदत्त शी दशामां छे ते तपास्युं त्यारे तो ते कलमांथी नीकली चूलमां पडेलो मालूम पड्यो, एथी कामदेवने शतकोटि धिःकार आपी विचारवा लाग्यां के–'आ जीव विषयसुखथी कदि तृप्त थतो नथी अने एना लीधे कार्य अकार्य करतां पण जरा डरतो नथी.

धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु चाहारकर्मसु ॥ अतृप्ताः प्राणिनः सर्वे याता यास्यंति यांतिच.

अहा! धन एकठुं करवाथी, जीवनमर्यादाथी, स्त्री संबंधी कामभोगथी, अने भोजनपदार्थ जमवाथी कोइ दिवस संतोष–तृप्ति पामतोज नथी!' इत्यादि इत्यादि विचारीने साध्वीजीओ शोध्युं के–" अहीयां पश्चाताप कर्ये कंइ वळे तेम नथी, माटे त्यां जइ समजाववाथीज प्रयास सफल थतां धर्मनी वृद्धि थइ अधर्मनो अंत आवशे." एम निश्चय करी गुरुणीजीनी आज्ञा

मेलवी विहार करी क्रममइ मथुरे पहोंच्यां अने कुबेरसेनानुं घर पुछतां तेणीने त्यां पहोंची तेणीनी पासे रहेवा माटे जग्यानी मांगणी करी. पछी वेश्याए चित्रशालामां रहेवानी खुशी बतावी अने बोली के–' साध्वीजी ! अहींयां रही एटली महेरबानी राखजो के, कोइ दिवस उपदेश न देतां फक्त पुराणनीज वातो करजो अने अमारुं बचुं रोतुं होय तो छानुं राखजो.'

साध्वीजी त्यां रह्यां अने धर्मध्यानमां लीन रही धारेली धारणाने सफल करवानो समय शोधवा लाग्यां. एकवार बपोरनी वखते बालक रोवा लाग्यो जेथी तेने छानो राखवा साध्वीजी हालरडां गावा लाग्यां अने ते साथे घणी सगाइनो संबंध बतावी अढार नातरां कही बताववां शरु कर्यां. भाइ ! रोइश नही ! जो तारी ने मारी एकज मा छे तेथी तुं मारो भाइ थाय छे १, वली तुं मारा धणीनो दीकरो छे जेथी मारो दीकरो पण थाय छे २, तथा मारा पतिनो तुं न्हानो भाइ होवाथी मारो दीअर पण थाय छे ३, मारा भाइनो दीकरो होवाथी तुं मारो भत्रीजो पण थाय छे ४, मारी मानो पति तेनो भाइ होवाथी तुं मारो काको पण थाय छे ५, अने शोक्यना

...नो दीकरो होवाथी प्रपुत्र पण थाय छे. ६. आम तारी साथे छ सगपण छे. तेमज तारा बाप साथे पण छ सगपण छे ते पण कहुं छुं. कुबेरदत्तनी अने मारी मा एकज छे जेथी ते मारो भाइ थाय छे. १, मारी मानो धणी जेथी ते मारो बाप पण थाय छे. २, मारा काकानो बाप होवाथी ते मारो वडवडो पण थाय छे. ३, शोक्यनो दीकरो होवाथी ते मारो पण दीकरो थाय छे. ४, मने परणवाना संबंधथी ते मारो पति पण थाय छे. ५ अने दीअरनो बाप होवाथी ते मारो ससरो पण थाय छे. ६. आम तेमनी साथे पण मारे छ सगपण छे. अने तारी मा साथे पण एवीज रीते छ सगपण छे ते ए के—मने गर्भमां राखी तेथी ते मारी मा थाय. १, काकानी मा होवाथी ते मारी वडीआइ थाय छे. २, मारा भाइनी वहू होवाथी ते मारी भोजाइ पण थाय छे. ३, सोक्यना दीकरानी वहू होवाथी मारी वहू थाय छे. ४, मारा पतिनी वहू होवाथी मारी सोक्य पण थाय छे ५, अने मारा धणीनी माता होवाथी ते मारी सासु पण थाय छे. ६, आम तमो त्रणे जण साथे मारे १८ जातनां सगाइ छे."

आ प्रमाणेनुं बोलवुं सांभली वेश्या रातीपीळी थइ नीचे आवी साध्वीजीने कहेवा लागी—'वाह ! वाह !! पंचमहाव्रतधारिणी छतां आवुं असत्य केम उच्चरोछो ? वगर पूछ्ये जुठुं बोलवाथी अधर्म गणाय छे. कहो बतावो के तमारुं बोलेलुं सर्व रीते साचुंज छे ?"

साध्वीजीए आद्यथी अंत लगीनी हकीकत कही अढारे नातरांनी सगाइ साबित करी बतावी. जेथी ते बन्नेना मनमां महा संताप थयो अने पश्चात्ताप साथे विचारवा लाग्यां के आपणाथी बहुज अनिष्ट—दुष्ट कर्म थयुं ! गजब गुजर्यो ! महापापनां दळ बंधायां ! हा ! शी रीते छूटको थशे ! खचीत आ संसार सार वगरनोज छे. फक्त सार श्री वीतरागदेवनो धर्मज छे.' वगेरे वगेरे पापनो पश्चात्ताप करी वैराग्यपूर्ण चित्त थये ते बेउ जणे पुत्रने अनाथाश्रममां सुंपी दीक्षा ग्रहण करी. अने तप जप वडे करेलां दुष्कर्म क्षय करी आयुना अंते मरण पामी देवलोकमां देवतापणे उत्पन्न थयां. आम संसारनो संबंध असार छे, एथीज व्याख्याननी भूमिकाना श्लोकनुं प्रथम पद कहे छे के गतसारेत्र संसारे—सार—मात्र रहित आ संसार छे. इम जाणी धर्मनोज संबंध करवो श्रेष्ठ छे.

पुनः बीजा पदमां कहे छे के–सुखभ्रांतिः शरीरिणाम्–संसारनी अंदर मनुष्योने सुख छे (शारीरिक सुख होय छे) एवी एक भ्रांति–भरमनाज छे. वास्तविक रीते जोइशुं तो संसारना दुःखभर जीवनमां फक्त मधुबिंदुना जेटलुंज सुख मानी लेवा जेवुं छे. एटले के मधुबिंदुआनी एक कथा छे ते आ प्रमाणे छे–

एक मनुष्य कोइ वखते वननी लीला जोवा किंवा अगत्यना प्रसंगने अनुसरी वनमां गयेल हतो अने वनमां पोतानी मुराद पूरी पाडतां दरम्यान एक जंगली गांडो हाथी दोडतो तेनी तरफ आवतो जणायो के ते जीव लइने नाशी पोतानो बचाव खोलवा लाग्यो. थोडे छेटे जतां एक गंभीर वडनुं झाड जोवामां आववाथी ते तेनी ऊपर चडी एक जबरी वडवाइने अवलंबी लटकी रह्यो. लटकवानुं कारण ए हतुं के–ते वडनी वडवाइ नीचे एक जंगी घेरावादार कूवो हतो जेथी ते वडवाइ नजीक हाथी आवी शके तेम न हतुं. तेमज हाथी कदाच झाडना थडने उपाडी ले तो पण आ कूवामां पडतुं मूकीने मारो जान बचावी शकीश, एवा इरादाथी ते लटकी रह्यो हतो.

हाथी पण दोट देतो वड केवल आवी पहोंच्यो अने वडने थड सहित उपाडी नाखवा सूंढनी सबलताथी थडने हचमचाववा लाग्यो. परंतु थड घणुं मजबूत होवाथी तेमां तेने तुरत सफलता मली शके तेम थयुं नही; तथापि ए थयुं के, ते थडने धंधोलवाथी आखुं झाड कंपी उठयुं, तथा जे वडवाइये ते भयभीत मानव वलगी रह्यो हतो ते शाखा पण कंपवा लागी. आम थवाथी ते शाखाना मूलमां रहेलो जंगी मधपुडो हतो तेनी माखीउ उडी, अने ते मनुष्यना शरीरने पोतानो पराभव करनार मानी चटका भरवा लागी. आथी कंइ कष्टमां तो मणा रही नही. शरीर सूजी गयुं. वेदनानो पार रह्यो नही. क्यांक क्यांक तो लोहीनी तसेरो पण फुटी नीकली अने बलतरा बलवा लागी, ते छतां ते माखीउने ते उडाडी शके तेवा हाथ छूटा कराय तेम न हतुं. शुं तेने एटलीज पीडाथी पती जाय तेम हतुं ? ना ! जे शाखाने ते वलगी रह्यो हतो तेने धोलो अने कालो एम बे उंदर कापी रह्या हता, जेथी त्यां वधारे वखत टकी शकवानो संभव रह्यो नहीं. नीचे पडतुं मूकवानी आशाने अमलमां लेवा धायुं तो ते नीचेना गहेरा कूवामां चार भयंकर मोटा साप अने

(एक)बे अजगर हता तेनीचे पडे तो खोराक मळे एवी लालसाथी म्हों फाडी जीभना लपकारा करी रहेला जोवामां आव्या. माथी हवे ऊगरवानो एके आरो रह्यो नहीं. मरणनो वायदो पूरो करवानी पळ नजीक नजीक आवती जणाइ. छतां पण आ बधा दुःख अने जपना विसारा रूप ए आनंदमां ते बधुं विसरी जतुं जणायुं. ते ए के, ते मधपुडाने कोइ हाथनो गोदो वागवाथी मांखीनुं टोळुं पण वेराइ जवाना लीधे पुडामानुं मिष्ट मध टपकवा लाग्युं अने ते मधनुं टींपु ते जपथी वींटायला मानवना म्होंमां आवी पडवा लाग्युं. आ मधबिंदुना मलराथी बधुं दुःख विसारे नाखी तेमांज तल्लीन बनी गयो. पण मरणे पोतानो केदी करवा तेनी चोमेर छावणी नाखी हती तेनुं तेने जरा भान रह्युं नहीं. एटलुंज नहीं पण तेवा समयमां एक विद्याधरनुं विमान त्यां थइ पसार थतुं हतुं तेमां बेठेली विद्याधरीए आ बापडा दुखियारानी वीतक वात ध्यानमां लइ पति प्रत्ये कह्युं—'प्राणनाथ ! आ मरणने वायदो पूरो करवानी अणी ऊपर पहोंचेला दुःखग्रस्त जनने आपण बचावी लइये अने विमानद्वारा तेने तेना घेर पहोंचतो करीए.' विद्याधरे कह्युं—'ए महामूर्ख

मदांध लोलुप मधबिंदुना सुख आगाहीथी दूर थइ पोतानो बचाव करवा चाहशोज नहीं माटे वृथा श्रम शा माटे करवो जोइये ? ' विद्याधरी स्त्रीजातीना नियम प्रमाणे हठपूर्वक बोली के–' आटलां दुःखोथी मुक्त थवामां मधुबिंदुनी लालचने कोइ वहाली गणे के ? पुरुषोनां मन हमेशां कठोर निठोर होय छे. ' इत्यादि सांभली विद्याधरे पोतानुं विमान ते मधुबिंदुना लोलुपीनी समीप लावी कहेवुं शरु कर्युं के–' हे भाइ ! हवे दुःखमां कशी मणा रही नथी. मरणना म्होंमां कोलियो थवानीज तैयारीमां छुं अने हवे जीवने मूकवे मार्ग नथी माटे तुं आ विमानमां आवी जा के जेथी तुं आ वधां दुःखोथी छूटकारो पामीश अने ज्यां तारी मरजी हशे त्यां तने पहोंचाडीश. हाल तुरत तुं आवी जीवनने सफलता मेलववा तत्पर था. "

आवी वाणी सांभली ते आतुरता साथे कहेवा लाग्यो–' भाइ ! मने उगारो तो तमारो मोटो आभार, पण जरा महेरबानी करी फक्त एक मधनुं टीपुं मारी जीभ उपर पडे तेटलो समय मने अहीं थोभवा दो, मने ए मधबिंदु वधा दुःखोनो विसारो करावी रहेल छे. अहा !

दुःखनुं तो सातपडुं वादल ऊझमी रह्युं छे, पण मधबिंदु अत्यंत मिष्ट होवाथी मने ए दुःखनी दरकार कमती रहे छे, माटे एक टीपुं पडवा दो ' आम एक टीपुं पड्युं के बीजा टीपानी लालच वधी अने बीजुं पड्युं के त्रीजानी आशा बंधाइ. ज्यारे टीपानी लालचथी मुक्त थतो जोवामां न आव्यो त्यारे तेनुं स्वरूप पोतानी स्त्रीने समजावी विद्याधर विमान सहित पोताना पंथे परवर्यो. आइ मधुबिंदुनी लालचमां लटकता रह्या. उंदरोए शाखा कापी नाखी के ते गहेरा कूवामां पड्यो अने पडतांनी साथेज अंदर टांपी रहेला जीवोए ग्रास करी लीधो. आइनो अंत आव्यो अने ते साथे आ मधुबिंदुनी वातनो पण अंत आव्यो. तथापि आमांथी सार ग्रहण करवानो ए छे के—जय–संसाररूपी अटवीमां प्राणीरूपी जीवात्मा विहार करतो रहे छे; परंतु तेनी पाछळ काळरूपी हाथी प्राण लेवा दोट दइ रहेल होवाथी जीववा माटे फांफां मारतो फरे छे, अने आयुरूपी वडवाइए वळगी रही जीवनने बचाववा यत्न आदरे छे; पण नथी जाणतो के वडना थडरूपी शरीरने काळरूपी हाथी मूळमांथी कुलेडवा मची रहेल छे, तेमज अंधारियुं अने

अजुवालीयुं पखवाडियां रूपी बे–काला अने धोला उंदर आयु वडवाइने कापी रह्या छे अने मोह रूपी ऊंडा कूवामां पडी बचवा इच्छनारा प्राणिने क्रोध मान माया तथा लोभ रूपी चार भयंकर सापो तथा राग अने द्वेष ए रूपी बे अजगरो तेने पोतानुं भक्ष करवा म्होंा फाडी जीभ लपकावी रह्या छे. छेपां वेरी सगांव्हालां रूपी मधमाखीओ चोमेर चटका मारी संताप्या करे छे छतां पण फक्त सांसारिक सुख रूपी मधना टीपानी लालचमां फसायलो प्राणी गुरू रूपी विद्याधर जिन वाणी रूपी विद्याधरीना बोधथी धर्म रूपी विमान के जे धारेले स्थले (स्वर्गापवर्गमां) पहोंचा-डवा शक्तिमान छे तेनुं शरण लेवा आग्रह करे छे; तथापि तेमने वायदो बतावी दुःखवेष्टित मध-बिंदुमां लीन रहेल छे. जेथी गुरू धर्मविमानो तेने भोका न गणतां पोताना अन्य स्तुत्य कार्यमां प्रवर्ते छे. आथी अंते आयु रूपी वडवाइ पक्ष मास वर्ष वडे पूर्ण कपाइ जतां ते अभागीओ प्राणी मोहकूवामां पडी कषायोनो कोळियो बने छे अने भवभ्रमणाने वश थयेलो जीव भवज-लमां लीन थइ जाय छे.

घणा लोको जाणे छे के अमे सुखी छीये; पण वास्तविकपणे जोतां सांसारिक सुख झांझवाना नीर (मृगजल तृष्णा) जेवुंज छे. एटले के तापना समयमां जेम हरिणो तरश लागवाथी पाणीनो पत्तो मेळववा खारा रणमां आम तेम नजर फेरवे छे; पण त्यां पाणी होतुं नथी; छतां पाणीथी जेवां सरोवर भरेलां भ्रमरूप देखाय नजरे पडतां ते मेळववानी आशाए दोडी दोडी अटके छे; पण आखर त्यां रीते पाणी न होवाथी ते आगुं ने आगुं जणातां ताप, तरश ने थाकथी हेरान थइ मरणने तावे थाय छे. एज रीते संसारी जीवो पण सुख मेळववानी आशातृष्णाने अवलंबी आम तेम दोडादोड करे छे; परंतु आखर धारेली धारणा भ्रमरूप नीवडतां निराश थइ कुत्सवाद वर्ना-हाय वोय करतां मरणने स्वाधीन थाय छे. कदाच सहेज सुख मळ्युं तेमां मूर्खनार्थी अज्ञान बालकनी पेठे अंगूठो धावतां स्तनपाननुं सुख मानी लेतो ते परिणामे दुःखी छे. फक्त तो माता स्तनपानथीज जाणी शके. कांइ अंगूठो चूसवे भूख भागे नहीं. अंगूठो चूसवाथी फक्त पोतानीज लाळ पोताना म्होंमां आवतां ते पदार्थने अंगूठामांथी मळेलो मानी

आनंद माने छे; परंतु सत्य बुद्धिथी तपासतां ते तद्दन घेलछा जरीज समज छे. अथवा तो जेम कूतरूं सूकापला हाडकाने करडतां ते हाडकानी करचो पोतानीज दाढोना पेढांमां भोंकातां तेमांथी लोही नीकळे तेने ते हाडकामांथी मळता लोहीना स्वादने मानी आनंदी बने छे, तेम पोतानांज छैयां-छोकरां के जे पोतानाज लोहीविकारनां गुच्छां छे तेने पाळी पोषी वगेरेनी संभाळथी साचववामां काळजी धरावी पोतानी कुशळता माने छे; परंतु सत्य रीते जोतां ए सघळां पोतानुंज लोही चूसनारां छे; छतां ते लोही चूसनारने पोतानां जीवनप्राण माने छे एज महा घेलछा छे. माटे ए बधी जळोजथा दूर करी आ जन्म परजन्ममां सुखसंपत्ति आपनार धर्मनुंज सेवन करी जन्म सफळ करवो के जेथी आत्मकल्याणनुं सुकान हस्तमां रहेतां भवोदधि तरी आत्मारूप जहाज पार पहोंचे छे !

व्याख्यान ३७ मुं.

—•—

(आर्या-छंद.)

खणभंगुरे अमारे, मणुअभवे अन्नपमत्तसात्त्यि;
सारं इत्तिअमित्तं, जं कीरइ सोहणो धम्मो. १

परम धर्मनायक दीनदयाल प्रणतप्रतिपाल त्रिभुवन भूपाल श्री देवाधिदेव जिनराज महाराज कथी गये छे के-हे श्रोताजनो! आ मायामयी संसार असार छे; छतां आ संसारनी अंदर दश दृष्टांते मनुष्य जन्म प्राप्त थवो अत्यंत मुश्केल छे.

॥ चुल्लग पासग धन्ने जुए रयणे य सुमिण चक्केय ॥ चम्म जुगं परमाणू दसदिट्ठंता मणुअलंभे ॥

चूलानुं १, पासानुं २, धान्यनुं ३, जुगारनुं ४, रत्ननुं ५, स्वप्ननुं ६, चक्रनुं ७, कूर्मनुं ८, धुंसरानुं ९, अने परमाणुनुं १० आ दश दृष्टांत नीचे मुजब.

प्रथम चूलाना दृष्टान्तनुं स्पष्टीकरण आ प्रमाणे छेः–एक चक्रवर्ती राजा अमुक ब्राह्मण उपर खुशी थइने बोल्या, " हे ब्राह्मण, तारी इच्छा होय ते माग, हुं आपवाने तैयार छुं " परंतु ब्राह्मण पोतानी स्त्रीने वशवर्ती थएलो होवाथी बोल्यो के हुं घेर जइने पछी विचार करीने मागीश. राजाए कह्युं भले जाओ घेर विचार करीने मागजो. आ प्रमाणे चक्रवर्तीनी सम्मति मलवाथी ब्राह्मण घेर आव्यो, हवे स्त्री पुरुष बेउ एकान्तमां बेसी विचार करवा लाग्या जे शुं मागवुं ? गाम गरास मागवाथी आपणे उलटो उपाधि वधशे. आपण ब्राह्मणने तो दक्षिणा सहित भोजननी प्राप्ति थाय तो तमाम मलेलुं गणाय. माटे स्त्रीए कह्युं, ' जाओ, वारा दीठ भोजन आपणने मले एवुं जइने मागो. स्त्रीनी शिक्षानुसार ब्राह्मण चक्रवर्ती पासे आवी उभो रह्यो त्यारे चक्रवर्तीए कह्युं, ' माग, माग; मागे ते आपुं. ' त्यारे ब्राह्मण विकस्वर मुखे बोल्यो जे ' हे महाराज ! आपना राज्यन्तरमां वारा दीठ अमने दरेक घर घरथी भोजन तथा दक्षिणा तरीके एक सोना महोर मले एवुं हुं मागुं छुं. '

मुवाविन व्याख्या नंबर १२८०।

आ वात सांभली चक्रवर्ती आश्चर्यमां मग्न थइ विचार करे छे के भले पुष्करावर्त्त मेघनो वरसाद वरसे तोपण पर्वत उपर तो पाणी तेनी उपरनी जग्याना प्रमाणमांज ठेरी शके. खेर, जेना जेना भाग्य तेवुंज तेने मले छे. आम क्षणवार चकित बनी विचार करी ब्राह्मणने प्रथम पोताने घेर भोजन करावी व सुवर्णमहोर आपी विदाय कर्यो. हवे चक्रवर्तीना छन्नु क्रोड गाममां भूला दीठ भोजन लइने ब्राह्मण फरीने चक्रवर्तीने घेर आवे खरो? कदाच देवना प्रभावथी वारा पुरा करी फरी चक्रवर्तीने घेर आवे तोपण मनुष्य जन्म फरी मलवो दुर्लभ छे.

हवे बीजा पाशक दृष्टान्तनुं विवेचन करे छेः—चंद्रगुप्त राजानो भंडार वधारवा सारु चाणाक्ये एक देवनी आराधना करी, त्यारे देवे प्रसन्न थइ तेने दिव्य पाशाओ आप्या. आ पाशा वडे जे कोइ बाजी रमे तेने कोइ जीती शके नहि.

आम होवाथी तेणे एक पुरुष के जे द्यूत क्रीडामां कुशल हतो तेने सुवर्णनी गिनीनो एक थाल भरी आपी तथा ते दिव्य पाशा आपी शहेरमां मोकल्यो. हवे ते पुरुष मोटा रस्ता उपर

वेसी बोले वे जे हे लोको, जे मने जीते तेने हुं आ सोना महोरथी जरेलो थाल आपुं, अने जो हुं जीतुं तो फक्त एक सोना महोर लेउं. आम जाणी घणा लोको तेनी साथे रमे ले, परंतु कोइनाथी ते पुरुष हारवो डुर्लन वे. तेमज मनुष्यावतार पण डुर्लन समजवो.

हवे त्रीजा धान्यना दृष्टान्तनुं स्पष्टीकरणः–डुनियामां तमाम प्रकारनां धान्यो एकठां करी तेमां एक पाली सरसव नांखी कोइ एक सो वर्षनी घरमी मोशीने ते धान्यनो राशि जुदो करवा हुकम करवामां आवे तो ते मोशीथी ते दरेक धान्य अलग अलग थवुं बहु डुर्लन्न वे, तेम मनुष्यनो अवतार पण डुर्लन वे.

चोथुं द्यूत दृष्टांतः–एक राजाने एकसोआठ स्तंजवाली एक सजा ले, प्रत्येक स्तंजनी अंदर एकसो आठ हांसो ले, एक दिवस एक पुत्रने राज्यनो लोन थयो जे मारे राजानी गादी उपर वेसवुं, आ वात मंत्रीए जाणी. हवे राजाए तमाम पुत्र प्रपौत्रने एकठा करी कह्युं के नाइ! जेनी राज्य लेवानी इच्छा होय ते मारी साथे जुगार रमे. मने जीते ते राजा थाय. परंतु तेनी

रीति आ प्रमाणेः—एक सो ने आठ दाव ज्यारे तमाम एक साथे आवे त्यारे एक हांस जीते, वली जो तेमां वच्चे राजानो दाव पडे तो तमाम व्यर्थ थाय, एवी रीते एकसो आठ हांस जीते त्यारे एक स्तंभ थाय. तेवीज रीते एकसो आठ स्तंभ जीतवा जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्यनो जन्म पण दुर्लभ छे.

पांचमुं रत्ननुं दृष्टांतः—कोइएक शेठनी पासे परंपराथी उतरी आवेलो तेमज पोते पण उपार्जन करेलो, अनेक रत्नोनो संग्रह हतो; कोइ पण दहाडो ते एके रत्न बहार काढतो नहोतो. एक समये ते देशान्तर वेपारने माटे गयो, हवे पुत्रोए विचार्युं जे पिता लोभथी रत्नो बहार काढता नथी, घरमां क्रोड सोना महोर छतां आपणी ध्वजा बीजा कोटीध्वजनी माफक केम न चढे? एम विचारी देशान्तरथी आवेलां रत्नो वेपारीने हाथे वेची नांख्यां, अने कोटीध्वज बन्या. शेठ देशान्तरथी आव्यो, अने रत्नो वेच्यानी वात जाणी, तथा पुत्रोने ते रत्नो पाछा वालवा हूकम कर्यो, परंतु हवे ते रत्नो पाछा मलवा दुर्लभ छे तेम मनुष्य जन्म पण दुर्लभ छे.

छहुं स्वप्ननुं दृष्टांतः—कोइ एक दिवसे, मूलदेव तथा एक भिक्षु उज्जयिनी नगरीनी बहार एक कोटडीमां सूतो छे, तेनामां बन्न जणने एक सरखुं चंद्र पाननुं स्वप्न आव्युं. मूलदेव ऊठयो, नवकार मंत्रने गणी, देवदर्शन करी तथा फल फूल हाथमां लइ निमित्तियाने घेर गयो. विनय पूर्वक पोतानुं स्वप्न निवेदन कर्युं, अष्टांगना जाण पंडिते प्रथम पोतानी पुत्री साथे विवाह करवानुं मूलदेवनी पासे कबूल करावी कह्युं जे हे मूलदेव ! तने आजथी सातमे दिवसे राज्यनी प्राप्ति थशे. तेज प्रमाणे थयुं.

हवे भिक्षुक बालक पण ऊठयो, तो तेणे पण गुरु पासे जइ कह्युं, "गुरुजी मैंने आज रातको सारा चंद्रका पान किया," गुरुजी अल्पज्ञ होवाथी बोल्या " बालक ! आज तेरेको घी गुडसें युक्त चंद्राकार रोटी मिलेगी." एज प्रमाणे थयुं. कालान्तरे हवे आ भिक्षुक बालकने मालूम पड्युं जे मारुं तथा मूलदेवनुं स्वप्न एक सरखुं हतुं, परंतु में विधिपूर्वक स्वप्ननी क्रिया करी नहि, में जो ते प्रमाणे कर्युं होत तो हुं पण राजा थात. हवे हुं फरीने तेज प्रमाणे एवाज स्वप्नने माटे

पूर्वोक्त कूटीमां जइने शयन करुं, आम विचारी चंड पानना स्वप्न माटे गयो, परंतु हवे ते स्वप्न जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्यनो जन्म पण दुर्लभ छे.

सातमुं राधावेधनुं दृष्टांतः—एक स्तंभनी उपर आठ चक्र निरंतर फरतां रहे छे, तेमांना चार चक्र उलटा फरे छे, अने चार सुलटा फरे छे. तमाम चक्रने आठ आठ आरा छे, तेनी उपर एक पूतली छे ते पण चक्रनी माफक फरती रहे छे. हवे ते पूतलीनी डाबी आंखने, नीचे भरी राखेली तेलनी कुंडीमां पडता प्रतिबिंब तरफ दृष्टि करीने, जे कोइ पुरुष बाण वडे विंधे तेणे राधावेध साध्यो गणाय; परंतु ते जेम दुर्लभ छे तेम मनुष्य देह पण पामवो दुर्लभ छे.

आठमुं कूर्म दृष्टांतः—अमुक विस्तीर्ण तलावनी अंदर एक काचबानुं कुटुंब आनंद सहित निवास करे छे. ते तलावनी अंदर लील फूल एटली बधी बंधाणी छे के जरापण जलनुं दर्शन थवुं दुर्लभ छे, परंतु एक दीवसे कर्म योगे वायुना जोरथी सेवालने खसवुं छे के तेज वखते काचबाने त्यांज डोक बहार काढवी छे, तेवा समयमां काचबाने पूर्णिमाना चंद्रना दर्शन थयां, का-

चवे विचार्युं जे हुं एकलो अपूर्व आनंद ज्ञोगवुं तेना करतां मारा कुटुंबनी साथे आनंद लेउं तो ठीक, आ विचारी कछप पाणीमां गयो, अने कुटुंब परिवारने लइने पाछो आव्यो तेटलामां तो ज्यां सेवाल खसी गइ हती ते छिद्र पुराइ गयुं, कूर्म फरी फरीने थाक्यो, परंतु हवे जेम ते छिद्र पामवुं डुर्लज्ञ छे, तेम मनुष्य जन्म डुर्लज्ञ छे.

नवमुं युग समीला दृष्टांतः—कोइ एक विद्याधर बे लाख योजन प्रमाण लवण समुद्रनी अंदर युगने (धोंसराने) पूर्व किनारे नांखे तथा समीला एटले धोंसरामां नांखवानी खीलीने पश्चिम किनारे नांखे, हवे ते बेउ एकठा थइ खीली धोंसराना छिद्रमां स्वयमेव आववी डुर्लज्ञ छे तेम मनुष्य ज्ञव डुर्लज्ञ समजवो.

परमाणु दृष्टांतः—कोइ एक देव एक स्तंज्ञनो चुरो करी तेने वांसनी नलीमां ज्ञरी, मेरु पर्वत पर चमी दशे दिशामां फेंकी दे, हवे ते परमाणुउने एकत्र करी फरी स्तंज्ञ बनवो माणसथी डुर्लज्ञ छे तेम मनुष्यनो अवतार डुर्लज्ञ जाणवो.

केटलाएक भद्रिक परिणामी जीवो दश दृष्टांते दुर्लभ केवल मनुष्य जन्मने समजे छे, परंतु तेनी साथे एटलुं पण विशेष जाणवुं के मनुष्य जन्मनी पूर्वमां पण एटले द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय थवुं, एम चतुरीन्द्रिय यावत पंचेन्द्रिय थवुं ते पण दश दृष्टान्ते दुर्लभ छे, तेज प्रमाणे मनुष्य जन्म पाम्या पछी पण आर्यदेशादिकनी जोगवाइ मलवी ते पण पूर्वोक्त दश दृष्टान्ते करीने दुर्लभ जाणवी.

कदाच मनुष्य जन्म प्राप्त थाय; परंतु आर्य-पवित्र क्षेत्र तथा श्रीजिनवरभाषित धर्म पामवो अत्यंत मुश्केल छे. छतां पूर्व पुण्यना संयोगवशे ए बधा संयोगो प्राप्त थया, तो जीव प्रमाद वशथी धर्मनुं सेवन करतो नथी. ते तो पुत्रना के स्त्रीना स्नेहमां अथवा धन, धान्य, परिवार, मित्र, वैभव अने रूप आदिमां लीन रही धर्मनो अनादर करे छे जेथी भव हारी जाय छे. पण जीवने जाणवानी जरूर छे के संसारनो संबंध बनावटी छे. अने एवो ख्याल थवा महेश्वरदत्तनी कथा ध्यानमां लेवा जेवी छे ते ए के—

विजयपुर नगरनी अंदर महेश्वरदत्त नामनो व्यापारी रहेतो हतो. तेने पुत्र न हतो जेथी

ते चिंतामां निमग्न थइ चिंतववा लाग्यो–' मारा मरण पछे मने पाणी कोण आपशे ! श्राद्ध कोण करशे ! पुत्र वगर नखोदियानुं घर शूनुं गणाशे ! पुत्र विना सद्‌गति थशे नहीं अने कह्युं पण छे के–

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नेव च
तस्मात् पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥ १ ॥

अपुत्रियानी गति थती नथी, तेमज स्वर्ग मळवानुं होतुंज नथी, ते माटे पुत्रनुं म्होंं जोवामां आवे त्यारबाद धर्म करवा उद्यमी थवुं.' वगेरे वगेरे चिंतवी अनेक देव देवियोनी बाधा मानता औषध प्रयोग आदि उपयोगमां लीधा. एथी दैवयोगे स्त्रीने गर्भ रह्यो अने गर्भकाल पूर्ण थये पुत्ररत्ननी प्राप्ती थइ. आम होवाथी अपार आनंद थयो. अवगति थवानी चिंता दूर गइ. पुत्र महसेननी लालन पालन प्रीणन पोषण वगे पुत्रनी मावजत थवा लागी अने शुक्लपक्षनी चंद्रकला समान दिनप्रतिदिन वर्धमान दशाने पामी पुत्र मोटो थतो चाल्यो. विद्याभ्यासनो

४, वेठेलुं अपमान ५, अने ठानो भेद ६ आ छ बाबतो सदा गुप्तज राखवी योग्य छे. कारण के जाहेर करवाथी लोकहांसी ने घरमां हानि थवानो संभव रहे छे.

आम थवाथी महसेननी स्त्री मनमां समजी गइ के–' मारुं कुकर्म नजरोनजर जोया छतां जारनो नाश कर्यो; पण मने कशुं कहुं नहीं, तेमज ए वात क्यांय जाहेर पण न करी जेथी मारे अनाचार निवारी दीर्घदर्शी पतिनी सेवा करवी एज हितकर छे, ' एम विचारी सदाचारने तावे रही ते पतिसेवा करवा सावधान रहेवा लागी.

महसेननो पुत्र जेम जेम मोटो थतो चाल्यो तेम तेम पोते घणा प्यारथी रमाडतो महानंद मानतो हतो; पण ते जाणतो न हतो के जेने में रोषवश थइ बेजान कर्यो छे ते शत्रुज आ पुत्रपणे पेदा थयो छे अर्थात् शत्रु ते मित्र थइ प्रकटेल छे अने राखेलो ते पुत्र थइ महासेननी स्त्रीने पण आनंद आपी रहे छे एटले वहूने मातानुं पद आपी जार पुरुषनो जीव मस्त बने छे.

एक समय पोताना बापनुं श्राद्ध आववाथी श्राद्धने दिवसे पितानी सद्गति थवा माटे पिंड

आपवा विचारी महसेन पोताना बापनो जीव पाडो थयो छे तेनेज शरीरी लाव्यो अने तेनोज वध करी पिताने पिंड आप्यो. अहा ! पितानाज पिंडना मांसथी पिताने तृप्त कर्या ! पिताना नामथी श्राद्धपिंड आपी पितानी सद्गति करी (!) पुत्रना हाथथी पिताना जीवनी मुक्ति थइ !!!

ए प्रस्ताव समय एक ज्ञानी-अवधिज्ञानवान् मुनिमहात्मा विहार करता जता हता, तेमणे धामधूमने ध्यानमां लइ ज्ञानोपयोगथी जोयुं तो अनर्थ जाणी महसेनने प्रतिबोधवा माटे तेनी समीप जइ मस्तक धूणी ज्ञानी गुरु कहेवा लाग्या—

पुष्णाति स्वपितुर्मांसं शत्रुमुत्संगसंगतम् ॥ विधत्ते च पितुःश्राद्धं महामोहविजृम्भितम् ॥ १ ॥

पोताना पितानुं मांस खवाय छे, पोताना शत्रुने खोळामां लइ पितृमांसथी पोषण कराय छे, दुश्मनने लालपाल कराय छे अने म्होंथी कहे छे के हुं बापनुं श्राद्ध करी पिंड आपुं छुं ते तेने मळतां सद्गति थशे. अहा ! जीवनुं अजाणपणुं तो जुवो ! खरेज मोहनी वात महान् विषम छे !!

आवुं सांभळी आश्चर्य अने खेद साथ साधु महाराजने पगे लागी कहेली वार्तानो खुलासो

पूछवा लाग्यो. एटले महात्माए अथेति संबंध कही वाकेफ करी तेनो भ्रम दूर थवा उद्यम आदर्यो. अने निःशंक थवा महासेने (तेनी प्रतीति माटे) पुनः प्रश्न कर्यो–' के मारी मा कूतरी थइ छे ते जीवती छे माटे तेनो कंइ दर्शनीक पूरावो आपवा कृपा करो.' गुरुए कह्युं–' आ वात सांभलतांज तारी माता–कूतरीने जातिस्मरण ज्ञान थयुं छे जेथी तारा घरमां दाटेलुं धन एनी जाणमां होवाथी ते खोदी बतावशे; माटे तेनी पाछल पाछल जा !' आटली वात थतांज कूतरी अगाडी थइ अने घरमां जइ दाटेलुं धन खोदी बताव्युं, एथी महासेनने गुरुकथित वचननी पूर्ण प्रतीती थइ. आह तरफ कंटालो बताव्यो. जैनधर्म अंगिकार कर्यो. स्त्रीए पण जिनप्ररूपित अहिंसा एज परम धर्म छे ए तत्वने कबूल कर्युं. अने ते पछी अनेक दान पुन्यना प्रकार उपयोगमां लइ सुकृत्य करवावडे जीवनगाली आयुना अंते बेउ स्वर्गे गयां. आ प्रमाणे संसारनी सगाइनो संबंध छे एथी सार रहित होवाथी असार छे, अने तेमांना दरेक पदार्थो पलमां फालेला फूलेला तथा पलमां करमाइ धूल साथे मलेला नजरे पडे छे. मात्र वापरानी झपट लागवाथी होतो राज थइ जाय

तेवी रीते मानवज्जव क्षणमां लय थनारो जणाय छे. अथवा तो शरदनी वादळघटा रूप आवेल छतां क्षणमां पवन योगथी विखराइ जइ तेनुं नाम निशान पण जणातुं नथी तेवो क्षणज्जंगुर मानव देह छे. अथवा काचनी शीशी जेवो जराक टचलातां फूटी जाय तेवो नाशवंत मानवदेह छे. ए ध्यानमां लइ असार संसारमां क्षणज्जंगुर देहवमे सार रूप जैनधर्मने शुभावे आदरी पाळी दया धर्मने दिलमां टांकी मानवजन्मने सफल करवो अने जे जिनधर्मवमे ज्जूतसमयमां अनेक जीवो तर्या छे, वर्त्तमान समयमां तरी रह्या छे अने ज्जविष्यमां अनेक जीवो तरशे तेज धर्मनुं शरण लेवा सतत उद्यम आदरी कल्याण मंगलीक माला वरवी एज श्रेयस्कर छे !

व्याख्यान सातमुं.

(आर्या छंद.)

संसारे मानुष्यं सारं हि मानुष्ये च कौलीन्यम् ॥
कौलीन्ये धर्मत्वं धर्मत्वेचापि सदयत्वम् ॥ १ ॥

त भगवंत केवलकमलावंत मुक्तिवधुकंत: अनेक सुरासुर सेवित भव्य जीवोना
धर्मनो सार मरूपी गयेल छे के–चार गति रूप संसारमां भटकतां दश
रव प्राप्त थयो एज संसारनुं सारपणुं छे. केमके जन्मस्थल चोराशी लाख
ष्य जन्म जेवो भव प्रशंसाने पात्र बीजो छेज नहीं. श्रीउत्तराध्ययनजीमां
ारि वाणिया गांठे मुंडी बांधी लाभ मेलववा परदेश गया हता. ते पैकी
ाखी तेनी उथलपाथलवडे विशेष लाभ मेलव्यो. बीजे लाभ न मेल-
राखी अने त्रीजाए मुंडी गमावी दीधी. एवीज रीते मानवभव
वनी गति प्राप्त करे ते मुंडी कायम राखी लाभ मेळव्यो गणाय अने
तो गांठनी मुंडी गुमावी गणाय. आम होवाथी लाभ मात्रनुं मूल
छे. न्ममां पण उत्तम कुलनी अंदर जन्म अने तेमां पण श्रावक कुलना
क प्राप्त य तो धन्यातिधन्य मनाय छे; केमके श्रावक कुलमां जन्म लेवा इंद्र

महाराज जेवा पण उत्कंठा धरावे छे. अर्थात् जेनो पूर्वपुन्य संचय जबरदस्त होय तेज श्रावक (श्रद्धा विवेक अने क्रिया युक्त शुद्ध श्रावक धर्मवंत) कुलमां जन्म पामे छे. अरे ! श्रावककुलमां पुत्र पणे तो शुं पण दास पणे पेदा थाय तो पण अहो भाग्य गणाय छे के जेमां हरहमेशां सदाचार सद्धर्म अने सत्क्रियाज जोवामां पालवामां आवे छे. श्रावक कुलमां जन्मवाथी धन्यवादने पात्र नथी; परंतु भक्ष्याभक्ष्य-पेयापेय-कृत्याकृत्य-लाभालाभ वगेरेनुं जाणपणा युक्त प्रतिपालन करवामां आवतुं होय, दया एज मुख्य धर्म छे एम समजी प्राणांते पण दयानो किंचित् पण भाग खंडन न थता होय, एटले के पोताना जीव समानज परना जीवने किलामना-पीडा तकलीफ-मननुं दुभावापणुं पूर्ण पणे जाणवा पालवामां आवतुं होय एज श्रावककुल पाम्यानो सार छे. नही के नामनाज श्रावक गणाइ जिनभाषित वचन प्रमाणे यथास्थित न चालतां वामधूम रूप धर्म मानी पापव्यापारमांज जीवन गाले ते श्रावक कहेवाय. श्रावक एकवीश गुणथी अलंकृत होवो जोइये. ते केवा-

१५ दीर्घदर्शी–परिणामे सुंदर काम एटले बहु लाभ ने थोडी महेनतवालुं होय अने केलवायेला माणसने वखाणवा लायक होय तेवां काम करनारो होय ते. १६ विशेषज्ञ–अपक्षपातपणे वस्तुतना गुणदोष जाणनारो होय ते. १७ वृद्धानुगामी–ज्ञानादी गुणे करी वृद्ध माणसनी पाछल चालनारो होय ते. १८ विनयी–जेना वडे आठ प्रकारना कर्मनो नाश कराय एवा सम्यक् ज्ञानदर्शनादी गुणोए करी सहित. १९ कृतज्ञ–करेला गुणने बराबर जाणनार होय एटले विना कारणे उपकार करनार गुरुमहाराजने पण खरी बुद्धिथी परम उपकारी गणीने तेमनुं बहु मान करनारो होय ते. २० परहितार्थकारी–पारकानुं हित करवामां तैयार रहेनार तथा बीजाने खरो धर्म पमाडवामां तत्पर होय. २१ लब्धलक्ष्य–प्राप्त थयुं छे जाणवा लायक अनुष्ठान ते जेने एवो पुरुष ते सुखे करीने सघलुं धर्म कर्तव्य जाणी शके छे.

अने मदा परनी पीडा ध्यानमां लेतो होय तेज शुद्ध श्रावक गणाय छे. जे परनी पीडा–पीर विचारे तेज पीर–महान् पुरुष गणाय छे. कह्युं छे के–

देखो सब तन पीर है, पीर बिना तन नाहिं; जे परपीर न जानही, सो बेपीर कहाय ! !

एज श्री तीर्थंकर देवना उपदेशनो सार छे ते जाणी अमलमां आणी प्राणी पूर्ण पणे तेमां दृढ रहे तो आ भव अने परभव सुखसंपदा तेमज, अंते मुक्तिकमलाने वरी सिद्ध पदनां भोक्ता थाय छे !

* व्याख्यान आठमुं.

(गाथा छंद.)

महरा वुड्ढा य पासह, गब्भत्थावि चयंति माणवा ॥
सेणे जह वट्टपहरे एवं आउखयंमि तुट्टइ ॥ १ ॥

श्री जिनेश्वर सकल दुखहर परम सुखकर नमत सुरासुर नर नरवर भविकजनहितकर

* आ व्याख्यान शोकनिवारणार्थे उठमणाना समय अगर शोकवंतना मनने शांति आपवा समय विशेष वांचवा लायक छे.

मानव शरीरनी स्थिरताने माटे श्रा प्रमाणे कही गयेल ठे के–हे महानुज्ञाव ! श्रा संसार असार डुःखतणो जंमार ठे त्यां कर्मनी वहुज मारामार ठे. एवा संसारनी श्रंदर मनुष्य देह पामीने जे जीवे धर्म न कर्यो तेणे मानव देह पामीने नकामुं जीवन गुमाव्युं कहेवाय. वाढ्यावस्था वाल खेलमां, युवानी रामाना रसमां श्रने वृद्धपण हाय वोयमां वखत वीतावी.मरणना मुखमां स्थान ले ठे तेनो फोगट फेरोज ठे. केइक मानवोने रुष्टपुष्ट महा स्वरूपवंत, रूपवंत स्त्री, मनहर वालक श्रने मनमानता धननो संयोग ठतां तेनो वियोग स्वीकारी पराणे यमदूतोना तावे थवुं पमे ठे, ते पण व्यर्थ जन्मारो गणाय ठे. कोइ जीवो गर्ज्ञमांना गर्ज्ञमांज मरणने शरण थइ बीजी योनिरूप कारागृहनी कोटमीमां केदी वनी रहे ठे. केइक मास ठमास वर्ष वे वर्षज जीवीने श्रा फानी डुनियां शरायथी कूच करी बीजे फेरा नाखे ठे. केइक रोग शोकना ज्ञोग थइ म्होतने मेलवे ठे ए वधांनो जन्म नकामोज थइ पमे ठे. जे जीवे गत जन्मनी श्रंदर दया न पाली होय–हिंसा पापकर्मज कीधा कर्यां होय ते जीवो टुंक श्रावरदावाला थाय ठे; जेथी वेठे वेठे बगासुं खाते,

ओकर वागते, के हृदय बंध पडी जते जीवन सफरने संकेली ले छे. आ जीव रूप चकली ऊपर कालरूप बाज अचिंतो झपट मारी, किंवा कबूतरना बच्चा ऊपर समडी कागडो सहसा अणधारी झपट मारी पोताना परिवारथी विखूटां करी चोंक मरडी नाखे छे अने ते बच्चानां मा बाप पंखी मां चीं चा मचावी बने तेटलुं करे छे; छतां पण निर्दय आमिष भक्षीओ पोताना भक्ष्यने लइ जइ रामशरण करी दे छे. एज मुजब आपणा मानव शरीर ऊपर पण पळे पळे काळ चोट दइ रहेल छे ने ते केइ वेळाए चोट मारशे चोटनी सफलता मेळवशे तेनी कशी खबर पडती नथी. ज्यारे पत्नी मा बाप भाइ बहेन आदि सगां सम्बंधीओ रुवे रडे अने बेसुमार करुणांत साथ छाती माथां कूटी झटियां चुंटी देहने दुःख आपे; तथापि ते जीव तो गयो ते गयोज. फरी ते कोइ प्रकारे रोनाराओ तरफ नमणो वाळी शकतोज नथी. माटेज हे जीव! सदैव धर्म–करणी कर्या कर के जेथी ते काळ पण कशुं न करी शके तेवी गतिनो जोगो थइ शके. तारा मनमां एवुं न जाणतो के मारे मरवुंज नथी. कोइ पदार्थ प्राणिमात्र अमरपटो लखावी लावेलज नथी! तो पछी स्थिरता शी

वीनती करी के–' हे तरणतारण परमोपकारी परमात्मन् ! वद्दोत्तर वर्षनी वेकी वे तेथी एकी पण एक समय वधारी पछी सिद्ध पदने प्राप्त करो !' एना उत्तरमां परमेश्वर महावीरे ए फरमाव्युं के–

॥ घमी न लब्भे ग्रग्गली, इंद्द आखे वीर;॥ इम जाणी जिय धर्म कर, जब लग् वहे शरीर.॥

इत्यादी बोधद्वारा इंद्रने समजावी जाहेरमां आव्युं के निमायली आयुमर्यादामां कोइथी पटामो के वधारो थइ शकतो नथी. एथी हे जीवो ! कोइ जीवन माटे गर्व न करशो केमकेः–

॥ जे नर गिरि कंपावता, सायर घूंट भरंत;॥ ते नर धरतिमें सम्या, मत कोउ गर्व धरंत. ॥

अर्थात् जे पर्वतने पण धूजावी नाखता हता अने दरियानुं पाणी एक घुंटमो करी पी जता हता तेवा महान् प्रतापी पण कोण जाणे केइ वखते धरतीमां समाइ गया तेनी पण खबर पमी नही, तो तुं ते धरतीमां नही समावानो ? अलबत साढा त्रण हाथनी धरतीमांज समावानो.

तीर्थंकर भगवान पण काल धर्मने अंगीकार करे छे, तेमज गणधर भगवान के जे काची

वे घडीनी अंदर चोर पूर्ण उलटां सुलटां गणी जाय ते पण आयु पूर्ण थये क्षणवार पण स्थिर रही शके नहीं. तथा इंद्र महाराज अनेक देव देवांगनाना परिवार मध्ये बिराजता छतां कालने तावे थाय छे अने जेम वायरानी झपट लागतां दीवो बुझाय तेम देवपति मरणने शरण थाय छे. वली चक्रवर्ति के जे १४ रत्नना निधानरूप, ६४ हजार स्त्रीओना पति, सवा लाख साहेलीओ, चोराशी लाख घोडा, ८४ लाख हाथी, ८४ लाख रथ, अने छन्नू क्रोड पेदलवंत छ खंडनो भोक्ता होय छे. ते पण आखर मरी जाय छे. वासुदेव के जे त्रणसेने साठ संग्राम—लडाइ पोतानी जातथी करनार, त्रण खंडपति छतां म्होत आव्ये तेथी लडाइ लीधा विनाज शरण थाय छे. बलदेव के जे देवलोकनी के मोक्षनी गति पामवावाला ते पण काल खूटये पलवार टकवा पाम्या नहीं. तो ना मनुष्य शा हिसाबमां छे के जे संसारमां धार्या प्रमाणे स्थिरता करी शके ?! माटेज संसा- ... संसारना सर्व पदार्थोनी अथिरता समजी जीव फरी जन्म मरणने शरण ... शोक संताप बंध पाडी खरुं व्हाल जणावो.

नही के तीह तार आंनु वगेरे वेदवानो, धर्म करणी बंध करी, रोड कुटी आर्त रौद्र ध्यानने वश थई तमो पोते अने ते मरनारना व्हाला जीवने नारकमां पडवा उद्यम करवो. केमके—

राग; मल्हार.

जे तन रंग पतंग सरीखो, तमो जशे सही एतोरेजी;
एनी ममता म्हेली अलगी, चेतनजी ऊट चेतोरेजी. १
बाजीगरनी बाजी जेवी, जगनी रचना जाणोरेजी;
तेमां शुं तल्लीन बनीने, मोज मजाह माणोरेजी. २
सगां सर्व स्वारथनां संगी, मित्र तहु मतलबनारेजी;
तारुं मानुं कोइ नथी तेथी, तज तजनी तुं तयनारेजी. ३
जगजानी जेवी जे लक्ष्मी, ते न थशे कदि ना'रीरेजी;
मरन बनी मगरुर मूरखना, मान मा'री मा'रीरेजी. ४

व्या० ८

१२०२१

छल प्रपंच छोडी चटपटतुं, करीहये सुकृत्य–कमाणीरेजी;
मान वचन पूर्णकुनां आ, जरूर हितकर जाणीरेजी. ५

प्रिय श्रोतागण ! ध्यानमां लेवानी खास जरुर छे के–

संसारंमि असारे नत्थि सुहं वाहिवेयणा पउरे ॥
जाणंतो इह जीवो न कुणइ जिणदेसियं धम्मम् ॥ १ ॥

आम होवाथी आ संसार सर्व रीते असार छे. फक्त धर्म एज एमां सार छे. तेमज एज संसारनी अंदर अंश मात्र पण सुख नथी. वली व्याधि वेदनाओथी भरपूर छे. इत्यादि जाणवामां आवतां छतां जिनेश्वर प्रणित धर्म करता नथी. जे धर्म करे छे तेज भवसमुद्रने तरी पार पहोंचे छे अने उत्तरोत्तर श्रेय मंगल कमला प्राप्त करे छे. एम जाणी भव्यप्राणी वीतराग देवनी वाणी सरूपे सहदे पाले सांभले ते आ भव परभव आनंद मंगल वरी अंते पंचम गतिनो मोक्ष अव्याबाध शांति दितार्थे शांति प्रभुनुं ध्यान धरो.

सुधारे दयालच नंबर १२०४। रोगी मांसे थता नथी अने शरीरे सबल रही दरेक कार्यमां फतेह मेलवनार थाय छे. या० ९

त्रीजो धर्म तपस्या छे, ते करवा-पालवाथी अशुभ कर्मनो अंत आवे छे. अशुभ कर्म आठ प्रकारनां छे ते ए के-ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरणी कर्म, वेदनी कर्म, मोहनी कर्म, आयु कर्म, नाम कर्म, गोत्र कर्म अने अंतराय कर्म-ए आठे कर्मनी अंदर फसावाथी जीव त्रिविध दुःख भय दुर्गति प्राप्त करे छे ते तपस्या आराधवाना प्रतापवडे नाश पामे छे, अर्थात् तपस्या करनार जीव कर्म रहित थइ पंचमी गतिनो भोक्ता थाय छे.

चोथो धर्म सारी भावना भाववी. जे जीव सारी भावना भावे छे ते जीवनां नठारां कर्मो क्षय थाय छे. केमके भावना भवभ्रमणानो नाश करनारी छे. तेमज दान देवामां, शील पालवामां तपस्या करवामां पण सारी भावनानी खास जरूर छे, जो ए सर्वनी अंदर सारी भावना न होय ते बधुं छार उपर लीपण कर्या जेवुं नकामुं जाणवुं. भावना अनित्यादि बार प्रकारनी छे ते भावतां भवसमुद्र निर्भीतिवडे तरी पार जवाय छे. १२०४१

केइक जीव दानदेवाथी, केइक जीव शीलपालवाथी, केइ तप करवाथी अने केइक जीव भावना भाववाथी भीम भवोदधि तरी गयाछे, जायछे अने भविष्यमां तरशे, ए निर्विवादनो विषयछे

आ चार विध धर्मनां मूलतत्त्वो जाणवा उत्सुक थवानी विशेष जरुर छे. दरेक बाबत उपर चोटियापणे सांभलवाथी तेनो खरो ख्याल के ऊंडा रहस्यनी पिछाण पडती नथी. भले थोडुं सधाय तेनी दरकार नहीं, परंतु ते शुद्धपणे-परमात्मानी आज्ञा प्रमाणे थाय तो अवश्य कथन मुजबज फल प्राप्त थाय छे.

ज्यां लगी लोकरंजन माटेज जे कंइ धर्मना चारे प्रकारने अमलमां मूकाय ते कंइ यथार्थ-फल आपी शकता नथी. वखते अज्ञानना संगी थतां लाभने बदले हानी हाथ लागे छे.

सांसारिक व्यापारमां पण वस्तुनो पूर्णपणे भाव समजी, नफा तोटानो ख्याल राखी लाभसपर तेनुं वेचाण के खरीदी करवामां आवे तो बेशक नफोज प्राप्त थाय छे.

न, शील, तप, भाव-ए चारेना पण भेद, नियम अने फल वगेरे तथा

पुर्णपणे ध्यानमां लइ तेनुनो उपयोग अमलमां मूकाय तो निःसंदेहपणे उत्तरोत्तर ममभानतो लाभ हाजरी आपे छे.

एम जाणी भव्य प्राणी निज हितने ध्यानमां आणी ए चारे प्रकारोने इष्ट–उपासना रूप धर्म मानी तेमनुंज सेवन करो के जेथी आ भव आनंद-मंगल-कमला वराय अने परभवमां मुक्ति लक्ष्मीने वरी अजर अमर थवाय–आ वचनोना नियमने जे कोइ श्रोताजनो सांभळे पाळे सद्दहे तेहने घेर मंगलिकमाला प्रकटे अने दुःखवादल विघटे !

व्याख्यान दशमुं.

—»⊗«—

(अनुष्टुप् छंद.)

देवपूजा गुरूपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः ॥
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥

श्रीजिनेंद्र भगवान नरेंद्र सुरेंद्र-वंदित-पादपद्म, देवदेवेश सेवित वीतराग प्रभो गृहस्थाश्रमनां नित्यकर्म आ प्रमाणे कथी गयेल छे के-वीतराग देवनी निरंतर त्रिकाल विधिवत् पूजा करवी. तेमां पण द्रव्यपूजा अने भावपूजा एवा बे भेद छे ते. द्रव्यपूजा ए के पूजनना द्रव्यो एकठा करी ते वडे क्रमशः पूजा करवी. अने भावपूजा ए के-भगवाननी गुणस्तवना करवी, दर्शन करवां, मानसिक पूजोपचार सह उच्च भावश्रेणीनो संचय करवो ते छे. आ श्रावकनी प्रथम करणी छे. १

बीजी करणी ए छे के-सद्गुरुनी सेवा करवी. गुरुमुखथी सुशास्त्र श्रवण करी मनन करवां. भणवुं गुणवुं अने गुरुराजनो विनय करवो, तथा भाव भेद समजी हृदयमां ते संबंधी विचार बांधवो, २

त्रीजी करणी ए छे-नवकारमंत्र गणवो, स्वाध्याय ध्यान धरवुं अने ते ध्यानवडे पापनी निवृत्ति करवी.

पोषी करली ए छे के-प्रतिदिन नियम पली न शके तो बीज, पांचम, आठम, एकादशी, चोदश, पुनम, अमावासना दिवसे लीलोतरी, अनंतकाय, अभक्ष्यनो त्याग करवो. अभक्ष्य एटले न खावा लायक वस्तुओ बावीश छे ते ए के- व्या.१०

पंचुंबर चउ विगई, हिम विस करगेय सव्व मिट्टीय ॥ राइभोयणगंचिय, बहुबिय अणंतसंधाणा ॥ १ ॥
घोलवडा वायंगण, अमूणीयनामाणि फुल्लफलयाणि, तुच्छफलं च चलियरसं॥वज्जइ दव्वाणि बावीसं॥२॥

पीपरना पीपिणो १, वडना टेटा २, गुलर-उंबरानां फल ३, काकोडुंबर-पाकर (कालां उंबराना फल-गुल्लर) अने पीपरना फल ५, (ए फलोमां झीणा-सूक्ष्म त्रसजीव घणा होय छे माटे खावा लायक नथी.) चार महाविगय ते एज के-मद्य ६, दारु ७, मांस ८ अने ए, मांखण ए चारना अंदर तदुना रंग भरनाज समूर्छिम जीवोनी उत्पत्ति होय छे माटे एहनो उपयोग करवाथी धर्मनो नाश पाप अने शरीरमां रोगो थवाथी जिंदगी जोखममां आवी पडे छे. बीजा धर्मोमां एम कह्युं छे के-

१२०४

मद्ये मांसे मधुनिच नवनीते तक्रतो बहिर्नीते॥उत्पद्यन्ते विलीयंते सुतिसूक्ष्मा जंतुराशयोऽत्र ॥१॥
सप्त ग्रामे च यत्पापमग्निना भस्मसात्कृतम् ॥ तदेतज्जायते पापं मधुबिंदुप्रभक्षणात् ॥ २ ॥

दारुनी, मांसनी, मधनी अने छाशथी अलग करेला माखणनी अंदर अत्यंत सूक्ष्म जंतुओना समूह पेदा थाय छे अने लय थइ जाय छे. तथा सात गाम बाळी न्हेखी वाळ्यां होय तेटलुं पाप एक मधनुं टीपुं खावाथी प्राप्त थाय छे. माटे ए चारे चीजो अभक्ष्य छे. ए

हीम—बरफ असंख्याता अप्कायनो पिंड छे जेथी ते अभक्ष्य छे. १०, तथा झेर अथवा तो झेरी वस्तुओथी बनेली चीजो—ओषधियो शुद्ध करेल छतां पण परिणामे पेटमां जीवात पेदा करी शरीरने हानि पहोचाडे छे जेथी ते अभक्ष्य छे. ११, करा—वर्षादजल विकार पामवाथी करा रूपे वरसे छे तेनी अंदर असंख्य अप्कायनाज जीवो छे माटे ते खावालायक नथी. १२ सर्व जातनी माटी—खडी-मुलतानी माटी-मटोडी पण अभक्ष्य छे, केमके तेना खावाथी पेटमां पीडा, पांडुरोग, सोजो, श्यामपणुं, आंतरमांडनुं सडवुं, अने पेट वधी श्वास तथा अशक्तिनुं वधवुं ए रोग पेदा

११ अंते मरण थाये जेटामे छे. शिवाय खांसी-क्षय अजीर्ण-दुर्बलता पण प्राप्त करावे छे. ते खावा लायक नथी. १२ रात्रीभोजन करवुं नहीं; केमके राते जमवाथी पाणी पीवानी तेथी अजीर्ण थाय छे. अजीर्ण ए सर्व रोगनुं मूल छे जेथी राते खावुं नहीं. ते वखते खाधी पतंगीयां जु कीडी करोलिया वगेरे जीव जंतु अने वाल वगेरे खावामां आवी जवानो संभव छे, अने ते खावामां आववाथी घणा रोगोनां बीज रोपाय छे, अन्यदर्शनमां पण कहेल छे के- रक्ती भवंति तोयानि, अन्नानि पिशितानि च ॥ रात्रीभोजन सक्तस्य ग्रासे तन्मांसभक्षणम् ॥१॥ उदकं नैव पातव्यं रात्रावत्र युधिष्ठिर ॥ तपस्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिना ॥ २ ॥ ये रात्रौ सर्वदाहारं वर्जयंति सुमेधसः ॥ तेषां पक्षोपवासस्य फलं मासेन जायते ॥ ३ ॥

भूर्य अस्त थया पछी पाणी रुधिर-लोही समान अने अन्न मांस समान थाय छे. माटे राते जमनारने शोणितां तथा मांस खाधा जेटलुं पाप लागे छे. हे युधिष्ठिर ! रात्रिनी अंदर पाणी गृहस्थे न पावुं अने तपस्वीए तो खास करीने न पावुं. जे सारी बुद्धिवाला छे ते रातमां एक

महिना लगी बिलकुल जमता नथी तेमने एक पक्षना करेला उपवास (पासखमण) नुं फल मले छे. तेमज आयुर्वेदमां पण कहेल छे के–सूर्य अस्त थया पछी नाभि हृदयकमलनो संकोच थाय छे माटे राते जमवाथी गेरफायदो थाय छे अने सूक्ष्म जीवो पण अजाणते खावामां आवी जाय छे माटे राते खावुं पीवुं अभक्ष्य छे. १४, बहुबीज वंगोटा वगेरे खावा लायक नथी. १५. अनंतकाय के जे अनंता जीवना घात पातना हेतु रूप छे माटे खावा लायक नथी. सतावर १, लीली वरियाळीनो वेलो २, कुमारपाठुं ३, थोर ४ गळो ५, लसण ६, पिंडालु ७, सर्व जातना कंद अटलेके सूरण वगेरे ८, वज्रकंद ९, लीली हलदर १०, काचुं आदुं ११, वांसकारेलां १२, गाजर १३, लूणी १४, लोडक कमलकंद १५, गरमर १६, तद्दन कोमल अवस्थावालां पांदडां १७, खरसूणा १८, थेग १९, लीली मोथ २०, लीली मुसली २१, लूणा वृक्षनी छाल २२, खिलोडा २३, अमरवेल २४, मलानो कांदो २५, जामीफोडा २६, पलंखनी भाजी २७, वथवो २८, भोंयफोडोलुं २९, पलालेला धानमांथी फूटेला अंकुर ३०, कुणी आमली के जेमां बीजनुं निसान पण न जणातुं

हरि ॥ अनकपना ननक्षणथी हृदयमां कृमि जीव पेदा थाय छे माटे ते तजवा योग्यज छे.

श्रावकनी पांचमी करणी ए छे के, पोताना शरीरनी शक्ति मुजब छ पर्वने दिवसे नवकारसीथी मांडी उपवास आदि तपस्या करवी; केमके तपस्या करवाथी नठारां कर्मो अने रोगोनुं मूल नाश पामे छे. माटे बार भेद वाली तपस्या अवश्य करवी.

छठी करणी ए छे के—दान देवुं. तेमां पण शुद्ध साधुनी योगवाइ मले तो अति उत्तम, नहीं तो स्वधर्मी भाइओने दान देवु अने कदाच तेनो पण जोग न मले तो दुर्बल-अनाथ-कंगाल-दुःखीने भोजन आपवुं. नही के पैसा पाइ अनाज (रांध्या विनानुं) आपवुं. केमके ते वेंचीने व्यापार चलावे छे. जोके दीन दुखी तरफ कोमल चित्त राखवुं अने कशुं पण तेमना माटे न बनी शके तो तेमना भलानी खातर सारी भावना भाववी. नहीं के खराब भावना भाइ निंदाना भागी थइ भारे कर्मी थवुं.

आ प्रमाणे श्रावकने निरंतर करवानी छे करणी—कृत्यो छे ते हमेशां शुद्ध भावथी करी

जीवनने सफल करवुं. केमके जीवननुं सार्थकतापणुं ए करणीउमांज समायलुं छे. एम ज्ञानी जविमाणी हेत आणी आ हितवाणीने कंठमणि गणि लेशो तेनी आतम सुख मेळवी अने तर-जव वार देवलोक नवग्रीवेक पांचअनुत्तर विमान अने यावत् मोक्षनां सुख प्राप्त थाय !



व्याख्यान अगीआरमुं.

(गाथा छंद)

अरिहंत देवो सुगुरु, शुद्धं धम्मं च पंच नमुक्कारो ॥
धन्नाणं च कयत्थाणं, निरंतरं वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥

अरिहंत, महंत, दीनदयालु, भक्तवत्सल, अनाथना नाथ, अशरणशरण, पतितपावन, प्रथमउद्धरण कृपासिंधु वर्तमान जिनेश्वरे भविकजीवोना उद्धार निमित्त आ प्रमाणे भलामण करेली छे के–हम्मेशां शुद्ध देव, शुद्ध गुरु, अने शुद्ध धर्म ए त्रण रत्नत्रयी तथा पंचपरमेष्टि नमस्कार (नवकार मंत्र) आ चारेनुं यथाविधिथी तन मन वचनना शुद्धपणा सहित सदा सेवन करवुं तोज जीवन धन्य–कृतकृत्य गणाय छे. अर्थात् जे पुन्यशाली प्राणीओना हृदयनी अंदर निरंतर आ चारेनुं भव्य भावना पूर्वक स्मरण चालु रहे तो बेशक ते प्राणियोनुंज जीवन सफल अने धन्यवादने पात्र छे.

शुद्ध देव ते शुं, जिनेश्वर भगवान-ब्रह्मा-विष्णु-महादेवजी-भैरव-भवानी विगेरे छे तेज के बीजा? आना उत्तरमां एज समाधान वचन छे के गमे ते देवमां अंशमात्र पण अढार दूषणो न होय ते शुद्ध देव मनाय छे. शुद्ध देवनी मूर्त्ति शांत अने नरलीलानां चिन्हो रहित होवी जोइये.

अढार दूषण ए गाथाए छे ते

अन्नाण कोह मय माण लोह माया रइअ अरइअ ॥
निद्दा सोग अलियवयण चोरिया मच्छर भयाय ॥ १ ॥
पाणिवह पेमकीडा पसंग हासाय जस्स ए दोसा ॥
अढार सविपणठा नमामि देवाहि देवंतं ॥ २ ॥

देव एक अरिहंत विदीत, रागद्वेष वेरी जिणे जीत ॥ दोष अढार रहित हितकार । त्रिभुवन जनने तारणहार ॥ १ ॥ नाम ठवण द्रव्यभाव विचार, निक्षेपा अनुयोगद्वार ॥ चिहुं प्रकार एणि-परे अरिहंत । चउथे भेदनमुं जयवंत ॥ २ ॥ चउवीसत्थो भणतां नाम, जिननामे तसुकरुं प्रणाम ॥ ठवणाओ जिनप्रतिमा कही, जिनभावे ते वंदु सही ॥ ३ ॥ पंचमअपण आवश्यकतणे, अधिकारें

सं. विचार्यो तेणे पण जन्मारानो शुभ लहाव लीधो मानवो. अथवा जेणे ज्ञानी जनो तरफ पूर्ण प्रेम राखी तेमना सेवना करी के शीलवंत, तपस्वी, आदिनी भक्ति साचवी तेणे पण जीवन-साफल्यता मेलवीज समजवी. अने जेणे भगवानश्रीनां प्ररुपेलां अने गणधर श्रीनां गुंथेलां गोठवेलां पिस्तालीश आगमो एटले के आचारांग, सुयगडांग, ठाणांग, समवायांग, भगवती, ज्ञातासूत्र, उपाशकदशांग, अंतगडदशांग, अनुंतरोववाइ, प्रश्नव्याकरण, अने विपाकसूत्र ए अगीआर अंग तथा उववाइसूत्र, रायपशेणी जीवाभिगम, पन्नवणा, सुरपन्नति, जंबुद्वीपपन्नति, चंदपन्नति-निरीयावली, कप्पिया, कप्पवडंसीया, पुष्फीया पुष्फचूलीया अने वन्हीदशांग आ वार उपांग, तेमज चउशरण पयन्ना, महापच्चरकाण, तंडुलवियाली, चंदाविजय, मरणसमाधि, आउर पच्चरकाण, भतपच्चखाण गणीवीज्जा, देविंदस्तव अने संस्थारक आ दश पयन्ना, तथा वृहत्कल्पसूत्र, जीतकल्पसूत्र, महानीशीथ दशाश्रुतस्कंध, व्यवहार सूत्र, नीशीथसूत्र आ छ छेद ग्रंथ, तथा आवश्यसूत्र, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन अने पींड नियुक्ति सूत्र आ चार मूलसूत्र अने अनुयोग-

द्वार तथा नंदीसूत्र ए वं मली पितालीश जैनागम छे. तेमनुं बहु मानथी जे पूजन, वाचन अने सांभलवुं वगेरेमां उत्तम भाव राखी मनन करी ते विचारोने आचारमां मूके छे ते जीवने मानव जन्मनी सफलता मली मानवी.

आ ज प्रकार जे पुन्यात्माए विधिपूर्वक आदर्यां पाल्या छे ते भव्य जीवो भवो दधिथी तरी पार पहोंच्या छे, हाल पण तेम करे ते पार पहोंचशे अने भविष्यमां कोइ करशे तो ते पण अवश्य तेमो पार करवानाज एम जाणी हे भविप्राणी ! भाव प्राणी वीतरागश्रीनी वाणी, हृदयमां धरी तेने पालो-अंगीकार करो के जेथी उभय भवमां मन मानती सुखसंपदा अने यावत मोक्षनां सुखनी प्राप्ति थाय ! ॥

इति सुभाषितव्याख्यानसंग्रहः समाप्तः

॥ श्री वैराग्य शतक. ॥

—>:<—

आ राग अने दुःखथी भरपुर एवा असार संसारमां सुख नथी; आ बाबत जाणतां छतां जीव जीनेश्वरे कहेलो धर्म आचरतो नथी. १.

आज, काल, पोर, परार धन मलशे एम मनुष्यो चिंतवे छे, पण खोबामां रहेला जलनी माफक आयुष्य गले छे ते जोता नथी ! २.

हे मनुष्यो ! जे काले करवानुं होय ते त्वराथी आजे करो. काल बहु विघ्नवालो छे. माटे बीजा पहोरनी पण राह जोता नहि. ३.

संसारना स्वरूपनुं वर्तन तो जुओ ! प्रेम अने स्नेहमां लागेला पुरुषो जे सवारमां जोवामां आव्या हता ते सांजे जणाता नथी. ४.

हे लोको ! जागवाने ठेकाणे सुई न रहो ! नासवानी जग्याए विश्राम न करो; रोग, जरा

(वृद्धावस्था) अने मृत्यु आ त्रण तमारी पुंठे लागेला छे. ५.

चंद्र अने सूर्य रुप बलद रात्रिदिवस रुप घडानी हारवडे जीवनुं आयुष्य रुप जल ग्रहण करीने कालरुप अरहट्टने फेरवे छे. ६.

काल रुप सर्पथी खवाती काया जेथी धारी रखाय तेवी कोइ कला नथी, तेवुं कोइ औषध नथी. तेमज तेवी कोइ होकमत नथी. ७.

मोटा शेष नाग रुपी जेनुं नालवुं छे, पर्वतो जेवा जेनां केसर छे, दिशाओ रुपी जेनां पांदडां छे, एवा पृथ्वी रुप कमलमांथी मनुष्य रुपी रसने कालरुपी भ्रमर पी जाय छे ए खेदनी वात छे. ८.

शरीरना छायाना बहाना वडे सकल जीवोना छिद्रने शोधतो काल कोई पण प्रकारे मनुष्यनी वाजु छोडतो नथी; तेटला माटे धर्ममां उद्यम करवो. ९.

आ अनादि काल विषे जुदी जुदी जातना कर्मने वश थयेला जीवोने एवी एक पण स्थिति नथी के जे न संभवे, (अर्थात् सघली स्थितिओमां आ जीव जइ आव्यो छे.) १०

सर्व बांधवो, मित्रो, पिता, माता, पुत्र, स्त्री वगेरे मरेला स्वजनने जलनी अंजली आपी स्मशानथी पाछा वले छे. ११.

रे ! जीव ! पुत्र तथा पुत्रीओनो वियोग थाय छे. बांधवोनो वियोग थाय छे, स्त्रीओनो वियोग थाय छे, फक्त एकनोज वियोग थतो नथी अने ते जीनेश्वरे कहेलो धर्म छे. १२.

आठ कर्मना पाशथी बंधायेलो जीव आ संसार रूपी केदखानामां रहे छे, अने आ आठ कर्मना पासथी छुटो थयेलो आत्मा शिव मंदिरमां रहे छे. १३.

वैभव, सगां स्नेहीनो संबंध अने विलासथी मनोहर एवा विषय सुख; आ सर्व कमलना पांदडांना किनार पर रहेला पाणीनां बिंदुना जेवा चंचल छे. १४.

हे मनुष्यो ! ते बल क्यां गयुं ? ते यौवन क्यां चाल्युं गयुं ? ते शरीरनी शोभा क्यां जती रही ? आ सर्व अनित्य छे, काले आ सर्व हतुं नहतुं करी दीधुं ते जुओ अने विचारो. १५.

ज्यारे कर्म बंधथी बंधायेलो जीव आ संसार रूपी नगरना चोटा विषे विविध प्रकारनुं दुःख

आ जीव कर्माने लीधे अशुद्ध, अपवित्र अने अशुचि द्रव्यथी भरेला गर्भवासमां अनंतवार वसेलो छे. १७.

आ संसारमां जीवोने उत्पन्न थवानां स्थान चोराशी लाख कहेलां छे अने एकेक स्थानमां आ जीव अनंतवार उत्पन्न थयेलो छे. १८.

जुदा जुदा उत्पत्ति स्थानमां उत्पन्न थयेलां अने संसारमां रहेला माता, पिता, बंधु वगेरेथी आ जगत् भराएलुं छे; पण ते लोको तारुं रक्षण करे तेम नथी, तेमज तने शरण रुप थइ शके तेम नथी. १९.

दुःखथी घेराएलो जीव जल वगरनी जग्या उपर माछली जेम तरफडे तेम तरफडे छे; बधा जीवो ते जुए छे, पण तेनुं दुःख दूर करवा कोइ समर्थ नथी. २०.

हे जीव ! पुत्र स्त्री वीगेरे मने सुखना हेतु थशे एम तुं जाणीश नहि; संसारमां वसता

सघलुं तारुं शी रीते ? ३१

आ शरीर क्षणभंगुर छे, वादलना समूह जेवो आ मनुष्य भव चंचलछे ते दरम्यान जेटलो धर्म करी लीधो एटलोज खरो सार छे. ३२

जन्म दुःखनुं कारण छे, वृद्धावस्था रोगनुं कारण छे, मरण दुःखनुं कारण छे, अरे ! आ संसारज दुःखमय छे, जेथी जीवो कलेश पामे छे. ३३

ज्यां सुधी इन्द्रियो नाश पामी नथी, ज्यां सुधी घडपण रुप राक्षसे पोतानुं जोर दाखव्युं नथी, ज्यां सुधी रोगना विकारो थया नथी, ज्यां सुधी मृत्यु भेटवाने तैयार थयुं नथी, त्यां सुधी हे जीव ! धर्म करी ले. ३४.

ज्यारे आग लागे छ त्यारे कुवो खोदवाने कोइथी पण बनतुं नथी; तेम मरण आवी पहोंचे जीव केवी रीते धर्म करी शकशे ? ३५.

रुप अशाश्वत छे, जगत्मां जींदगी वीजली जेवी चपल–अस्थायी छे, अने यौवन संध्या

समपना रंग जेवुं क्षणिक रमणिय छे. ३६.

लक्ष्मी वीजलीना जेवी चंचल छे, विषय सुख मेघ धनुष्यना रंग जेवुं क्षणिक छे; माटे हे जीव ! समज, समज, अने आवी न जेवी वाबतोमां मुंझाइ न रहे. ३७.

जेवी रीते सांजरे पक्षीओनो संबंध छे, जेवी रीते मुसाफरोनो रस्तामां संबंध छे, तेवीज रीते हे जीव ! स्वजनोनो संबंध पण क्षणभंगुर छे. ३८.

रात्रि पूरी थये मारे विचार करवो जोइए के घर लाग्युं छे, छतां हुं केम ऊंघु छुं ? आ कर्मथी वलता आत्मानी केम वेदरकारी करुं छुं ? अने धर्म रहित दिवसो केम गुमावु छुं ? ३९.

जे जे रात्रि दिवस जाय छे ते ते पाछा आवता नथी; तेमज जे जीव रात्री दिवस अधर्म करे छे, तेना रात्री दिवस अफल जाय छे. ४०.

जेने मृत्यु साथे मैत्री छे, अथवा मृत्युथी नाशी छुटवाने जेने बल छे, अथवा हुं मरीश नहि एम जे नक्की जाणे छे, ते मनुष्य भविष्यमां धर्म करवानुं भले मुलत्वी राखे. ४१.

जवी रीते वणकरो लाकडी उपरथी सूतर उखेडे छे, तेवीज रीते रात्री अने दिवस चाल्या जाय छे, तेज आयुष्यने ओछुं करे छे, अने गया पछी पाछा आवता नथी. ४२.

जेवी रीते सिंह मृगने झालीने अवश्य मारेछे, तेवीज रीते मृत्यु अंत समये मनुष्यने झाले छे, ते वखते तेना माता, पिता के भाइ तेमां भाग पडावता नथी ४३.

जींदगी पाणीना परपोटा समान छे, वैभव पाणीना तरंगनी माफक अस्थिर छे, अने राग स्वप्न तुल्य छे; जो तुं आ यथार्थ जाणतो होय तो ते प्रमाणे वरत. ४४.

संध्या समयना रंग जेवी अने पाणीना परपोटा समान आ जिंदगी छे, अने यौवन नदीना वेग समान छे, छतां हे पापी जीव ! तुं केम समजतो नथी ? ४५.

भूतने बली फेंकवामां आवे तेम मृत्यु देवे कुटुंबने जूदे जूदे स्थले फेंकी दीधुं छे. ४६

पुत्र, पुत्री आदि कांइक गया, स्त्री कांइक चाली गइ, अने स्वजनो पण बीजे स्थले चाल्या गया. ४७

जूदा जूदा जवोमां जीवे जे शरीरो धारण कर्यां तथा तज्यां तेमनी संख्या अनंत सागरना बिंदुओथी पण मपाय तेम नथी. ४८

जूदा जूदा जन्मोनी रुदती माताओनां आंसुनी संख्या समुद्रना पाणीना बिन्दुओ करतां पण वधारे थाय. ४९

नरकमां नरकना जीवो जे अनंत घोर दुःख अनुजवे छे, तेना करतां पण अनंत गणुं दुःख निगोदमां जीव जोगवे छे. ५०

हे जीव ! विविध कर्मने लीधे तें निगोद मध्ये अनंत पुद्गल परावर्तन सुधी तीक्ष्ण दुःख सहन करेल छे. ५१

त्यांथी घणी महेनते बहार नीकलीने हे जीव ! तुं मनुष्यत्व पाम्यो अने त्यां चिंतामणी रत्न जेवो जिनवर धर्म तने मळ्यो. ५२.

हे जीव ! आवो धर्म पाम्या छतां जेथी जव रुपी कुवामां पडीने फरीथी दुःख जोगववुं

पछी एवो प्रमाद तुं केम करे छे ? ५३.

हे जीव ! जैन धर्म पाम्यो, छतां प्रमाद दोषथी तें तेनुं सेवन न कर्युं. हे ! आत्माना वैरी जीव ! आगळ उपर तारे घणो पश्चाताप करवो पडशे. ५४

पाप अने प्रमादने वश पड़ जेनुए जैन धर्मनुं पालन कर्युं नथी, ते विचारा जीवो मरण पासे आवे घणा दिलगीर थाय छे. आ संसारने धिक्कार हो, के जेमां देव मरीने तिर्यंच थाय छे अने चक्रवर्ती राजा मरीने नरकाग्निमां बळे छे. ५५

धन, धान्य, आभूषण, गृह अने स्वजन कुटुंबने तजीने कर्म रूपी पवनथी हणायेला वृक्षना पुष्पनी माफक जीव अनाथ थइ जाय छे. ५६

आ संसारमां प्रयाण करतो जीव पर्वतोमां, गुफामां, समुद्रना मध्यमां, झाडनी टोचे रहेलो छे. ५७

हे जीव ! तुं केटलीक वार देव, केटलीक वार नारकी, केटलीक वार कीडो, केटलीक वार

पतंगीयुं, केटलीक वार मनुष्य, केटलीक वार रूपवान, केटलीक वार बेडोळ, केटलीक वार सुखी अने केटलीक वार दुःखी थाय छे. ५८

हे जीव ! तुं राजा थयो, भीखारी थयो, चांडाल थयो, वेद जाणनार थयो, स्वामी थयो, दास थयो, पूज्य थयो, शठ थयो, निर्धन थयो अने धनवान पण थयो. ५९

आमां कांइ नियम नथी, पण पोताना कर्मनी प्रकृति तेनी जेवी गति करे तेम जीव अनेक अनेक वेष धारण करी नटनी माफक वर्ते छे. ६०

हे जीव ! नरकमां तने अनंत वार बहु प्रकारनी, उपमा न आपी शकाय तेवी अने दुःख पूर्ण वेदना मळेली छे. ६१

देव पणामां, मनुष्य पणामां अने परतंत्र पणुं पामीने अनंत वार बहु प्रकारनुं भयंकर दुःख तें अनुभव्युं छे. ६२

तिर्यंच जातिमां उत्पन्न थइ अनेक प्रकारनी भयंकर वेदना हे जीव ! तें अनुभवी छे; ज-

श्रीजिनेश्वरप्रार्थना.

अद्य अमेघजावृष्टि–रद्याम्रकुसुमं फलम् ॥ अहोपुराकृतंपुण्यं यद्दष्टोनाथ ! लोचनैः ॥ १ ॥ धन्योहं कृतपुन्योहं, निस्तीर्णोहंभवार्णवात् ॥ अनादौ भवसंसारे दृष्टो येन जिनोमया ॥ २ ॥ सर्वामरेंद्र संपूज्य सर्वज्ञज्ञानभास्करः ॥ सर्वसत्वहितानंद सर्वसौख्य नमोस्तुते ॥ ३ ॥ मिथ्यांधकूपदरीधौतं निमज्जंतं भवार्णवे ॥ तुमाहमसितं नाथ ! मामुत्तारयतारय ॥ ४ ॥ जन्ममृत्युजरारोगशोकसंत्रासवैरिणः ॥ पृष्टतो धावतो देव ! मयिवारयवारय ॥ ५ ॥ अद्यजन्म महाभाग ! अद्यवृद्धिर्दयानिधे ! ॥ अद्यैव मंगलाधीश ! तीर्णः सद्योभवोदधिः ॥ ६ ॥ अद्यसद्यः सुरावासो अद्यसद्यः समाप्यः ॥ अद्यसद्यःश्रियःसर्वा मोक्षश्चजिनदर्शनात् ॥ ७ ॥ त्रैलोक्याद्भुतवृत्ताय त्रैलोक्याद्भुतमूर्तये ॥ त्रैलोक्याद्भुतसौख्याय त्रैलोक्याद्भुतकीर्तये ॥ ८ ॥ विश्वत्रयत्रि नेत्राय विश्वत्रयहितैषिणे ॥ विश्वत्रयार्तिनाशाय नमोविश्वविभूतये ॥ ९ ॥ (मालिनीछंद) प्रशमरसनिमग्नं दृष्टियुग्मंप्रसन्न वदनकमलमंकः कामिनीसंगशून्यःकरयुगमपियत्तेशस्त्रसंबंधवंध्यं तदसि जगतिदेवोवीतरागस्त्वमेव१०

॥ अथ श्रीआदिजिनेंद्र चैत्यवंदन. ॥

आदिमंपृथिवीनाथ–मादिमं निः परिग्रहम् ॥ आदिमंतीर्थनाथंच ऋषभस्वामिनंस्तुमः ॥ १ ॥ श्रीमन्नाभिकुलादित्य मरुदेवांगजप्रभो ! ॥ संसाराब्धिमहापोत ! जय त्वं वृषभध्वज ! ॥ २ ॥ (आर्या छंद.) जयतिकनकावदातःकृष्णजटामुकुटमंडितोवृषभः ॥ इक्ष्वाकुवंशतिलकस्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ ३ ॥ (उपेन्द्रवज्रा छंद.) सुवर्णवर्णंगजराजगामिनं प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैःस्तुतपादपंकजं नमामिभक्त्यावृषभंजिनोत्तमम् ॥ ४ ॥ इति

॥ अथ श्रीशान्तिजिननमस्कार ॥ श्रीमतेशांतिनाथाय नमः शांति विधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश ! मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना निर्मलीकृत दिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः शांत्यै शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ २ ॥ नमः श्री शांतिनाथाय कृत विश्वाघशांतये ॥ षोडशाय जिनेंद्राय पंचमायचचक्रिणे ॥ इति ॥ ३ ॥ श्री नेमिनाथनमस्कार यदुवंशसमुद्रेंदुः कर्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान् भूयाद्वोरिष्टनाशनः ॥ १ ॥ ॐ नमो विश्व-

नाथाय जन्मतोब्रह्मचारिणे ॥ कर्मवल्लीवनछेदनेमयेरिष्टनेमये ॥ २ ॥ शिवगामिन् शिवासूनो ! समुद्रानंदचंद्रमाः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान् भूयाद्वोरिष्टनाशने ॥ ३ ॥ (उपेंद्रवज्रा छंद) अनंग वैराग्यतरंगपूर्णं हृदिल्वदीयेयदुवंशरत्न ॥ कथंकृशांग्योपिहिमांतुदंत यस्मादनगोपिपदंन लेभे ॥४॥इति॥ अथ श्रीपार्श्वनाथनमस्कार ॥ कमठे धरणेंद्रेच स्वोचितंकर्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्य मनोवृत्तिः पार्श्वनाथः श्रियेस्तुनः ॥ १ ॥ पार्श्वनाथनमस्तुभ्यं विघ्नविध्वंसकारिणे ॥ निर्मलसुप्रभातंते परमानंददायिने ॥ २ ॥ अश्वसेनावनीपाल कुलचूडामणे ! प्रभो ! ॥ वामासूनो ! नमस्तुभ्यं श्रीमत् पार्श्वजिनेश्वर ॥३॥ इति ॥ अथ श्रीमहावीरप्रभु नमस्कार ॥ श्रीमते वीरनाथाय सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज–मरालायार्हते नमः ॥ १ ॥ सर्वेषांवेधसामाद्य मादिमंपरमेष्टिनां ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं श्रीवीरंप्रणिदध्महे ॥ ७ ॥ कल्याणपादपारामं श्रुतगंगाहिमाचलम् ॥ विश्वांभोजरविंदेवं वंदे श्री ज्ञातनंदनम् ॥ ८ ॥ (आर्या छंद) जयतिविजितान्यतेजाः सुरासुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥ विमल स्त्रासविरहित स्त्रिलोक चिंतामणिर्वीरः ॥ १४ ॥ जयतिभुवनैक भानुः सर्वत्राविहितकेवला

लोकः ॥ नित्योदितः स्थिर स्तापवर्जितो वर्द्धमानोजिनः ॥ १५ ॥ जयतिनमदमरमुकुट प्रतिबिंबछ्रविदित बहुरूपः ॥ उद्धर्तुमिव समस्तं विश्वंभव पंकतो वीरः ॥ ६ ॥ (शार्दूल विक्रीडित छंद.) वीरः सर्वसुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिता वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीरायनित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरंतपो वीरे श्री धृति कीर्ति कांति निचयः श्री वीर भद्रंदिश ॥ ७ ॥ इति नमस्कार चैत्यवंदना.

॥ पंचपरमेष्ठि स्तोत्रम्. ॥

(वसंततिलका छंद.) लोकोत्तमास्त्रिजगतीजनताशरण्याः पुण्यप्रभावपरमाः परमेष्ठिनोमे ॥ तीर्थेशसिद्धगुरुवाचकसाधुमुख्याः सौख्यायमंगलमहोदयदानदक्षाः ॥ १ ॥ उच्चैरशोकचमरामरपुष्पवृष्टि सिंहासनध्वनिविशेषसितातपत्रैः ॥ भामंडलेनवरदुंदुभिनासनाथ स्तेमंगलायभवितांत्रुवितीर्थनाथाः ॥ २॥ आनंदमंदिरचिदात्मपरस्वरूपा रूपाद्युपाधिरहिता भवहेतुमुक्ताः ॥ मुक्ताफलोज्व-

ततरः परमात्मराज ॥ स्तेमंगलायजविनांज्ञुविलिस्वाजः ॥३॥ सद्भूतलक्षणगणागुणमेद्भिन्नूता न्नू-
तावपायकृततीर्थकरानुसाराः सूत्रार्थसार्थपरमार्थविबोगज्ञोरा स्तेमंगलायजविनांभुविसूरिवीराः ॥
॥ ४ ॥ आचार्यवर्यपदवीयुवराजकल्पाः सदज्ञानदर्शनयुताजितमोहशल्याः ॥ सूत्रादितंत्रमणिरोहण
भूधरेश स्तेमंगलायजविनांभुविवाचकेंद्राः ॥ ५ ॥ शोलांगतुंगरथधूर्वहणेधुरीणाः स्वाध्यायसंयमस-
माधिविधिप्रवीणाः ॥ दुर्वारमारकरिकुंभविभेदसिंहा स्तेमंगलायजविनांभुविसाधुसिंहाः ॥ ६ ॥
तीर्थेश्वराः क्रमविनम्रहरिप्रवीराः सिद्धाश्चसिद्धिललनोरुललामहीराः ॥ आचार्यवाचकवराजगदर्च्य-
पादाः सत्साधवश्चमयिसंतुकृतप्रसादाः ॥ ७ ॥ (मालिनी छंद.) पठतपठतसंतः संततंभक्तिमंतः
परमिदपरमेष्टि स्तोत्रमेतत्पवित्रम् ॥ ततमनघबोधे येनवःसिद्धिसौधे ॥ महतिविमलचंद्र श्रीमति
स्याधिवासः ॥ ८ ॥ इति श्रीविमलचन्द्रसूरिराजकृतं पंचपरमेष्टिमंगलाष्टकम् . ॥



॥ श्रीसिद्धगुणस्तवना. ॥

(चोपाइ छंद.)

मंगलकारण नमिय त्रिकाल, कर जुग अंजलि म्हेली जाल;
सिद्ध गुण स्तुति नणतिपे करुं, जवसायर डुस्तर जिम तरुं. १

एक अपेक्षा तदा अनंत, सर्व गिणुं ते अनादि अनंतः॥ अजर अमर कीधो जवअंत, वंडुं सिद्ध सदा जयवंत.॥२॥केवल दंसण केवल नाण, निर्म्मल सम्यग् दृष्ट प्रमाण ॥ मोह नरिंद मनाचो आण॥ पाम्युं सिद्धपुरीनुं ठाण.॥३॥ जव्य अजव्य थावर त्रस नहीं॥ सन्नि असन्निपि नको कहीः ॥ पज्जत्ता पज्जत न होइ, केवल जीव सरूपी जोय ॥४॥ इम श्री सिद्धी अकल अकलंक;समतृणमणि समजूपनेरंक; तस सरुप जोगीसर लहे, ध्यान ज्योति पातिकमल दहेः॥ ५ ॥ नरजव पामी सूधा वार, तप संयम गुण विनय विचार; कर्म खपी पहोता जवपार, गति आगतिसंसारनिवार ॥ ६ ॥

लोक अग्रथ्यापो श्री सिद्ध, अलख जीव गुण रिद्ध समृद्ध ॥ ते को नहि प्रकट विवहार, जिण कहिये श्रीसिद्धविचार ॥ ७ ॥ देखीतो तिहां कह्यो न जाय, अठतो कहेतां किमसमझाय; धन्य धन्य श्रीगुरुनी वाण, जगप्रकाश हुवो जस प्राण ॥ ८ ॥ आचारंगे पहिले खंध, पंचम अज्झयण सिद्ध संबंध, छठे उद्देशे गुण एकत्रीश, ते हुं समरुं मन निश दीश ॥ ९ ॥ चउखुणो लंबो वाटलो, वलि कहियें परिमंडलो; त्रिखुणो पंचमे सुठाणि, तेहनो जाणे इम जाण ॥ १० ॥ कालो नीलो ने पीअलो, रातो वर्ण वली उजलो, पंच वर्ण रहित श्री सिद्ध, प्रवचन मन निश्चल मन कीध ॥ ११ ॥ सुरभि दुरभि ए बेए गंध, जिहां सुए तणो संबंध; रागद्वेषना कारण जेह, सिद्धे संगत टाली तेह ॥ १२ ॥ मधुरो तिखो कडुउ जाण कसायलो अंबिल मन आण; पंचेरस सर्वत परिहरी, संवर शिवरमणी जिहां वरी ॥ १३ ॥ लुखो स्निग्धखरमीउलो, भारी लघु उन्हो सीयलो; आठ फरस इणि परि पंचवीश, प्रकृति निवारी थया जगदीश ॥ १४ ॥ काय रहित लेश्या सवि टली, संसार न अवतरसी वली; नीरा कर्यों तिण तेहनो संग, न स्त्री पुरुष नपुंसक रंग ॥

॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप एणीपरे लही, रूप रहीतसाता तसु कही; पद विशेष तिहां कोइ नही, कहणी आगम तेणे सही ॥ १६ ॥ कोइ न उपम जिण तोलीएं, कोई न शब्द जिणे बोलीएं; लोकअंत एक गाउ तणो, छठे नागे क्षेत्र ते नणो ॥ १७ ॥ तिहां सासइ छे सिद्ध अनंत; काल अनंत न लहिये अंत; सुखसायरजल झीले सदा, समरंते टाले आपदा ॥ १८ ॥ सिद्ध साध चरुवानो श्रेणि, संयम मंनि खिपकां श्रेणि; अनुक्रम पामी गण संजोग, केवलनाणी थया अयोग ॥ १९ ॥ सर्वत समत लहे विवहार, निश्चय सकल कर्म परिहार; अशरीरि तिण मारग वहुं, घन दिन जिण शिव मारग लहुं ॥ २० ॥ इणिपरि सिद्ध गुण स्तुति करी, तिण गुणतें प्रभु हियडे धरी; पार्श्वचंद्रसूरीश्वर सीस, सिद्ध प्रणाम करे निश दीश ॥ २१ ॥

॥ श्रीगोडीपार्श्वनाथजी–स्तोत्र. ॥ १ ॥

(प्रमाणीका छंद.) वरिष्ट इष्ट देवता सुगोडीपार्श्वसेविता; तपःप्रभावभासिता गुणोरु-

राजवर्पिता ॥ १ ॥ चरित्र जार गोपति ईताष्ट कर्म विश्रुतिः विवेक सुदिवाक्पति गुणेंदुरय
सवतिः ॥ २ ॥ यशोमरालमंजुली गताद्दमार्गमंजुली; दिगंगनांगभूषिता जवद्गुणाब्धिपोषिता
॥ ३ ॥ त्वदीयधर्मदेशना कृताष्टकर्मपेषणा; सरत्सुधाचवीरिणी सुतंत्र तत्त्व जोरिणी ॥ ४ ॥
कुतर्क तर्क तर्जिता जवंतमेत्यदूषिता; परे प्रवीणवाक्कुरा अपास्तमानमत्सराः ॥ ५ ॥ त्वदीय
पादनीतितःस्वकमरारसंकिनः जनाजवंति दूरतः शुजानिमेषमात्रतः ॥ ६ ॥ त्वदीयदानशौंमता
कृतार्थितार्थिसंगता; किमस्ति कामधेनुका धनेशतुल्यसेवकाः ॥ ७ ॥ गुणा विलोक्य सर्वतः
कृतास्वनेत शर्मतः वसंत्यनन्यविभ्रमा जवच्छरीर अश्रमाः ॥ ८ ॥ गुणाष्टकं सुखाकरं सतां
मनस्सु मंचरं; पठाति रत्नवी वरै गुणेंडुजक्तिनिर्जरः ॥ ए ॥ (वसंततिलका बंद.) इत्यष्टकं
गुणवतो गुणनायिकानि स्सम्यक् प्रयोगरुचिरं रचितं चिराय; श्रीमन्मुनेर्विमलशीलभृतो गुणेंदो
र्नंदाचिरं जवतु जव्यतराय भूमौ ॥ १० ॥ (शार्दूलविक्रीडित बंद.) कोवालंघितुमिच्छतीह जल-
धि वोरन् जुजान्तरन् कोवा मेरुगिरिस्वकीयतरसा प्रोन्नंजितुं चेष्टते; कोवा सागरमध्यरत्न

निचयान् संख्यातुमुज्झंन्नते तद्वत्तेपि गुणाकरस्य निखिलान् वक्तुं गुणान् कः क्षमः ॥ ११ ॥
(इंद्रवज्रा छंद.) एवंतथाप्युत्सुकमानसेन मया प्रणीतं तव भक्तिभावात् पश्चात्र दुष्टं सुधिया
विशोध्यं निसर्ग दुर्बोधदता हि बालाः ॥ १२ ॥

॥ श्रीगोडीपार्श्वनाथजी–स्तोत्र.॥ ५ ॥

(शार्दूलविक्रीडित छंद.) स्वस्ति श्रीपदमद्भुतं सुकृतिनामानंदसंदोहदं मुक्तिस्त्रीरम-
णं त्रिलोकशरणं कारुण्यकल्पागमं ॥ संसारार्णवलंघने गुरुतरे निष्णातनिर्यामकं वंदेवीतभयं
प्रसिद्धसमयं श्रीगोडिपार्श्वं जिनं ॥ १ ॥ (भुजंगप्रयात छंद.) स्फुरत्स्फाररोचिःकलापाभि-
रामं जगज्जालजंजालदावानलाभं; प्रभावोद्धुरंबंधुरं स्वर्वराणां, भजे पार्श्वपार्श्वं प्रभु गोडिपार्श्वं
॥ २ ॥ यदीया यशोराजहंसी हसंती सुधासिंधुशोभां सती संचरंती; नमन्नाकनागाधिपैर्गीय-
॥ समत्तारहारावलीलंबिनीनां कणत्किंकिणीमेखलालंकृतीनां; गणैः सा-

दरं स्वयंभूतो तमर्च्यं ॥ जजे० ॥ ४ ॥ यदीयः मतापः प्रतिष्ठां प्रयातः सहस्रांशुलज्जामसावातनो
ति; महीपान् प्रकाशो यतो निग्वलोके ॥ जजे० ॥५॥ अपायाद्यपैति स्मरन्नाम घोराद्यदीयं जनो ज्नू-
तरे न्नूतिन्नूतं, जितो येन चिंतामणि पंत्र मुख्यः ॥ जजे० ॥६॥ सुधासारणि न्नक्तिमत्सुज्झिरतं शरत्
शालशुभ्राभ्रमूर्तिंवरतं; दयालुं दलंतं महाजालकंदं ॥ जजे० ॥ ७ ॥ यदि स्वांतपारं प्रयातुं प्र-
यत्नो नयाब्ये स्तदा गौह्निपार्श्वाय नित्यं; नमस्कुर्वतस्ते पुनर्नात्रपातो ॥ जजे० ॥ ८ ॥ हृदिस्थाय
शाजीष्ट पुण्यस्यपार्श्वस्तदा तस्य किं कल्पवृक्षैः पुरोगैः किमर्थं पशुः कामधेनुर्वराकी ॥ जजे० ॥९॥
(आर्या छंद.) अष्टकमनुपममरचन्मंत्रपदेनापि गुंफितं गुणिना; यो जानाति स विद्वान् रत्नैं
डुर्ज्जीवताक्षतं शरदां ॥ १० ॥ इति श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिवर संतानीयगणीरत्नचन्द्रेणकृता स्तुतिः ॥

अथ तत्त्व विचाररूप डुहा सोरठा.

जिनमतना डुहा पचा, अवगुण बोलं नित्त; जो इम चित्त चंचल करिश, धर्म लहिश किमनित्त?॥१॥

श्रीजिन अवगुण दाखवी, रोहिणीइ गुणगण; सोइखुरे तां जोलव्यो, जां लगे हुतो अजाण. ॥२॥
विप्रें सुत विमतारिया, कूडा देई आल; मुनिजनने ते वीसरया, जां लगी हुंता बाल. ॥३॥
घरण रणको संजली, कोइ पूछे ए कुण पमयो; वलतो उत्तर दीध, जे नर परवचने चडयो. ॥४॥
इत्यादिक दृष्टांत, लौकिक लोकोत्तर बहु; कुण पामे तसु अंत, इण वानगीए ते सहु. ॥५॥
मनरसें अन्नस्काण, जिहने दीजे जेहवो; पंचम अंगि छे गाण, जोगविपे वली तेहवो. ॥६॥
अवगुण हुंतो जो कहे, तो मन पछतावो किशुं; वलि संजलि अणहुंत, ते तो जोईजे किशुं. ॥७॥
फरसतां पहुंचे काल, पण जे अवगुण मन वश्यो; खिणखिण पाप विशाल, ते पूठि जिद जाइशुं.॥८॥
जे दे कूडो आल, अधमाधम ते जाणीए; ते मोटो जंजाल, विण परख्ये मन आणिये. ॥९॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुए संताप; नादजेद खरनी परे, आपे जाणे आप. ॥१०॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुए संताप; नकुलघाति जिम वंजणी, आपे जाणे आप. ॥११॥
जे कीजे परख्या विना, तिहथी हुवे संताप; अंबछेद नृपतणी परे, आपे जाणे आप. ॥१२॥

समान, तिणे कारणे जाणीए निरुपमान. ॥३॥ अछे सूर शशि कमल हरि हय गयंद, मणि कामगो कुंज सुरसाल इंद; इशा जग जलाजाव जणिये अनेक, जिणि दिये किशो तासु उपमा विवेक ॥४॥ जिम वनचर नयरना गुण न जाणे, जिम्या लाकुआ घेवर शुं वखाणे; करी बुऊवे सजनने पंशुरेह, तिम स्वामीने एह उपमान एह. ॥५॥ जिनाधीश श्रीवीर त्रिहुं जुवनवीर, जिणें जीतला मूलथी कर्मवीर; थइ केवली मनरली लोक केरी, करी तेम जिम वाणी न गमे अनेरी. ॥६॥ करुं वीनती वीरजिण तुम्ह आगें, तुम्ह दंसण निर्मल बुद्धि जागे; प्रजो कर्मने योग में जनम पाम्यो इहां जारतें जूरि पाखंड जाम्यो. ॥ ७ ॥ घणा नवनवा जुजूआ धर्म जासे, सहु वास आपापणे लोक वासे; अनेरांतणी दृष्टि निंदे निशंक, हुउं हुं हिये हरघडि इम सशंक. ॥८॥ प्रजो जे न मानंति प्रतिमा तुम्हारी, तिणे हीलि अरिहंत जिन आणहारी; वली जे जगि साधुनी नास्ति बोले, तिके विण कही पारकी गांठ खोले. ॥९॥ करे व्याप व्यापारनो मूल पाखे, प्रजो ते किमे ताहरी आण राखे; जिके धर्म आरंज आरंज जाणे, नही परखदे तिहज संबर वखाणे. ॥१०॥ सही पाप वे

तेहने समितिज्ञंग, तुम्ह साखि ज्ञापातणो मूल थंग; हिवं पन्नवो जे तुम्हे तेह साचुं, मन वचन तन स्वामि तुम्ह वचनि राचुं. ॥ ११ ॥ प्रभु मूरते ज्ञावि तुम्हने जुहारुं, थरी पंच मासीम मनि सुगुरु धारुं; दया आणशुं धर्म करिशुं प्रमाणं, महावीरजी जिन नमो मे जिणाणं. ॥ ॥ १२ ॥ (कलश.) इम नयरी थगमी जगि ठे पगमी तिणि ठामे श्रीवीरजिण; प्रह ऊठी वंडु मान थाणंडु, ज्ञवज्ञव मांगुं तुम्ह शरण. ॥ १३ ॥

उपदेश बत्रीसी.

(क्या गुमान जिंदोनी आखर मीट्टीमें मिलजाना ए देशी.)

आतमराम सयाने तुं झूंठे ज्ञरम जूलाना, झूंठे ज्ञरम जूलाना तुं तो झूंठे ज्ञरम जूलाना किसके ज्ञाइ किसको माइ, किसके लोग लुगाइजी; तुं न किसीका को नहीं तेरा, आपोआप सहाइ. आतम. ॥ १ ॥ चार दिनांका सब है मेला, पिर कोइ न रहाइजी, हटवामे ज्यो दुनियां सगरी, मिलि मिलि आइ जाइ. आ० ॥ २ ॥ मंदिर मेमी महेल चुणावो, जालीबंध झरोंखाजी;

जंगल पाँव पसारिके पड़णा, परणा कछु न धोखा. आ० ॥ ३ ॥ पघड़ी खूबीदार डुपटा, जामा जरकसी वागाजी; साज सनेही छोड़ी चलेगा, धागा विन तुं नागाजी. आ० ॥४॥ सहस्र जी जोड़ी लिखनी कोड़ी, अरब खरबकुं धायाजी; तृष्णा लोभ पलीता लाया, फिर फिर ढूंढे माया. आ० ॥ ५ ॥ चूवा चंदन फूल फूलेले, करता है खुसबोइजी; हंस उडंते गिरे जमीपर, तनु बदबोइ होइ. आ० ॥ ६ ॥ या संसार सराह मंझो है, जहां घर लख चोराशीजी; नाम कर्म सबही घर चुणे है, जीव बसाउवासी. आ० ॥ ७ ॥ लोहु मांस वन्या या गारा, पत्थर हाड़ लगाएजी; ऊपर लीपण चमड़ी लाइ, श्रोत्र दुवार दिखाए. आ० ॥ ८ ॥ आयु कर्म जे घरका भाड़ा, दिन दिनरा करी लेखाजी; महेतल पूगां पलक न राखे, ऐसा बड़ा अदेखा. आ० ॥ ९ ॥ सांझ सवेर अधेर न जाणे, न गणे धूप अरु वर्षाजी; न गणे नेह मुलाजा किसका, आउ सबकों सरीखा. आ० ॥ १० ॥ जीव वटाउके फिरि होवे, करम वेजीरा संगीजी; जाइ अगाउ गेह बनावे, प्रीति बनावे चंगी. आ० ॥ ११ ॥ जोलों घरमें आप वसे है, तोलों प्रीति वणावोजी; शूने पीछे गाड़ो

जलावो, न्नावे नीर वहावो. आ० ॥ १२ ॥ जिस घर अंदर आइ वनया दे, सो घरनांही तेराजी; ऐसेसे घर वहुत वसाए, राह चलत ज्यों मेरा. ॥ आ० ॥ १३ ॥ जिस घरको जब छोमी चल्या दे, तिसकी चिंत न आणीजो; नइ नइ फिर माया जोमी, तोमी प्रीति पुराणीजो. आ. ॥ १४ ॥ जो आये सो सव जावेंगे, जीव सवे जगवासीजी; अपणी छूटि कमाइ के विनु, जीवके संग न जासी. आ० ॥ १५ ॥ यह दे जीव सदा अविनाशी, मरि मरि जाय शरीराजी; इसकी चिंता कछुय न करणी, हुइ अपणे धर्मधीरा. आ० ॥ १६ ॥ सहस लाखसुं जोध न्नुजावल, लमते जंग अकेलेजी; ब्रह्मा विष्णु महासुर दानव, काल सवे संकेले. आ० ॥ १७ ॥ वामी यह संसार वन्या दे, काल तहां दे मालोजी; काचे पाके चुणीले सवही, लगे जो दरखत माली. आ० ॥ १८ ॥ तन धन योवनका मतवाला, गिणत किसीकों नाहींजी; वादशाह चक्रपति न्नूमिपति, मोतिगले दे वंवांही. आ० ॥ १९ ॥ न्याती गोती सेण संवंधी, सव स्वारथके छूफेजी, स्वारथ विण सूके दर-खत ज्यों, देख पंखेरु ऊफे. आ० ॥ २० ॥ पवन स्वरूपी काया अंदर, हंस लिया दे वासाजी;

पलपल आयु घटत है ऐसें, पानी मांहे वतासा. आ० ॥ २१ ॥ मूरख करि करि मेरी मेरी, पर-
संगति दुख पावेजी; ममता तोरी सहज सुख पावे, जो सुमता घर आवे. आ० ॥ २२ ॥ तन पं-
जर बिच जीव पंखेरु, ऊडत ऊडत आयाजी; आवत जावत किसी न इनका, खोज कहुं न पाया
आ० ॥ २३ ॥ झोलत बोलत तन अंदर वसी, चेतनचि ह्नि न दिखावेजी; ज्यों बाजीगर काठ पूत-
रीआ, नव नव जांति नचावे. आ० ॥ २४ ॥ काया पाटण चेतन राजा, मन कोटवाल बिठाया-
जी; पंच ठगोंसुं एका करिकरि, सब पट्टण मुसि खाया. आ० ॥ २५ ॥ नये नये तन जामे पहि-
रे, नव नव घाट घटे हैजी; तीन घौव है तीन अवस्था, चोथे घोव फटे है. आ० ॥ २६ ॥ तेरा
है सो कहुं न जावे, तुं अपणा ना खोवेजी; बिगड्या गया बिडाणा आसो, तुं मुरख क्यों रोवे.
आ० ॥ २७ ॥ जला बुरा तुज कुछु करेगा, जो कछु तुंही देगाजी; पंथ बिचे होयगासो संबल,
तेरे संग चलेगा. आ० ॥ २८ ॥ डोरी ज्यौ अंगुल अटकाइ, चकरी आवे जावेजी; डोरी तूटे पा
तन चकरी, ना जावे ना आवे. आ० ॥ २९ ॥ यह करता हुं यह में किया, यह में सही करुंगा-

जी; मेरे मोत लगी है लारे, गणे नही जिम गुंगा. आ० ॥ ३० ॥ आवत जावत सास उसासा, करत है गौन अन्यासाजी; जाणेका कछु अचरिज नाही, रहणेका है तमासा. आ० ॥ ३१ ॥ इस काया पायेका लाहा, सुकृत कमाइ कीजेजी; राज कहे उपदेश चत्रीसी, सद्गुरु शीख सुणीजे. आ० ॥ ३२ ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयतपागछाचार्यश्रीराजचंद्रसूरिकृता ॥

पुष्पो माटे असत् आक्षेपदाताओने उत्तर.

वर्तमान समयनी अंदर कोइएक मुनि महाराजो अने श्रावको गुरुगम विना छपाइ प्रसिद्धिमां आवेलां पुस्तको उपलकपणे वांची पोताना आत्माने गीतार्थ मानी महान् पूर्वाचार्योना सिद्धांतोने संपूर्ण अवलोकन कर्या विना उत्सूत्रप्ररूपणानो त्याग करी जेम फावे तेम कुयुक्तियो आदरे छे अने भोलाजनोने जवमांथी उमाथी जवबृद्धिनुं संबंध तैयार करे छे; केमके सांभळेली वातो उपरथी समर्थ गीतार्थोनी निंदा करवा तत्पर रहेवुं ए जवबृद्धिनुंज कारण छे.

श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वरजीए पुष्पने मानेल छे; छतां असत् आक्षेप आपी रहेल छे के–तेओ मति

साधीने फूल चढावसां मान्य करता न हता.

खेदनो विषय छे के तेश्रोना रचेला ग्रंथोनी शोध खोल करी पछी एवो आक्षेप आपत तो ते क्षन्तव्य गणात, पण तेम कर्या विना गपाटगोळा चलावी अन्य जीवोने खेदित करवा ए निंदित प्रकार छे.

श्रमारुं मानवुं तो संपुर्णरुपे तेश्रो पुष्प पूजाने मानता हता एम तेश्र पूज्यश्रोना रचेला ग्रंथोज स्पष्टपणे साक्षी श्रापी रहेल छे. जूत्र जिनेंद्रगुणरत्नमाला नामना पुस्तक श्रंदर पुष्ट ५५ मां सत्तरभेदी पूजाना स्तवनमां १५ मी गाथा छे के–

" सत्तम विरल सुचि सरस फूले रचे, देव अनुभाव ते कहिये नवि संकुचे; माल सुविशाल पति कंठ जिनवरतणे, छविध सुर श्रष्टमी पूजा आगम भणे. जिहां जिहां जेहवो वर्ण शोभा धरे, तिहां तिहां तेहवो कुसुम वर्णक करे. फूल घर करे पूजा ए तेरमी, समकितधारक लोक मनने रमी; भरे सुर फूलनो पगर चंगी परी, चौदमी पूजाए जाण आगम भणी. जेम सुर तेम नर

सविशेष अंतर सुएया; प्रथम तो ...

भक्तिकारक जाएया, विरति अधिकार सविशेष अंतर सुएया; प्रथम तो ... तेहने अनुक्रमे सहुअ जविपण लहे. "

इत्यादि ग्रंथोमां जोतां स्पष्ट मालम पमे ढे के तेउ पुष्पपूजा मानताज हता; तथापि अढता आरोप आपवा ए केवी आचरणा ढे ! मुखथी कहे ढे के ' निंदा करे ते थाय नारकीरे ' परंतु ए वचन, मात्र पोथीमांनां रींगणानी पेठे समजाय ढे.

वळी अन्य स्थळे पण दृष्टि करतां सत्तर जेदी पूजा पंचप्रतिक्रमण पत्र २३० थी पूजा पांचमीमां वचन ढे के–

" पंचमी पूजा जिनवर केरो, मुकुलित कुसुमनी जाती रे; लाल गुलाब ने केतकी चंपक, पूजतां बहु परि जांतीरे. पंचमी. ॥ १ ॥ डमरो जाइ जुइ ने मरवो, कुमुद निलुप्पल साररे; वेउलसीरी वेली मोगर अरविंद, परिमल जास अपाररे. पंचमी. ॥ २ ॥

इत्यादि पांचमी पूजा निराळवानी जरुर ढे– पुनः ढठी पूजामां पण पाठ ढे के–

" कुमुद निलुप्पल सहसदल, रत्तुप्पल पउम सपत्त, अतिमुक्त चंपक केतकीस्युं मिलयाए, नाग पुनाग ने मचकुंद, मरुो मरवो अरविंद, वळी कुंद जाइ जुइ पाडल जलयाए. बोलसीरी कोज कोरंट, मोगर जासु शुभ वींट नहीं कंठ–बकुल तिलक नव मालतीए; लाल गुलाब ने मंदार टोडर गुंथ्यो तसुसार अती फार वळी पूजा शोभतीए. (रागकालहरो) ढगेरे पूजा श्रीजिन केरी कहे टोडर दीपेरे; पंच विध वरणी कुसुमकी माला. रयणावली हार जीपेरे. ढगो० ॥ १ ॥ "

॥ कलश मध्येनी ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वर गुणनिधि, तसपट समरसूरींदो ॥ राजचंद्रसूरि तास पटोधर, तेजे कोडी दिणंदोरे ॥वामा०॥५॥ श्रवणमुनि गुरु साधु तणो शिष्य, मेघराज मुनि भाखे ॥ संवत सोलसेउगणसाठे पुजा सत्तर भेदी आखे रे ॥ वामानो नंदन जुठयो ॥ इति ॥

इत्यादि विशेष विस्तार पूर्वक लेखना दाखला मोजूद छे, तो पछी भ्रातागण ! तेउश्री फूल चढावबां नथी मानता, ए केम मानी शकाय ! माटे सत्यासत्यनो पूरतो तपास करी सावद्य वचन उच्चारी बंध पाडवो एज योग्य छे, मळती वात छती बतावबी ए अति अनिष्ठ परिणाम दाता

छे. ए हेतुने लीधे सत्यने ग्रहण करी गछभेदथी उपजतो भेदबुद्धिनो भाव त्याग करवो जेथी भवोभव सुख संपदा प्राप्त थइ जय मंगळ कमळाना भागी थवाय. ॐ शान्ति ! शान्ति ! !शान्ति !!

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन. ॥

(उपजाति छंद.)

कंटालकस्थः प्रभु पार्श्वनाथः, सुरासुरैः सेवित पादपद्मः ॥
विख्यात कीर्त्तिः प्रकट प्रभावो, ददातु मे सर्व समीहितानि. ॥ १ ॥

(प्रभाती गोडी छंद.) गाम गुण ठाम श्री पास कंटालिये, नमिय सवि संकट कंटक टाळिये; हिपभछे प्राण जिन आण तसु पाविये, भावजळे पापमळपंक पखाळिये. ॥ २ ॥ प्रह-समे स्वामि तुम्ह नाम समरे सदा, जेह नर नारि ते लहे सुखसंपदा; एक चित्त प्रणमशे मूरति ताहरी, त्रासशे तेहने आपदा परिहरी. ॥ ३ ॥ जेहना मांदिला नयन बे आवर्या, सुदृढ नर दंसणावरण गुण अणुसर्या; तेह तुम्ह नाम ने थापना किम लहे, सूत्रमां प्रकट भणी तहति

गहु सद्दहे. ॥ ४ ॥ पेखतां रूप सरूप प्रभु तुम्हतणो, ऊपजे हियडले हरख मुज अति घणो; चंद्र चकोर रवि चक्र पंखी अली, कमल पेखेवि जिम तेहने मन रली. ॥ ५ ॥ एम प्रभु पायनी सेव नितु कीजिए, भवतणा पाप संताप सवि वंचीये; एहवी आश अम पासजी पूरजो, सेवक चित्त चिंता सवि चूरजो. ॥ ६ ॥

(इंद्रवज्रा छंद.) कंठाखिकस्थानविभूषणाय, विश्वेश्वराय च्युतदूषणाय; कल्याणवल्ली घनवारिदाय, श्री पार्श्वनाथाय नमोस्तु नित्यम् ॥ ७ ॥ इति श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर कृतम् ॥

॥ श्री विमलजिन वासुपूज्य जिन स्तवन. ॥

(चोपाइ) हरियामाली विमलजिणंद, वासुपूज्य बीजो जिणचंद; बे ए वंदुं मन उल्लास, सपदरिद्धि आवे जिम पास. ॥ १ ॥ लंछन सोहे जास वराह, धन धन त्रिभुवन करे सलाह, म्हाले महिष सबल शामलो, भंजे भविक तणो आमलो. ॥२॥ कनक वर्ण विद्रुम तन कंति, बेय जिणेसर एके पंति; बेठा पदमासणे सोहंति, निरुपम रूपे जन मोहंति ॥ ३ ॥ साठ अने सि-

त्तर धनु माण, तिहुं तणो किम करुं वखाण; एक जीह गुण कह्या न जाय, लाञ्छे शिवपद स्वामि पसाय. ॥ ४ ॥ वंश इक्ष्वाग तणो शिणगार, केवललच्छीउरवरहार; नृप कृतवर्म अने वसुपूज्य, कुलदीपक सुरनरवर पूज्य. ॥ ५ ॥ श्यामा जया नाम जसु माय, उरसरिहंस सरिस जिण-राय; महिमावंत सदा जयवंत, बे ए हुवा शिवरमणीकंत. ॥ ६ ॥ गिरि संमेते चंपा नाम, नगरी पहुता शिवपुर गाम; प्रह ऊठी तसु समरी नाम, ज्ञान ज्ञगतिशुं करुं प्रणाम. ॥ ७ ॥

॥ श्री जिनेंद्रस्तुतिः ॥

मोनेनोर्वी व्यस्तपरितो वत्सराणां सहस्रं । यो निर्माणश्चरणयुगलं ज्ञपमालोपकारी ॥ यद्देनुचारयतु हृदयात्सस्वकीयं कलानां । यो निर्माणश्चरणयुगलं ज्ञपमालोपकारी ॥ १ ॥ नमस्यल्लोलोमीपतिमुकुटरत्नांशुकवरं । नतानां दत्तश्रीधनयुवतिरत्नांशुकचरं ॥ त्रिलोकी जंतूनामनिरुपितसंपादकमलं । जिनस्य श्रीशांतेः स्तुतसरजसं पादकमलं ॥ २ ॥ अपुनर्जन्ममार्गलंजक कमकमला नलिनिश्रजापतेः ॥ शरणं समुपैमि नेमिनः क्रमकमलानलिनितनुत्विषः ॥ ३ ॥

पार्श्वप्रभुर्जिनः फलिताऽपचयं विदधज्जगतः कलितापचयं ॥ फणिचक्रमणीरुचिरं जितखः प्रदधातुमुदं रुचिरंजितखः ॥ ४ ॥ अगणयंतमुपप्लवमुच्चके-रहित संगमकाऽमरनिर्मितं ॥ नमतवीरजिनं मुनिसत्तमं रहित संगम कामरसं मुदा ॥ ५ ॥ शिवरतोवरतोपवशान्नतो-मघवताऽघवतामतिदूरगः ॥ अमदनो मदनोदनकोविदः शममसंममसंजयताज्जिनः ॥ ६ ॥ अविकलं विकलंकधियां सुखं विदधतं दधतं जगदीशितम् ॥ अकलहं कलहंसगतिं श्रये जिनवरं नवरंगतरंगितः ॥ ७ ॥

येषुत्कल्याणवल्लीविपिनवनमुचः स्वर्गंगातरंग–छायादायादरोचिः पटलधवलिताखंडदिङ् मंडलस्य ॥ नम्रामर्त्यावलीमौलिप्रसृतपरिमलोद्गारमंदारमाला–न्यर्च्यश्चंद्रप्रभस्य प्रभवतु भवतां भूतये पादपद्मः ॥ ८ ॥ ॥ इति जिनेंद्रस्तुतिः ॥

इतिषट्कल्पत्वज्ञापनपविचारादिप्रकरणसंग्रह समाप्त.

। राग भैरव: । गत चोवीसी स्तवन.

जागोरेभुग्यानिजीवभयो सु प्रभातरे, ध्यावोरे परम ध्यान वीतगई रातरे ॥ जागो० ॥ पहेला श्रीकेवलग्यानि, श्रीआनिर्वाणीरे,श्रीजा सागरस्वामि नाम,ध्यान धरो प्राणीरे ॥जा०॥१॥ चोथा महाजसदेव पांचमा विमलरे,सर्वानुभूतिछठा प्रभु आपे सुख अमलरे ॥जा०॥२॥ सातमा श्रीधरईश आठमा श्रीदत्तरे,दामोदर देव नोमा नांमथीपवित्तरे ॥जा०॥३॥ सुतेजास्वस्वामिदोई दस ने इग्यारदे, वारमा श्रीमुनिसुव्रत समरणसाररे ॥जा०॥४॥ सुमति शिवगति अस्ताघजिनेशरे, तेर चौद पनरमा सेवेसुर इंद्ररे ॥जा०॥५॥नेमिश्वरसोलमा अनिलवदा सातरे, अष्टादशयशोधर स्वामी सुविख्यातरे ॥जा०॥६॥जगणीसवीसइकवीसमा अरिहंतरे,कृतारथ जिनेश्वर शुद्ध मतिसंतरे॥जा०॥७॥ शिवंकर दोयवीस स्यंदनत्रेवीसरे,संपतिसु नामध्यान वधति सकल जगीसरे॥जा०॥८॥एहगतचोविस हुयाजिणभाणरे गुमानंद कहे सदा सकल विहांणरे ॥जा०॥९॥ इति गतचोवीशी स्तवन सम्पूर्ण

॥ अथ विस विहरमानजिन स्तवन ॥

रागरामकली ॥ विहरमानजिनवंदो सुगुणजवि, विहरमान जिनवंदो. श्रीमंधर जुगमंधर स्वामि बाहुसुबाहू मुणींदो,जंबुदीव विदेहिजिन प्रणम्ये परम आणंदो ॥सु० ॥१॥ श्रीसुजात स्वयंप्रभ स्वामी ऋषभानन जिनचंदो, अनंतवीरजसुरप्रभ अरिहा अरवे चोसठइंदो ॥सु०॥२॥ श्री विशाल जपवंतावज्रधर चंद्रानन मुखचंदो,धातकी खंमे दोइ विदेहि ए अम्जिनपति वंदो ॥सु०॥३॥ पुष्कर अरधमां पुगमविदेह, विचरे जिनराजेंदो,चंद्रबाहू जुजंग जिनेश्वर, इश्वर सेवेसुरेंदो ॥सु०॥४॥ नेमि प्रजवीरसेनदोइ फेर्मेजवजवफंदो,महाजद्रदेव यसदेवा नामिंदूरित निकंदो॥सु०॥५॥अनंतविरज अरिहंत आराधो दूर टले डुखदंदो, ए वीसें जगदिसउपासन करतां जविचिरनंदो॥सु०॥६॥रत्नत्रयीगुणकमल विकासन प्रजुगुण जग्यो दिणंदो रामकलिरागें जिनराया गायागुणीगुणचंदो ॥सु० ॥७॥इति॥

॥ अथ अनागत चतुर्विंसति स्तवन ॥

(राग प्रभाति) पभातें उठीने माता सुपकु जोवे । ए देशी ।

प्रभातें ऊठीनें नावें परमेश्वरनजियें, परमेश्वर नजीयेरे नावें परमेश्वर नजिये ॥ आवता
उंघडमाकी प्राणी सुभपरणती सजीवें, प्रभातें उठिने नावें० पद्मनाभपहिलाजिनहोस्ये वीजाश्री
सुरदेव, त्रीजा श्रीसुपारस जिननी करशे त्रिभुवन सेव ॥प्र०१॥ स्वयंप्रभ चोथोजिन होस्ये, पांचमा
सर्वानुभुति,देवश्रुत छठा उदयाजीव,सातमा यैँ शिवसुती ॥प्र०२॥ आठमा श्रीपेढाल प्रभुजी,पोटि-
लनोंमानाथ,सतकीरतदशमाहोस्ये सिद्धपुरिनोसाथ॥प्र०३॥सुव्रतएकादशमासमरो बारमा अममइष्ट
निष्कषाय तेरमा निपजस्ये स्वामि सर्वधीश्रेष्ठ ॥प्र०४॥ निःपुलाकनिर्म्ममचोपदेवा.चौदपनराचितचार
चित्रगुप्त सोलमा धर्मचक्रि उपजस्ये उछाह ॥प्र०५॥ सुखदाइसत्तरमासमाधि अढारमां संवरइंग
यशोधर श्री विजय जिनेश्वर उगणीसनेवलीवीस ॥प्र०६॥ मल्लिनाथ जिनदेवप्रभु एकवीस ने
वावीस अनंत निर्धनंकरएहोइ भाविजिन चोवीस ॥प्र०७॥ केवलहो अजुवाला करस्ये आदरस्ये
उपगार सिद्ध प्रभुनुं ध्यान धरंतां वरस्ये शिवसीरीसार ॥प्र०८॥ सुवीहावे ऊठीने समरे जेजिनजिन
चोवीस गणचंद्र कहे तेहने मंदिर होस्ये सफल जगीस ॥प्र०॥ इति ॥

।श्री पार्श्वजिनस्तवन।

ॐनमः पार्श्वप्रभुपत्कजे, विश्व चिंतामणि रत्नरे, ॐह्रींधरणेंद्रपद्मावती, वैरुटया करे सुयत्नरे ।१। ॐ०। अव मोपे शांति महा पुष्टिदे, धृतिकीर्त्तिकांतिविधायने, ॐह्रीं अक्षर शब्दथी. सर्व आ-धिव्याधि विनाशिने ॥ ॐ० । २ ॥ जया अजिता विजया तथा, अपराविजयान्वितादेविरे, दशदि-शापालग्रहयक्षेजे, विद्यादेवि प्रसन्न होय सेविरे ॥ ॐ० । ३ ॐ अ सि आ उ सा नमोनमः तुंहीं त्रै-लोक्यनो नाथरे, चोसठ इंद्र टोले मली, सेविये प्रभुने जोडि हाथरे ॥ ॐ० ।४॥ ॐ ह्रींश्रीं प्रभुपासजी, मूलना मंत्रनुं बीजरे, जापथी दुरित दूरे रहे, आयमिलेसविचीजरे, ॥ ॐ० ५ ॥ गोडी प्रभुपास चिंतामणि, स्थंभणो अहिछत्तो देवरे, जगवल्लभ जगतमां जागतो, अंतरीक अवंति करूंसेवरे ॥ ॐ० ॥ ६ ॥ श्री श्री संखेश्वर मंडलो, पार्श्वजिन प्रणत तरुकल्पतरे, चूरय दुष्टनाव्रातने, पूरय सुजय सुखतल्परे, सुजय सोभाग सुखकल्परे । ॐ नमः पार्श्व प्रभु पत्कजे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ सज्झाय ॥

काया माया कारमी, परदेशीरे, कबहुन अपनि होय, मित्र परदेशीरे, इणको गरव न कीजिये । प० । जिनमे दिखावे छेह ॥ मित्रप० ॥ १ ॥ जैसे रंग पतंगको । प० । जिनमें फीको होय, मि० प० । मणि माणेक मोति हीरला, प० । त्राण शरण नही कोय ॥ मि० प० ॥ २ ॥ जिस घर हयगय घूमते । प० । हुंता छत्रीस राग । मि० प० । सोज्ञी घर सुना पड्या । प० । बेसणलाग्या काग ॥ मित्रप० ॥ ३ ॥ मणि माणेक मोति पहेरती । प० राजा हरचंद घर नार । मि० प० । एक दिन ऐसा हो गया । प० । परघरकी पनिहार, ॥ मित्रप० ॥ ४ ॥ हाथे परवत तोलते । प० । करते नरपति सेव । मि० प० । सोज्ञी नर सब चले गये । प० । तेरी क्या गिणती अवेव ॥ मित्रप० ॥ ५ ॥ छोरके मंदिर मालिया । प० । करले जिन सुं राग । मि० प० । दो दीनको फर सोचना । प० । लगती इन तन आग । मि० प० ॥ ६ ॥ झुठो सब संसार हे । प० ।

सुपनाका सोखेल । मि० प० । नगके तास समजके । प० । करले मन्तु सुं मले ॥ ॥ मित्र परदेशीरे ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अष्ट प्रवचन माता सझाय ॥

चाले जयणा जोवतांरे, पाले जीव ठ काय । निरवद्य वचन मधुर कहे, नितु जाणे धर्म उपाय ॥ १ ॥ नमुं गुरु पायारे, जसुसीले निरमल सार । सुहावे कायारे । सुमिति गुप्ति धर्म प्रकार, कहे जिनरायारे । तिण कारण हर्ष अपार ॥ नमु० ॥ १ ॥ दोष बेंतालीस टालतांरे, सूधो ले आहार । नयणें निरखी पूजतां, लेवे उपगरण प्रकार ॥ नमुं० ॥ २ ॥ जल्ल मल्लादिक परठवेरे, सूधो स्थण्डिल जोई । शुभ्र ध्याने मन राखतां, जसु चारित्र निरमल होई ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ वचन सावद्य न उचरेरे, वचन गुप्ति संभार काया करणी ते करे, जेहथी हुए जीव उपगार ॥ ॥ नमु० ॥ ४ ॥ प्रवचन माता आठ एरे, जे पाले अनुदिन सार । ब्रह्म कहे ते मुनि नमुं, जिम पामुं जैन धर्मसार ॥ नमुं गुरुपायारे, जसुसीले निरमल सार सुहावे कायारे. ॥ ५ ॥ इति ॥

आ ग्रंथने अगाउथी आश्रय आपनार गृहस्थोनां मुबारक नामो.

(धन्यवाद)

६ बाबुसाहेब बाहादुरमलजी हजारीमलजी हीरालालजी रामपुरीया

बाबुसाहेब लेखतमलजी रामपुरीया

बाबुसाहेब भेरुदानजी राखेचा

बाबुसाहेब उदयचंदजी रामपुरीया

उपरना गृहस्थो तरफथी आ पुस्तकमां मदद थायवाथी तेओ साहेबोनो आ सभा अंतःकरण पूर्वक आभार माने छे.

ली. श्रीपार्श्वचंद्रगछनो जैन दर्शनीय सरस्वती सभा.

१८ आचार्य महाराजश्री १००८ श्री देवचंद्र सूरीश्वरजी तरफथी बीकानेरना ग्रहस्थोए भरेलां.

१ शेठ तेजकरण मूलचंदजी रामपुरीया

१ शेठ आसकरणजी

बीकानेर वासी ग्रहस्थोनां नामो लखी मोकलेलां बराबर नहीं उकलवाथी छपाणां नथी ते माफ करशोजी.

अमदावाद.

१ शेठ. फत्तेचंद दोलतचंद.

१ शा. मंगलदास छख्लुभाई छपावनार.

१ शा. हरखचंद रवचंद
१ शा. घालचंद मगनलालनी मातुश्री वाइ जवी
पुएयस्थल धांगध्रा
१ शा. झामर खोमीदास
१ शा. मणीलाल लाटकचंद
१ शा. चतुरत्नाइ पदमसी
१ गांधी. ताराचंद झामर
१ कपासी. जगजीवन ववल
१ शा. नानजी वेणा खेरवापा
१ पारेख. रगनाथ लखमीचंद
१ शा. जवान परत्तु

१ शा. न्यालचंद कस्तुर
१ शा. दलसुख प्रागजी हलवद गामना
१ शा. कचरा कानजी
१ शा. जेरा जेसींग
१ शा. मणीलाल लखमीचंद खेरवापा
१ शा. शीवलाल फुलचंद कुढना.
१ दफतरी छगनलाल नानचंद
१० शा. चतरत्नूज देवसी हाल बीकानेर
जैन स्कुल हेम मास्तर
१ वेन चंडु दगीसींग बीसनगर.
१ शा. छगलाल नथुत्नाइ महिजनां

सुविहीत मुनिमहाराज श्री १०८ श्री गुणचंद्रजी महाराजना
कछ–गाम–देवपुर निवासी गृहस्थोनां मुबारक नाम.

२ शा. कल्याणजी खेराज
१ शा. खेराज पचाण
१ शा. गेला देराज
१ शा. रवजी अमरसी
१ शा. कोरसी पालण
१ शा. ठाकरसी कानजी
१ शा. पदमसी भारमल
१ शा. नरसी नेणसी

१ शा. पचाण लखु मोटी लाइजा
१ शा. लालजी हेमा राएणवाळा
५ शा. लधा रतनसीनी वीधवा बाइ
मेघबाइ गाम तुंबडी
१ शा. छगनलाल नथुभाइ गाम महीजना
१ शा. महासुखभाइ काळीदास अमदावाद
ली. मं. ल.

ी महाराजना सउपदेशथी ...

॥ आत्महितोपदेश ॥

ओनां मुबारक नाम.
शा. पचाण लखु मोटी लाइजा
शा. लालजी देमा रापणवाळा
ा. लधा रतनसीनी वीधवा बाइ
. मेघबाइ गाम तुंबडी

सद्गुरु आचार्य श्री आत्मानन्दसूरीश्वरपादपद्मसेवी मुनि महा. छगनलाल नथुभाइ गाम मदीजना श्रावक सद्गुरुचरणोपासक मंगलभाइ प्रति लखेल महासुखभाइ काळीदास अमदावाद भव्यजीवोने अवश्य उपयोगी जाणी अत्र प्रकट ली. मं. स.

आ संसारनी अंदर सर्व जीव सुखनी चाहना करनार छे. तोपण यथार्थ सुखनो मार्गो था
साधन समजवामां आवे तोज जीव यथार्थ सुखनो मार्ग था... रज्जुमां (दोरडु ... एटले के ज्यां सुधि शीपमां रुपानी बुद्धि, रज्जुमां (दोरड ... दुर थयेल नथी, ... जांझवाना जल (मृगतृष्णा) मां जल

शंका, बंधनकारी पदार्थोमां तल्लीनता, अने परपरिणतिमां प्रीति–स्वाभिमान विगेरे मिथ्याज्ञान जीवमाथी दूर खसेल नथी त्यां सुधि आ जीव साचा सुखनो भागी थवानो नथी. आ जीव सुखी शाथी थाय? आ प्रश्नना उत्तरमां मारे जणाववुं जोइये के परमात्मा प्ररुपित धर्म आराधन करवाथी आ जीव सुखी थाय छे, पण स्वकपोलकल्पितधर्मथी श्रेयनी प्राप्ति थति नथी. थोडुं पण आणा अने विधिपूर्वक करवामां आवे तो तेथी मोटा लाभ थाय छे.

जेने आज्ञा अने विधिनो तो खप नथी, पण मात्र लोकप्रवाहमां धर्म माने छे, तो ते जीव शी रीते सुखनो भागी थाय. जिनआणा रहित अने अविधिथी तो घणी वखत पेहेलां पण आ जीवे क्रियानुष्ठान कर्यां, तेनाथी कशो फायदो थयो नहि अने एमज आ जीव संसारमा जन्म मरणजनित दुःखोने भोगवतो भमतो रह्यो. जो आ जीवने जिनेंद्रप्रणीत पदार्थ तत्वोनुं रहस्य प्राप्त थयुं होत तो आ जीवनी आवी दशा न होत, पण स्वस्वभावमां रमण करी परमानंद प्राप्त करत. हजी सुधि पण परपरिणति पुद्गलदशानो जो आ जीव त्याग नहि करे तो फरीथी

पश्चाताप करवाना दिवस आ जीवने आव्या विना नहि रहे; माटे 'समय न चूको चतुर नर, कवि कहत हे कूक;—चातुरकुं खटके सदा, समय चूककी हूक.'

समयनो अर्थ सूत्रकार उपकारी पूज्योये आवो करेल छे के सर्व श्रेयना साधनभूत मनुष्य देह, आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल, इंद्रियपूर्णता, श्रावक कुलमां उत्पत्ति, शरीरे निरोगता, सुविहित गुरु आचार्यश्रीना उपदेशथी जिनेंद्रप्रणीत धर्मनी श्रवणरुचि, धर्मपर श्रद्धा अने ते प्रमाणे प्रवृत्ति, आ पामवां जीवने बहु दुर्लभ छे. केमके मनुष्यभव तो आ जीव घणी वखत पाम्यो; पण सर्व सानुकूल सामग्री आ जीवने मली नहि तेथी सुखनो भागी आ जीव थयो नहि, माटे आ समये सर्व सानुकूल सामग्री मलेल छे, तेने चूकवी भूलवी नहिं, एज समयनो अर्थ छे, अने तेथीज ज्ञानी पुरुषो उद्घोषणा करे छे के, आवो समय फरीफरीने नहि आवे. ए सर्व सामग्रीमां एकनी पण खोट होय तो मनुष्यभव नकामो छे अने ते सर्व सामग्री सदाय जीवने मलती नथी; किन्तु बहु पुन्यराशी प्रबल थाय छे त्यारेज सर्व सामग्रीनो संयोग थाय छे माटेज दुर्लभपणुं बतावेल

छे. ते हाथ सर्व सामग्री मळेल छे तेथी समय चूकवो नहि, जेथी आ जीव मुक्तनो भागी थाय माटे ध्यान दइ स्वआत्मकल्याणमार्ग सेवन करवा. तत्परता-वीर्योल्लासपूर्वक धर्म अनुष्ठानादिक क्रिया लोकरंजन माटे नहि; पण स्वआत्मरंजन करवा माटे करवामां आवे, अर्थात् " आतममाटे धर्म करो, त्यां जननुं शुं काम; जनमनरंजन धर्मनुं, मूल न एक बदाम. " माटे स्वात्मरंजन हितार्थे जो धर्म करवामां आवे तो आ जीवनुं अवश्य कल्याण थाय. पण जैन धर्म ए शुं चीज छे तेनुं ज्ञान नथी तेने कर्मोथी आत्माना कया कया गुणो आवरणाय छे? कर्मने दूर करवाना मुख्य साधन क्यां छे? अने आ जीव दुःख केम पाम्या करे छे? तेनो विचार तो करतो नथी. मात्र मतउच्चारण करवाथी तथा हुं साधु, हुं श्रावक एम मानवाथी आ जीव सुखनो भागी थतो नथी, कारण के " तत्त्व तो परख्यो नहि भला हुवा अणगार! भाव विहुणा भेखमें, वृथा बनाइ वाड. " माटे जे जे कोइ पण धर्म-कार्यादि कार्य करवुं ते सम्यक्रूपे विचारी अने पछी झाझुं नहीं पण भले थोडुं करवामां

करी ऊंची पायरी ऊपर आव्या आवे तो ते सन्मार्गानुगामी जीव धीमे धीमे स्वश्रेय साधन करी आ जीव शास्वता सुखनो भागी थाय विना रहेशे नहि अने अनुक्रमे सर्व दुःखोनो नाश करी आ जीव शास्वता सुखनो भागी थाय एमां किंचित्मात्र संदेह नथी. हमेशां जेमना हृदयमां एवी भावनानो आविर्भाव थाय छे के हुं क्यांथी आव्यो छुं? अहिं कया पुन्यना उदयथी मारी उत्पत्ति थइ हशे? केवां में सारां कर्म करेलां हशे के जेथी आवो उत्तम देह पाम्यो छुं, हवे हुं केवां कर्म करूं अने अन्य जन्ममां आ जीवने क्यां जवानुं थशे एटले आ भवथी कया भवमां आ जीवनुं प्रस्थान थशे, आवा प्रकारनी विचारणा जेना हृदयमां उद्भव पामती न होय तो आ जीव धर्ममां प्रवीण केम थाय अने धर्म विना सुखनो भागी पण क्यांथी थाय! कह्युं छे के " इहोपपत्तिर्ममकेन कर्मणा? क्वप्रयानत्यमितो भवादिति । विचारणा यस्य न जायते हृदि कथं स धर्मप्रवणो भविष्यति!" माटे भव्यजीवोए आवी भावना भूलवी नहीं, पण सदाय ध्यानमां राखवी.

आ जीव महानो मुसाफर छे; केमके केटली योनियोमां मुसाफरी करी करी आ भवमां पण

रेज सत्चिद् आनंदरूप थशे. माटे जो आ जीवनुं कल्याण इच्छता हो तो प्रमाद दूर करो. प्रमाद एटले ८ मद, ५ विषय (पांच इंद्रियोना विकार), ४ कषाय, ४ विकथा अने निद्रा ए पांच प्रमाद छे. एमने दूर करवाथी ज सुख प्राप्त थाय छे. उत्तम चरित्रवाला पुरुषोनी सदा अमीदृष्टि विश्वव्यापक सर्व जीवो उपर समान वर्त्या करे छे. स्वश्रेय अथवा स्वअश्रेय ते स्वस्वाधीन छे. अन्य निमित्त कारण मात्र छे. हां ए वात तो ठीक छे के जो कारण सानुकूल होय तो कार्य सानुकूल थतां उत्तम द्रष्टान्तने उत्तमज फल मलशे. उद्यमथी कार्यनी सिद्धि थाय छे ए प्राये मुख्य नियम समजवो. तेम करतां पण जो न थाय तो पछी भावी. पंच समवायथी कार्यसिद्धि ए परमात्मा देवाधिदेवनुं मुख्य सिद्धान्त सर्वत्र अस्खलित प्रवर्ते छे, कोइ वखत कोइनी गौणता, कोइ वखत कोइनी मुख्यता तेमां ए धर्म रहेल छे; पण एकनेज अंगीकार करी लेवुं ए एकान्तवाद कहेवाय छे अने तेथीज जगतमां अनेक मतमतांतर प्रादुर्भाव थयेल छे. जो जीवनी अनेकान्त दृष्टि थाय तो सर्वना मतमतांतर क्षय थइ जाय छे अने जीवने जिनवचन उपर प्रतीतिनो

तेज जाणवां. गुरुमहाराजनी कृपाथी तरवानो निकट रस्तो उपशम संवर विवेक अने आचार विचार के उत्तम पुरुषो जे मार्गे चाले ते मार्गे चालवुं, अने तेवा उत्तम विचार करवा प्रकृतिने अनुकूल आहार विहार सुखदायि थाय छे. हाल तो शुद्ध स्वरुपी अनंत सुखभोगी थाय एवी भावना करवी अने जिनोक्त शुद्ध अनुष्ठानमां रक्त रहेवुं के जेथी परंपराये आ जीव अष्टकर्मातीत थइ शास्वत सुखनोभागी थाय. अवकाश अल्प होवाथी अल्प लखेल छे. श्रावकजी ! जेम तमने ठीक लागे तेम करजो, आलस प्रमाद दूर करजो, दरिद्रपणुं छोडजो, धर्ममां उद्यम राखजो, घरमा तो कोइ तमने प्रेरणा करे तेम नथी के धर्म करो; परंतु तमे तमारुं हित नहीं एज आ समयनो सार छे. आप सुज्ञ छो जाण छो विशेष शुं लखवुं जेम आत्मश्रेय थाय तेवां कार्योमां तत्पर रहेवुं, शुष्क अध्यात्मनो पक्ष पकडशो नहीं, जिनआज्ञा सहित क्रिया ते भाव अध्यात्मपूर्वक आदरजो जेथी आत्मश्रेय थाय. स्त्री पुत्र पुत्रीमां अनादि कालथी आ जीव घेरायेल छे पण आ जीवने एक वखते जो परमात्मा प्ररूपित शुद्ध तत्व सद्दहणा थइ जाय अने ते प्रमाणे

जो चरताय तो आ जीवनो वेमो पार थाय; पण घणा जीवो अंधश्रद्धालु थइ गयेला ले तेथी गुणी अगुणीनी पण परीक्षा करता नथी, जिनवचन आराधनपणुं स्वप्नमां पण तेमने आववुं प्राये मुसकेल ले. हलुकर्मी जीव हशे ते विधि वहु मानी विधिपर आदर करनार थशे. इतितत्वं

भांगद्रा संवत १०६० वैशाख शुक्ल पक्ष.

अथ पांच आंगळीए नोकारवाळी गणवानां फल.

१ [illegible] विप्र [illegible] अने [illegible] सुख करे
२ [illegible] करे.
३ [illegible] सुख [illegible] फल आपे.
४ [illegible] करे—[illegible]
[illegible] उत्तर वेसी जाप करे तो [illegible] थाय.
१ [illegible] वेसी जाप करे तो [illegible].
२ [illegible] उत्तर वेसी जाप करे तो [illegible].
३ [illegible] उत्तर जाप करे तो [illegible]
४ [illegible] वेसी जाप करे तो [illegible].
[illegible] फल. १ [illegible] सुख आपे.
२ [illegible] सुख करे.
३ [illegible]
होय तो थाय.
५ कनीष्ट थकी जाप करे तो आकर्षण करे—पुरुष स्त्री चाल्या
थकां आवे.

६ पान उत्तर वेसी जाप करे तो मित्र विभ्रम करे.
७ वत्रु उत्तर वेसी जाप करे तो धन प्राप्ति करे.
८ वायव्येश्वर वेसी जाप करे तो अवगुं बंधे.
९ मृगवर्णश्वर वेसी जाप करे तो धननी वृद्धि करे.
१० वायवर्णश्वर वेसी जाप करे तो बंधीखानुं छूटे.
पुत्री पुत्री करे.
४ रत्न स्फटिकनी वैडूर्यमणीनी माळाथी जाप करे तो हजार
[illegible] फल आपे.

षद् द्रव्य नय विचारादि प्रकरण संग्रह-
ग्रन्थः समाप्तः